हिन्दी ग्रामोफ़ोन रेकर्ड संङ्गीत

प्रथम भाग

जिसमें हिन्दुस्तानके बड़े प्रसिद्ध प्रसिद्ध

५८ गवैयोंके ५०० रिकर्डोंका पूरा पूरा

१००० गाना है।

जिसको

मिस्टर एस० पी० जैनी

कलकत्ता

ने संग्रह किया

प्रथम बार २०००





Printed by A. C. BISWAS, at the
Modern Art Press, 1/2, Durga Pituri Lane, Calcutta.
Published by S. P. JAINI, 5, Dharamtalah Street, Calcutta,

सविनय प्रार्थना

—∘:∘—

प्रियवर मित्रों !

यह पुस्तक बहुत ही परिश्रम से तैयार की गई है जो कि सेवामें उपस्थित है।

इस पुस्तक के सब गाने रिकार्डोंसे सुन सुन कर लिखे गये हैं सम्भव हो सकता है कि कुछ भूल हो, इस लिये मैं सविनय प्रार्थना करता हूं कि यदि कुछ भूल मेरे सुनने में या लिखने अथवा छापेख़ाने को ग़लती से हो गई हो तो आप कृपया मुझको क्षमा करेंगे और जो महाशय किसी भूलसे मुझको सूचित करेंगे मैं उनका बहुत ही कृतज्ञ हूंगा और आगामी छपाई में शुद्ध कर दूंगा।

एक पुस्तक में कुल रिकार्डोंका गाना आकर बहुत ही बड़ी हो जाती इसलिये इनके भाग कर दिये गये हैं। पहिला भाग तो यह है ही और दूसरा भाग जल्दी ही तैयार करके सेवा में उपस्थित किया जायेगा।

प्रार्थी

एस० पी० जैनी

अशुद्धियों को शुद्ध कीजिये

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
८५७५	८५७८	१०१
३३५३	३३४३	१५८
१२७	१४९	१३१

विषय सूची

मिस अच्छन बाई

P. 245. **दादरा भैरवी** नं० पी० २४५

लेगयो री पिया पियारो हमारो मन—लेगयो री ----
यह नाज़िरिन नाम मोहम्मद का, अरे इतना पता तो है—लेगयो री
यारसे दग़ा भी कोई करता है, आज तक तुमने जाना कि कोई मरता है
खुदाने नक़्रैयद जो अब सुन लिया, मुझको मालूम न था हाल पराये दिलका
मरने जीनेके किसी से नहीं वाक़िफ़ था ज़िनहार
कोई मरता हो तो वह जाकर के करे अपनी दवा
मुझ से उलटी तक़दीर वाला भला क्या होवे
रे होये वह दिलदार जो मसीहा होवे—लेगया री ----

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

सितम करते हैं वो नाहक़ अबस में राज़ करते हैं
ख़ुदासे हमद करके बुतों की फ़रयाद करते हैं
ख़ुदा मैजूद रक्खे इन हसीनों के तजम्मुल से
अरे यह दिल पहिले तो ले लेते हैं फिर बरबाद करते हैं—सितम --
न हुस्न ज़ब्त देते हैं न रुख़ करते हैं ज़रा
वह घर बैठे हुए मिट्टी मेरी बरबाद करते हैं
मज़ा देनेका हसीनों का न उस तक के कूचे में
किसी की ख़ाक को यूं भी भला बरबाद करते हैं—सितम करते हैं --

P. 246. **होली काफ़ी** पी० २४६

कन्हैया मोसे खेलो होरी करो न ठ्ठोरी—कन्हैया ---
चन्द्र बदन मृग लोचन भामनी नयनों की मतवाली
नयनन मार मार कर बैयां मोरी मरोरी—कन्हैया ---
अबीर गुलाल के बादल छाये खेलत रङ्ग बिहारी
छोड़ो मो पै रङ्ग न छोड़ो भीजत चुनरिया मोरी—कन्हैया ---
सब सखियां मिल बन बन आईं कोई सांवल कोई गोरी
अपने अपने मन्दिर से निकसी सास ननद की चोरी—कन्हैया --

दूसरी तरफ़ :— **पीलू दादरा**

जाओ जाओ हम से न बातें बनाओ—जाओ ---
हमसे अदावत सौतन से राबत उन्हीको छतियां लगाओ-जाओ --
क़सम ख़ुदा की न देंगे दिल रे इन हसीनों में बफ़ा नहीं है
लगाई किस किस से हम ने उल्फ़त किसी से कुछ फल मिला नहीं है
लिखो न रुखसार नक़्श देखो हटो जनाज़े से मेरे जाओ
वह मर्ज़ मुझको है तबीबों के जिस की दवा मुमकिन नहीं है-हम-जाओ--
गर यही करते हैं साहब के यही अन्दर
हमने भी अहद किया दिल से बन्दे नवाज़
जो करेंगे घरकी तरफ़ तेरे कभी रूए न आयद
उस तरफ़ पांव भी होवें तो करें तर्क नमाज़
वहां को निकल जाऊं जहां का न पता मिलता हो
न मिलें मिलने से तेरे जो ख़ुदा मिलता हो —हम -- जाओ --

247 **कालंगड़ा** पी० २४७

गोरी नयना न मारो तड़प जायेंगे—गोरी ---
नैना की बान मोरे दिल पै लगत है
प्राण हमारे निकस जायेंगे—गोरी नयना मारो ---
मैंने पूछा कि क़त्ल कीजियेगा, हमसे कहने लगे कि आंखों से
इतना कहते ही क़त्ल कर डाला, उसने आंखें मिलाके आंखों से
गोरी नैना न मारो तड़प जायेंगे।

दूसरी तरफ़ :— **चैत**

चोलिया से जोबना बाहर भई लो रामा
कहां लेके पाऊं—चोलिया से ---
कोई लुटावे अन धन जोनवाल
सुन्दर लुटावे बाला जोबना हो रामा
कहां लेके जाऊं—चोलिया से ---

P. 335. **चैत** पी० ३३५

राज गईले कौने देश कोयलिया
कोयलिया कोनी देस गई ले राज कोयलिया
एक तो कोयलिया कोयलिया हां हां ---
पिया कोने देस गये कोयलिया ---
जाय बैठे कोने देस कोयलिया
कूकत मनमें रे, कूकत मनमें राग कोयलिया
राज गई ले कोनी देस कोयलिया

दूसरी तरफ़ :— भजन

आओ जी आओ मेरे प्राण के जिलाने वाले
तुम अलख अगम अविनाशी, तुम घट घट के हो बासी
अखिल भुवन ब्रह्मांड के बनाने वाले
भक्तन को प्रभु सुख दीनो, डूबत गज को धर लीनो
बन्दी से बसुदेव देवकी दुखसे छुड़ाने वाले
अजामिल पापीको जम दण्ड से बचाने वाले
गौतम की तिरिया तारी बढ़ायो द्रोपदी को तारो
अजामिल पापी को जम दण्ड से बचाने वाले
कौशिक मख रांखन वारे, दशरथ के तुम हो दुलारे
ताड़का सुबाहु हत गर्द में मिलाने वाले ।

——(:०:-)——

P. 1256 होली पी० १२५६

जसोदा के लाल खेले होरी, कैसी धूम मचोरी
मुरली की धुन छन गोरी निकल भई सब मिल बालक होरी
अङ्ग अङ्ग भूषन सब साजी, चलो कोरिती की ओरी—कैसी - - -
आय अचानक गले लगावत दियो अङ्ग झकझोरी
गारी दूंगी छोड़ दे मोहन तुम्हें क़दर नहीं मोरी—कैसी - - -
चोवा चन्दन अतर गुलाब के गलियन कीच मचोरी
उड़े गुलाल लाल भय बादर चली रंग की झोरी—कैसी - - -

दूसरी तरफ़ :— चैत

कौने बन बीर फुलैला गुलबवा हो रामा—कौने बन - - -
बेला बनवारे फुलैला गुलबवा हो रामा—कौने बन - - -
मैं हूं साक़िये मय हूं गुलज़ार साक़िये घटा छाई है ।
कह दो बाग़वां को चमन की बहार आई है ॥ कौने बन - - -

मिस अख़्तरी जान

P. 3682 दादरा पी० ३६८२

इन्ही लोगों ने ले लीना दुपट्टा मेरा
न जानों बजजवा से पूछो
जिस ने अशर्फ़ी गज़ दीना दुपट्टा मेरा—इन्हीं - - -
न जानो रंगरेजवा से पूछो
जिस ने गुलाबी रंग दीना दुपट्टा मेरा—इन्ही - - -
न जानो मोरे सैयां से पूछो
जिस ने उढ़ाके मज़ा लीना दुपट्टा मेरा
इन्हीं लोगो ने ले लीना - - - - -

दूसरी तरफ़ :-- दादरा

कहां जाओगे यार नैना लगा के कहां जाओगे यार
जाओगे यार कहां जाओगे यार नैना ---
तुम्हारे देखने से हमको ताब होती है
इन आखों में दुनिया हबाब होती है
वगर न ज़िन्दगी मेरी ख़राब होती है—कहां ---
ज़बान खुली भी न थी अर्ज़ मुद्दुआ के लिये
नज़र की क़ैंचिया चलने लगी सना के लिये—कहां ---
कहा जो मैं ने कि मेरा कहा नहीं करते
तो फिर ढिटाई से बोले कि हां नहीं करते
निकाहे मुलकियत हुए सजदा नहीं करते
कहां जाओगे यार ---

——(०)——

P. 4412. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ४४१२

जाने क्या साक़ी की आंखों ने इशारा कर दिया—जाने ---
नज़रे सग़िर आज हां नग़मे तक़वा कर दिया—जाने ---
कल तो था मैं मयका देने उस साहिल की तरह
आज साक़ी ने मुझे क़तरे से दरया कर दिया—जाने ---
दिलको आज़ारे मोहव्वत के मज़े आने लगे
उसके मय कुलबां के जीने दर्द पैदा कर दिया
काम सूली का किया था कौन सा मंज़र ने
किस ख़ता पर तू ने हर जाई को रुसवा कर दिया
जाने क्या साक़ी की --

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

नाज़ भी होता रहे होती रहे बेदाद भी
सब गवारा है अगर देते रहे फ़रयाद भी
वह ख़फ़ा होकर के बोले अब न आयेंगे कभी
यह भी कह दो अब न आयेगी तुम्हारी याद भी
नाज़ भी ------
उस से मिल कर ग़ोज़ से बेदर्द यह उक़दा खुला
भोली भोली शक्ल वाले होते हैं जल्लाद भी
बाग़ का जाने का देता है अब लालच उसे
फांस कर दो चार बुल बुल फंस गया सैयाद भी
नाज़ भी होता रहे होती रहे बेदाद भी

—— :-०-: ——

P. 4658. ग़ज़ल देश पी० ४६५८

न पूछो वस्ल क्या शय है कि जिसपर दम निकलता है
यह हुआ ग़ोग़ा क्या अरमान है जो दम निकलता है
न पूछो वस्ल क्या शय है ----
संवर कर घर से जब वह क़ातिले आराम निकलता है
तड़पते हैं हजारो सेकड़ों का दम निकलता है। न पूछो ---
वह कहते हैं कि मरता हूं तो फ़रमाते हैं यूं हंसकर
ताज्जुब क्या है हम पर सैकड़ों का दम निकलता है
न पूछो ------

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल काफ़ी

दिलपर असर पैदा हुआ, फिर दुबारा इश्क़ का दिलपर - - -
बाग़े उल्फ़त में मोहब्बत का शजर पैदा हुआ
फिर दुबारा इश्क़ का - - - -
अश्क जारी रात दिन चश्मे बिरयां से मेरी
इस क़दर रोया कि अश्कों से गोहर पैदा हुआ
फिर दुबारा - - - -
देख कर गुलशन में कोई बुलबुले उस माह को
क्या चमन में दूसरा रश्के क़मर पैदा हुआ
फिर दुबारा - - - -
ज़ख्म आधे हो चुके छिल छिल के सारे जिस्मके
दर्द दिल रमता देखा यह क्या शजर पैदा हुआ
फिर दुबारा - - - -

P. 4780. ग़ज़ल पी० ४७८०

रात बोसे पर लड़ाई होते होते रह गई
मेरी उनकी हां तबाही होते होते रह गई
नाम यह फ़िक़रा मेरा हो उन को जो है इनतहा
हर जगह मेरी लड़ाई होते होते रह गई। रात - - -
जौक़ पहचान का मज़ा लिखा पढ़ा कुछ भी नहीं
बस अलिफ़ बे तक बढ़ाई होते होते रह गई। रात - - -
नाई का हज्जाम कब से मूंडते थे सब के बाल
मा बदौलत की हजामत होते होते रह गई

दूसरी तरफ़ :— दादरा

अपनी तिरछी नजरियों पै क्यों न हो निसार
गोरे गोरे गाल धूंघर वाले बाल
चितवन के भोले भाले होते हैं मिलकर के जाल
अपनी तिरछी नजरियों - - -
नाज़ भी खतम है उनपर जो यह फ़रमाते हैं
फ़र्श मख़मल पर मेरे पांव छिले जाते हैं
देख मेरी अङ्गया के बन्द खुल खुल जांय
सीने पर फल दो ऐसे लगे हैं जैसे नारंगी अनार
हमने इश्क़ के कूचे में नाम किया
अपने को कुफ़्र किया कुफ़्र को इसलाम किया
कुफ़्र ज़ालिम तेरी आंखो ने अजब काम किया
सीने पै दो फल ऐसे लगे हैं जैसे नारङ्गी अनार
अपनी तिरछी न जरियों - - -

P. 4781. भजन देश पी० ४७८१

अजब हैरान हूं भगवन तुम्हें क्योंकर रिझाऊं मैं
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं
तुम्हीं हो मूर्ति में भी तुम्ही व्यापक हो फूलों में
भला भगवन पर भगवान को क्यों कर चढ़ाऊं मैं
तुम्हारी ज्योती से रोशन हैं सूरज चन्द और तारे
महा अन्धेर है तुम को अगर दीपक दिखाऊं मैं
भुजायें हैं न सीना है न गर्दन है न पेशानी
कि हैं निर्लेप नारायण कहां चन्दन लगाऊं मैं

दूसरी तरफ़ :— भजन देश

बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको क़रारी है
अरी माता तू क्या पूछे अवध किसने उजाड़ी है
हमारी मातकी करनी सकल दुनियां से नियारी है। बिना - - -
भरत लोटे धरन ऊपर दशा तन की बिगाड़ी है
कहां हैं राम लछमन और कहां सीता बिचारी है। बिना - - -
बजा जब कूंचका डङ्का छुबह होते तयारी है
चरण रघुनाथ के पाऊं यही दिलमें बिचारी है। बिना - - -

मिस अमीर जान

P. 182. दादरा पीलू पी० १८२

कहो गुइयां कैसे कटे सारी रात। कहो - - -
सइयां नहीं आये जिया घबराये। कैसे कटे - - -
ऐसे बेदरदा से प्रीति जो ठानी कबहूं न मानी बात
कहो गुइयां कैसे कटे सारी रात - - -

दूसरी तरफ़ :— सेहरा क़व्वाली

मालन बना के लाई क्या लाजवाब सेहरा।
सेहरों में है जहां के यह इन्तख़ाब सेहरा॥
मोती चमक रहे हैं कलियां महक रही हैं।
दौलत लुटा रहे हैं क्या लाजवाब सेहरा॥
नोशाह बना सलामत सेहरा ख़ुदा की रहमत।
लड़ियां हैं तारे बारिश और है सहाब सेहरा॥

P. 242. ग़ज़ल दादरा पी० २४२

बहकाने वाले आप के सब यार बन गये।
समझाने वाले मुफ़्त गुनहगार बन गये॥
हमने दिया था दिल उन्हें दिलदार जान कर
वह लेके मेरे दिल को दिले आज़ार बन गये
डुब्बे हैदर से जो आबाद है सीना मेरा।
दुरें हदफ़ दिल का नगीना यार बन गये।
उस गुल बग़ैर रात को आती नहीं है नींद
बिस्तर के तार हक़ में मेरे ख़ार बन गये

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

लिखूं क्या सना तेरी शाहेदी किया हक़ ने तुझको सलाम है।
ख़ुदा कहता तुझ पै दुसह है तेरी जान आली मुक़ाम है॥
तेरी अर्श आली मुक़ाम है शाहिदो जहां तेरा नाम है।
तुझे हक़ ने भेजा पयाम है कि तू दो जहां का ईमान है॥
लगा दिल में हिज्र का नश्तर पिया इश्क़ ने ख़ूने जिगर।
लिखूं क्या सना तेरी शाहेदी किया हक़ने तुझ को सलाम है॥

P. 337. दादरा कहर्वा पी० ३३७

ख़बर ही नहीं उस जालिम को मेरी ख़बर ही नहीं
रो रो के अपनी आखों से दरया बहा दिया
सच है किसी के दिलकी किसी को ख़बर ही नहीं—उस - - -
शिकवा बस तेरी तवज्जह का है ज़र्रगी
वह दिल नहीं वह बात नहीं वह नज़र नहीं—उस जालिम - - -

दूसरी तरफ़ :— ज़िला क़व्वाली

फ़लक पर है दिमाग़ उनका ज़मी के रहने वाले हैं
ख़ुदा ये माहे पैकर सारी दुनिया से निराले हैं
तुम्हारे हिज्रमें क्या क्या गुज़रती है मेरे दिल पर
जिगर पर आह है ग़म से ज़बां पर मेरे नाले हैं
कभी वो नाज़ करते हैं कभी तुम प्यार करते हो
तुम्हारी निग़ा ने हज़ारो मार डाले हैं
न हम सा दिल है न नाज़ ख़ुश बयानी है
वो ख़ुशगोई का दम भरते हैं बस देखे भाले हैं—फ़लक पर - - -

मिस असगरी जान

P. 155. ग़ज़ल पी० १५५

ग़ज़ब किया तेरे वायदे पै ऐतबार किया।
तमाम रात क़यामत का इन्तज़ार किया॥
सुना है तेग़ को क़ातिल ने आबदार किया।
अगर यह सच है तो बे शुबाह हम पै वार किया॥
हंसा हंसा के जो शबे वस्ल अश्क बार किया।
तसल्लियां मुझे दे दे के बेक़रार किया॥ग़ज़ब - - -
तुझ को वायदा ये दीदार हम से कहना था
यह क्या किया कि जहां की उम्मीद वार किया॥
यह किस ने जलवा हमारे सर मज़ार किया।
कि दिल ने शोर किया हाय बेक़रार किया॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल भैरवी

यह माना हमने बीमारे मोहब्बत की दवा तुम हो
न आये काम जब अपने तो दर्दे लादवा तुम हो
वफ़ा के हम है मूजिद वानी जोरो जफ़ा तुम हो
निभेगी किस तरह हम बावफ़ा है बेवफ़ा तुम हो
हमें यह रश्क़ भी मंजूर है तुम ग़ैर को चाहो
बलाये दर्द उल्फ़त के तो लज़्ज़त आशना तुम हो
ख़ुदा को भी पसन्द आता नहीं नाज़ो ग़रूर इतना
न बोलोगे किसी से तुम तो क्या कोई ख़ुदा तुम हो
भरोसा ग़ैर को होगा तुम्हारी आशनाई का
यही तरज़े वफ़ाई है तो किस के आशना तुम हो

———:o:———

P. 8575. दादरा पी० ८५७५

टोपी वाला यार गली में गवनवा मांगे - - -
एक तो सिपहिया का पहरा। सिपहिया का पहरा
दूजे खड़ा कोतवाल। गली में गवनवा - - -
एक तो मैं बढ़िन की बेटी। बढ़िन की बेटी
हां दूजे भयूं बदनाम। गली में - - -
एक तो मैं बढ़िन की बेटी। मैं बढ़िन की बेटी
(ओही - -) गली में - - -
एक तो मैं बढ़िन की बेटी। मैं बढ़िन की बेटी
(आ हा हा वाह वाह जो वाह)
दूजे पिया परदेस। गली में - - -

(ओहो हो) गली में गवनवा - - -

(अरे खिड़की के रसते जानी । जानी हमारे साथ निकल चलो

आहा हा हा याद दिहानी हो जानी वाह वाह)

गवनवा मांगे - - -

एक तो मैं बड़िन की बेटी । दूजे भयू बदनाम

गली में गवनवा - - - (वाह वाह भई वाह)

दूसरी तरफ़ :— दादरा

सोने दे बालम हमें न जगाव - - -

बहाव बहै पुरवैया सजनी गयू अंगवना में सोय

सोने दे हमें - - -

मेहंदी तुड़न मैं जो गई लगा छगुनियां में कांट

(अरे ख़ुदा का वासता कल सोजाना आज तो जागो

फिर ख़ुदा जाने वापस) सोने दे हमें न जगा । अरे बालम

सास मोरी मारे ननंद गरयावे सैयां का दरद है रे बालम

सोने दे । सोने दे हमें - - - अरे बालम......

सास मोर...

P. 8629. ग़ज़ल पी० ८६२६

खुलते ही आंख इश्क़ के बीमार हो गये ।

अरे बीमार हो गये ।

पर भी न आये थे कि गिरफ्तार हो गये ।

ज़ाहिद बुराई क्या है हसीनों के इश्क़ में ।

अच्छा मिला जो माल ख़रीदार हो गये ।

अरे ख़रीदार हो गये ।

दिल में बुतों का इश्क़ है लब पर ख़ुदा का नाम

अब क्या बतायें किसके गुनहगार हो गये ।

अरे गुनहगार हो गये ।

जितना खिंचे हम उनसे मोहब्बत हुई सेवा ।

परहेज़ करके और भी बिमार हो गये ।

अरे बीकार हो गये ।

खुलते ही आंख - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

पहले तो शबे वादा तुम मेरा कहा करना ।

मुख़तार हो जो चाहो फिर जोरो जफ़ा करना ।

वोह क़त्ल तो कर बैठे अन्जाम न सोचे कुछ ।

पछता रहे हैं दिल में अब चाहिये क्या करना ।

इन्साफ़ मेरा ऐ बुत अब हाथ में है तेरे ।

बेरहम न हो जाना कुछ ख़ौफ़े ख़ुदा करना ।

बेरहम - - -

पहले तो शबे वादा

P. 8685. दादरा पी० ८६८५

जगाय लावो शाम सोवै अटरिया - - -
हमारे जगाये से सैयां नहीं जागैं
जगाय लाये डाल के गले बहियां
जगाय लावो शाम - - -
हमरे मनाये से सैयां नहीं मानैं
(वाह जी वाह अब तो जागैंगे)
मनाय ला मार के फुलछड़ियां
जगाय लावो शाम - - -
(वाह प्यारी जान क्या गारही हो)

दूसरी तरफ़ :— दादरा

बांके नयनन वाली गोरिया - - -
बाग़ लगायो बगीचा लगायो उसमें राखी क्यारी
उस क्यारी में क्या बोया। इश्क़ मोहब्बत यारी
बांके नयनन - - -
(इसी वजह से सैंकड़ों को पकवान कर दिया है। जान मन)
बांके नयनन - - -
महला उठायो दोमहला उठायो उसमें रखी खिड़की
उस खिड़की में गोरिया बैठी ओढ़े रुपट्टा साड़ी
बाके नयनन - - -
(और भी ग़ज़ब कर डाला)
बाग़ लगायो बग़ीचा लगायो उसमें राखी खिड़की
इस खिड़की में गोरिया बैठी ओढ़े रुपट्टा साड़ी (ओहो)
बांके नयनन वाली - - -

मिस अज़ीज़न और लतीफ़न

P. 5799. रसिया पी० ५७९९

कदम तले आजाइयो कटीले काजल वाले
जाली वो हरो री रङ्गादे, हरो री रङ्गादे
हरो रङ्गादे पीलो रङ्गादे छतियन लाल रङ्गादे—कदम तले - - -
सोनेकी थलियामें जुमना परोसा कदम तले खाजाइये कटीले काजल वाले - -
सोने का गड़वा गङ्गा जल पानी—गङ्गा जल पानी
कदम तले पी जाइयो कटीले काजल वाले—कदम तले आजइयो - - -
पांच पान का बीड़ा लगाया—बीड़ा लगाया
कदम तले चबा जाइयो कटीले काजल वाले—कदम तले - - -
चुन चुन कलियां मैं सेजें बिछाई—सेज बिछाई
कदम तले सो जाइयो कटीले काजल वाले—कदम तले - - -

दूसरी तरफ़ :— रसिया

मैं जालीदार घुंघटा न खोलूंगी—मैं जालीदार - - -
आख़िर भी ससुरा अव्वल भी ससुरा—मैं बेर बेर अब्बा जीना कहनेकी-मैं - -
आख़िर भी सासु अव्वल भी सासू—मैं बेर बेर अम्मा जीना कहने की-मैं - -
आख़िर भी ननदन अव्वल भी ननदन—मैं बेर बेर अब्बा जीना कहनेकी-मैं - -
आख़िर भी जेठा अव्वल भी जेठा मैं बेर बेर अब्बा जीना कहनेकी मैं - - -
आख़िर भी सासु अव्वल भी सासू—मैं बेर बे - - - - मै - - - -

P. 6178 **रसिया** पी० ६१७८

काले पै पीली पड़गई रे लहर्या लादे मोय—लहर्या लादे मोय—काले ---
सुन सुन रे बमना के छोरा रोटी पोदे मोय
तीन दिना गोने के रह गये पहिले खिलादेऊं तोय—कालेपर ---
सुन सुन रे छींपी के छोरा पानी भरदे मोय
तीन दिना गोने के रहगये पहिले पिलादेऊं तोय—कालेपर ---
सुन सुन रे पनवाड़ी के छोरा बीड़ लगादे मोय
तीन दिना गोने के रह गये पहिले चबादेऊं तोय—कालेपर ---
आगे आगे देवर चाले पीछे चाले जेठ
जेठ बिचारा क्या करे घूघट में रह गया पेट—कालेपर ---

दूसरी तरफ़ :— **रसिया**

हमारा रङ्ग रसिया कहां गयो रो हमारा रङ्ग रसिया
घोटे की टोपी ओढ़ मोरे रसिया, कालीरे ज़ुल्फ़ तोरी रसिया-कहां
आंखोंमें सुरमा डाल मोरा रसिया, गोरा रे अजब तोरा रसिया-कहां
मुखड़े में बीड़ा चाव मोरा रसिया, लाखां से अजब तोरा रसिया-कहां
जाली का कुर्ता पहन मोरा रसिया, गोरा रे बदन तोरा रसिया-कहां
पतली सी धोती बांध मोरा रसिया, पतली रे कमर तोरी रसिया-कहां
वसलो का जूता पहन मोरा रसिया, ठोकर रे अजब तोरो रसिया-कहां

——:-०-:——

मिस बब्बन जान

P. 4660 **ग़ज़ल मज़ाक़िया** पी० ४६६०

खुली वो शर्मगीं आखें शबे वसलत जबां होकर—खुलीं
हां मोहब्बत की अदाने दी रहालत मुझको हां होकर
मज़ाये गुफ्तगू की फ़नाफ़न आरी जफ़ा यमायम
हुई खामोश आख़िर क्या मसीहा इलतवा होकर
नगीना बे बहा था ग़ाफ़िल जरूरत थी हिफ़ाज़त की
तेरा नक्श तसव्वर दिल में बैठा पासवां होकर
उम्र जो आख़िर हुई वापस नही आती
ज़रा सोच के फल में है नये सिर से जवां होकर

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

मोहब्बत उस सनम की मुद्दतों से दिल में बसती है
दाख़िल जान क़बज़े में जहां यह बुत परसती है
रिहा गर तेरे को या कि गुलशन में बहार आई
क़फ़स मे दीद गुल क्या वक्त. यह बुल बुल तरसती है
तेरी मस्जिद में न आयें कफ़न दामां पाक दामन से
हमारे मख़्द पर मारा ये उन पै रहमत बरसती है
दुरंगी या इलाही दिखला रही हैं देख ओ क़ातिल
यह दुनिया अखततारी है कि देखो देखो कहती है

———

P. 4661. दादरा पी० ४६६१

ना जाइबे रे बिना झुलनी पलङ्ग पर ना जाइबे रे
ठारे छसर मेरे अर्ज़ करत हैं—टारे छसर - -
ना जइबे रे बिना मोरे झूलाये घर ना जाइबे रे —बिना झुलनी - - -
ठारे जेठा मोरे अर्ज़ करत हैं—ठारे - - -
ना जाइबे रे बिना हिस्सा बटाये घर ना जाइबे रे—बिना झुलनी - - -
ठारी सास मोरी अर्ज़ करत हैं—ठारी सास - - -
ना जाइबे रे बिना सवापे मिटाये घर न जाइबे—बिना झुलनी - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

गाड़ी मेरी रोको ना बे रसिया—गाड़ी मेरी - - - -
गाड़ी चलत मोरा बाला हिलत है बाला बालम का बे रसिया-गाड़ी - - -
गाड़ी चलत मोको भूख लगत है—पेड़े मथरा के बे रसिया—गाड़ी- - -
गाड़ी चलत मोको प्यास लगत है—पानी जमना का बे रसिया—गाड़ी - - -
गाड़ी चलत मोको नींद लगत है—सेज फूलों की बे रसिया—गाड़ी - - -
गाड़ी चलत मोको गर्मी लगत है—पखां फूलों का बे रसिया—गाड़ी - - -

——(-:०:-)——

P. 4734. दादरा पी० ४७३४

तुम जान मन हमारी जानी न कहूँ क्या कहूँ—तु - - - - -
तेरे हाथ में गंडेरी गन्ना न कहूँ क्या कहूँ
तेरी मीठी मीठी बतियां मिठ्ठन न कहूँ क्या कहूँ—तुम जान- - - -
तेरे हाथ में गिलोरी बीड़ा न कहूँ क्या कहूँ
तेरे होटों बिच लाली लछन न कहूँ क्या कहूँ—तुम जान- - - - -
तेरे हाथ- - - - - - - - - तेरी मीठी - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

हटो छुओ न डियर मोरे गोरे गोरे गाल
जी तो यह कह कि शबे हिज्र में समझाते हैं
वायदा बार खुदा सम्र कर वह आते हैं
गुंचे गालों का जो बोसों की निज़ा पाते हैं
कम सिनी कहा दग़ावाज़ कहा तो शर्माते है। हटो छुवो न- - - - -
हिना देख रहा है करम क़ातिल क़ातिल
मुझ को डर है कहीं लड़ जांय न क़ातिल क़ातिल—हटो छुवो- - -
जी तो यह - - - - - - - - - वायदा - - - - - - - - -

——:०:——

P. 6508. ग़ज़ल पी० ६५०८

आशिक़ हुवे हैं अबरूए ख़मदार देख कर ।
रखना हमारे हलक़ पर तलवार देख कर ॥
हम दे रहे हैं इश्क़ की कीमत में नक़द दिल ।
वह नाज़ कर रहे हैं खरीदार देख कर ॥ आशिक ॥
साये से वच कर चलती हर रोज मौत भी ।
तेरे मरीजे इश्क़ को बीमार देख कर ॥ आशिक ॥
क़ातिल मैं अपनी मौत से आगाह होगया ।
शह रग फड़क उठी तेरी तलवार देख कर ॥ आ० ॥
क़ातिल ने तेग़े गरदन रहमत पै फेर कर ।
होली मनाई ख़ून की हर धार देख कर ॥ आशिक ॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

अजब जान उलझन में मेरी पड़ी हुई है ।
कि ज़ुल्फ़ो की दिल पर पड़ी हथकड़ी है ॥
मेरी क़ब्र ठोकर से हमवार कर के ।
कहा कैसी रस्ते में ढेरी पड़ी है ॥ अजब ॥
तेरी कुछ ख़ता है न ख़ंजर की क़ातिल ।
अजल ही मेरी आज रूठी खड़ी है ॥ अजब ॥
अजल ही के हाथों से निकलेगी आख़िर ।
जो तेग़े नज़र तेरी दिल में गड़ी है ॥ अजब ॥
ख़बर ले मसीहा तू रहमत की जल्दी ।
कि बीमार तेरी घड़ी दो घड़ी है ॥ अजब ॥

———o———

P. 6592. भैरवी पी० ६५९२

अहसन से पूछा मैं ने क्यों लफ़ज़ सुख़न को छोड़ दिया
फ़ुर्क़त ने तेरी बेचैन किया आशिक़ ने वतन को छोड़ दिया ॥
अब नज़र किसी पर डाले क्या हम आखों पर तेरी सदक़ा करके ।
जङ्गल में हरन को छोड़ दिया ॥ अहसन ॥
ज़ुलफ़ जो सनमने उलटी रूख़ से—
सूरज ने गहन को छोड़ दिया ॥ अहसन से जो० ॥
सारी उमर मेरी सोते ग़ुज़री
आँख खुली जब रूहने तनको छोड़ दिया ॥ अहसन० ॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

चीर कर सीना जो दिल तो नज़र दिलबर कर दिया ।
दूर एक पहलू से गोया दर्द का घर कर दिया ॥
चांद मेरे चांद की क्या ताब लायेगा भला ।
ज़र्द जब ख़ुर्शेद को सूरत दिखा कर कर दिया ॥
एक तो पहिले ही वह बुत संगदिल मशहूर था ।
कुछ अदूने और उस पत्थर को पत्थर कर दिया ॥
चीर कर०

——:-•-:——

P. 6612. दादरा पी० ६६१२

सांवरिया से हम से नाहें बने रे।

बुलाओ महरा को सजावे डोलिया, बुलवो सइयां को मैं महके चली रे।

बुलावो चार सखियां सजावें सजरयां, बुलावो रसियाको मैं रसमें भरी रे

बुलावो मेहरा को सजावें डोलिया, बुलावो सइयां को मैं गोने चली रे।

बुलावो रंगरेजवा रंग लाकरे जाओ बुलावो सइयांको मैं कैसी बनीरे

दूसरी तरफ़ :— दादरा

लगी कैसे छुटे रामा चाहे जिया जाये। चाहे जिया जाये

जब लागी तब कोऊ न जाने

अब लागि दुख देह। हां रे जिया जाये

दोहा—मुलकिल मौत अड़ें हैं कि मैं जां लेकर टलूं।

और मसीहा को यह ज़िद है कि मेरी बात रहे॥

लोग सब जमा हैं यासीन सही जाती है,

लब जो हिलते हैं तो बस यही सदा आंती है॥

चाहे जिया०

——:-•-:——

P. 6651. ग़ज़ल पी० ६६५१

जुदा वह सर से मेरा ज़ानुए दिलदार हो जाना।

वह वेहोशी में ज़ाहिर मौत के आसर हो जाना॥

जो नाले करता हूं वह ख़ोफ़ बदनामी से कहते हैं।

बुरा है देख राज़े इश्क़ का इज़हार हो जाना॥

लिपट कर मेरी मैयत से वह बोले उफ़रे तेरी नादानी।

हम आये हैं अब ज़रा नींद से हुशयार हो जाना॥

मुझे मश्क़े तसव्वर आप की फ़ुर्क़त में इतनी है।

बस आंखे बन्द करना आप का दीदार हो जाना॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

आंखो में बस गई है उस ख़ुद नुमां की सूरत।

ना आशना बनी है हर आशना की सूरत॥

और आखों के सामने है और आखें तरसती हैं।

इक शोबदा है यारो इस फ़ितने गर की सूरत॥

भरती नहीं है नियत और थकती नहीं है आंखें। आखों - - -

पाई है तूने ज़ालिम उफ़ किस बला की सूरत॥

और अज़मत ख़ुदा की क़ुदरत है देखने के क़ाविल।

इक वे वफ़ा की सूरत इक वावफ़ा की हालत॥

——:-•-:——

P. 6674. दादरा पी० ६६७४

जब काला मोरी गलियों में आया, डिवढी में छाई अंधयारी दय्या
आ हा हा हा। दय्या मैं तो डर गई।

जब काला मोरी डिवढी में आया, आंगन छाई अंधयारी दय्या ॥ आहा०

जब काला मोरे आंगन में आया, कमरे में छाई अंधयारी दय्या ॥ आहा०

जब काला मोरे कमरे में आया, सेजों पै छाई अंधियारी दय्या ॥ आहा०

जब काला मोरी सेजों पै आया, तो ललना पै छाई अंधयारी दय्या ॥ आहा०

जब काला मोरा ललना पै आया, तो जोबन प छाई अंधयारी दय्या ॥ आहा०

दूसरी तरफ :— दादरा

ज़ुलफ़ों में तेल चूए वही यार मेरा

हाथ में कूंडी बग़ल में सोटा, सड़किया पै भङ्ग घोटे वही यार मेरा।

हाथ में रंडी बग़ल में लौंडा, भिनया के साथ सोये वही यार मेरा।

हाथ में पूरी बग़ल में दोना, पतरिया में छेद करे वही यार मेरा।

हाथ में कूची बग़ल में अद्दा, भवजियां के साथ सोवे वही यार मेरा।

हाथ में बटेरिया बग़ल में सोटा, छलवा के साथ सोवे वही यार मेरा।

—:-०-:—

P. 6663. दादरा पी० ६६६३

ताड़ी [illegible] से राजा झूमत आवे। ताड़ी०

[illegible] ताड़ी पेट फुलावे पकी ताढ़ी सोना।

[illegible] मोरे कन्धो भरतार को मारे टोना ॥ ताड़ी०

[illegible] कौन पिलाता है, एजो अब कौन पिलाता है

[illegible] ही के दम तक थो मय नोशों की मय नोशी। ताड़ी०

[illegible] में जो बैठो तो सिंभल कर बैठो

[illegible] नादान की आदत है मिचल जानेकी ॥ ताड़ी०

दूसरी तरफ :— दादरा

[illegible] भई [illegible] बना

[illegible] की [illegible] पड़त है। पीहर भई दय्या



P. 6710. दादरा पी० ६७१०

[illegible] मन [illegible] सिपहिया, जुलम किये जाय मन - - - - - - - - -

[illegible] सिपहिया की बड़ी बड़ी अखियां, छुरमा ग़ज़ब किये जाय मन - - - -

[illegible] सिपहिया की काली काली ज़ुलफ़ें, पगिया ग़ज़ब - - - - -

[illegible] सिपहिया की [illegible] दतियां, मिसिया ग़ुलम - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

सुनो राजा बिन्दी कबहूं न दीन
यह बिन्दी मोरे मैके से आई, सुनो राजा बाहू नन्द ने लीन—सुनो—
यह बिन्दी मोरे छमिया ने भेजी, बाहू राजा सोत ने लीन—सुन—
यह बिन्दी मोरे जोठा ने भेजी, सुनो राजा बाहू भौज ने लीन—सुनो—

P. 7010. पीलू पी० ७०१०

काहे मारे नैना बान सांवरे।
सब कोई बांध ऊदी ऊदी पगिया सांवरे, सैयां बांधे गुलनार—
सब कोई बांधे छुरी कटारी सांवरे
सइय्यां बांधे तलवार सांवरे काहे——

दूसरी तरफ़ :— दादरा

मोहे पिया से मिलादे मोरी गुइयां (बहुत अच्छे)
आंख जिस दम किसी माशूक़ से लड़ जाती है।
पानी अच्छा नहीं लगतान ग़िज़ा भाती है
जिस्म से रूह निकल जाने को घबराती है
रात दिन पहेलूए दिल से यह सदा आती है
अरे हां मोहे पिया से मिला दे मोरी गुइयां।

P. 7095. होली पी० ७०९५

मारत मोरे नैनन मां पिचकारी
दया मैं तो ऐसे खिलाड़ी से हारी—मारत मोरे----
गाढ़ा रंग लगे छतियन मां। कारी लगो पिचकारी
जाओ बलम मोरा अंचरा फटत है तुम जोते मैं हारो—मारत मोरे--
एक हाथ मोरा अंचरा रे पकड़ा दूजे हाथ मोरी सारी
तोजे हाथ मोरी अंगियारे बीच—हां बालम नैनन मां—

दूसरी तरफ़ :— होली

फाग खेलेन कैसे जाऊं सखी री हर के हाथ पिचकारो रहत है
सब को रे चन्द्र रंग में रे बोरी देख हमारी चूंदर गुलनारी रहत है
लाला हमरी सैयां हमरी चूंदर—होलो खेलन कैसे जाऊं——
होली के खिलैया समझ होलो खेलो इस रे बृज राधा प्यारी रहत है
फाग खेलन कैसे जाऊं——

P. 7372. दादरा पी० ७३७२

गगरी मोरी तोड़ी रे बारे भोले
चढ़त अटारी मोरे देवरा ने देख—अरे हां मोरे देवरा न देख
हां शरम से मैं मर गई रे—बारे भोले (ओहो) शरम से मर गई रे बारे--
चढ़त अटारी मोरे सैयां ने देख—चोली बन्द खुल गई रे—बारे भोले
गगर मोरी तोड़ डालो रे——(सुभान अल्लाह)

दूसरी तरफ़ :— दादरा

तोरी मध भरी ग्रंखिया कटारी मारे न—तोरी मध——
जब सुध ग्रावे न—मोह संवरी सुरतिया रे—ज़ियरा माने न—तोरी - - -
ग्रामोरे बमना बैठ मोरे ग्रंगना रे—हां बिचारी दीजियो न
मोरे श्याम का ग्रंगनवा विचारी दीजियो न—तोरी मध——

——:-०-:——

P 7434. पूरबी पी० ७४३४

ग्रब सुध लइयो मोरे राम रे, जाती नगरिया मैं भूली रे डगरिया
क़ैदा में चमके जलई ऐ मछलिया, हां रे चमके तलवार रे
सभामें चमके रे सैयां की पुतलिया—सेजयर पै बंधैया हमार रे
जाती नगरिया में भूली डगरिया—ग्रब सुध लइयो मोरे राम रे
सर एक तोर गगरी रे भरम से रे भारी दूजे भई ग्रब शाम रे
ग्ररे बे गुनकी नैया पार लगादे हां हां लइयों तुमरा मोहम्मद नाम रे—नाम - -
जाती नगरीया - - - - - - - - ग्रब सुध- - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— पूरबी

ऐ बोले रे कोयल एक कारी—नन्हीं नन्हीं बुंदियां मेघा बरस गयो रे—
भीजे री चूंदरिया मोरी सारी, ऐ बोले रे कोयल एक कारी
दिल्ली शहर से बादा बुलायो, इयह बैठा है देवर रखवाली
नारी दिखाये तोरी मैया बहनािया, ऐ हमरा तो पीहर है भारी
यह बोले रे कोयल एक कारी——
ग्रन्बवा की डाली कोयलिया रे कूके, ग्रब लागे रे कोयल मन प्यारी
यह बोले रे कोयल एक कारी——

P. 7464. ग़ज़ल पी० ७४६४

यह दहाने ज़ल्म रह रह कर सदा देने लगे
रफ़्ता रफ़्ता तीर क़ातिल मज़ा देने लगे
ग्राबरू का पास था जब तक वह हालत ग्रौर थी
ग्रब तरद्दुद क्या कि जब दर दर सदा देने लगे
ग्राग दी सैयाद ने जब ग्राशयाने को मेरे
जिन पै तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे
मुट्ठियो में ख़ाक लेकर दोस्त ग्राय वक्त दफ़्न
ज़िन्दगी भर की मोहब्बत का सिला देने लगे
यह दहाने ज़ल्म———

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

देखना साक़ी घटा गुलज़ार पर छाई न हो
मयकी प्याली बन के दुलहन बाग़में ग्राई न हो, देखना—
कौनसा गुलज़ार है वह जिस पर ख़िज़ां ग्राई न हो
कौन सी है वह कली जो खिलके मुर्झाई न हो, देखना—
देख कर ज़ुल्फ़े सियाह को होगया धोका मुझे
मैं यह समझा चांद पर काली घटा छाई न हो, देखना—
मय भी हो मैना भी हो गुलज़ार हो गुल हो तो क्या
जब तलक साक़ी नहीं महफ़िल की ज़ेबाई न हो, देखना—

p. 7656. भैरवीं ग़ज़ल पी० ७६५६

तुम मेरे अगर होते तो तुम मुझ पर फ़िदा होते
वह चाह तुम्हें होती हरगिज़ न जुदा होते
ऐ जान ज़रा सुन लो उल्फ़त का मज़ा जब था
तुम मुझ पै फ़िदा होते मैं तुम पर फ़िदा होता, तुम मेरे—
इस इश्क़ मोहब्बत में आखिर यह हुआ देखो
मैं बन्दा बना रहता तुम मेरे ख़ुदा होते, तुम मेरे—
इक लफ़्ज़ अनलहक़ किस क़दर समा जाता
मनसूर की रग रग में अनवार ख़ुदा होता—तुम - - -
हम तेरे तजस्सुस में बन्द से बने मोला
मिल जाते अगर तुझसे क्या जानिये क्या होते, तुम मेरे—

दूसरी तरफ :— ग़ज़ल

सौदा करेंगे दिलका किसी दिलरुबा के हाथ
इस बावफ़ा को बेचेगें इक बेवफ़ा के हाथ, सौदा—
शिकवे का कुछ जवाब जब उनसे बन पड़ा न
गरदन में मेरे डाल दिये हां री मुसकरा के हाथ, सौदा करेंगे—
वस्ले सवाल सुनते ही पहलू से उठ गये वह
झुंझला के जलबला के बिगड़ कर छुड़ा के हाथ, सौदा करेंगे—

P. 7585. दादरा पी० ७५८५

रूम झूम से घुंगरू बाजे रसिया, गोरि सी मेहरया मेरी रसिया
जैसा तारा चमकता आवे रसिया, काली सी मेहरया रसिया
जैसे बादल गरजता आवे रसिया, रूम झूम से—
ठिंगनी सी मेहरया मेरी रसिया, जैसे गेंदा उछलता आवे रसिया
आहा हा गेंदा उछलता आवे ओहो गेंदा, रूम झूम—

दूसरी तरफ़ :— मिस ख़ुर्शेदजान—कजरी

अखियां ऐसे जियारा मारे कजरा काहे देती हो
अजब रसोली चितवन है मन छीने लेती हो, अखियां - - -
कही मुरव्वत तन मन सगरों लीने लेती हो, अखियां
अजब रसोली चितवन है मन छीने लेती हो, हां, अखियां - - -

P. 7847. ग़ज़ल पी० ७८४७

इलाज की नहीं हाजित दिलो जिगर के लिये
बस एक नज़र तेरी काफ़ी है उमर भर के लिये
ख़ुदा ने तुझको बनाया है नाज़नी क़ातिल
अदा की तेग़ है मोज़ूं तेरी कमर के लिये, इलाज - - - - -
मैं अपनी जान को मुठ्ठी में लेके आया हूं
यह नज़र है तेरी जादू भरी नज़र के लिये, इलाज - - - - - -
जलील दीद ये ख़ूंबार से ख़ुदा समझे
लहू की बूंद न छोड़ी दिलो जिगर के लिये, इलाज - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— मिस अनवरी जान— ग़ज़ल

मुझे बावर तो नहीं है गो वस्ल हो लेकिन मुझे बावर तो नहीं है
हां दिलमें तो है उनकी ज़बां पर तो नहीं है
माशूक़ का जब नाम लिया मुझसे किसी ने
घबरा के यह पूछा कि सितमगर तो नहीं है, गो वस्ल - - - -
क्या हुस्न से ईमान भी लेलेगा किसी का
माना कि वह यूसुफ़ है पैग़म्बर तो नहीं है, गो वस्ल - - - - -
फिर क़स्द सनम ख़ाने किया दाग़ जो तूने
कम्बख़्त तेरे पैर में चक्कर तो नहीं है, गो वस्ल - - - - - -

मिस बाल कुमारी

P. 8576. रसिया पी० ८५७६

कटारी गोइयां मारे नैनां मतवरिया - - - - - - -
हाय कटारी गोइयां - - - - - - - - - - - -
तुम हम दोनों नींद के मारे हां। चलो पिया सो रहें
(अरे चलो सो रहें। क्या लेकर) चलो - - - -
ऊंची अटरिया। कटारी गोइयां मारे - - - - - - - - -
माथे बेंदी नैन बिच कजरा। झलक दिखला जा बांकी गुर्जरिया
कटारी गोइयां मारे नैनां मतवरिया - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

कमर लचके गाड़ी धीरे से हांको। कमर लचके
गाड़ी तेरी रंग रंगोली बैल मज़ेदार (बेला)
हांकने वाला चल दिया तुम चलो हमारे साथ
गाड़ी धीरे ओहो गाड़ी
कमर लचके गाड़ी धीरे से हांको
(धीरे धीरे चला रहा हूं)
बरहमन बेचे दाल चावल। बरहमनी बेच पान
लौंडो देती अपना जोबन मुफ़्ती का बदनाम
(चलो भाई यह मुफ़्त में जा रहा है)
कमर लचके गाड़ी धीरे से हांको
(कमर नाज़ुक है लचक रही है)

———:०:———

मिस बुल बुल

P. 6528. ग़ुज़ल पी० ६५२८

कहो बुल बुल से ले जाये चमन से आशियां अपना
न छोड़ गुलरुख़ां अपना बनाया ख़ानमां अपना
मेरा माशूक़ लाखों में हज़ारों में वह आला है
यही अन्दाज है इसकी कि दुनिया से निराला है
पकड़ कर ले के भूला कर नज़र पर भी वह फला है
अजब आंखें अनो प्यारी गला सांचे में ढाला है

दूसरी तरफ़ :— भैरवी

उठो पिया जागो रे अकेली डर लागे। अकेली डर - - - - - -
चुन चुन कलियां मैं सेजें बिछाईयो
अरे इतने में हो गई भोर रे, अकेली डर लागे - - - - -

—— (:०:-) ——

मिस दुलारी

P. 6471. दादरा पी० ६४७१

सैयां तोरी गोदी में गेंदा बन जाऊंगी, गेंदा हां गेंदा बन जाऊंगी
पिया तोरी गोदी में गेंदा बन जाऊंगी सैयां - - - - - - (ओ हो)
जो मोरे सैयां को भूख लगेगी पूरी कचौरी जलेबी बन जाऊंगी
सैयां तोरी गोदी - - - - - - (बहुत अच्छे)
जो मोरे सैयां को पियास लगेगी गंगा जमना तिरबैनी बन जाऊंगी
सैयां तोरी गोदी - - - - - - - (ओ हो)
जो मोरे सैयां को नींद लगेगी अरे तोशक तकिया मैं गद्दा बन जाऊंगी
सैयां तोरी गोदी में गेंदा - - - - - - - - - -
गेंदा बन जाऊंगी ओ सैयां मैं फुलगेंदा बनजाऊंगी (वाह दुलारी जान)

दूसरी तरफ़ :— दादरा

बड़ी लम्बी सफ़र को सैयां गयो रे, बड़ी - - - - - - - - - -
जेठ लाये लाड्डू देवर लाये पेड़ा सैयां लाये रे बालूशाही कीटिकिया
बड़ी लम्बी सफ़र को - - - - - - - - - - -
अरे लाड्डू भो टूट गयो रे पेड़ा बिखर गयो
मज़ा करे रे बालूशाही कीटिकिया
बड़ी लम्बी -
जेठ लाये बुढ़िया देवर लाये जवनिया मज़ा करे रे साढ़े बारह बरस की
अरे बुढ़िया तो मर गई जवनिया निकल गई
मज़ा करे रे साढ़े बारह बरस की
बड़ी लम्बी सफ़र को सैयां गयो री

P. 6529. ग़ज़ल पी० ६५२९

दिल बहुत बेचैन है ओ बेवफ़ा तेरे लिये।
मिट गया तेरा असीर मुबतला तेरे लिये॥
हाय ना कामई उलफ़त वाय मजबूरी ऐश।
ग़ैर से करनी पड़ती है इलतजा तेरे लिये॥
जो न सहनी थी सही हमने मुसीबत हिज्र की।
जो न करना था किया ओ बेवफ़ा तेरे लिये॥
होश आते ही मिलाना था हमीं को ख़ाक में।
क्या इसी दिन के लिये थी दुआ तेरे लिये॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

आंखों में समाजावो पर्दे में रहा करना।
दरया भी इसी में है मौजों में रहा करना॥
यह पहिला किरिशमा है इस चर्ख़ सितमगर का।
आज इससे मिला करके कल उससे जदा करना॥
बीमारे मोहब्बत को गर होशमें लाना हो।
ज़ानो पै लिटा करके दामन से हवा करना॥
हम बसमें हैं बुलबुल के हर डाल पै चहकेंगे।
तुम बुए वफ़ा बन कर फूलोंमें रहा करना॥

P. 6613. ग़ज़ल पी० ६६१३

गुले शबाब खिले हुस्न थार पैदा हो।
इलाही जल्द चमन में बहार पैदा हो॥
कहो तो काट कर सर रख दूं उनके क़दमों पर।
किसी तरह से इन्हें एतबार पदा हो॥
वह रश्के गुल है मेरे साथ साथ गुलशन में।
गुले रक़ीब में क्यों कर न ख़ार पैदा हो॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिलकी लगी शबे वसाल अपना असर दिखायेगी।
लेटोगे बनके लाख तुम नींद कभी न आयेगी॥
हाय नींद कभी न आयेगी
जिसने मिटाया यूं इश्क़ में अपनी जान को।
नीची नज़र तेरी उसे ख़ाक में क्या मिलायेगी॥
हाय ख़ाक में क्या मिलायेगी
चाहे ग़मे हबीब में क्यों न करूं मैं जी फ़िदा
एक वही जो चीज़ है वह मेरे काम आयेगी
हाय वह मेरे काम आयेगी

P 6652. दादरा पी० ६६५२

नन्हीं नन्हीं बूंदिया रे सावन में मेरा झूलना सावन में - - - -
एक झूला डाला मैंने अम्बवा की डाल में
लम्बी लम्बी पेंगें रे झूले पर मेरा झूलना—झूले पर- - -
एक झूला डाला मैंने गङ्गा के घाट पर
काली काली बदली रे झूले पर मेरा झूलना—झूले पर - - -
एक झूला डाला मैंने (ओ हो) सइयां की गोद में
गोरी गोरी बैंयां रे सैयां से मेरा रूठना—सैइयां - - - -
एक झूला डाला मैंने साग़िर की याद में
छोटी बड़ी कूंजी रे झूले पर मेरा झूलना—झूले
नन्हीं नन्हीं बूंदिया रे सावन में मेरा झूलना

दूसरी तरफ़ :— दादरा

हाफ़िज ख़ुदा तुम्हारा जाओ दिलबर दिल आरा

सीने पर आज मेरे ख़ंजर चला दुधारा। हाफ़िज---

इलाही ख़ैर करे रंग आज बेढब है।

टपक रहा है कई दिन से आबला दिल का॥

जो हाल कूचये जाना का लोग पूछेंगे।

कहूंगा लुट गया रस्ते में क़ाफ़िला दिल का॥

भूल न जाना हमको दिल आरा

जीने से वरना होगा किनारा

ज़िंदगी ने गरकी वफ़ा दिल रुबा तुमसे मिलेंगे आ

हाफ़िज़ ख़ुदा----------------

P. 6694. भजन पी० ६६९४

निकसत प्राण काया काहे रोई—छोड़ चले निर्मोही।

मैं जानूं काया संग चलैगी—या कारण मैंने मल मल धोई॥

ऊंचे नीचे मन्दिर छूटे—गाय भैंस घर घोड़ी।

और कुलवन्ती त्रिया छोड़ी—छोड़ी दो पुत्र की जोड़ी—छोड़ चले---

चार जने के कांधे बैठे—चढ़े काठ की घोड़ी।

ले मुर्दा मरघट पर रातो—फूंक दई जैसे फागन होली—छोड़---

दूसरी तरफ़ :— भजन लावनी

नाम रूप से परे हैं वह जगदीश अनूप।

जैसी मनकी भावना जैसो देख निज रूप॥

तोते की बोली को समझ कृष्ण उपासक राधेश्याम।

राम चन्द्र के भगत पुकारे सीताराम भई सीताराम॥

माली कहने लगा कि यह तोता कहता है जामन सेव।

बज़ाज बोल उठा कि नहीं जी छींट चिकन लट्ठा तंज़ेब॥

दर्ज़ी बोला घुंडी तुक़मा—कलियां चोली दामन जेब।

सुनार समझा इस बोली को हार कड़े झांझन पाज़ेब॥

पंसारी ने समझ लिया कि शामिश गोले पिसता बादाम।

राम चन्द्र के भगत पुकारे सीताराम भई सीता राम॥

P. 6711 ग़ज़ल पी० ६७११

क्या ख़बर थी राज़दिल अपना अयां हो जायेगा

क्या ख़बर थी आह का शोला धुआं हो जायेगा

हाय अब क्यों कर जीऊंगी प्यारे अख़्तर के बग़ैर

यह न समझी थी कि दुशमन आसमां हो जायेगा

क्या ख़बर थी राज़ दिल अपना अयां हो जायेगा

सामने हो जब तलक जी भरके प्यारे देख लूं

देखना भी फिर नसीब दुशमनान हो जायेगा---

दूसरी तरफ :—मिस दुलारी और मास्टर जमाल नाटक महाभारत

सेवा चमार कहता है—ओहो बड़े महाराज पूजा में बैठ भी गये आरती का समय हो गया! जो मैं चमारों वाले कुंए पर जाऊंगा तो और भी देर होगी—इसी कुवें से एक डोलची भर लूं कोई देखेगा तो मारेगा ओ हो! काहे को मारेगा!

कह दूंगा कह जोड़ कर जो मारेंगे लोग

अभी लगाना है हमें नारायण का भोग

(सवाल व जवाब)

कौन है रे कुंए पर! मैं हूं जी सेवा

कौन सेवा! चेता चमार का बेटा—

तुझे इस कुंए पर चढ़ने का किसने हुक्म दिया है?

किसी ने भी नहीं।

तू मूए ढेड—क्या तेरी आंखें फूट गई थीं? देखता नहीं, कि मन्दिर का कुवां है न कि चमारों का कुवां?

यह तो ठीक है पर पानी चमारों के लिये नहीं चाहिये था।

चमारों के लिये नहीं चाहिये था तो क्या चमड़े की डोलची से ब्राह्मणों का मुंह धुलाना था?

नहीं बाई! ठाकुर जी को भोग लगाना था।

क्यों नहीं अब तो गडरिये भी प्रयाग को जाने लगे—मुये नीच क़ौम भङ्गी चमार सब ठाकुर जी को भोग लगाने लगे।

भगवान के लिये एक डोलची भर लेने दो।

जाजा! वह रहा चमारों का कुआं वहां से जाकर पानी भरले।

भला होगा—ग़रीबों पै राखो दया—

अरे जारे कमीने मुए बेहया—भला होग - - -

समझाऊं री अभी पिटवाऊं री अभी! करो करो तुम मन चाही

कैसी कैसी ढिटाई दिखाई तुझे—अरे ढीट न लाज आई तुझे।

हुई यह ख़ता लो जूते गिन गिन के मारो।

भला होगा! ग़रीबो पै राखो दया।

P. 6954 भजन पो० ६९५४

हां मैया हमें दे बतलाय कहां गये राम लखन सीता

आवत देखा भरत को आरति लीनी सजाय।

तुरन्त आरति उतार के गोद लीनी बिठाय॥

भरत कहे माता—कहां गये राम लखन सीता

राज करो गद्दी पर बैठो मत करो सोचा विचार।

अब का पूछत बार बार कि होगया होनहार॥

"हुक्म दिया बन के जाने का" कहां गये - - -

सुन माता के वचान यह भरत गये घबराय।

नैनन उनके नीर भरा मुख से निकलत हाय॥

जी अब हम कैसे विधाता—कहां गये - - -

पिता हरन भैइया का बिछुड़न यह दुख सहे न जाय।

एक दिन रोते काटते बारह बरस बनवास।

भेज देवो बनको ऐ माता—कहां गये - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

चरणों पर आप के ही निकले यह जान मेरी।
मिट्टी लगे ठिकाने करुणा निधान मेरी ॥
भगवन मुझे समझना तुम दूसरा सुदामा।
बिगड़ी हुई दशा है उसके समान मेरी ॥
भगतों की आप ही गर फ़रयाद न सुनेंगे।
फिर और कौन सुनेगा यह दास्तान मेरी ॥

P. 6977. बिहाग प्रथम भाग पी० ६९७७

करम गत टारे नांहि टरे—करम गत - - -
मुनी वशिष्ट से पंडित ज्ञानी—सुध से लगन धरी
सीता हरन दशरथ का मरन बनमें बिपत पड़ी—करम - - -
कहां वो फंदे—कहां वो पारो कहां मृग चारी
सीता को हर लेगयो रावण स्वर्ण लङ्क जरी—करम गत - - -

दूसरी तरफ़ :— बिहाग दूसरा भाग

करम गत टारे नाहिं टरे—करम गत - - -
नीच हाथ हरीचंद बिकाने—बली पाताल धरी
कोट गाय नित पुन करत हैं—गिरगट जून धरी-करम - - -
पांडु जिनके आप सारथी तन पे बिपत पड़ी।
दुर्योधन को गर्भ घटायो बिलकुल नास करी—करम - - -
राहू केत और भान चन्द्रमा—कुल पर बिपत पड़ी
कहत कबीर सनो भाई साधी होनी होके रही—करम - - -

P. 7011. दादरा पी० ७०११

हम का खर्च दिये जइयो जब ही तुम जइयो विदेसवा का
जब रे पिया परदेस सिधरियो हमरी सुध न बिसरइयो।
जब ही - - - - - - -
सास ननद मोरी जनम की बैरन उन का अलग किये जइयो।
जब ही - - - - - - -
छोटा देवरवा बारे का छलबलिया उनका संग लिये जइयो।
जब ही - - - - - -
छोटी ननदिया महा की छिनलिया उनका गान किये जइयो।
जब ही - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

आओ सखी आओ देखें महन्दी की बहार।
सास मेरी बोली कि बहू घरमें पका साग (ओ हो हो हो)
मैं भोली समझी कि बहू घरमें लगा आग (वाह वाह)
अरे वाह रे भोली अरे वाहरे नन्हों।
सास मेरी बोली कि बहू चावल फटक ले (आ हा हा हा)
मैं भोली समझी कि बहू चावल पटक दे (वाह वाह)
अरे वाह री भोली अरे वाह री नन्हों।
सास मेरी बोली कि बहू कपड़े धुलाला (आ हा हा हा)
मैं भोली समझी कि बहू कपड़े जलाला (आहा हा हा)
अरे वाह री भोली अरे वाह री नन्हों।
आओ सखी - - - -

P. 7032. पीलू पो० ७०३२

आज दिलवर को गले से लगायें गे
दिल की लगी बुझायें गे सोने से सीना मिलायें गे
आज ----
गुल बेख़ार के लबे दिलदार के
दिल भर भर के बोसे उड़ायें गे। आज ----
जल्दी जाकर मिलूं मैं दिलदार से।
अपने ग़म ख़्वार से गुल बेख़ार से
हां हो न ऐसा कि होजाऊं मिस
डीयर को गोरे गालों के दूं जाके किस
हां जाके गुलशन में दिलको बह लाये गे। आज ---
सीने से सीना ------

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

फिर धड़कता है दिले राज़ ख़ुदा ख़ैर करे।
उन से हो जाये न तक़रार ख़ुदा ख़ैर करे॥
महरबान होते हैं या मुझ पै ख़फ़ा होते हैं।
नशे में आते हैं सरशार ख़ुदा ख़ैर करे॥ फिर ---
ज़ुल्फ़ें बिखरी हुई फैला हुवा काजल देखो
वह हुये ख़्वाब से बेदार ख़ुदा ख़ैर करे॥ फिर ---
महरवान होते ---

———

P. 7096. भैरवी पो० ७०९६

मदीने में मोर (पिया) सैयां वाला है रे।
भर दे जामको सरसे अहमद—अरे साक़िये को सर वाला है रे। मदीने --
अमामा खड़े बांधते थे शाह सरफ़राज़
जबरईल से फ़रमाया कि ऐ मोनस व दम साज़
इस परदे ओ हिज्र से तुम्हें आतो है आवाज़
देखो तो उठा कर वहां पोशीदा क्या राज़
जबरईल ने की अर्ज़ कि क़ुदरत मुझे क्या है
महबूब ने फ़रमाया कि जा मेरी रज़ा है
अरे मदीने में मोर सइयां बाला है

दूसरी तरफ़ :— भैरवी

फ़ना कैसी बक़ा कैसी जब उसके आशना ठैरे।
कभी इस घरमें जा निकले कभी उस घरमें आ ठैरे
मोहम्मद मुस्तफ़ा और हज़रते यूसुफ़ से क्या निसवत
वह मतलूब ज़लेख़ा है वह महबूब ख़ुदा ठैरे। फ़ना ---
चहारुम आसमान में रह गये हैं हज़रत ईसा
मगर अर्शे मवल्ला पर मोहम्मद मुस्तफ़ा ठैरे। फ़ना
फ़ना फ़िल्ला जब हम होचुके तो हम हो हम हैं
कहीं बन्दा बने अपने कहीं अपने ख़ुदा ठैरे। फ़ना
भला किस तरह से गरदिश में आये किश्तोये उम्मत
हुसेन अब्न अली दहशत से कोई ना ख़ुदा ठैरे। फ़ना

——:-०-:——

P. 7097. दादरा पी० ७०९७

अब कैसे जोवना बचाओगी गोरी।

फागन मस्त महीने की होरी॥

सखा सब संग लिये फिरत हैं, बाहर निकसत डरपें री भोरी -अब

सब नारन से दुलारी बिनती करत है, बाहर निकसो तो लाज गहोरी-अब

फागन मस्त महीने की होरी --- अब ---

दूसरी तरफ़ :— होली

मेरा मन मोहन ले गयो माई

मैं अपने घर बैठी--अचानक मुरली आन सुनाई

लागत बान तन जैसे कारी--जिया बिच गयो है समाई

घाव नहीं देत दिखाई--मेरा मन ---

तनक छिन मत हीन भई है सुध बुध गई है भुलाई

श्याम श्याम रट लाग रही है व्याकुल होय उठ धाई--मेरा ---

मैं वारी सइयां व्याकुल हो उठे धाई

कहां वे कुंवर कन्हाई--मेरा मन ---

P. 7208. भैरवीं पी० ७२०८

कल वह दामनगीर थे ग़म आज दामनगीर है—ग़म आज—

ख़ुवाब तो अच्छा था लेकिन क्या बुरी ताबीर है—क्या बुरी —

कल चमन की चार कलियाँ चुन के मुजरिम बनगये-चुनके ---

आज सहरा में मेरा हर ख़ार दामन गीर है-ख़ार दामन ---

सर बसर पहुंचेगे इक दिन जलवा गाहे नाज़में-जलवा —

उसके मिलनेके लिये यह आख़री तदवीर है-आख़री ---

दिल मेरा तो चाहता है उसके मिलनेके लिये—उसके ---

कुछ अदूका ख़ौफ़ है कुछ शर्म दामन गीर है-शर्म ---

दूसरी तरफ़ :— कलंगड़ा

बेख़ुद ऐसा किया ख़ौफ़े शब तनहाई ने।

सुवह से शमय जलादी तेरे शैदाई ने॥

हुस्ने क़ामत की जो हद रक्खी थी रैनाई ने।

और जो हाथ बढ़ाया उसे अगंड़ाई ने॥

नशाये हुस्न जवानीका अरूज इतना है।

हाथ उठाकरके बताया तेरी अगंड़ाई ने॥

नासैर की क़ब्र पर अबरत के लिये लिखवालो।

तूल खींचा है यहां तक शबे तनहाई ने॥

——:०:——

P. 7209. भैरवी पी० ७२०६

नाहें पड़त मोको चैन—तड़पत हूं दिन रैन रे सांवलिया।
तुम बिन हमको कलन पड़त है। तुम बिन प्यारे कल - - -
नीर बहत दोऊ नैन सांवलिया—नाहें पड़त - - -
तुमविन प्यारे कलन पड़त है नीर बहत दो नैन रे सांवलिया

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

मतवाले नैनवा ज़ुलम करें।
आखें यह कह रही हैं कि दिलनें किया ख़राब।
दिल कहरहा है आंखों ने हम को डबो दिया॥
बिगड़ा किसीका कुछ नहीं इस दर्दे इश्क़में।
दोनों की ज़िदने खाक़में हम को मिला दिया॥
तू है मशहूर दिले आज़ार यह क्या, तुम पर रहता है मुझे प्यार यह क्या
जानता हूं कि मेरी जान है तू—औरमें जानसे बेज़ार यह क्या॥
तेरी आंखें तो बहुत अच्छी हैं—सब इन्हे कहते है बीमार यह क्या।

P. 7233. होली फाग पी० ७२३३

बिन बादर बिजली कहां चमकी। बिन - - -
ना वही गर्जे ना वही बरसे
गोरियाके माथे बिन्दया चमके—बिन बादर - - -
ना वही —

दूसरी तरफ़ :— होली

जमना तट राम खेलें होरी—जमना तट - - - - -
दौड़ दौड़ पिचकारी चलावत
अबीर गुलाल भरे झोली
जमना तट राम खेलें होरी
दौड़ दौड़ - - - -

P 7234. ग़ज़ल पी० ७२३४

गिलासोंमें जो डूबे फिर न उभरे जिन्दगानी में।
हज़ारों बह गये इन बोतलों के बन्द पानी में॥
ना कर बरबाद अपनी ज़िन्दगी बोतल के दीवाने।
वह काटेगा बुढ़ापे में जो बोता है जवानी में॥
यह दारू का प्याला मौत का कड़वा प्याला है।
मिला है ज़हर शर्बत में छिपी है आग पानी में॥
गिलासो में जो - - - - - - - -

दूसरी तरफ :— ग़ज़ल

यूं ज़ुलम कर न ज़ालिम लुत्फ़ व करम के बदले।
एक दिन तुझे मिलेंगे ज़ुल्मो सितम के बदले॥
इस ज़ुल्म नारवा की आख़िर सज़ा मिलैगी।
दोज़ख़ का ख़ार होगा बाग़े अरम के बदले।
दौलत न साथ देगी हशमत न पास होगी।
कोड़े कफ़न में होंगे दामों दरम के बदले॥
इस ज़ुल्म ना - - - - - - - -

P. 7373 **ग़ज़ल** पी० ७३७३

यह वह आखें नहीं जिनमें हयाकी क़सम कहीं नामको महरो वफ़ा भी नहीं
यह वह जादू है जिसका मारा हुवा आज तलक तो जिया ही नहीं ॥
मेरी बालें से उठ कर तबीब तूजा न सतारे ख़ुदा की क़सम न सता ।
यह कह जो दिया है सिवाय क़ज़ा-मेरे मज़ की कोई दवा ही नहीं ॥
कभी इतना न पूछा कि हाल है क्या, तू उदास है—दिलको मलाल है क्या
न नसीब का है न तुम्हारा गिला अजी सोधा हमार ख़ुदा ही नहीं ॥
अभी हमको उठाने बुतों के सितम, अभी बहुत उठाने हैं रंजो अलम ।
जो मरूं भी तो हिज्र में कैसे मरूं—मेरे हिस्से में आई क़ज़ा ही नहीं ।
यह वह आखें है जिसमें हया की क़सम - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

तने मरीज़ में दमका शुमार बाकी है
न जायें आप अभी जाने ज़ार बाकी है
जो आज पी हो तो साक़ी हराम शयपी हो
यह कलकी पी हुई मयका ख़ुमार बाक़ी है
उसी को जाके यक़ीनो वफ़ा दिला ज़ालिम
अगर किसी को तेरा एतबार बाक़ी है
गया शबाब कमर ख़म हुई ज़ईफ़ी में
ग़रूर ख़तम हुवा इनक्सार बाक़ी है
तने मरीज़ में दमका शुमार बाकी है ।

P. 7435. **सोज़** पी० ७४३५

दिल साहब औलाद से इन्साफ़ तलब है ।
दुनियां में पिसर बाप की ज़ीनत का सबब है ।
औलाद का होना भी बड़ी बख़्शीश रब है ।
यह सच है मगर दाग़ भी बेटे का ग़ज़ब है ॥
रोने की अजब ज़ुल्म नया करती है तक़दीर ।
शब्बीर को अकबर से जुदा करती है तक़दीर ॥ दिल० ॥
बेटा भी वह बेटा है तसवीर पयम्बर ।
इख़लाक़ में मानिन्द हुस्न ज़ोर में हैदर ॥
ख़ुश लहज़ा ख़ुश ख़स्लत व ख़ुश बज़े तरहदार ।
माशूक़ यहां रौनक़े दिल आशिक़ दावर ॥
इनसाफ़ से साहब औलाद बतावें ।
किस तरह से फ़रज़न्द को मरने की रज़ादें ॥

दूसरी तरफ़ :— **सोज़**

जब कि ख़ामोश हुई बुल बुल बुस्ताने हुसीन ।
तोर से आन बंधा अकबर नादान हुसीन ॥
कहा बानो ने कि फ़रज़न्द हैं दामाने हुसीन ।
लगी कहने हुवा बरबाद गुलिस्ताने हुसीन ॥
ज़ल ज़ला हाय ग़ज़ब चौदह तबक़ में आया ।
बोवयों दीन को छलतान शफ़क़ में आया—जबकि

P. 7436. दादरा पी० ७४३६

छोटी से बड़ी हुई बे धीरज धरो बालम ।
जैसे अम्बवा में अरे अम्बिया लगत हैं ।
वैसे अरे रसीली हुई बे धीरज धरो बालम ॥ छोटी - - -
जैसे बबूल में अरे कांटा लगत है ।
वैसे हाय कटीली हुई बे धीरज धरो बालम ॥ छोटी - - -
जैसे बिसतया टकलिया भजत है ।
वैसे छमा छम हुई बे धीरज धरो बासम ॥ छोटी - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

नजरयन से मार मार हमका बुलावें
पैसा कौड़ी कुछ भी नहीं ख़ाली जेब हिलावें—नजरयन से
हमसे कहन सैयां झुलनी गढ़ा देवें—झुलनी उलनी कुछ भी नहीं ठेंगां दिखावें
आ हा हा हा—नजरयन से - - -
हमसे कहन सैयां पेड़ा खुवा देवें—पेड़ा लड्डु कुछ भी नहीं शीरा चटावें
नजरयन से - - -
हमसे कहन सैयां मिस्सी मंगा देवें—मिस्सी विस्सी कुछ भी नहींराखी फंकावें
नजरय से - - -

——:-०-:——

P. 7465. बनारसी कजरी पी० ७४६५

कि जनिया बहुत दिननसे नजरमां हमरे खटकत बादटूना - - - -
आओ गले लगजाओ हमारे झटकत बाद टूना - - - - कि - - - -
ओढ़ उढ़निया कजरवा खटकत बादटूना—कि जनियां - - - - -

दूसरी तरफ़ :— बनारसी कजरी

कि जनिया मान कहनवा मोरा जबनवा दिन दिन बीतो जाय - - -
हम तो झूलें संग हिंडोला गरवा बइयां डाल—कि जनियां - - - -
कहे मख्वत हविस निटाले क्यों घबराती हो-कि जनिया कि
जनिया - - - - -

——(-:०:-)——

P. 7586. दादरा पी० ७५८६

डाल गले बयां में वारी वारी जाइयां—डाल - - - - -
ऊंची अटरिया प सैयां बुलावे पतली कमरियासौ बल खावे
मैं थाक थाक रहियां मैं थाक थाक रहियां
मैं रोय रोय वारिआं डार गरे वय्यां डार गरे वय्यां - - - - -
आखें यह कह रही हैं कि दिलने किया ख़राब
दिल कह रहा है आंखों ने हमको डुबो दिया
बिगड़ा किसी का कुछ नहीं दर्दे इश्क़ में
दोनों की ज़िदने ख़ाक में हम को मिला दिया
डार गरे बैयां हां डार,—मैं वारी - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

समुख रसीली प्रिया रंगीली सुकुमारी
अलबेली उनमत नवीली बेमल चन्द्र की उजियारी
समुख रसीली - - -
बोल अमोल कपोल वति मृगनयनी परत पैनी प्यारी
री नहीं जो ऐसी नारी सो नर देह वृथा धारी—समुख - - -
बिखरे केश बेश अती सुन्दर खुली कंच की सी डोरी
हलकी मलमल की साड़ी में झलके कुछ गोरी गोरी
हां हां समुख रसीली - - - -

——(०)——

P. 7657. भजन बिहाग पी० ७६५७

हे शाम कौन गली गए बतादो सखी - - -
गोकुल ढूंढा बिन्द्राबन ढूंढा ढूंढ फिरी चारों धाम
हे शाम कौन गली - - कौन गली

दूसरी तरफ़ :— भजन

कब मिल्यो रघुनाथजी हमारे - - - -
जैसे मिले प्रभु प्रहलाद भगतको अरे खंबा फाड़ हिरनाकुश मारे
कब मिल्यो - - - -
जैसे मिले प्रभु द्रोपदी सत्ताको अरे खीचंत चीर दुसासन हारे
कब मिल्यो - - - -
जैसे मिले प्रभु सूरदास को उगरत नैन मानो क्यों पसारे
कब मिल्यो - -

P. 7707. भजन पी०

दुनियां में जब धन पाना कल के लिये बचाना - - - -
दौलत भी है एक खेती जो बोए उसे फल देती
रख धन जो हो फल खाना कल के लिये बचाना - - दुनियां
बुरे दिन में न भाई और न जाया काम आता है ।
फ़क़त अपना कमाया और बचाया काम आता है
सभी हंसते हुए मिलते हैं जबतक चार पैसे हैं
न पूछेगा कोई भी मुफ़लिसीमें आप कैसे हैं
मतलब का यार ज़माना कलके लिये बचाना - - - दुनियां
नहीं रहती है मछली भी नदी जब सूख जाती है
जो दौलत है तो तुम दूलहा हो और दुनिया बराती है
जो कलसे बेख़बर होकर नहीं हैं आज आपे में
वह दर दर भीख मांगेगा ग़रीबी और बुढ़ापे में
हां मत दौलत मुफ़्त गंवाना कलके लिये बचाना—दुनिया - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

अब इन गलियन नहीं आवना - - - - - - - -
दुखित होत सरबस लिखी आपन—अन्तकाल यहू भावना
रे इन गलियन नहीं आवना - - - दुखित
मात पिता नारी सुत भ्राता—निर्कट भवन सुहावना
अब इन गलियन नहीं आवना - - -
माता पिता - - - अब - - -

——०——

P. 7848. दादरा पी० ७८४८

मैं क्या करूं राम मुझे बुड्ढा मिला री-ऐ अल्ला बुड्ढा - - - -

सब चले शिकार को मेरा बुड्ढा चलारी—सब बाध हाथियार

भैया फुकनी बांधे री—

सब चले शिकार मेरा बुड्ढा चलारी—सब लाये शिकार मुवा

कव्वा लायारी-मै क्या करू राम - - - -

अरे मेरे घरमें बैरी मुवा देखन सकेरी—मूछी उलझें बेरी में

भैया झुम्झू झूलें री—मैं क्या करू राम - -

सब चले नमाज़ को मेरा बुड्ढा चलारी-सब पढ़ें नामाज़ मुवा

औंधा पड़ारी—(वाह बुड्ढा)

दूसरी तरफ़ :— दादरा

अल्ला मेरी तौबा ख़समके न जाऊंगी—हां - - - - -

ख़सम खिलावे पूरी कचोरी मैं यारकी बासी रोटी खाऊंगी-अल्लाह - -

ख़सम उढ़ावे शालदुशाले यारको मैं कम्बलो उढ़ाऊंगी - अल्लाह - -

ख़सम सुलावे लाला पलंग पर यारको मैं टूटी खाट लेटूंगी-अल्लाह - -

ख़सम खिलावे पूरी कचौरी यारकी मैं वासी रोटी खाऊंगी

ख़सम उढ़ावे शाल दुशाले - - - - अल्ला मेरी - - - -

P. 8025. दादरा सावन पी० ८०२५

पाटकी चोलिया सिलायदे देवरा जोगिया

छतिया छतीवा बन्दवा लागे देवरा जोगिया

चोलिया पहन के हम गई बजरिया

रुजवा गिराला मुर्झाये देवरा जोगिया

हमरा जी हुआ सहबवा का नोकर मांगिया का चाकरा

टहली टहली रुसवाये देवरा जोगिया

दूसरी तरफ़ :— दादरा

करो मोसे बतियां नैना मिलाके-नना मिलाके करो मोसे - - -

मेरे यहां बालू त्याके घरमें-काटोगे सारी कहां प्यार रतियां

दिल तुझे दे चुके अब जान रहे या न रहे-जिन्दगी का कोई सामान रहे या न रहे

अच्छा वफ़ा पिया जाओ वहीं तुम जो हत हुई हैं सोत तोरी बतियां

नैना मिलाके करो मोसे बतियां

—:०:—

P. 8026. ग़ज़ल पी० ८०२६

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिलमें है

देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिलमें है

रह बर राहे मुहब्बत रह न जाना राहमें

लज्ज़ते सहरा नूर दी दूरये मंज़िलमें है

वक्त आने दे बतादेंगे तुझे ऐ आस्मां

हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिलमें है

ऐ शहीदे मुल्क व मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार

अब तेरी हिम्मत का चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

आप पहलूसे उठे यहां हालते दिल और है
हुक्म ज़ब्त आह व नाला एक मुश्किल और है
क़ब्रतक पहुंचाओ मेरी लाश को ऐ जाने जान
क्यों फिरे जाते हो थोड़ी दूर मंज़िल और है
ग़ैर की बू दम बदम आती है जाती रश्क है
आज शायद तेरे पहलूमें कोई दिल और है
ख़ून होकर बह गया दिलरह गया पैकाँ तेरा
मुझको तसकीन है कि मेरे साथ एक दिल और है

P. 8151.　दादरा　पी० ८१५१

काहे मारेव नैनां बान सांवरो - - -
सब कोई बांधै ऊदी ऊदी पगिया
सांवरो बांधै गुलनार
नरगिसे शैहला से मेरी चार आंखें हो गईं
देखकर बीमार को बीमार आंखें हो गईं
उस बुते शोख़ ने तसवीरे हैरत कर दिया
दिल के टुकड़े हो गये बेज़ार आखें हो गईं
काहे मारेव नैनां बान सांवरो - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

बिरहा बाण लागे छतियां
सौतन के घर सांझ सवेरे मोसे करो न बतियां
भूल न जाना याद रखना लिखा करोगे पतियां
हां हां बिरहा बाण लागे
बिरहा बाण लागे छतियां

P. 8152.　ग़ज़ल　पी० ८१५२

हर अदा मसताना सर से पांव तक छाई हुई।
उफ़ तेरी काफ़िर जवानी जोश पर आई हुई ॥
मुझको यह दावा कोई तेरे सेवा दिल में नहीं।
उनका यह इलज़ाम अच्छी बन्दे तनहाई हुई ॥
उनकी मुट्ठी में जो दिल तड़पा दबाकर यह कहा।
छूटती है ऐसी कोई चीज़ हाथ आई हुई ॥
बोसा लेकर जान डाली यार की तसवीर में
यह नया अन्दाज़ यह अच्छी मसीहाई हुई ॥
हर अदा मसताना सर से - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

कौन कह सकता है वह नावक है यह नख़चीर है।
दिल है पहलू में मेरे तरकश में उसके तीर है॥
उनसे मिलने की ये घर बैठे नई तदबीर हैं।
दिल लगी की दिल लगी तसवीर की तसवीर है॥
कौन कह सकता है - - - - - - - - - -
इब्तिदाये इश्क़ है ऐ दिल हंसी अच्छी नहीं।
रोज़ बढ़ती जायेंगी कड़ियां यह वह ज़न्जीर है।
कौन कह सकता है - - - - - -
चारागर की कोशिशे बेजा ने मारा है मुझे
यह उसी के हाथसे निकेलेगा जिस का तीर है
कौन कह सकता है - - - - - - -

P. 8273. दादरा पी० ८२७३

पनियां भरन मत जाव री गुजरिया
डगर चलत बंहियां पकड़त सांवरिया—पनियाँ भरन मत जाव - - -
नन्द के छैला ढीट अति शोरी
तक तक मुध रोकत बाराजोरी
जोबन लूटै खींच चुंदरिया
प्राण लेत तक मारे नजरिया - - - पनिया भरन मत जाव - - -
शैर। लपक के सिर से गगरिया उतार लेता है
पकड़ के बंहियां वोह फिर मुंह से प्यार लेता है
हज़ार बिगाड़े वोह पल में संवार लेता है
जोबन लूटै खींच चुंदरिया
प्राण लेत तक मार नजरिया - - - पनियाँ भरन मत जाव - - -

दूसरी तरफ़ :— असावरी

पिया बिन सगरी पत कैसे खोई
बिरोगिन जोगिन बन रोई
पिया बिन सगरी पत खोई
बालम भिक्षा दरश की झोली पलक पसार
मांगत जोगी नयन यह कर इनका सतकार
शैर—ढूंढती हैं तुझे ऐ यार सितमगार आंखें
ज़िन्दगी मेरी किये देती हैं दुभर आंखें
बालम का पता न देवें कोई
पिया बिन सगरी पत खोई - - - - -

P. 8274. ग़ज़ल पी० ८२७४

हम अपनी ख़ाक से बादे फ़ना येह काम लेते हैं
अरे हां काम लेते हैं
गुबारे राह बनकर उनका दामन थाम लेते हैं
अरे हां थाम लेते हैं
तबस्सुम ज़ेर लब लग़ाज़िश ज़बां पर शर्म आंखों में
मज़ा आता है मेरा जब कभी वोह नाम लेते हैं
किया जो कुछ हमारे साथ वोह इस बेवफ़ा दिलने
तुम्हारा नाम हम इसमें बराये नाम लेते हैं
रहे तो उम्र भर जोशे शबाब व अहदे मसतो में
हम अपने सर बलाये गरदिशे एयाम लेते हैं

दूसरी तरफ़ : ग़ज़ल

इश्क़ ने दी हैं दोग्राये दमे रेहलत कैसी
मुझसे मिल मिल के गले रोई है हसरत कैसी
ग्रक्स भी ग्राइने में चार घड़ी बाद ग्राया
बढ़ गई हद से सेवा उनकी नज़ाकत कैसी
जोरे माशूक़ की प्रसिद्ध ही नही दुनिया में
ग्रपने बन्दों से ख़ुदा को है मोहब्बत कैसी
नज़र ग्राता है परीरू जो कोई शोख़ो शरीर
गुदगुदाती है फिर ऐ दाग़ तबीग्रत कैसी
इश्क़ ने दी हैं दोग्राये - - - - -
मुझ से मिल मिल के गले रोई है हसरत कैसी
नज़र ग्राता है परीरू जो कोई शोख़ो शरीर
गुदगुदाती है फिर ऐ दाग़ तबीग्रत कैसी

P. 8519. ग़ज़ल पी० ८५१६

ग्रांख से ग्रांख मिली दिल से तबीग्रत न मिली।
मिले भी तो हमें वस्ल की लज़्ज़त न मिली॥
हां वस्ल की लज़्ज़त न मिली - - -
लोग ग्रासान समझते हैं तरीक़े उलफ़त।
ख़िज़्र को ग्राज तलक राहे मोहब्बत न मिली॥
ग्रांख से ग्रांख मिली - - - -
देखिये गरदिशे तक़दीर इसे कहते हैं।
फ़ातेहा पढ़ने वोह ग्राये मेरी तुरबत न मिली॥
हां मेरी तुरबत न मिली - - -
कूचये यार में रहने की इजाज़त न मिली।
मैं गुनहगार इसी वास्ते जन्नत न मिली॥
हां वासते जन्नत न - - - - -

दूसरी तरफ़ : ग़ज़ल

बहुत हंसने से भर ग्राये हैं ग्रांसु चश्मे जानां में॥ ग्ररे हां चश्मे जानां में
तमाशा है कि दरया मौजज़न है नरगिसतां में॥
परे बुलबुल जो फेंके नोचकर ग्ररे सैयाद ने बाहर॥ ग्ररे सैयादने बाहर- -
हवाग्रे शौक़ से ऊड़कर वोह फिर ग्राये गुलिस्तां में॥
तेरे वेहशी का पैराहन तबररुक होगया होगा।
कि एक एक तार लिपटा है हर एक ख़ारे बियाबां में॥ ग्ररे - - -
उठे थे हम जो मैहरूमे विसाल इस बाग़े ग्रालमसे। ग्ररे हां बाग़े ग्रालमसे -
चढ़ाने क़ब्र पर ग्राये वोह कलयां लेके दामां में॥
ग्रसर उनका है नशतर ज़ब्त नशतर कारे नशतर है।
दिले नशतर प नशतर चल रहे हैं यादे मिज़गां में॥ ग्ररे हां याद - - -

———:-०-:———

P. 8577. ग़ज़ल पी० ८५७७

दिल मेरा लेके मेरी जान दग़ा की तूने - - -
थी मुझे चश्मे वफ़ा मुझ से जफ़ा की तूने - - -
ग्रपने पैहलू में रक़ीबों को जगह दो तूने
कौनसा ज़ुल्म किया जिसकी सज़ा दी तूने
ग़म दिया रंज दिया दाग़ दिया ज़ैहर दिया
ख़ूब बीमारे मोहब्बत की दवा की तूने
वाय क़िसमत कि न कुछ फ़ैज़ मिला ऐ ग्रकबर
जान ग्राफ़त में मेरी जान फंसा दी तूने
(वाह वाह वाह वाह बहुत ग्रच्छे)
दिल मेरा लेके मेरी - - - -
ग्रपने पैहलू में रक़ीबों को जगह दी तूने
कौनसा ज़ुल्म किया जिसकी सज़ा दी तूने
दिल मेरा लेके मेरी - - - -

दूसरी तरफ़ :

वार एक और रगे जां प लगाते जाओ
अपने हाथों से ये झगड़े को मिटाते जाओ
क़ब्र तक आये हो गर साथ जनाज़े के मेरे
हाय मेरी मिट्टी को भी मिट्टी में मिलाते जाओ
मेरे पहलू से उठे जाते हो ऐ जान जहां
हाय दर्द दिल की तो दवा कोई बताते जाओ
ऐसे मुंह खोलदे लिल्लाह कफ़न से मेरा
हाय कूए जनां भी मुझे और दिखाते जाओ

P. 8630. भजन पी० ८६३०

ले उड़े अपनी हवा में जब मुझे नाले मेरे—ले उड़े - - -
दिल संभाले रोदिये सब चाहनेवाले मेरे। हां दिल—ले उड़े - - -
आसमां की ख़ैर यारब दिल जला है इस तरह
सीना वो दिल तोड़कर निकले हैं अब नाले मेरे
बेमुरौवत बेवफ़ा ने तीर खींचा सर से यूं
रोके बालीं से उठे सब चाहनेवाले मेरे।ले उड़े - - - - -

दूसरी तरफ़ : ग़ज़ल

सख़्त जानी से डरे जाते हो क़ातिल नाम है
तुम उठावो तेग़ मरजाना हमारा काम है
मै नहीं मिलती तो पीते हैं लहू के घुंट हम
दिलही साक़ी है मेरा और दिलही दिलका जाम है-दिलही-सख़्त जानी - -
पैहले मारा तीर मुझको फिर गले लिपटा लिया
क्या उसी दिन का सबक़ था यार की ज़न्जीर में-सख़्त जानी - - -
मै नहीं मिलती तो पीते हैं लहू के घुंट हम
दिल ही साक़ी है मेरा दिल ही दिल का जाम है—सख़्त जाती - - -

—:०:—

P. 8631. दादरा पी० ८६३१

रात सेजरिया पर सैंयां मचलाय गये
न कुछ दे गये न कुछ ले गये
बाली उमिरया में दाग़ लगाये गये रे—रात सेजरिया - - - - -
कमसिनी है तो ज़िदें भी हैं निराली उनकी
इससे मतलब है कि हम दर्द जिगर देखेंगे
हम से बिगड़ के सैंयां सौतन घर सोये हो—हम से - - - -
औरों से बलम लगाये गये रे—रात सेजरिया - - - -
सास ननंद मोरी जनम की बैरिन
भोले सैंयां हमका बताये गये रे—रात सेजरिया - - - -
वफ़ा से मुंह न फेरेंगे सताले जिसका जी चाहे
वफ़ादारों में हमको आज़मा ले जिसका जी चाहे—अरे रात से० - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

सैयां बिन सूनी लागे सेजिया। सेजिया है ननदी।
सेजिया है मोरी ननंदी। सेजिया है मोरी ननंदी। सैयां बिन---
आह करत हूं कूक उठत है आरे सुनके पपिहरा की बोली ननंदी सैयां बिन -
कूक करत हूं पी पी रटत हूं हां रे कूकत कोयलिया
काली हां ननंदी
हाय निज़ाम मे चलती हुई ज़बां न चले
निगाहे यार तो है अर्ज़ें मुद्दआ के लिये
हाय बिनदा बिन तोहे बेहो मरतियां
लादे पिया की ख़बरिया ननंदी। सैयां बिना -----

P. 8686. ग़ज़ल पी० ८६८६

करके रुख़सत उनको ता हद्दे नज़र देखा किये
जिस तरफ़ देखा न जाताथा उधर देखा किये
आतशे सोज़े जुदाई का असर देखा किये
जैसा क़िस्मत ने दिखाया बेख़बर देखा किये
बाद मरने ही के आजाते हमारी क़ब्र पर
रास्ता हसरत से जिनका उमर भर देखा किये—करके—रुख़सत ---
आतशे सोज़े जुदाई का असर देखा किये
जैसा क़िस्मत ने दिखाया बेख़बर देखा किये—करके रुख़सत ----

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

आराम के थे साथी क्या क्या जब वक्त पड़ा तो कोई नहीं
सब दोस्त हैं अपने मतलब के दुनिया में किसी का कोई नहीं
बैठे हैं कहां अहले मसनद --------
या बज़्म तरब या कुन्जे लहद या मोम तमाशा कोई नहीं
है आरज़ बस इतनी ही पता चलता है तेरी बरबादी का
जिस से न बगूले हों पैदा इस तरह का सहरा कोई नहीं
आराम के थे साथी --------

8687. ग़ज़ल पी० ८६८७

जाय ये जान हिज्र में या वस्ले यार हो
अरे होना है जो कुछ आज ही परवर दिगार हो
दिल में हो तेरा जलवा ज़बां पर हो तेरा नाम
अरे आंखों में तेरा वक्ते अजल इन्तिज़ार हो
सीने से मलरहा हूं इस पाय यार के
शायद यूं ही से खोले दिले बे क़रार हो—जाये यह जान हिज्र ---
अरे होना है जो कुछ आज ही परवरदिगार हो ---

दूसरी तरफ़ :—　　ग़ज़ल

छुरी है हर नफ़स हर हर क़दम है काम क़ातिल से
अदम की शाहराहें मिलगई हैं एक रंग दिल से
किसी का रंज देखूं यह नहीं होगा मेरे दिल से
अरे नज़र सैयाद की झपकै तो कुछ कहदूं अनादिल से
उमीद व नाउमीदो का बहम होना वही जानै
कि जिसने किशतियों को डूबते देखा हो साहिल से
न समझा मानिये गोरो कफ़न समझा तो यह समझा
थका था मैं लिपट कर सोरहा दामाने मन्ज़िल से

—:-०-:—

P. 8866.　　दादरा　　पी० ८८६६

मैं पनियां कैसे भरूं राजा रे - - - - -
एक बार गंगा वोह तर जाउना अरे जोना देवेया वही तोरा रे
मैं पनियां - - - - - - -
आतेशें सोज़े जुहाई का असर देखा किये
जैसा क़िस्मत ने दिखाया बेख़बर देखा किये
चुन चुन कलिवां सेजा लगायूं
सेजा सोवेया वही तो रा रे—मैं हरवा कीके गरे डारूं

दूसरी तरफ़ :—　　दादरा

अब की सावन सैयां न आये - - - - - - - -
बाल रंडेपे जिया तरसै ननंदी बारे बलम हमारे छाय रहे परदेश
अब की सावन - - - -
गरजत तरजत बादर जिया जोरे दामिन डारत मार

P. 8867.　　ग़ज़ल　　पी० ८८६७

उनको ज़िद है कि मक़तल में जायेंगे हम
अपने उशशाक़ को आज़मायेंगे हम
आज देखा जायेगा किस किस को उलफ़त हमसे हैं
सब पता चल जायेगा जिसको मोहब्बत हमसे है
हा रे अब तो जी भर के ख़न्जर चलायेंगे हम - - - -
होगया ख़ूने तमन्ना ख़ाक हसरत होगई
वस्ल की शब वह बिगड़ बैठे क़यामत होगई
भला अब उनको कैसे मनायेंगे हम—उनको ज़िद है - - -

दूसरी तरफ़ :—　　ग़ज़ल

अर्ज़ क्या आप से हाले दिले नाशाद करें
और जो आप को करनी हो वोह बेदाद करें
सितमईजाद जो और चाहे सितमाईजाद करें
हाय हमने फ़रयाद कभी की हो तो फ़रयाद करें
कौनसा आपने अरमान निकाला न मेरा
मै तुझे भूल गया आप ही इरशाद करें
अर्ज़ क्या आप से

मिस दुर्गा बाई

P 7587. लहरा कालंगडा पी० ७५८७

आवत हैं वह देखो शाम मोरे आवत हैं
पलक न डगर भारों री आली जो पिया आयेंगे मन्दर्वा
सन्द पिया को बेग ले आवें तो पैयां परूं तुमरे
आवत हैं वह - - - आवत हैं - - - पलक - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

सोभे गले मोती माला मनमोहन बांसीरी वाला रे अरे हां - - -
सोभे तोरे प्यारे गले मोती माला हाय मनमोहन बांसीरी - - -
बैठे कृष्ण पिया जब से देखूं नयन तोरे मतवाले रे
हां रे हां नयन तोरे मतवाले रे सोभे तोरे - - - - - - -
अरे हां मनमोहन - - - - - - -

———:-॰-:———

P/ 7708 ग़ज़ल पी० ७७०८

किसने यह तजल्ली रुखे रौशन की दिखादी
ख़ुद मिट गया और ख़ुद से ख़ुदी मेरी मिटादी
ऐं बादे सबा क्यों मुझे बरबाद किया है
क्यों ख़ाक मेरी कूचये जाना से उड़ादी
ऐ आशिक़े जानां तेरी रफ़तार के सदक़े
इक छोटी सी तुर्बत मेरी ठोकर से मिटादी

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

चिराग़ उस गिलने यह कह कर बनाये हैं मेरे गिलके
क़्यामत तक तुझे जलना पड़ेगा ख़ाक में मिल के
पस मुर्दन बनाये जायेंगे साग़िर मेरी गिलके
लबे जान बख़्श के बोसे मिलेंगे ख़ाक में मिलके
सवाले वस्ल पर इंकार से मुंह किस लिये फेरा
करो इक़रार वरने जोड़ दो टुकड़े मेरे दिलके—क़यामत - - -

——(:॰:-)——

P. 7849. दादरा पी० ७८४९

हां रे ऐसो हरजाई रे कन्हैया डगर चलत गगरी मोरी गिराई
करके ढिटाई ऐसो हरजाई रे - - -
वाहिद पिया काहे रार मचाई—मोरी छोड़ न कलाई बल खाई
लचक खाइ बल खाई तरपाई—ऐसो हरजाई - - -
ऐसो हरजाई - - - ऐसो हरजाई - - -

दूसरी तरफ़ :— मांड

कोई हसीं हो हमें एक नज़ा कर लेना
जिगर को छानके मुझे हां कर लेना
यार मुनतज़िर करती है नाज़ कर देखो
चला निगाह से उन्हे गाहे गाहे कर लेना—कोई - - -
नोकीली आंखों से चलता हुआ यह जादू है
निगाह नीची ही से दिलमें निज़ा कर लेना—कोई - - -

P. 8275. होली पी० ८२७५

का संग खेलू मैं फाग री पिया रूठ रहे - - - -

का संग खेलू मैं फाग - - - - - - - - -

रूप जोवन गुन मुझ में जो होते - - - - - -

करती पिया संग राज री - - का संग खेलू - - - - -

रूप जोबन गुन मुझ में जो होते का संग खेलूं

दूसरी तरफ़ :— होली

हो जी लाल मुख मल डारुंगी अबके फागुन में—लाल मुख - - -

अरी कहां गये तेरी लाल—लाल मुख मल - - -

जिन तीरन यह ऐसी ही डोलैगी वही जल लगाऊंगी गुलाल

लाल मुख मल - - - - - - - - - - -

हो जी लाल मुख मल डारुंगी—अबके फागुन में - - -

P. 8153. बिहाग पी० ८१५३

प्रभु बूढ़े गुन गिनत कई रजनी

अनमें विपत कठन अब मैको, मानो बे कुल रुप मदनी—प्रभु - - -

मदन जवार जारत अत तन मज तापर सूरत बमनी

दास पियाको कैसे कैसी आन बनी—ए प्रभु - - -

दूसरी तरफ़ :— मिस ज़ोहरा जान—पूर्वी

हाय राम सांवरिया रे छरतिया - - - जियरा मारे ना

हाय राम तो पा देखम सकूं - - - जियरा मारे ना - -

जिया मांगे पैसा मांगेला राम कौड़ी देलावा राम

पनियां भरन गई तुमरे रे - - - हाय राम - -

मिस गोहर जान

P. 17. ठुमरी भैरवी पी० १७

मोरा नाहक़ लाये गवनवां रे। मोरा - -

जब से गये मोरी छधहु न लीनी

बीतो जात जौवनवां रे। मोरा नाहक़ - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

आन बान जियामें लागी।

प्यारी चित चोर जियामें बसी कैसी फंसी

पड़न लागी चुपके पइयां, मेहरबान सइयां

तुम बिन मोहे कल न पड़े, तुमरे कारन जागी

आन बान जियमें लागी।

P. 24. गारा पी० २४

जाओ जी जाओ ना नख़रे दिखाओ

लो.बी चकोरी जान० ॥

बिचारी कैसी होगी नन्हीं भोली भाली

जाओ जी जाओ न नख़रे दिखाओ

दूसरी तरफ़ :— पीलू

चीन्हत नाही बदल गयो नैना;

काग़ज़ हो तो बांच लीजिये, करम न बांचा जाये

चीन्हत नाहीं बदल गयो नैना



P. 26. पहारी पी० २६

दिलदार दिलारा तनमन धन सब तुम पर कुर्बान करू'

घड़ी घड़ी पल पल धड़क धड़क दिल धड़कत है । दिल० - - -

खुदाके वास्ते आ अब तो यार पहलू में

तड़प रहा है दिल बेक़रार पहलू में

न तेरा वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल को

अजब तरह की इलाही अज़ाब है दिल को

घड़ी घड़ी पल पल धड़क धड़क दिल धड़कत है। दिल० - - -

दूसरी तरफ़ :— सोरठा

वारी जाऊं रे सांवलिया तो पै वारना रे

तन मन धन सब तुझ पर वारु

सारा जोवन तुझ पर वारु

चलता ख़ंजर मारना रे। वारी जाऊं - - -

P. 174. झझोटी पी० १७४

तनमन की सुध बिसर गई कैसी बजाई बांसरिया ,

ऐ जबसे भनक पड़ी कानन में नींद नहीं मोरे नयनन में

गोहर प्या उनकी सुन मुरली की धुन भई बावरिया। तन - -

दूसरी तरफ़ :— पहाडी झझोटी

जाओ जाओ पिया मोसे न बोलो सोतन संग रहो

भोर भये घर आये हो मेरे करत हो ढंग नये। जाओ - -

अरे मोसे छल बल न करो, जाय सोतन संग रहो

तुम यह क्यों दुख सहो। जाओ - -

P. 176. देश दादरा पी० १७६

छैला हट जा तू मारा जई है।
सास मोरी वैरन ननद मोरी दूती, बात मोरी करत में दूंगी जूती
सैंयां मोरा बांका सजनवा, छैला पलट गंवार तू मारा जई है
अरे छैला तू मारा जई है।

दूसरी तरफ़ :— होलिया कजरी

ऐसे सावन के महीनवा में गुदाले गुदना।
गोरे गोरे गाल पर काला गुदनवा
बिछइये पर सजना बे—ऐसे सावन - - - - - -
सुइयां चुभी जब करकी कलाई
भूल गई हंसना—ऐसे सावन - - - - - - - - - - - -

——(-:०:-)——

P. 356. ग़ज़ल भैरवो दादरा पी० ३५६

ज़बां खुली भी न थी अरज़े मुद्दुआ के लिये
नज़र की क़ैंचियां चलने लगीं सज़ा के लिये
रुठो न आज शबे हिज्र में ख़ुदा के लिये
असर ख़लक़ से जला दिल मेरा रवा के लिये—ज़बां - - - -
किया जुदा तनसे दिल दो गवाह क़ातिल
ज़बां जिस्म के लिये आंख है हया के लिये
शबे फ़िराक़ में सामां आज नालाये गेसू
ख़लक़ के जोहर के बदले हिला हिला के लिये—ज़बां - - - -
कहा यह उसने मुझे बोसा देना
ज़बां दराज़ न तड़फा जान ख़ुदा के लिये—ज़बां - - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवी दादरा

रस के भरे तोरे नैन सांवरिया—अरे रस के भरे तोरे नैन
किस ग़ज़ब की हैं तेरी आबले यार आंखें
दिल ही क़ाबूमें नहीं जबसे हुई चार आंखें
जो सज़ा दीजिये शाने रबा हो लेकिन
मेरी तक़दीर नहीं कि गुलिस्तान आंखें
उनको हू बहू बादाम कहूं या नारंगी
सच बता क्या कहूं क्या हैं तेरी दिलदार आंखें—रस - - - - -
हरन की आंख न ऐसी न ऐसी हूर की आंखें
हरएक आंख तुम्हारी हज़ार आंखों में
दमे ख़ाक बिसमिल दिखाया आंखों में
हरएक करता है प्यार आंखों में
आओ सांवरिया गरवा लगालूं रे
नांहि पड़त मोको चैन सांवरिया—रस भरे - - -

——:०:——

P. 357. भैरवो पी० ३५७

रसीली मतवालियों ने जादू डाला
तेरी आंखो ने मुझे मारा—रसीली - -
न दम भर तुम्हे देखा भाला
अचानक दिल पर मारा—रसीली - -

दूसरी तरफ़ :— सोहनी

मैका पिया बिन कछु न सुहाय—रे मैका - - - - - -
ऐसे जी भरतया सोतन घर जाय रहे
कल न पड़त सगरी रैन
मोहे सब दिन दुखी बीत जात—मैका - -
सुघड़ पिया सोतन घर जाय रहे
कल न पड़त सारी रैन
मोहे तड़फत बीत जात रैन—मैका - - -

——:०:——

P. 359. देश पी० ३५९

धड़कत हैं मोरी छतियां पिया कर धर देखो धड़कत हैं मोरी छतियां
ऐसी रतियां काली काली डरावे
मोरी अचानक बैयां डाली पीने—पिया कर - - - - -
तुम तो करत रसिया अपने अहसन के
कहां तक बताऊं एक न माने
ऐसे ही सुन्दर निकसत मोरे मुखसे बतियां—पिया - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— देस झंझोटी

आओ गले लग जाओ मैं वारी सैयां
फूलों की सेज बिछाई तू मोरे सैयां—आओ - - -
तुम बिन महेता कटना परत है
काहे जिया तरसावे मोरे सैयां—आओ - - -

——:०:——

P. 360. ग़ज़ल खम्माच दादरा पी० ३६०

शमय फ़िराक दिलमें जला कर चले गये।
हुस्नो जमाल अपना दिखा कर चले गये॥
आये न थे तो जाने ज़रीं बेक़रार थी।
आये तो दिल में आग लगा कर चले गये॥
माना कसूर मैंने किया तुम करो मुआफ़।
तुम भी तो मेरे दिल को सता कर चले गये॥
आने का क़सद फिर नहीं शायद जनाबका।
बातें मगर बहुत सी बना कर चले गये॥
क़ुर्बान इस अदा पर करूं दिल हज़ार बार।
खुद रुठे और मुझ को मना कर चले गये॥

दूसरी तरफ़ :— बिहाग दादरा

बेवफ़ा तुम हो कभी अहले वफ़ा हो जाना।
न कहीं आज के दिन रोज़ जज़ा हो जाना॥
जो तुम्हें चाहिये तो उस के तो बिना यह माशूक़।
जो तुम्हे सजदा करे उस के ख़ुदा हो जाना॥
नागहां वस्ल का अहवाल तुम्हे याद आया।
दफ़े तन आंख में शोख़ी का हया हो जाना॥
बन संवर के वह किस अंदाज़ से बोले शबे वस्ल।
आज की रात भी तुमहो अदा हो जाना॥
हमे दिल दर्द का उठना वह हमारे दिल में॥
उन का सीने से लिपट कर के जुदा हो जाना॥
नज़े के वक्त जो फिर जायें हमारी आंखें।
बदगुमान हो के कहीं तुम ख़फ़ा न हो जाना॥

बेवफ़ा यार से तो शादु ज़रा मुशकिल है।
वायदे वस्ल ग़नीमत है बेवफ़ा न हो जाना॥

——:०:——

P. 362. होली देश चाचर पी० ३६२

खेलें को होरी राधे संग वह कृष्ण बिहारी श्रावत हैं।
ये बृज से सखा सब श्राई री सखी और अबीर गुलाल उड़ावत हैं।
सब उपफ रहो सखी हमारी, नहीं आयें श्याम हरी।
"गोहर" नारी की बात छमर यही कारन यह समझावत है॥

दूसरी तरफ़ :— होली काफीयत

कैसी यह धूम मचाई कन्हैया रे
अरे कन्हैया रे गारी हमें तुम देत
रंग छिड़कत हो बहां गहत हो देत हूं राम दुहाई-कैसी
देखो श्याम तोरे हाथन श्राइयां, श्राप लाख के करें चतराई—कैसी
श्राये "गोहर" प्यारी ने नेहां लगाके देखत हो नारपराई—कैसी
खलन लागे पराई नार सङ्ग कैसी है यह बुराई--कैसी

——:०:——

P. 363. सारंग दादरा पी० ३६३

अम्बवा की डाली तले झूलना डलाय दे।
बारे पिया सङ्ग झूलत भजरंग
झूलूं झुलाऊं रेशम की डोर बंधायदे॥ अम्ववा
झूलने वाली है रश्क गुल लाला झूला।
जा बुल बुल तू रंगे गुल से वनाला झूला।

आज दिखलायेंगे हम दाग़ निराला झूला॥
श्याम हमारे से तो बन जायगा आला झूला॥
पैर कुल इश्क़ के बढ़े ही जाते हैं।
है मेरे दिल में हसीनों का निराला झूला॥
सामने निखं क़यामत-के तो हो जाते हैं।
करह रहा है मेरे दिल यह वबाला झूला॥

दूसरी तरफ़ :— दादरा भैरवी

मेरे दिल को चुरा के किधर को चले
चुराया मेरा दिल मिला के नज़र, तुम्हें जाने नदूंगी चले हो किधर।
ज़रा आखें तो मिलाके देखो इधर,याती बैठो या दिलको नहीं होगा सबर॥
आंखें न छिपाओ बातें न बनाओ; गरवा लगावो जाने जहां जाओगे कहां
बोसा देकर लूटा है दिल सस्ता है कुछ महंगा नहीं
मुफ़्त क्यों दें क्या ग़र्ज़ कुछ माल मुर्दे का नहीं
जो यह हो गवारा तो कीजे इशारा
मक़्सूम तुम्हारा लगा लो गले—मेरे दिलको - - -

——:-०-:——

P. 364. झझोटी पी० ३६४

आई लो काली घटा छारही मतवाली घटा प्यारी प्यारी।
बांके रसीले तेरे नैनोंके जाऊं वारी॥ आई लो - - -
बांके रसीले तेरे जोबन के जाऊं वारी। आई लो - - -
क्यो आज हलकी हलकी चलती है घटा।
क्यों आज नाज़ करती हुई चलती है हया॥

क्यों आज झूमते हैं खड़े सरो बाग़ पर ।
क्यों आज लहरें मारती हैं नहरें जाबजा ॥
क्यों आज सब्ज़ पोश इस क़दर हैं जहांमें ।
क्यों आज पैर रोकती हैं मस्ताना है सबा ॥
यह रङ्ग देख भाल के हैरान हुवा मैं साहब ।
गुंचों ने मुसकराके गुंचोंने यह कहा ॥ आई लो - - -
है अजब पीने पिलाने का मजा बरसात में ।
दौर सग़िर का न टूटे साक़ियां बरसात में ॥ आई लो - - -

दूसरी तरफ़ :— काफीयत

खेलत कृष्ण कुमार रे ।
सब सखिये मिल गावत नाचत बाजत मृदङ्ग सितार—खेलत - - -
गोहर प्यारी की अर्ज़ यही है कृपा कर करतार—खेलत - - -

———:o:———

P. 2099. दादरा पी० २०९९

मेरे अगन लागे मनवा दिलदार—दार आह मेरी सुख दुख सहे
दुख तो कट जाय नहीं ज़हर पीऊंगी क़हर करूंगी
तनके जो छतियां भर आयें कहीं तन मन सब कुर्बान करूं—मोरे - -
रिज़्क़ पैदा कर दिया क़ालिब में जब दम दे दिया
हमने ज़माने में हरएक का दिया चमका दिया
लेकिन मुक़द्दर ने हमारे आबो दाना मांगा
पीने को तो आंसू दिये खाने को ग़म दे दिया । तनके - - - -

दूसरी तरफ़ :— भुपाली

हटो हटो रे सैयां बलहार तोरे जइयां न डालो गले बैयां
अर्ज़ गर्ज़ यां माने नाहीं बतियां, गोहर प्यारी की लागो पैयां
करो ऐसी न लाज सैयां—हटो हटो - - -

———

P. 2101. ग़ज़ल होली पी० २१०१

मेरे हज़रत ने मदीने में मनाई होली ।
उनके असहाबों ने क्या ख़ूब रचाई होली ॥
कहके सिल अली हूरों ने यह गाई होली ।
शुक्र है ख़ालिक़े अकबर ने दिखाई होली ॥
शेर हर हाथमें पिचकारी लिये आते हैं ।
अर्श पर धूम मिची है कि वह आई होली ॥
वहशते इश्क़ का रंग ऐसा जमके फैला ।
सारे आलम के हैं नज़रों में समाई होली ॥
है सबूते शफ़क़ जान मोहम्मद की सबा ।
है बिचली लबे क़ुदरत की हिनाई होली ॥
मुझको उम्मीद न थी अब तो यह मक़बूल हुई ।
तूने किस शान की गोहर यह बनाई होली ॥

दूसरी तरफ़ :— होली

होली खेलत ख़्वाजा मोइनुद्दीन
ख़ुवाजा क़ुतब होली खेलत हिलमिल
गज शुक्र और निज़ामुद्दीन—होली - - - -

गह गह मारे प्रेम पिचकारी।
ख़ुवाजा नसीर और फ़रवरुद्दीन—होली - - -
नूरका अबीर गुलाल ज़हूर का।
अरे उड़ उड़ हिंद से जात हो चीन। होली - - - -
साध सन्त सबहू हक़ बोले
देवता पुकारत दीन दीन—होरी - - - - - -
जो कोई जावे नज़ीर सभा बीच।
सुध बुध बाक़ी जावे छीन - - - - होरी

P. 2103.

आसावर

पी० २१०३

किसको हम याद किया करते हैं—किस - - - - -
उन्दलीबों के नशे में बरबाद।
क्यों हम सैयाद किया करते हैं—किसको - - - -
सच बता दे तू ऐ बादे सबा।
वह ही क्या याद किया करते हैं—किस - - - - -
शमय में इश्क़ में क्यों परवाने।
जान बरबाद किया करते हैं—किस - - -
टुकड़े करने को वह उटे हैं मुझे।
बैठे ऐजाद किया करते हैं—किस - - - - -
किस की फुरक़त में यह मुर्गा चमन
शोरो फ़रयाद किया करते हैं—किस - -
हल्क़ये गेसुये हस्व रङ्ग खलील।
सारे सैयाद फ़रयाद किया करते हैं—किस - - - -

दूसरी तरफ़ :—

ग़ज़ल सोहानी

फंस गया दिल बेतरह या रब करूं तदबीर क्या।
देखूं दिखलाती है मुझको अब मेरी तक़दीर क्या
हिल नहीं सकता दरे जानासे जो तू एक क़दम
पड़ गई उल्फ़त की ऐ दिल पांव में ज़ंजीर क्या। फंस - -
अबतलक आया न क्यों क़ासिद मेरे ख़तका जवाब
चाक कर डाली खफ़ा होकर मेरी तहरीर क्या। फंस - - -
मुझको दीवाना बना किसने फिराया दर बदर।
रहम मेरे हालपर खायेगा वह बेपीर क्या। फंस - - -
लूह दिल पर नक्श जिसके नक़शाये दिलदार हैं
ऐ दिले नादान इसे फिर हाजिते तसवीर क्या। फंस - - -

P. 2108.

माण्ड़

पी० २१०८

यसरबका बांका सांवरिया खड़ा राहमें बंसी बजावत है।
जिस उकसे और हूक उटे जब बंसी कूक सुनावत है॥
सुन बात मेरी अब ऐरी सखी कल रातको मेरी जो आंख लगी।
क्या देखत हूं पिया सपने में मोहे दर्शन अपना दिखावत है॥
एक कारी कम्बलिया कांधे धरी मयजाज़ का सुर्मा नयनन में।
वल्लील की जुल्फ़े दूशन पर थीं वह शम्शका मुखड़ा दिखावत है॥
वरूंज की जिसदम आंख लगी था नूरका तड़का ऐरी सखी।
जिया व्याकुल है अब मेरा बहुत दिल रह रह कर घबरावत है॥

दूसरी तरफ़ :— माण्ड़

क्या हमसे पिया तक़सीर हुई क्यों दर्श दिखाना भूल गये।
अब रुप दिखाके मन मोह लियो वह पिछला ज़माना भूल गये॥
मोहे बिरहा अगनने फूंक दियो सब तन मन जल कर खाक भयो।
भड़काके पीतकी आग सजन उसको बुझाना भूल गये॥
तुम नयना लगाके रुठ गये यां ग़मसे प्राण छूट गये।
ऐसे देश अरबमें जाय बसे सब मिलना मिलाना भूल गये॥
मोहे पीतमें ऐसी क्या ही बीती कहूँ तुमसे मैं क्या यह शरबमें बीती
यही अर्ज़ मदीने में जाके मरुं क्या मुझको बुलाना भूल गये
तुम मेरी विपत तो सुनते ही नहीं करुं तो अब मैं क्या करुं
कसब तक बल तनका जाता रहा हम शोर मिचाना भूल गये।

P. 2267. केदारा पी० २२६७

प्यारी प्यारी मोरे जियामें बसी—प्यारी प्यारी प्यारी तोर अदा ---
अजल काहे जिया तरसाये बात सुन बात सुन। प्यारी २ ---
होके महरबान हमार काहे रहो न्यारे न्यारे।
कैसे दर्शन मैं करुं तुम बिन जिया निकसत जात॥
अजल लेट जात बात सुन बात सुन—प्यारी प्यारी ---
काहे जिया तरसात बात सुन बात सुन ----

दूसरी तरफ़ :— धानी

गारी दूंगी छैला मोरी काहेको करैया लुरकाई रे—लुरकाई ---
काह कहं मोहन तोरी सांवरी सूरत मन भाई रे। मन भाई -- गारी --
लाख जतन कीनो एक न मानो गोहर प्यारी से यह जस कीनो
हां हां प्यारो प्यारो रजधाये तट चोली मसकाई रे -- चोली -- गारी० --

P. 3551. सीहकाफी पी० ३५५१

हम जामे मुहब्बत जान पिया करते हैं, दिन रात तुम्हारा नाम लिया करते हैं
अब आते होंगे आयेंगे आते हैं, हम इसी ध्यानमें जान दिया करते हैं।
क्या जानो नादान हो इन बातोंको, हम आंख मिलाकर जान लिया करते हैं
तुम लाख बहाना करो वहां जानेका, एक नज़र में हम पहचान लिया करते हैं
तसवीर सामने रख कर तुम्हारी प्यारे, सूरत पै तसद्दक़ जान किया करते हैं।
हम खुश करते हैं नाम मेरा है गोहर, राजोंसे सदा इनाम लिया करते हैं॥

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी झझोटी

फुक़त में अब तो हो गये सामान नये नये।
बैठे हुये हैं दर पै निगाह बान नये नये॥
जब तक कि तेरी ज़ुल्फ़ में दिल है फंसा हुआ, देखा करेंगे खुवाब परे शान नये २
उस की तलाश में चले दशते जनूं को हम, सहरा नये नये हैं बयावां नये नये।
जिस पर करम ख़ुदा का हो परवाह है क्या, होते रहेंगे जानके खुवाहां नये २
हर शख्शहर दयार में उस का करन रहा, पैदा हुए बहुत से महरबान नये २
लाखों ही जान देते हैं हम पर शुमार क्या, उसपर भी लोग होते है बेजान नये
गोहर ख़ुदा के फ़ज़ल की उम्मीद रख मुदाम, कर देगा बैठे बैठे वह समान नये २

P. 4015 सिंध काफी पी० ४०१५

नयनों से नयना मिला ज़रा दिल रुबा
रुख़ से नक़ाब उठा ऐ दिल रुबा—नयनों - - - -
आते नहीं हो घरमें अब जाते हो ग़ैरों की तरफ़
गोहर की अब क्या ख़ता है दिल रुबा—नयनों - - - - - - -
देर से भीड़ है यहां जलवाये हुस्न के लिये
होश नहीं बजा मेरा दिल रुबा—नयनों - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी झझोटी

मनवा लुभावो छैल सैयां लाज करेंगे नीर काजल वाले नयनों वाले - - -
ऐ मोरे सैयां जियारा वारूं—ऐ मोरे स्वामी जियारा वारूं
गरवा लगोवा न तरसवो राज बल बल जइयां
लाज करें गे नीर काजल वाले नयनों वाले—मनवा - - - -

P. 4143. पहाड़ी झझोटी पी० ४१४३

आशिक़ हूँ मैं लक़ाये रिसालत म आबका।
कुछ डर नहीं है प्रसतिश रोज़ हिसाब का॥
दिल लाना था जो नूर तजल्ली हबीब को।
परदा उठा दिया था ख़ुदा ने हिजाब का॥
ऐसा हुआ न होगा कोई आखिर उलझ़मा।
नयनों को हक ख़ुलाही रहा इस ख़िताब का॥

बन्दों की क्या मजाल कि बे हुक्म रब चलें
नयनों पं भी तो हुक्म ख़ुदा के हिसाब का—आशिक़— - - - -
साया इसी लिये न बनी को अता हुआ
क्या इश्क़ था ख़ुदा को रिसालत मआब का—आशिक़० - - -
गोहर जब आता है मेरे नाम रसूल पाक
मर क़द में ख़ौफ़ किया है सवाले जवाबका—आशिक़० - -

दूसरी तरफ़ :— माण्ड़

शफ़ीये राज़ महशर शफ़ये रोज़े जज़ा तुम हो।
ज़यादा क्या कहूं इस से कि महबूबे ख़ुदा तुम हो॥
ख़ुदा बातिन है तुम ज़ाहिर हो यह अक़्दा है लामेहल।
ख़ुदा तो कह नहीं सकता मगर शाने ख़ुदा तुम हो॥
ख़ुदा को तुम से है उल्फ़त तुम्हें महबब है अम्मत।
ख़ुदा तुम पर फ़िदा हैं अपनी अम्मत पर फ़िदा तुम हो॥
लिखा सिल अला क्या ख़ूब मुक़त तुम ने ऐ सहरी।
क्या शफ़ीये मुर्तज़ाजद शहीदे करबला तुम हो॥

P. 5001. होला फाग पी० ५००१

दरे ख़्वाज़ा यारो दरे मुस्तफ़ा है, सरासर मदीने का नक़शा खिंचा है।
मदीना मेरा मेरा काबा यही है, हमें दर पे ख़ुवजा के जाना रवा है।
ख़ुदा की क़सम नाम ख़्वाजा ख़ुदा है, न समझेंगे ज़ाहिद तू इनकी ख़ता है। देर
वही मेम है यह मुहब्बत का देखो, ख़ुदा आप ख़ुद जिस का शैदा हुवा है।
फ़ना किस को कहते फ़ना हो सो तो जानें, ख़ुदाको बक़ा सब फ़नाही फ़ना है।
जो बोले थे मनसूर हाजी अंताउलहक़, वही रात दिन देखो अपनी सदा है।

दूसरी तरफ़ :— भैरवी

रसूल खुदा वंसी वाला है रे, सूरत बरंग मुख उजाला है रे
अपसत की मुरली हाथ लिये है, वाको देस निराला है रे। रसूल० - -
दरे मुस्तफ़ा संग मूसा नही है' यहां रब अरनी का झगड़ा नही है
रुके शह तो परदे से आवाज़ आई, कि परदेमें आ तुझ से परदा नहीं है। रसूल
मोहम्मद खाक तसे ममदूह है ज़ात कवर याई का,
करे बन्दा गर उस की मुदाह दावा है खुदाई का
गर वह अवीनामें वही हक़ का बरगज़ीदा है
सिवा इस के लक़ब किस को मिला है मुस्तफ़ाई का। रसूल० - - - -

P. 365. धुन कल्याण कव्वाली पी० ३६५

चली गुलज़ार आलम में हवाये फ़ज़्ल रहमानी।
फला फूला खड़ा है क्या इसे हर नख़ल-बोस्तानी ॥
ग़र्ज़ हिन्दू मुसलमां सब के सब हैं ख़न्दाये पेशानी।
हैं तो यह असहाक़ अब हाथ गर दस्तयों भी मन ॥
ज़हिइये मजलिस हूं जिन के सदर सेर मीदोर को महीना।
वह बर्क़ अंदाज़ गोकुल दास जी इक़बाल हों बानी ॥
रहे आबाद या रब बम्बई और बम्बई वाले।
कहां मैं एक मुसाफ़िर और कहां यह क़सर सुलतानी ॥
मुझे इज़्ज़त जो बख़्शी और जो क़दर की मेरी।
रहेगी याद मुझको बम्बई वालों की महमानी ॥
जूहीं स्कूल के मालिक रतनसी सेठ जी साहब।
करें बच्चों की ख़िदमत और करें उन की निगहबानी ॥

खुदाया शाह एडवर्ड को तू रख ज़िन्दा क़यामत तक।
रहे क़ायम हकूमत और होवे फ़ज़ले रब्बानी ॥
दुआ पर सर झुका कर ख़तम करता हूं कमाल अपना।
रहें सब महरबान उन पर हो सब पर फ़ज़ल सुबहानी ॥

दूसरी तरफ़ :— स्वर्गीय मिस ज़ोहरा बाई---ग़ज़ल पर्ज़

नाले करते हैं ज़बान से नफ़ुग़ां किया करते हैं।
तुम सलामत रहो हम तो यह दुआ करते हैं ॥
हशरका ज़िक्र मगर जंगी गुल तीन दाने।
ऐसे हंगाम यहाँ रोज़ हुआ करते हैं ॥ नाले - - - - - -
तुम मुझे हाथ उठाकर इस अदा से कोसो।
देखने वाले यह समझे कि दुआ करते हैं ॥ नाले० - - -
फिर मेरे दिलके सताने की हुई है तदबीर।
फिर नये सर से वह ज़माना वफ़ा करते हैं ॥ नाले - - - -

——(०)——

मिस् गौहर जान

P 8688. बेहाग पी० ८६८८

ऐ आफ़ताबे अनवरी रोशन निशाने है दरी
आले मोहम्मद बरतरी मख़दूम साबिर कलियरी
तुम बायसे ईजाद हो इसलाम को बुनियाद हो
तुम बेकसों की दाद को मख़दूम साबिर कलियरी
हरदम यही बांगे जरस कब टूटेगा फ़िकरे क़फ़स
फ़रयादरस फ़ायादरस मख़दूम साबिर कलियरी
सुन ले अमर की इलतिजा औलादे हैदर या ख़ुदा
मुशकिलकुशा मुशकिलकुशा मख़दूम साबिर कलियरी

दूसरी तरफ़ : भात

जो हो पेशे नज़र हरदम वोह है सूरत मोहम्मद की
मेरे दिल को जो तड़पाती वह है सूरत मोहम्मद की
मदीने से जो आती है तो इतना पूछ लेता हूँ
सबा जल्दी बता कैसी तबीअत है मोहम्मद की
न हम दोज़ख़ में जायेंगे न हम जन्नत में जायगे
खड़े देखा करेंगे राह में सूरत मोहम्मद की
निज़ा के वक्त जिसदम उलफ़ते नशतर ने दिल बेंधा
तो लिखदी ज़ौक़ ने यूंही यह हसरत मोहम्मद की

P. 8868. दादरा सोहनी पी० ८८६८

देख कर तेरी अदा जी से गुज़र जायेगा
मरनेवाला तो क़यमत में भी मर जायेगा।
देखकर - - - - - - - -
ग़ैर का क़िस्सा शबे वस्ल में क्यों ले बैठे
बातों बातों में यूंही वक्त गुज़र जायेगा
बेख़ुदी में है किसे होश कहां ऐ क़ासिद
किधर आया नहीं मालूम किधर जायेगा
किसी बन्दे प बुरा वक्त न डाले अल्लाह
क्या ख़बर थी कोई यूं हिज्र में मर जायेगा

दूसरी तरफ़ :— गंधारी टुडी

फुलवन की गेंदन मैंका मारै री वो बलमा रे
फुलवन की - - -
नंद के रोइ रस मोरा रसिया हमें संग बरसत धूनो
फुलवन की गेंदन - - - - - - - - -

मिस गोहर जान पटियाला

P. 7588. ठुमरी भैरवीं पी० ७५८८

बाट चलत नई चुनरी रङ्ग डारी वे ऐसे ही बेदरदी बनवारो
ऐसो है निडर डरत न काही से लंगार अपनी धींगा धींगो करत ओ निडर
हे मोरे राम हे मोरे राम हे मोरे राम—बाट चलत - - - - - - -
इतने दिनन मोसे कभो न इठको शाम-लिपटत जात गलन में देत गारी
हे मोरे राम हे मोरे राम हे मोरे—बाट चलत - - -
ऐसो है निडर न - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

रोके नारे गैलवा मैं कैसे भरुं पानी—पानी रे
मधुर सोधावत बीन बजावे गुवालबाल सङ्ग लिये धावे
काहम मोहन कन्द मन्दर को माखन खात फिरत घर घरसे
ऐसो री निडर जाय जाय मरोड़ी मोरी बय्यां रे—रोके - - -
इधर सोधर बीन बजावे - - - - -

P. 7658. दादरा पी० ७६५८

शाम घूंघट पट खोले—अरे बाराजोरी
अरे नन्द नन्दन तेरो ढेट सखी री नाहक बैयां क्यों मरोरे
अरे शाम घूंघट - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

मध कर प्रीत पीछे हम पछतानी—पछतानी रे
हम जानी ऐसी ही निभेगो तुम कुछ और ही जानी—मध कर - -
वा मोहन को कौन पतीजे अरे बोलत हम पछतानी रे—मध कर - -

—:-०-:—

P. 7709. ग़ज़ल पी० ७७०९

पेच डाला दिलको मेरे ज़ुल्फ़ की ज़ंजीर ने।
और घायल कर दिया तिरछी निगाह की तीर ने॥
दिलमें है तेरा तसव्वर रात दिन तेरा ख़याल।
कर दिया तसवीर मुझको इस तेरी तसवीर ने॥ पेच - - -
वार दोनोंके गये ख़ालीन वक्त इमतहां।
तेग़ने काटा गला ज़ंजीर डाला तीरने—बले) पेच डाला - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

सरे शाम ही दर पै फ़ुर्कत खड़ी है, अभी हिज्र की रात बाक़ी पड़ी है
नहीं क़त्ल करते कोई दख़ल दे क्यों, ज़बांको तेरी मरहबा की पड़ी है
अदू उठ चला था मुझे देख बोले, अजी बैठिये कैसी जल्दी पड़ी है
बंधा तार रोनेसे जब आंसुओंका, तू समझे कि यह मोतियों की लड़ी है

—:-०-:—

P. 7850. ग़ज़ल पी० ७८५०

दमे फ़िक्रे सुख़न आया जो ध्यान फ़ितना क़यामत का।
तबियत मेरी निकला हदीस फ़िक्रा क़यामत का॥
मेरे दिलकी तमन्ना देखिये क्या हशर हो तेरा—हाँ रे।
कि इनकी शोखियों ने भेष बदला है क़यामत का॥
न यहाँ ज़रूरत हकूमत की न यहां कुछ ध्यान दौलत का।
मरीज़े इश्क़ है हम दर्द रखते हैं मुहब्बत का॥
मसल कर एड़ियों से दिल मेरा बेदाद यूं बोले।
इसी कम्बख़्त दिलमें दर्द रहता है क़यामत का॥

दूसरी तरफ़ :— मिस गफ़ूरन जान—ग़ज़ल

आज प्यारा गलेसे लगायेगा मेरे दिल की लगी को बुझायेगा
आज निकलेगा दिलका ग़ुबार, आज सोनेसे सोना मिलायेगा—आज - -
सोनेसे सोना मिलाके गले लगाके चूमेगा गोरे रुख़सार
आज पहलूमें अपने लिटायेगा मेरे दिलकी लगी को बुझायेगा—आज - -

—:-०-:—

मिस गफ़ूरन जान

P. 7589. ग़ज़ल पी० ७५८९

न जाना हज़रते ज़ाहिद कभी तक इबादत पर हां हां हां
हमारा बख़्श देना मुनहसिर है उसकी रहमत पर
अगर मैं चाहता हूं वस्लका वायदा कभी उनसे हां हां हां

वह कह देते हैं यह मौक़ूफ़ रक्खो अपनी किसमत पर
सवाले वस्ल पर उनसे नया फ़िक़रा चला मैंने
मुसाफ़िर हूँ नज़र करनी पड़ेगी मेरी ग़ुरबत पर

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

उलफ़त के दाग़ यों हैं दिले दाग़ दार में।
हाँ ग़ुंचे खिले हुए हैं जिसे किसी लाला ज़ार में॥
तुझ पर खुले हक़ीक़ते उलफ़त ख़ुदा करे।
हां हो तू किसीके मेरी तरह अख़तियार में॥
मिलते ही आंख बस मुझे क्या जाने क्या किया।
हां जादू भरा था निगाहे मस्ते यार में॥

———o———

P. 7659. ख़याल पी० ७६५९

दौड़ी जान अपने बालम बनेहेरी
अपनी कहत और काहू को न मानत—सादिक़ करे मोसे रार
दौड़ी जान- - - - - - - - अपनी - - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी खम्माच

सजन तुम काहे को नेह लगा
अंखियां मोरी तुम बिन तरसें
अब काहे को मन तरसा। सजन तुम० - - -

——(:-o-:)——

P. 7710. ग़ज़ल पी० ७७१०

क़दमों में हसीनों के झुकवा दिये सर तू ने।
ऐसे भी बनाये हुवे है अल्लाह बशर तू ने॥
दिल जानेका नाम क्या है मैं जान भी दे दूंगा।
देखा नहीं ज़ालिम आशिक़ का जिगर त ने॥
या रब जो बनाई है उसबुतकी नज़र तिरछी।
मुझको भी दिया होता पत्थर का जिगर तू ने॥

दूसरी तरफ़ :— नाटक

अशरत की शबमें ऐ जान हमसे दग़ा न करना—हां हमसे - -
आकर हयामें रुख़ पर ज़ुल्फ़ दुताना करना—हां ज़ुल्फ़ - - - -
इक इलतजा है मेरी-हां वक्त सहर इलाही—हां वक्त - - -
मेरा सा दिल किसी को हरगिज़ अता न करना — हां हर गिज - -
जो चाहे तू फ़लक कर राज़ी हैं हम उसी पर—हां हम - - - -
लेकिन वह मेरा दिलबर मुझ से जुदा न करना—हां मुझ - -

—:-o-:—

P. 8575. ग़ज़ल पी० ८५७५

रात फ़ुरक़त की किसी सूरत बसर होती नहीं
मेहर की मुझपर नज़र रश्के क़मर होती नहीं
चश्मे तर का उनको आने का है हरदम ख़ियाल
आशनाये ख़ाबे मैहशर रात भर होती नहीं
याद मुझसे हिज्र में कैहती यही है बार बार
नामुरादोंकी है कैसी बड़ी सहर होती नहीं

आप सा माशूक़ दुनिया में कहां है ले बता
कौन है ऐसा हसीं जिसकी ख़बर होती नहीं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

यही नशक़ा रहा कुछ दिन अगर चश्मे सितमगर का
निगाहे शर्म भी देने लगेगी काम ख़न्जर का
कभी मुझसे भी ख़िलवत में हुवा करती थीं कुछ बातें
कभी मुझपर भी मुझसे था निसार एक बन्दा परवर का
जफ़ा से है कभो इबरत वफ़ा पर है कभी हसरत
दिखाकर हाले दिल हमने बनाया उनको पत्थर का

—:-०-—

P. 8632. ग़ज़ल पी० ८६३२

राज़े उलफ़त दिल से भी कैहकर पशेमानी हुई
बात अपने मुंह से निकली और बेगानी हुई
तेरे दीवाने ने यार रन्गे असर पैदा किया।
जिस परी से मिलगईं आंखें वोह दीवानी हुई। जिस परी - - - - -
बेवफ़ाई के गिले नाज़ से कहने लगे
बेवफ़ा को क्यों दिया दिल तुम से नादानी हुई। बेवफ़ा - - -
राज़े उलफ़त - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

छोड़ो भी ज़रा अबतो अन्दाज़ ही जाबाना
देखो तो येह ख़िलवत है अपना है न बेगाना

दिल लेके सितमगर ने फेंका उसे यूं कैहकर
हम जानते क्यों देते मेरा इश्क़ का पैमाना
दिलबर के तसौवर में ऐ रश्के परी ख़ाना
दिल लेके सितमगर ने फेंका उसे यूं कैहकर
हम जानते क्यों लेते गेह दर्द का पैमाना

स्वर्गीय मिस गोहर

(पारसी थियेट्रीकल कम्पनी)

P. 248. मीठा ज़हर पी० २४८

मन मोहन तोरे नयना अजब रसीले
निडर निपट खटकोले—तोरे नयना० - - -
मद मतवाले प्रेम के प्याले कह रहे पीले पीले।
मट कोले चट कीले खट कीले—तोरे नैयना ० - - -

दूसरी तरफ़ :— कसौटी

दासी बनू पी की लगन हो जो जी की
नहीं मांनू किसी की बस न मांनू किसीकी
वारू वापे तन मन हो सुजन
कमल ब दन फबन मोहन ऐसो-बनू पीको ० - - -
दीपक बिन कठी निमल कमल पर अंग पतंग जारे
यही प्रीति रीति कुमति का बस फ़ी अति नीकि नही नीकि
वो दासी बनूं पीकी लगन हो जीकी—

—:-०-:—

P. 249. ठुमरी पी० २४६

जाने दे मैका छनो साजनवा—जाने दे मैका - - -
काहे करत है तू मो संग राड़—नाही नाहीं मांनूगी तोरा ऐसो में
जाने दे मैका - - -
छेड़ करत नहीं माने बर जोरी करत है आरी-आपस में भारी तकरार
नाहीं नाहीं मानूंगी तोरी जाने दे मैका - - -

दूसरी तरफ़ :— बज़्मे फानी

गोरे गोरे गालों पै श्याम मन वारा—शाम मन वारा गोरे
सुन्दर कमल गुलाब से अंगदार जात तेरे जंग हारा
गोरे गोरे - - -
ऐसा इन तारो जगत कहायो-मोंहे तार आन पिया मत मारा
तोरे गोरे गोरे- - - - - -
जान गये परमात्मा वाके नैना बान—सीतल पत तुम बिना
दरस दिखाओ मोंहे आन के
गोरे गोरे नालों पै श्याम मन वारा ०

——:०:——

मिस गोला जान

P. 2321. ग़ज़ल पी० २३२१

इश्क़ में लुत्फ़ भी है लज्ज़ते आज़ार भी है
इश्क़ की तलवार भी है और ख़ंजर चाक़ू भी है

बिस्मले क़ातिल ने तड़पाया दिल है
हुस्न जूं कोई जो गत है वह ख़रीदार भी है। इश्क़ में - -
जो घटाता हूं इलाही न घटे रोमन में
पाक आलम में क्या कुल, है मोहम्मद भी है। इश्क़ में - -
पहिले सर काट कर ज़ानों पर रखा कातिल ने
फिर कहा आज कोइ ज़ालिमे दीदार भी है—इश्क़ में - -
देखता क्या है निगाहों को तड़फा न क़ातिल
सर भी मौजूद है ख़ंजर भी है तलवार भी है। इश्क़ में - - -

दूसरी तरफ़ — ग़ज़ल

पिया जिया न मोरा जलाया करो, किसी सौतन के घर मत जाया करो
तुम्हारी चाह में हम जान मिटाये बैठे हैं, तुम ही से जाने सहर लो लगाये बठे हैं—
हम अपना जानो जिगर मिटाये बैठे हैं, नतीजा इश्क़े मोहब्बत का पाये बठे हैं-
कभी हम को भी गरवा लगया करो—किसी सौतन - - - - - - - -
सताया उन्हीं ने मुझे ज़ोक़ कूबरू तेरी, मिटाया उन्हीं ने मेरे दम पै बारहा तेरी
जलाके कभी दवा न नसीब हो तो तेरी, नज़र न आई तेरी चश्म हैं रज़ूसेरी
क़ैसर हम को भी सूरत दिखाया करो—
किसी सोतन के घर न —

मिस हिंगन बाई

P. 108. भजन पी० १०८

हे गोबिन्द राखो शरण अब जीवन हारे
नीर पीवन हेत गये सिंध के किनारे
सिंध बीच बसत गृह चरण धर पछाड़े—हे गोविन्द - - -
चार पहर जुद्ध भये गज हू जब हारे
नाक कान डूबन लागे कृष्ण को पुकारे—हे गोविन्द - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

नाम को अधार तेरे नाम को अधार रे
खेलत खेल जाय गिरे जमना बिच धारा
खेल कर कूद पड़ो नन्द को दुलारा—नाम को

मिस हीरा बाई

P. 6209. दुर्गा पी० ६२०६

सखी मोरी रूम झूम—सखी मोरी रूम झूम

दूसरी तरफ़ :— कामोद

लागी रे मोरी नैना सैना, मोको मारा नजर भर कर
लागी रे मोरी नयना सयना

P. 6210. देस ठुमरी पी० ६२१०

आओ गले लग जाओ मैं वारी रे सैयां
फूल बदन सजन मैं वारी रे सैयां
जब सजन मोरी ज़िद पूरीन की
काहे को पहनूं हार मैं वारी सैयां

दूसरी तरफ़ :— भैरवी

देगयो यार सपने में दरशन।
कहत मुझे शरम लगत है ॥
सुध बुध सारी वह लेगयो यार।
देगयो यार सपने में दरशन ॥

P. 6211. मियां मल्हार पी० ६२११

उमंड घुमंड घन गरजे बदरा
बदरा गरजे अंधेरी डरावे, चमकत चमकत चली जावे है बिजली
रूम झूम बदरा बरसे—उमंड घुमंड - -

दूसरी तरफ़ :— मालकोस

मुख मोर मोर मोसे कहत जात
अंखियां दर पै लगी हैं वारी
मुख मोर मोर मोसे कहत जात

P. 6212. **शंकर** पी० ६२१२

मैं कहन लगी पीहर्वा
रूप सूप तोरा प्यारा मोहम्मद
पीहर्वा - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

किस क़दर है गर्म नाला उस गुले नाशाद का
आग फूलों की लगी घर जल के यां सैयाद का
मैं ने समझा था चिलाना बुल बुले नाशाद का
क्या रंगालो मै सही क़ातिल के यां जल्लाद का-किस - - -
ग़ैर क्या जाने भला मर्द के अंदाज़को
इश्क़ बाजों से निस बत लाख बार जल्लाद को

P. 6213. **मुलतानी** पी० ६२१३

ऐसी कहां पीत लगाई रे बालमा
हर दिन है सजना तेरा नैमा लगा
ऐसी कहां - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **पूर्बी**

मिल आई अपने पिया
नज़र आये दर्शन छपने में पिया—मिल आई - -
धड़कत धड़कत छतियां—मिल आई - - -

—:-०-:—

मिस जानको बाई

P. 232. **देश दादरा** पी० २३२

राम करे कहीं नैना न उलझें । राम करे
इन नैनन की बान बुरी है ।
उलझे से सुलझाये न सुलझें ॥
राम करे कहीं नैना न उलझें ।

दूसरी तरफ़ :— **बिहारी दादरा**

प्यारी प्यारी सूरत दिखालाजा—सूरत दिखलाजा
पहिले था दख़्ल यह दुशवार तेरे कूंचे में ।
कि सबाको भी न था बार तेरे कूंचे में ॥
जमां हैं तेरे ख़रीदार तेरे कूंचे में ।
प्यारे प्यारी सूरत दिखला जा ॥ प्यारी ०
है मुहब्बत में तेरी क़हर ख़ुदा का है अज़ाब
कर दिया एक ज़माने को इसी ने बेताब ॥
कुफ़्रो इसलाम हुये दोनों घरों में नायाब ।
दैहर वीरां है तेरे अहद में काबा है ख़राब ॥
जमा हैं काफ़िरों दीन दार तेरे कूंचे में । प्यारे प्यारी०-

——(-:०:-)——

P. 234. मल्हार सेतारख़ानी पी० २३४

रूम झूम बदर्वा बरसे उन बिन जियारा तरसे
चलत पुरवाई सूम सना ना ना ना ना ना ना
झींगरवा बोलत झूम झना ना ना ना ना ना ना ना
ऊंची महलवा बिछवा बोले चलत कंगरव कर के
रूम झूम - - - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

एक काफ़िर पर तबियत आगई, पारसाई पर भी आफ़त आगई।
हम दम इस को दिल लगी समझा है तू, दिल नहीं आया मुसीबत आगई।
याद करके तुम को ऐजां रो दिये, सामने जब अच्छी सूरत आगई।
चुपके चुपके रो रहे हो क्यों समद, सचकहो किस पर तबीअत आगई।

P 235. भैरवीं सेतारख़ान पी० २३५

मैं कैसे राखूं प्राण अरे शाम माधुबन गैलो नाय
माधुबन गैलो नाय—मैं कैसे - - - - -
लिख लिख पतियां शाम को मैं हारी
कब लग अये लो नाय अरे शाम मधु - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवों एकताला

रसीली तोरी अंखियां रे जिया ललचाय
इन जोबन पर व्याकुल जानको
तोरी देख के सुरतिया जिया सौ बल खाय
रसीली तोरी - - - - - - -

— (:०:-) —

P. 237. असावरी सेतारख़ानी पी० २३७

कन्हा ना कर मोसे रार जाय करूंगी मैं पुकार
निपट निडर लंगर डगर गगरिया मोरी फोड़ी-कन्हा ना कर - - -
जाय के जसौदा से कहूंगी
अपनी ढीट लंगर लो संवार—अजो कन्हा ना कर - - -

दूसरो तरफ़ :— भैरवीं दादरा

बालम नैया डगमग डोले ॥ बालम नैया ० - - -
गहरी नदिया खेवट मतवाले बुलाये नहीं बोले रे
बालम नैया डग मग डोले ॥ बालम नैया ० - - -

P. 1081. चैती पी० १०८१

नाहीं भूले रे तुमरी सुरतीयां हो रामा
जब से पीत लगी है तुम से, तुम ही लागे रे हमरो नजरिया हो रामा-
नही भूले रे ० - - -

दूसरी तरफ़ :— काफ़ी ठुमरी

लगे दुख दैन
रैन भी विरमाई तुम लागी खटक बिना आगे क्या करूं
मदन तन बदन जरावत कलपावत दिन रैन—लागे - - -
मदन कसक कलपावत जिया को वंधे न धीर तन पीर पीर
मनोहर पिया बिन सरस दरस कर रोय खोये दोऊ नैन न-लागे - - -

P. 1082. गज़ल पी० १०८२

मुनसिफ़ी दुनियां से सारी उठ गई, ऐ बुतों इमान दारी उठ गई।
हाय दुश्मन हो गया सारा जहां, बाप रस्मे दोस्त दारी उठ गई।
रह गये लाखों कलेजे थाम कर, आंख जिस जानिब तुम्हारी उठ गई।
किस से रक्खे दाग़ चश्मे दोस्ती, उठ गई यारों से यारी उठ गई। मुनसि-

दूसरी तरफ़ :— पीलू ग़ज़ल

जो मुजरिम ख़ताये मुकर जायेंगे, गुनाहों के दफ़्तर किधर जायेंगे।
तेरे पर से उठ कर किधर जायेंगे, इसी आस्ताने पर मर जायेंगे।
हसीनों को कबतक रहेगा ग़रूर, जवानी के दिन भी गुज़र जायेंगे।
फंसा जिन का गेसू के फंदे में दिल, वह दामे बला से किधर जायेंगे।
हमें खुल गया उनके जाने का हाल, वह बेशक रक़ीबों के घर जायेंगे।

P. 1085 गोरी पी० १०८५

जोबन पिया बारे से तज दीन
ख़लील पिया अब काहे रोवत, जो विधने लिख दीन
जोवन पिया - - -

दूसरी तरफ़ :— सोहानी

काहे सजन काहे रार मचाई, देखो देखो न करो लोग हसांई
कोई सोतनियां ने मोहे बहका दीनो, काहू ने तोसे काहू बात बनाई
छोटे पिया तोरी कर जोरत हूं छोड़ो छोड़ो ना मोरो मुरकी कलाई

——:०:——

P. 1086. मजमूआ पी० १०८६

मज़ा लैले रसिया नई झुलनी का
हाय रसिया परदेसवा में छाय,
अब कौन डारे गरे बीच हाथियां

दूसरी तरफ़ :— कजरी

तुही बाटियो जग में जवान सांवर गोरिया
दस गुंडा आगे चले दस गुंडा पीछेवा
बीच में चले लीयुतान सांवर गोरिया



P. 1090. ग़ज़ल भैरवी पी० १०९०

ग़ैर भी मेरी तरह करते हैं आहें क्यों कर
हम भी देखें तो पलटती हैं निगाहें क्यों कर
न दिलासा न तसल्ली न तशफ़्फ़ी न वफ़ा
दोस्ती उस बुते बदख़ू से निभाये क्यों कर
ज़ेरे दीवार ज़रा आन के तुम देख तोलो
ना तवां करते हैं दिल थाम कर आहें क्यों कर
दाग़ वह चाहते हैं ग़ैर को चाहें भी
जो बुरा चाहे हमारा उसे चाहें क्यों कर०

दूसरी तरफ़ :— दादरा भैरवी

गुलनारों में राधा प्यारी बसें रे
जाही जुही में कन्हैया बसे ॥ गुलनारों० - - - - -

चम्पामें चतुरभुज बेला में बिहारी
तेरे नैनों में गिरवरधारी बसे ॥ गुलनारों॰ - - - -
जाही जुही में कन्हैया बसे ॥ गुलनारों॰ - - - - -

P. 1148. दादरा पी॰ ११४८

यार बोली न बोलो चले जायेंगे
कोठे पर चार चार पहर की नशिस्त है
सोहबत में कोई मस्त कोई फ़ाक़ा मस्त है
तुम क्या करो मिज़ाज ही पाजी परस्त है
यार बोलो न बोलो चले जायेंगे। यार॰ - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

आवो आवो नगरिया हमारी
पहिले वफ़ा को भूल गये किस ख़्याल में
क्या तुम भी फंस गये किसी गेसू के जाल में
क्यों न लीनी ख़बरिया हमारी—आवो आवो॰ - -
मोती प्रोये बैठे हो क्यों बाल बाल में
ज़ुल्फ़ बना बना के फंसाते हो जाल में
कैसी भोली सुरतिया तुम्हारी—आवो आवो॰ - -
एक दिन विसाल होगा किसी से विसाल में
मुज़रत मरेंगे हम भी उन्हीं के ख़्याल में
बीती जाती उमरिया हमारी—आवो आवो॰ - - - -

P. 1149. भजन पी॰ ११४९

मोरा हीरा हिराय गये डगरे में।
कोई पूरब कोई पच्छिम बतावे, कोई पानी कोई पथरे में। मोरा॰ - - -
सुनया नार मुनचीज अमुलिया, यह कुल भूले है नखरे में। मोरा॰ - - -
कहते कबीर सुनो भाई साधू, खोज ले मन के अन्तरे में—मोरा॰ - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

सयां निकल गये मैं न लड़ी थी
इस नगरी के दस दरवाज़ा, ना जानू कोन खिड़की खुली थी॥
सात सखी मेरे आगे खड़ी थी, उनसे पूछो मैं ने कुछ न कही थी।
सुनियो री मोरी सङ्ग की सहेली, तान चुन्दरिया अकेली पड़ी थी।
कहत कमाल कबीरका बालक, इन व्याही से कुंवारी भली थी॥
सैयां निकल गये मैं न लड़ी थी।

P. 1150. होली पी॰ ११५०

होरी मची है सैयां की नगरिया, कैसेके आंऊ नहीं सूझे डगरिया।
अबीर गुलाल के बादल छाये, केसर रङ्ग की छाई बदरिया—होरी - - -
अबीर गुलाल की धूम मची है, केसर रङ्ग की छाई बदरिया—होरी - - -

दूसरी तरफ़ :— होली

बीते अवध सय्यां आवत नाहीं
फागुन मास चला बृज माही
फागुन जैहैं बहुत दिन अइहैं गैले जोबन फिर आवत नाहीं—बीते - -

——:-०-:——

P. 1151. देश पी० ११५१

ढीठ लंगर नगर नगर डगर डगर हेरे
अधुर मधुर मुरली लिये संग फिरत मेरे
नाचत गावत आवत आवत करत सौ सौ फेरे—ढीठ - - -

दूसरी तरफ़ :— देश

आज वृज श्याम घटा घन घेरे
शेशनाग नथ जसोदा के नन्दन, गोबरधन तन लिये उठाय गिर नखके ऊपर
रहते रहते मिढवा गिर लागे मुंह से पकरी उढेरे—आज० - - - -
इन्द्र राज मुख देखे, सूर श्याम घर प्रभू की महिमा
बुध जन आवत घेरे—आज वृज ०- - - - - -

P. 1155. भैरवीं दादरा पी० ११५५

धन के की सेजरिया पै रात रही, माथे की बिन्दया जात रही—धन - -
यहां गिरी बिंदिया वहां गिरा कंगना
यही सोच सारी रात रही-माथे की बिन्दिया जात रही-धन० - -

दूसरी तरफ़ :— कजरी

आये सावन के महीनवा सब सखी खेलें कजरी
कजरी खेलें झूला झूलें नई हर की नगरी रे
आये सावन के महीनवा सखी खेलें कजरी

P. 1157. दादरा पी० ११५७

पूरब जिन न जइयो मोरे महाराजा।
पूरब जइयो सब कुछ लइयो,
सवतिया न लइयो मोरे महाराजा॥

दूसरी तरफ़ :— कजरी

ऐ ठई झुलने हेराय गैली दैया रे
पथवा में ढुडलां अटरियां में ढूडलयूं
देब राखे पूछत लजाय गई ली दैयारे—ऐ ठई ०- - - -

P. 1288. बिहाग पी० १२८८

रघुबर आज रहो मोरे प्यारे
आज की रैन रहो मोरे प्यारे भोर होवत वारे
कैसे रहें मोरी मात ससीला दसरथ बांच हारे
आगे आगे राम चलत है पीछे लछमन बारे
बीचे जनक नन्दनी बनके चरण पगधारे—रघुबर - - -
ऊंचे चढ़के देखो राम रथ कितनी दूर पगधारे
तुलसी दास रतवान होत ही दसरथ प्राण सिधारे—रघुवर० - - -

दूसरी तरफ़ :— बिहाग

चलो सो रहें आधी रात गई
आधी आधी रतियां पिछले पहरवा
सुखवन नींद हरी—चलो ० - - - -

P. 1291. पीलू (सोहर) पी० १२९१

आनन्द भयो यह नगरी आज—आनन्द भयो ० - - - - -
रानी जसोधा के बिटवा भयो है , अवसर पाय हम झगड़ी आज
आनन्द भयो ० - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— पीलू

दिल एक ही से लागा हज़ारों खड़े।
दर्दे दिल से कभी थमता नहीं आंसू अपना॥
न शफ़ा हो जो मुआलिज हा गरज़ तू अपना।
और यह उम्र भी मुमकिन नहीं हो तू अपना॥
इस से बेहतर है कि किस्सह कहूँ यकसु अपना।
फेंक देंगे इसे हम चीर के पहलू अपना॥
तुझ पर क़ाबू नहीं दिल पर तो है क़ाब आपना।
दिल एक ही से लगा हज़ारो खड़े॥
तुझ से दो दिन की मुलाक़ात में क्या कीजे गिला
तेरा दिल चाहा मिला दिल ने न चाहा न मिला
दिल के हल चल से मरूंगा न कहूंगा कि जिला
बन्दे जाने जहां अबके जब आई है हिला
फेंक देंगे इसे हम चीर के पहलू अपना
तुझ पर क़ाबू नहीं दिल पर तो है क़ाबू अपना
दिल एक ही से लागा हज़ारो खड़े॥

P. 1292. चैत पी० १२९२

जुई का फुलवा हथवा लगत कुम्हलाय गैलो रामा
सिर पर लुढ़ लयू डलैया भर लुढलयू आय गई लो माली
रखवलवा हो रामा—

दूसरी तरफ़ :— कजरी

संयां होय गैले तिलंगवा मोर उमरिया बारी न
काली कुरतिया ढाल तलवरिया, लाल पगड़या नां
सैया होय गैले तिलंगवा ये - - - - - - - - -

:-०-:

P. 1295. होली पी० १२९५

मो पै डार दियो सारे रंग की गगर
मैं तो धोके से देखन लागो इधर
मो पै डार दियो सारे रंग की गगर
रंग छिड़क के जाते कहां हो
जाओ नहीं अभी ठहरो सगर—मो पै डार ० . . . .

दूसरी तरफ़ :— होली

ऐरी तोसे न खेलूंगी मैं होरी
तू तो पर बस अबीर मलो री
एक तो चूंदर रंग बोरी, दूजे अंगिया के बन्द तोड़ी
तीजे आई हूं सास की चोरी-तोसे ना ० - -
तू तो पर बस अबीर मलोंरी—तोसे ना ० - - - - - -

P. 1783. दादरा पी० १७८३

तुम ने लिया मेरी जान हमारा दिल तुम ने लिया—
जो तुम होते जल की मछरिया, हम होते माही जाल-हमारा० - -
जो तुम होते बेला चमेली, हम होते गले हार-हमारा ० - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

तोसे बचन दे मैं हारी बलमा।
जो तुम सय्यां स्नान करोगे, तुम्हारी बनूगी पन्हारी बलमा--
जो तुम सय्यां सेज सो ओगे, तुम्हारी करूंगी तावेदारी बालमा—
तो से बचन दे मैं हारी बालमा

—०—

P. 1784. ग़ज़ल पी० १७८४

ग़म रहा जब तक कि दम में दम रहा।
दिल के जाने का निहायत ग़म रहा॥
हुस्न है उसका वहुत आलम फ़रेब।
ख़त के आने पर भी एक आलम रहा॥
मेरे रोने पर जो उस ने हंस दिया।
बर्क़ चमकी अब्रे बारां थम रहा॥
सुबह गुज़री शाम होने आई मीर।
तू न चौंका दिन में अब हाय कम रहा॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

आख़िर यह हुस्न छुपन सकेगा नक़ाब में।
शरमाओगे तुम्ही न करोज़िद हिजाब में॥

अजब है आज़ताब की निसबत क्या आब से।
निसबत वही है आप में और आफ़ताब में॥
हंस हंस के बर्क़ को तो ज़रा कीजे बेक़रार।
रो रो के अब्रको में डुबोता हूं आब में॥
साक़ी इधर को देख कि हम देर मस्त हैं।
हिम्मत दिये कि साक़ी मिला दे शराब में॥
हम आप पर इशारये अबरु से हम मर गये।
फिर जी उठे तो नपी इलाजो श्हाब में॥

—०—

P. 1785. दादरा पी० १७८५

चुन्दरया रंग चुये री मोरा सय्यां ख़बर न ले
दिन नहीं चन रात नहीं निन्दया निस दिन भयो है अंदेस
मोरा सइयां ख़बरया न ले—चुदरया रंग - - - - - -
दिन नहीं चन रात नहीं निन्दया पिया में पड़ गयो पेंच
मोरा सइयां ख़बरया ० - - - - - -

दूसरी तरफा दादरा

रंगदे गुलाबी मोरी साड़ी रंगरेजवा
साड़ी की रंगाई तो है बशरते हो
ता पर ज़रद किनारी रंगरेजवा—रंग दे - - - - - - - -

—:०:—

P. 1787. दादरा पी० १७८७

फूल गँदवा न मारो मोहे लग जैहैं जान
सास ननदिया अपनी अटरिया
सोवत ननदिया जग जैहैं जान—फूल ० - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

मोर जिया न माने ननदी ले चल बजारे बजार
छोटी सी ननदी छोटा सा देवर छोटे से चारों कहार
मोरा जिया न माने ननदी ले चल बजारे बजार

———:०:———

P. 1788. चैत पी० १७८८

तंग भैली मोरी चोलीया रामा
गोरी जोबना सवार मोरे रामा रे
तंग भैली चोलीया रामा
रेशम की बनी चोलियां बंधी हैं
बन्द लागल हज़ार मोरे रामा रे—तंग ० - - - -

दूसरी तरफ़ :— होली शाहाना

आज बृजमें हो रही होरी
सब सखियन मिल रंग रंगो री
देखन निकली बृज की जानकी
राधा कृष्ण संग फाग मचोरी—सब सखी - - -

———:०:———

P. 2140. होली पी० २१४०

मोर नवल जोबनवा यों ही जाये
चूडियां मैं तोड़ पलंगपर डारे, चोलिया में दे हों आग लगाये
निज़ामुद्दीन औलिया को का समझावे,ज जू मनांऊ वह रुठा ही जाये

दूसरी तरफ़ :— फाग

दुध छिनी नन्द के लाला गोकुल हम न जावे रे
डगर चलत मोरी मटकी फोरी गलयन में मुसकाय
आधी रात को बंसी बजावे; हम सो रहा न जाय—गोकुल ० - - -

———:०:———

P. 2141. खम्मांच पी० २१४१

कोई जांबर न हुवा आशिक़े शैदा हो कर
जान ली आप ने किस रंग मसीहा हो कर
पहले वह लुत्फ़ो करम अब यह जफ़ाये हर दम
मुझ को हैरत है कि क्या हो गये तुम क्या हो कर
जान कर फ़र्ज़ किसी साहिबे महमिल का मुझे
नाज़ करती है शबे हिज्र भी लैला हो कर
वाह रे ख़त मुईछल तेरी सवारी का गुलु
ता बक़ों से न गई अर्शे मो अच्छा हो कर
हिन्द में ख़ाक़ बसर फिरते हो क्यों ऐ क़ैसर
क़ब्रे अहमद पै चलो तारीक़े दुनिया हो कर

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

ज़ौक़े मय नोशी बढ़ाती है घटा बरसात की।
और ले उड़ती है मस्तों को हवा बरसात की ॥
अब्रो दरया सबज़ह साक़ी और मुतरिब दुख़तेर रब।
हो यह सब समां तो फिर देखो फ़िज़ा बरसात की ॥
आंसुओं में डूब जाये बदलिया ऐ चशमातर।
अब तो ज़ोर अपना बढ़ा तू ऐ घटा बरसात की ॥
क्या तेरी ज़ुल्फ़े सियह को देख कर शरमा गई।
कैसी फिर यह रात है ऐ माह लक़ा बरसात की ॥

—:४:—

P. 2142. वहार पी० २१४२

बाला जोबन धूम मचायोरी, ले बहार सखी आयोरी—
अम्बा बोरे टेसू फूले, कोयल सब ढग सुनायोरी—
बाला जबना - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— पूर्बी

सयां हमारे पूरबामें छाये, तज के नगरिया हमार रे
ऊंची अटरिया रैन अंधरिया लरजे जियारा हमार रे
बादल गर्जें बिजली चमके धीमी धीमी पड़त फुवार रे
तुम बिन के का पुकारू गुसइयां डूबत हूं मंझधार रे
वासे बेदम पीत भली जो जगत के तारन हार रे। सइयां - - -

—:०:—

P. 2268. दादरा पी० २२६८

फड़कन लागी मोरी आंखियां
जब सुध आवे पिया अपने की
धड़कन लागी मोरी छतियां—फड़कन ० - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

कैसोरी ननदिया तोरा बीर
आव कह गये आज सुन आयेरे कैसेभरूंगी आधी रैन
कैसोरी ननदिया तोरा बीर

—:०:—

P. 3341. जोगिया पी० ३३४१

तुम्हीं कुफ्र, हो ईमां तुम्हीं हो।
ब्राह्मण तुम्हीं हो मुसलमां तुम्हीं हो ॥
कहो लाख तुम में नहीं हूं नहीं हूं।
मगर में कहूं हां तुम्ही हो तुम्हीं हो ॥
जहां में हज़ारों मसीहा हैं लेकिन।
मेरे दर्द के एक दरमां तुम्हीं हो ॥
न काबे को जाऊं न बुत ख़ाना समझूं।
जो कुछ हो मेरे दीनों ईमां तुम्हीं हो ॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तुम्हीं को दिल में बसा चुके हैं, निशाना अपना बना चुके हैं।
मज़ा मुहब्बत का पा चुके हैं, तुम्हारे ग़मज़े उठा चुके हैं ॥

कहीं है लैला कहीं है मजनू कहीं हैं आशिक़ कही है माशूक़ ।
यह ग़ौर करके ज़रा तो देखो हर एक घर में समा चुके हैं ॥
कहीं है यूसुफ़ कहीं ज़ुलेखा कहीं है शीरीं कहीं हैं फ़रहाद ।
इसी तरह से हरएक रंग में तमाशा अपना दिखा चुके हैं ॥
कहीं है ख़ादिम कहीं शफ़ी है कहीं है मुरशिद कहीं हैं हाफ़िज़ ।
इसी तरह से है सब से मिलते सनम हैं अपना जो पा चुके हैं ॥

—:o—

P. 3552. सारंग पी० ३५५२

डोलाये जाओ बेनीयां मारी जइयो
बेयां डोलावत आई सुख निन्दयां
ऐसो मन होव निकस चली जनियां—मारी जइयो ० - - - -

दूसरी तरफ़ :— कालंगड़ा

तोरी चतुरय्यां में जान गई बलमा
बर बस रार करत हो जानकी
चन लगत करहय्या मैं जान गई - - -

—:o:—

P. 3688. कजरी पी० ३६८८

हमारा बलम पिये भांग छोटी ननदी
दिन वाके पिये दुई चार लुटवा
रतियाम चावे घमसान ननदी

दूसरी तरफ़ :— कजरी

कैसे कहूं जियारा का हाल अरे सांवरियां
जब से पिया परदेसवा निकस गये
रोय रोय आंखी हो गई लाल रे अरे सांवरिया

—:o:—

P. 3788. ग़ज़ल पी० ३७८८

क्या तुमने दिल लिया नहीं मेरा जवाब दो ।
क्या तुम्हें नहीं है मेरी तमन्ना जवाब दो ॥
सुनते नहीं हो तुम जो मेरा मुद्दआये दिल ।
फिर हाल मेरा कौन सुनेगा जवाब दो ॥
तुम पर ही दिल न आये तो फिर किस पर आये दिल ।
तुम सा जहां में कौन है अच्छा जवाब दो ॥
रहते हो अपने चाहने वाले से दूर दूर
उलफ़त का क्या यही है तरीक़ा जावाब दो
नवाब इफ़ते ख़ार अली खां सा जीते कार
इस दोर में किसी ने भी देखा जवाब दो.

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

इश्क़ में क्यों कर बचे जान बड़ी मुशकिल है ।
दिल से मजबूर है इनसान बड़ी मुशकिल है ॥
दिल पै वहशत के हैं सामां बड़ी मुशकिल है ।
बच रहे साफ़ गरीबान बड़ी मुशकिल है ॥
राह चलते हुए वह दिल को लिये जाते हैं ।

जिन से कुछ जान न पहचान बड़ी मुशकिल है ॥
एक से एक ज़माने में हंसी हैं बढ़ कर ।
कीजे किस किस पै फ़िदा जान बड़ी मुशकिल है ॥
छोड़ दे इश्क़े बुतां ख़ौफ़े ख़ुदा कर के असद ।
ऐसा काफ़िर हो मुसलजान बड़ी मुशकिल है ॥

—:०:—

P 3919. **तिलक कामोद** पी० ३९१९

दम तेरी उलफ़ते पोशीदा का भरने वाले ।
दिल जले सीना जले उफ़ नहीं करने वाले ॥
इश्क़ में जी से गुज़रते हैं गुजरने वाले ।
मौत की राह नहीं देखते मरने वाले ॥
क्यों रक़ीबों से जलूं मैं कि यह सब है ऐ दिल ।
ज़िक्र मेरा तेरी सरकार में करने वाले ॥
जान देने को कहा उन से तो हंस कर बोले ।
तुम सलामत रहो हर रोज़ के मरने वाले ॥
दिले बेताब मगर आहाकोई की तूने ।
रो उठे चीख़ के क्यों बात न करने वाले ॥

दूसरी तरफ़ :— **सोहनी**

लग चली बादे सबा क्या किसी मस्ताने से ।
झूमती आज चली आती है मय ख़ाने से ॥
रूह कि मस्त की प्यासी आई मै ख़ाने से ।
मय उड़ी जाती है साक़ी तेरे पैमाने से ॥
सख़्तियां खीचने की होगई आदत दिलको ।

ख़ुद चले आय न फिर कर कोई बुतख़ाने से ॥
एक चुल्लू में दाग़ बहुत बहक उट्ठे थे ।
आज सुनते हैं निकाले गये मैख़ाने से ॥

—:०:—

P. 4016. **भैरवीं** पी० ४०१६

बिसरइ होना बालम मोरी सुधिया
ये ही सड़कया गुजरियो रे बालम
कौंन रहया तुम जैहो हो बालम
मुझ को मालूम न था पहले लगाना दिलका
मेरे पहलू में हमेशा ठिकाना था दिलका
याद आता है मुझे हाय ज़माना दिलका
अबतो मुशकिल है मेरे क़ाबू में आना दिलका ॥ बिस ० - - -
आंखें यह कह रही हैं कि दिलने किया ख़राब
दिल कह रहा है आंखों ने हमको डुबा दिया
बिगड़ा किसी का कुछ नहीं इस दर्दे इश्क़ में
दोनों की ज़िद ने ख़ाक में हम को मिला दिया
बिसरइ होना बालम० - - - - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **कजरी**

अबन बजावो कान्हा बंसिया अरे सांवलिया
बंसीया की धुन सुन भई है दिवानी
व्याकुल भई सब सखियां—अबना
कहत रसीले नई कजरी बनाय के
कब मिल है रंग रसिया अरे सांवलिया—अबना ० - -

P. 4145. **ग़ज़ल** पी० ४१४५

निकली ख़्वाहिश न एक भी दिल की
दिल में हसरत ही रह गई दिल की
या इलाही कसक यह कैसी है, ख़ार सीने में क्या चुभी दिल की
देखें किस तरह रात कटती है, आज हालत है कुछ बुरी दिल की
दिल मेरा लेके क्यों नहीं देते, गर नहीं आपको कमी दिल की
लाओ देदो हमें हमारा दिल, नहीं अच्छी यह दिललगी दिलकी

दूसरी तरफ़ :— **दादरा**

मनमोहन प्यारे प्रीत लगाके तड़पाओगे कलपाओगे
गुबरी सौत संग नेहा लगायो, हमरी सुरत बिसारोगे
नहीं आओगे—मन मोहन ० - - - - - -

——(०)——

P. 5003. **ठुमरी गोरी** पी० ५००३

मैका डगर चलत दीनी गारी दैया
आवो जी मेरा पीतम प्यारो
सुध बुध जायेगी तिहारी दैया—मैका० - - - -

दूसरी तरफ़ :— **बिहाग**

डोरी डालदे महल चढ़ आओ रसिया
सास ननद मोरी जनम की बैरन
सइयां सुनेंगे लगावे फंसिया—डोरी डाल दे
जी तड़पत है तुम्हरे मिलन को
इधर आओ जनियां लगा लूं छतिया—डोरी० - - -

P. 5004. **जोरीया** पी० ५००४

मुझे है गा भरोसा तेरा अल्लाह मियां करयो करम का फेरा
बाग़ भी तेरा बग़ीचा भी तेरा चिड़िया रैन बसेरा
अल्लाह मियां करयो करम का फेरा—मुझे ० - -
गुलशनमें सबा को जुसतुजु तेरी है, बुल बुलकी ज़बां पै गुफ़्त्गू तेरी है
हर शै में हैं जलवह तेरी क़ुदरत का
जिस फूल में सूघंता हूं बू तेरी है। आल्लाह ० - - - -
कहीं न कहे मुझे देख के अदू मेहताज
यह उन के बन्दे हैं जिनको करीम कहते हैं
न कर एवज़ मेरे जर्मो गुनाहे बेहद का
इलाही तुझ को ग़फ़ूर्रहीम कहते हैं। आल्लाह - - -

दूसरी तरफ़ :— **भैरवीं**

माहे जबीन ख़ुश अदा सल्ले अला मोहम्मदी
बन्दे से पूछता है क्या तेरा मौला है कौन सा
कह तो रहा हूं बरमला सल्ले आला मोहमदी
मैंने यह ख़िज्र से वजह बक़ा तेरी है क्या
कानोमें झुक के यह कहा सल्ले अला मोहम्मदी
समझे यह तूर क्यों जला मूसा से वां यह बल पड़ा
पहले न मूंह से कह लिया सल्ले अला मोहम्मदी
जिन्ने बशर का माजरा दीद हुई तो यह खुला
तुगरह में है लिखा हुआ सल्ले अला मोहम्मदी
जिस का मर्ज़ है ला दवा उस के लिये पाये शफ़ा
नुसख़ा है यह तबीब का सल्ला अल्लाह मोहम्मदी-

P. 5658. **भजन भैरवीं** पी० ५६५८

पड़ा मोरी चुन्दरी नहीरे में दाग़
यह चुन्दरी मोरी मैह के मैली भई
बात न माता पिता एक भी करो
कहे कबीर सुनो भाई साधू
बिन सत गुरु के रातन भई, पड़ा० - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **ठुमरी**

शाम ने मुरली बजाई किस तरह
मच गई घर घर दोहाई किस तरह
कोह में सहरा में बन में बाग़ में
कूक मुरली की सुनाई किस तरह
हरि की मुरली हरि के अन्दर बाजती
हरि ने हर चीज़ रचाई किस तरह

———:०:———

P. 5671. **ग़ज़ल खम्माच** पी० ५६७१

इश्क़ का आलम अगर पेशे नज़र हो जायगा।
दिल मेरा अपनी ख़ुदी से बेख़बर हो जायगा॥ इश्क़ - - -
किस तरह मानूं कि बे पर्वा रहेंगे मुझसे अब।
इज़तराबे दिल मेरा क्या बे असर हो जायगा॥
रहम कर तू रहम अब तो इस दिले बीमार पर।
ऐ मसीहा हिज्र में दर्दे जिगर हो जागया॥

ले गया जब से कि ख़त उसका पता मिलता नहीं
क्या खबर थी उस तरफ़ यह नामाबर हो जायगा
शौक़ दिल पाय तलक बाक़ी जो है जान की
यार के कूचे में अपना भी गुज़र हो जायेगा

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल भैरवीं**

वह कहते हैं निकलना अब तो दर वाज़े पै मुशकिहत है
क़दम कोई कहां रखे जिधर देखो ऊधर दिल हैं
बुलावा अरश्ये महशर में हैं सारी ख़ुदाई का
बड़ा ही धूम का जलसा क़यामत की यह महफ़िल है
मुझे तो दर्द है तेरा तुझे है क्यों यह बेदर्दी
मेरे पहलू में भी दिल है तेरे पहलू में भो दिल है
न कर माशूक़ को बेपर्दा आगे बन्दतर मजनूं
कि लैला आंख की पुतली है आगा गोश मजनूं है
अमीरे ख़त्ताजां की मुशकिले आसान हो या रब
तुझे हर बात आसां है मुझे हर बात मुशकिल है

———:०:———

P. 5801. **दादरा** पी० ५८०१

मोरो दर्दो न जाने गंवार मैं तोरे संग न जाऊंगी
जब तो कै हयो मोरे मैहल दो मैहला
टूटी झुपड़िया न वां मैं तोरे संग न जाऊंगी
जब तो कहो मोरे शालह दुशालह
फटै कमरिया न वां मैं तोरे संग न जाऊंगी—
मोरो दर्दो - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

हमार कही मानो राजा फिर पछताइयो
जो तुम सैयां हमें बिसरइयो—हमें अस नार कहां पइया
हमार - - - -

P. 5838. होली भैरवीं पी० ५८३८

अब कैसे लाज रही ए री मोरी
शाम सुन्दर मोरी बइयां मरोरी रे—अब - - -
इस नगरी का वह ठेठ लंगरवा चुन्दर वही न लई-अब - -

दूसरी तरफ़ :— होली भैरवीं

होरी खेलन कहां जाऊंरी दय्या
घट ही में मोरा खिलाड़ी रहत है
मोरा खिलारी का सब जग जाने
कोई रहीम कोई राम राम कहत है। होरी

P. 5920. ग़ज़ल पी० ५९२०

तीर रवाने की हविस है तो ज़िगर पैदा कर
सर फ़रोशी की तमन्ना है तो सर पैदा कर
कौन सी जा है जहां जलवये माशूक़ नहीं
शौक़े दीदार अगर है तो नज़र पैदा कर
कोह कन कोह कनी रो बये अश्शाक़ नही
हैजो आशिक़ दिले माशूक़ में घर पैदा कर

सदमें फ़ुर्क़त के उठाने हैं इलाही मुशकिल
दिल अगर एक दिया लाख जिगर पैदा कर
इश्क़ बाज़ी का अगर होसला रखता है अमीर
दिल जो लोहे का तो पत्थर का जिगर पैदा कर

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तू है मशहूर दिल आज़ार यह क्या—तुझ पर आता है मुझे प्यार यह क्या
जानता हूं कि मेरी जान है तू—और मैं जान से बेज़ार यह क्या
तेरी आंखें तो बहुत अच्छी हैं—सब इन्हें कहते हैं बीमार यह क्या
सर उड़ाते हैं वह तलवारों से—कोई कहता नहीं सर कार यह क्या
हाथ आई है मताये उलफ़त—हाथ मलते हैं ख़रीदार यह क्या।

मिस काली जान

P. 142. ग़ज़ल पी० १४२

कभी बन संवर के जो आगये तो बहारे हुस्न दिखा गये
मेरे दिल को दाग़ लगा गये ये नया शगूफ़ा खिला गये
यह दुआ है किसी पै न आये दिल कोई बेवफ़ा न दुखाये दिल
वो जो बेचते थे दवाये दिल वो दुकान अपनी छुड़ाये गये—कभी - -
बंधे क्यों न आप होती नहीं के मोहब्बत करते थे यह फ़हीम
वो फ़ना के पेंच में आगये वो फ़ना के पेंच में आगये—कभी - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

वह अजब घड़ी थी कि जिस घड़ी वो हमारे रोग लगा गये
वो जो था सितमगर आज था वो ही हिला हिला के रुला गये
वो जो मलते थे मेरे मुंहसे मुंह कभी लबसे लब कभी दिल से दिल
यह मुझ उन से कैसा ग़रूर था मेरे सब ग़रूर मिटा गये
कभी बन संवर के जो आगये तो बहारे हुस्न दिखा गये।

—:-०-:—

P. 148. ग़ज़ल पी० १४८

रक़्म हो कब सिफ़्त तेरी मईनुद्दीन अजमेरी
वह आली शान है तेरी मईनुद्दीन अजमेरी
तेरे दरबार जो आवे मुरादें दिल की वह पावे
सख़ी सरकार है तेरी मईनुद्दीन अजमेरी
तेरे दरयाए रहमत में जहाज़ और बेड़ा कब अट के
तो किश्ती पार कर मेरी मईनुद्दीन अजमेरी
ज़मीनो आस्मां तेरा कमीनो लामकान तेरा
फ़लक पर धूम है तेरी मईनुद्दीन अजमेरी
अलाउद्दीन, निज़ामुद्दीन, फ़रीदुद्दीन, कुतुबुद्दीन
है शान बंचवतन तेरी मईनुद्दीन अजमेरी

दूसरी तरफ़ :— भजन

देखो री एक बाला जोगी द्वारे मेरे आया है री
आसन मोर आंगन बिच बैठा वो तो मोतीयन मांग भरावे री
भिक्षा देती नाहीं लेता वो तो बारे का जोबनवा मांगेरी
देखो री०- - - - - - - -

—:०:—

मिस कौटी जान

P 153. ग़ज़ल पी० १५३

इलाही आबरू रखियो मेरे पांव के छालों की
चुभी जाती हैं नोके ख़ार पर आंखें ग़ज़ालों की
दिल अपना मुनतशर चाहत में है इन ज़ुल्फ़ वालों की
ग़ज़ब है गुलशने हस्ती तबियत में मलालों की
तुम्हें करते हैं क़ायल या ख़ता मेरी बताते हैं
हमें भी देखनी है मुनस्फ़ी इनसाफ़ वालों की
तेरे दर के गदा कम्बल पै अपनी फ़ख्र करते हैं
न हशरत उन को शालों की न ख़ुवाहिश है दुशालों की

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तेरी ज़ात पाक है ए ख़ुदा तेरी शान जल्ले जलाल हू
तेरा नाम आदिल कबरिया तेरी शान जल्ले जलाल हू
है चमन में तू ही बरंग बू है जबां पै तोते की तू ही तू
कहे क्यों न बुल बुल ख़ुश नुवा तेरी शान जल्ले जलाल हू
यह ज़मी बनी व फ़ल्क बना, यह बशर बना वह मुल्क बना
यही लफ़्ज कुन का ज़हूर था तेरी शान जल्ले जलाल हूँ
जिसे चाहे मुर्दा बनाये तू जिसे चाहे ज़िन्दा उठाये तू
तेरे हाथ में है फ़ना बक़ा तेरी शान जल्ले जलाल हू
कोई शाह कोई अमीर है कोई बे नुवावो फ़क़ीर है
जिसे चाहा जैसा बना दिया तेरी शान जल्ले जलाल हू

—— (-:०:-)——

मिस खुर्शीद ज़ान

P. 6509. दादरा पी० ६५०९

डगर चलत करत रार पनियां भरन कैसे जाऊं
हां रे देखो देखो मोरी बैइयां न छूओ—मान जा
इतनी मिन्नत मोरी मान-रोको न डगर जाने दे
देखो देखो मोरी आली न माने-मोरी रे बेदर्दी लागरे तोरे पइयां
लिपट झपट छतिया छूत एका न मानत बार बार
मोरी मानत नाहीं मोरी पनिया भरन - - - -
दिल के अरमां कभी जबन भराये कोई
फिर किस उम्मीद पै नाज़ वह उन के उठाये कोई
हाय किस नाज़ से करवट बदल कर बोले
नींद आई है हमें अबन जगावे कोई
बीच डगर लूटन लाज, तन मन सब तुम पर वार
इतनी मिन्नत मोरी मान मरव्वत पिया प्यारे—पनिया० - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

हज़ार बार मने किया मेरी गली न आ
जाली का कुर्ता पहने जेब रखवायें
घर में भोजी भाँग नहीं झलवा दिखवायें
तेल की कचौड़ी भड़ुवा दूर से दिखावे
देना लेना कुछ भी नहीं जिया ललचावे
सेजों पर बैठा भडुवा भवें मटकावे
है कोई ऐसा इस के जते दो लगाव

—०-६—

P. 6653. दादरा पी० ६६५३

चलचल ननदिया बरोठे लाग आई मुझे क्या मालूम था
हल वइया का लड़का ननदिया का यार मुझे क्या मालूम था
अरे लावे वह लड्डू खिलावे आधी रात मुझे क्य मालूम था—चल०
क़साई का लड़का ननदिया का यार मुझे क्या मालूम था
अरे लावे वह हड्डा चुसावे आधी रात मुझे क्या मालूम था
(वाह वाह खुर्शीद जान) चल चल ननदिया ० - - - -
बज़ज़वा का लड़का ननदिया का यार मुझे क्या मालूम था
लावे वह सूहा उढ़ावे आधी रात मुझे क्या मालूम था-चल ० -
मालनवा का लड़का ननदिया का यार मुझे क्या मालूम था
अरे लावे वह गजरा पहनावे आधी रात मुझे क्या मालूम था
चल चल - - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

जाओ जाओ अब न बोलूंगी तुमसे गुइयां रार न मिचाओ
ऐसो बातें न बनाओ न जलाओ न सताओ
थर थर कांपे जिया - - - - - -
बोली सहेलियां ऐजी सखी चांद सा मिलेगा शिताब
करोगी तुम हिजाब बोसा लेगा दुल्हा सुनो जी तुम जनाब
हां दूंगी क्या जवाब - - - - -
छेड़खानी से गुइयां - - - - ऐसी - - - -

P. 6675. ग़ज़ल पी० ६६७५

पर्दे से कौन जलवा अपना दिखा रहा है। दिखा रहा है - -
क्यों हमको शक्ले मूसा गश पर गश आरहा है। गश पर गश - -
मेरी गलीसे कोई ग़ैरों के घर गया है। ग़ैरों के घर - - - -
नक़्शे क़दम किसी का रस्ता बता रहा है। रसता - - -
रहम आया बादे मुरदन मुझ दिल जले पै किसी को। दिल - - -
तुरबत पै कौन यारब आंसू बहा रहा रहा है। आंसू - - - - -
किसका गुज़र हुवा है क़बरों पै बे कसी की। क़बरे - - -
यह कौन है यारब जो मुर्दे जिला रला रहा है। मुदे - - - -
ख़ुशैदु मल रही है हाथों में अपने मेंहदी
ख़ूने दिल अपना रो रो कोई बहा रहा है॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

नक़ाब उलटा सबाने जब कि उसके रूये तावांका। रूये - -
झिजक कर अबकी चादर से मुंह ख़ुर्शैद ने ढाका। ख़ुर्शैद - -
सितारे पर नहीं हरगिज़ असर है आहे सोज़ा का। अरे हां आहे - -
कलेजा फल गया है आबलों से चर्ख़ गरदूं का। अरे हां चर्ख़ - -
मेरे ज़ख़्मी जिगर को देख कर जर्राह कहते हैं।
अरे हां यह कहते हैं।
लगाये किस जगह मरहम भरे किस किस जगह टाकां
लगाये किस जगह - - - - - - - -

—:०:—

P. 6695. ग़ज़ल पी० ६६९५

साक़ीने मस्त नरगस मस्ताना कर दिया
ऐसी चलाई आज कि दीवाना कर दिया
ठंडा रहे कि जिसने लगाई जिगर में आग
शमय जमाल का मुझे परवाना कर दिया
मेरा शबाब देख कर जाते रहे हुबाब
फ़सले बहार ने उसे दीवाना कर दिया
सौ सौ को मस्त करते हैं यह एक निगाह में
जिस बुज़म में गये उसे मय ख़ाना कर दिया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हयात मौत के पहलू में बिठाये जाते हैं।
चिराग़ क़ब्र पर जलाकर बुझाये जाते हैं॥
लो अब न हशर में तुम हमको बेवफ़ा कहना।
यह कह कर क़ब्र पर आंसू बहाये जाते हैं॥
वहतीर खोंचते हैं और खोंच नहीं सकता।
दहन ज़ख़्म जिगर मुसकराये जाते हैं॥
मुआफ़ रखिये कि आती है बूए ग़ैर इस में।
जो फूल मेरी लहद पर चढ़ाये जाते हैं॥
तुही ने ए दिल नादान बिगाड़ दी आदत।
वह रूठे जाते हैं जितना मनाते जाते हैं॥

———o———

P. 6955. भैरवी पी० ६९५५

लगत करेजुवा में चोट
बालेबलमा अरे फल गैंदवा न मारो मैका
देवरा निरमोहिया ने अरे दर्दिया न जानेरे
राती पलिटिया की ओर। लगत - - - -

दूसरी तरफ़ :— असावरी

नेवरिया छाय रही-आये परी मज़ेदार-नेवरी या - - -
गहरी रे नदिया अगम बहुत है मौला लगा वे बेड़ा पार
नेवरिया छाय रही—आये परी - - - - -

——(:-०-:)——

P. 6978. ग़ज़ल पी० ६९७८

मौसमे गुलमें अजब रंग है मैखाने का
शीशा झुकता है कि मुंह चूम ले पैमाने का
खूब इसाक़ तेरी अंजमन नाज़में हैं
शमै का रंग जमें खून हो परवाने का
मैं समझता हूँ तेरो अशवांगिरि को साक़ी
काम करती है नज़र नाम है पैमाने का
तूने सूरत न दिखाई तो यह सूरत होगी
लोग देखैंगे तमाशा तेरे दीवाने का

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

बन ठन के न जा बाम पर ओ रशके क़मर आज
हो जाये न तुझको किसी दुशमन की नज़र आज

थम थम के कसक होती है दिल में मेरे ज़ालिम
रुक रुक तेरा चलता है क्यों तीरे नज़र आज
तू वस्ल की शब किस लिये बोला था सितम गर।
मैं जान से मारूंगा तुझे मुर्ग़ सहर आज

P. 7012. दादरा पी० ७०१२

तुम ने हमारा जलाय डारा जियारा—तुम ने हमारा
कवँया बन वाती हूँ ज़गतिया बन बतो हूँ-इनहो मरहूँ से पनिया भरवाती हूँ
तुम - -
महला बन वाती हूँ दुमहला बन वाती हूँ-इनहो मरहूँ से मैं गारा ढुलवाती हूँ
तुम - - -
रंडी वुल वाती हूँ पतरिया वुलवाती हूँ इनहो मरहू को मैं भडुआ बनवाती हूँ
(ज़रूर जरूर)
जलाय डारा जि यारा तुझ ने हमारा (वाह जी खुर्शीद जान मेरातो
वहुत ही दिल खुश हुवा)

दूसरी तरफ़ :— दादरा

कि जनियां धरे गाल पर हाथ खड़ी काहे पछताती हो
ऐ! आओ गले लग जाओ हमारे क्यों शर माती हो—कि जनिया
कही मरव्वत फिर मिलेंगे क्यो घबराती हो
कि जनिया धरे गाल पर हाथ खड़े काहे पछताती हो
आओ गले - - - - - - - - - - - - -

——(-:०:-)——

P. 7033. ग़ज़ल पी० ७०३३

हो मुझ से नाराज़ बे सबब क्यों, मेरी तरफ़ से ख़याल क्या है
तुम्हे कसम हैं हमारे सरकी, बता दो इतना मलाल क्या है
तुम्हारी फ़ुर्क़त में मर रहां हूं, मैं दिन मुसीबत के भर रहा हूं
और इस पै अफ़सोस कर रहा हूं न पूछा एक दिन कि हाल क्या है
हो मुझ से नाराज़ा - - - - -
हज़ारो पामाल हो रहें हैं हज़ारो जान अपनी खो रहे हैं
तुम्हारी शोख़ियो ने मारा ग़ज़ब है आफ़त है चाल क्या है
तुम्हारी तीरे निगाह ने क़ातिल दिलो जिगर को किया है घायल
और इस पै तुर्रा यह कहके बिसमिल, हमींसे पूछा कि हाल क्या है
हो मुझ से नाराज़- - - - - - -

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल

वह भड़की इश्क़ की आतिश कि दोनो घर जला डाले
जिगर में दाग़ है लाखों तो दिल में लाख हा छाले
तेरी ज़ुल्फ़ें परेशान ख़्वाब में जब याद आती है
मेरे सीने पर लहराते हैं गोया रात भर काले
तेरी फ़ुर्क़त में ऐ प्यारी में शब भर इस क़दर रोया
कहीं दरया कहीं नहरें कहीं पर बह गये नाले
यही शाम और सहर हक़ से दुआ है दिल से छैला की
ख़ुदा दुशमन को भी डालेन ज़ालिम इश्क़ के पाले

P. 7098. दादरा पी० ७०१८

गरवा लगालो दिलबर जाना हाँ हां रे-जाये जोबन वा बीता तेरा

दोहा

जलवाये हुस्ने जहान ताब दिखाते जाओ।
चाहने वालों को दीवाना बनाते जाओ॥
ख़ाक में कोई मिलता है तो मिल जाने दो।
अपनी रफ़तार से तुम हश्र उठाते जाओ॥
मरव्वत पिया पै तन मन वारूं हां हां हां
मान जावो मौर कहनवा-तुम बिन निस दिन कल नहीं आवे
गरवा लगालो दिलबर जनियां - - - (वाह वाह वहुत अच्छा)
जाय जुबनवा बीता तोरा-गरवा लगालो दिगबर जनिया

दूसरी तरफ़ :— दादरा

कलन पड़त घड़ी पल छिन तुम बिन सयां
अर्ज़ करत मानत नाहीं ढीट लंगर-निडर -बिनती मान
तन मन धन तुम पर वार—कल न पड़त - - - - - -
उठो गले से लगालो-मिटे गिला दिल का
ज़रा सी बात पय होता है फ़ैसला दिल का
लिपट गये मेरे सीने से वह जो वस्ल की शब
उन्हें भी आज मज़ा देगया गिला दिल का
मरव्वत पिया मानत नाहीं दर्शन बिन जिया को चैन
उन बिन नहीं जिया को चैन-कल न पड़त - - - - - -

P. 7235. **ग़ज़ल** पी० ७२३५

सेफ़ हो जिस की ज़बां शमशेर की हाजित नहीं
सेफ़ हो जिस की नज़र फिर तीर की हाजित नहीं
जब तसव्वर बन गया तसवीर की हाजित नहीं
ज़ुल्फ़ के पाबन्द को ज़ंजीर की हाजित नहीं
इश्क़ के कूचे में जा और पी मोहब्बत की शराब
मस्त दीवानों को कुछ तौक़ीर की हाजित नहीं
सजदा गाहे आशकांरा दिलबरों का साफ़ दिल
यह वह मस्जिद है जिसे तामीर की हाजित नहीं
क़त्ल कर क़ातिल कि अब ताख़ैर की हाजित नहीं
मुझ से काफ़िर के लिये तदबीर की हाजित नहीं
सेफ़ हो जिस की - - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़लवात**

शान क्या मौला की है अदना को आला कर दिया
जो था वीराना उसे अर्श मुअल्ला कर दिया
मैं न था कुछ भी तुम्ही ने क्या से क्या कर दिया
खुद तमाशाई बने मुझ को तमाशा कर दिया
राज़ मुख़फ़ी को तुम्हीं ने आशकारा कर दिवा
दीर को ऐ क़िबले यदीं तुम ने काबा कर दिया
आप ही बन कर ज़लेख़ा आप ही आशिक़ हुआ
मिस्र के बाज़ार में यूसुफ़ को रुसवा कर दिया
शान क्या मौला की - - - -

P. 8633. **ग़ज़ल** पी० ८६३३

क्या ख़बर थी तुम प दिल आना बला हो जायेगा
रन्जो ग़म का उम्र भर को सामना हो जायेगा
आप की कल कल ने मारा झूट की कुछ हद भी है
रोज़ कैहदेते हो कल वादा वफ़ा हो जायेगा। क्या ख़बर - - - -
तुम जो उठ जावोगे पहलू से तो क्या हो जायेगा। हां रे
बस यही ना दर्दे दिल कम होसिला हो जायेगा
मान लो बिसमिल का कैहना तुम न लो जाने का नाम
फिर वही बेताबियों का सामना हो जायेगा

दूसरी तरफ़ — **दादरा**

तुम्हारी आंखें हैं मिस्ले जादू नज़र से कर दो बशर के दो दो
निगाह लड़ावो जो तुम किसी से तो होवें टुकड़ जिगर के दो दो
अजब अदायें हैं आशिक़ो की दिलो जिगर को किया है घायल
रहेंगे ममनूं वोह ता क़ियामत तुम्हारी तिरछी नज़र के दो दो
जमाले रुख़ देखने को अपने रखा है दो आइनों को आगे
देखाई देते हैं साफ़ जलवे तुम्हारी रुख़े क़मर के दो दो
हूं बीस बोसों का उनका नौकर वोह रोज़ देते हैं मुझको गिनकर
जो चार चशमों के आठ रुख़के लबों के चारों ऊपर के दो दो

P. 8690. गज़ल पी० ८६६०

मोम क्योंकर न हो उस बुत का जिगर देखें तो
आज ऐ आह तेरा हम भी असर देखें तो
ना खा है रुखे रोशन प गुमां है सबको
हम भी सूरत तेरी ऐ रश्के क़मर देखें तो—मोम क्योंकर - - -
गालियां देते हो किस बात प गुस्सा हो जनाब
एक बोसे का यह सब नाज़ असर देखें तो—मोम क्योंकर - - -
न हम ही आते ज़िन्दा तो यां कौन होता
जिगर को थामे खड़े या यह जिगर देखें तो

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

जो मिन्नतों से भी वस्ल की शब वोह मुंह ब अपना इधर करेंगे
तो हम भो ऐ दिल तड़प तड़प कर इधर की दुनिया उधर करेंगे
जो निकल जाते हो जान जाओ बनाके बातें न दिल जलाओ
न होगा इतना भी जब सहारा तो उम्र क्योंकर बसर करेंगे
जो मिन्नतों से - - - - -
जो निकल जाते हो जाग जाओ बनाके बातें न दिल जलाओ
न होगा इतना भी जब सहारा तो उम्र क्योंकर बसर करेंगे
जो मिन्नतों से - - -

P. 8869. दादरा पी० ८८६६

मोरे आंगन बदरा न झुके
सबके आंगन निमिया बिर वा हमरे आंगर काहे धूप—बदरा न झुके - -
सबके पिया नित घर ही रहत हैं हमरे पिया परदेस—बदरा न झुके - - -
हमरे साथ की दुई दुई खेलावें हमरे करम काहे—फूट बदरा न झुके - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

क्या मज़े की गुजरिया कमर तोरी छल्ला मुंदरिता - - -
आंखें तो तीरी अमवा की फांकें—भवें चढ़ी हैं कमान
कमर तोरी छल्ला मुंदरिया - - - क्या मजे की गुजरिया - - -
आगे आगे राम चलत हैं—पीछे कुंवर कंधैया
कमर तोरी छल्ला मुंदरिया
आखें तो तीरी अमवा की फांकें—भवें चढ़ी हैं कमान
कमर तोरी छल्ला मुंदरिया—क्या मज़े की - - -

मिस लतीफन जान

P. 8154. ग़ज़ल पी० ८१५४

सब नक़्श ख़यालो है क़ाबा है न बुत ख़ना
तू मुझ में है मैं तुझमें ऐ जलवये जानाना
हम होशो हवास अपने यक बात पे खो बैठ
तू ने जो कहा हंस कर अपना मुझे दीवाना

यह हाल फ़क़ीराना साक़ी को दिखाऊंगा
टूटी हुई बोतल और फूटा हुआ पैमाना
साक़ी के हाथों से पी तेरे ऐ मयख़ाने
अजमेर का साक़ी हो बग़दाद का मयख़ाना-यह - - -
ज़ाहिद मेरी क़िस्मत में हैं इसी दर से
छूटा है न छूटेगा संगे दरे जानना

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मय नोश जब वह ग़ैर से बाहम किया किये
हम बैठे दिल में घूंट लहू के पिया किये
मैं ने तलब की उनसे निशानी तो यह कहा
इतने दिये थे दाग़ तेरे दिल पे क्या किये
वायदे किये थे सैकड़ों तू ने हमारे साथ
अब तक बताओ कौनसे वादे वफ़ा किये
जामे शराब भर के शफ़क़ मुंह से तू लगा
बैठा रहेगा बज़्म ममें कबतक हया किये

मिस मलका जान

16.

होली काफ़ी — पो० २१६

खेलत नंद कुंवर बृज के लोगन में
बृज की सखी सब बन बन आई

मरे कुम कुम और गुलाल रे
खेलत नन्द कुमार बृज के लोगन में

दूसरी तरफ़ :— दादरा

सखी री मै का पिया बिनु कछु न सुहाय।
तुम तो सोतिन घर आवत जानत मोरा जिया घबराय रे
न रही दिल के लगाने को हवस देख लिया
याद कर के तुम्हें दो चार बरस देख लिया
तुम को हम ख़ार मुहब्बत की नज़र ग़ैरों पर
तुम को दिल देके असीराने वतन देख लिया
सखी री मैं का पिया बिनु - - - - - - - - -

———:-०-:———

P. 217. भैरवीं ठुमरी पो० २१७

बाबुल मोरा नेहर छूटा जाय-अजी नेहर छूटा जाय
जब डोलिया दरवजवा पर आई रे
अपना बेगाना छूटो जाय
अंगना तो पर्वत भयो देहरी भयो बिदेस
लियो बाबुल घर अपना मैं जात पियाके देस
बाबुल मोरा नेहर छूटा जाय

P. 227. झंझोटी क़व्वाली पी० २२७

हमने देखी न सुनी ऐसी फ़िसूंगर आंखें
ले लिया करती हैं दिल आंख मिला कर आंखे
तेरी आंखों से करे कौन बरा बर आंखें
ये मिज़गां तीर हैं ज़ालिम तो हैं ख़ंजर आंखें
किशा पशेमां है किसो से मिला कर आंखें
शर्म से करते नहीं आज बरा बर आंखें

दूसरी तरफ़ :— ज़िला झंझोटी दादरा

पनघटवा पै मोरी नज़र लागी—पनघटवा - - -
सर पर घड़ा घड़े पर गागर देखत छैला लोटे भागी-पन - -
जो देखा यार को दिल से रफ़ा मलाल हुआ
हवाई उड़ती थी जिस चेहरे पर बहाल हुआ
लिपट के सोये पिया से शब वसाल हुआ
शजर जो सूखा हुआ था वहनो निहाल हुआ
पनघटवा प मोरी नज़र लागी—- - - - -
पनघटवा - - - - -

—ः-०-ः—

P. 28. भजन पीलू कहर्वा पी० २२८

आओ जी आओ कृष्ण प्राण के जिलाने वाले
अलख हो अविनाशी शम्भूर के सुवामी
अखन मंड है ब्रह्मंड के बनाने वाले—आओ - - -
संत को फिर भूटो कीनो पुत्र से निरा दर कीनो
वसु देव देवकी के दुख के छुटाने वाले—आओ - - -
गौतम की तिरया तारी पर आग की भोरी भारी
आजामिल पापी जम डंड बजाने वाले—आओ - - -
रख मुख राखन बाले दसरथ के दुलारे
ताड का स्वाभाव मारे गरद के मिलाने वाले—आओ - - -

दूसरी तरफ़ :— कजरी पीलू क़व्वाली

निंदिया उचर गई आधी रतिया—पियाकी दिखाई सुरतिया नांहि
सावन मोहन बंसी वाले की भूली सुरतिया
नाहीं कि निदिंया उचट गई - - - - - - -
सैयां की सुरतिया नाहीं भूलो कि निन्दिया - - - -

——ः०ः——

P. 1098. ग़ज़ल पीलू पी० १०६८

किस चांद के ख़याल ने हैरां बना दिया—किस चाँद
गाहे अरमाँ यारके मुझे इलाही हंसा दिया
मह फ़िल की थी और की जो देखा जमाल को
हूरों ने ज़ोर करके हंगामा मचा दिया
यां रब मेरी नमाज़ को दिल दार हो न सीब

फ़ुरक़त की आग मेरी ने नुसख़ा जला दिया—किस चांद - - - -
महबूब ज़िक्रिया से ख़ुदा को जो ईश्क़ था
नाले नदी के नाम से उसने रिला दिया—किस चांद - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल दादरा

क़ातिल को मेरे मिलने से इनकार ही रहा
तेरे फिराक़ से मुझको इनकार ही रहा
इश्क़ कहता है इंतज़ार न आयेगा हश्र तक
वायदे ख़िलाफ़ मेरे बस इक़रार ही रहा
जिन हाथसे वह फंसा है वो गुल गूये
यह हमसे छूट कर भी गिरिफ़्तार ही रहा—क़ातिल - -

——:o:——

P. 1105. होली पी० ११०५

होरी खेलो मोसे नन्द के लाल आओ आओ होरी - - -
वह तो सङ्ग लिये अबीर गुलाल लाल—होरी खेलो- - - -
केसर रङ्ग में डारूंगी उन पर और मलूंगी गुलाल लाल—होरी - -
वह तो सङ्ग लिये - - - - - - - - - होरी खेलो - - - -

दूसरी तरफ़ :— होली

होरी खेलत आज रंगीले लाल
अब रंगरगूं गुलाल लाल—होरी खेलत - - -
रंग छिड़कत मुख पर नींद में भरे मधमाती चाल
हे तन भरो हैं अबीर अहीर नहीं बाराजोरी करे अनोखो चाल
होरी खेलत आज रङ्गीले लाल

——:-०-:——

P. 1260 क़व्वाली पी० १२६०

फड़क कर मुर्गे बिसमिल की तरह आशिक़ जो मरते हैं
यह पाकर के अदू देते बुतको तब बे आब करते हैं
निकल जाते हैं वह जिस राह को ग़ज़ब करते हैं
हज़ारों थरथरियां देते हैं बिसमिल में गुज़रते हैं
मैं मरता हूं तुम्हीं पर लेकिन क्या मेरा जो करते हो
कि हाय हाय ले लिया अच्छा किया हम याद कहते हैं
फड़क कर मुर्गे बिसमिल की तरह आशिक़ जो मरते हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

दिल गेसुओं में हमसे फंसाया न जायेगा
इस चांद को यह दाग़ लगाया न जायेगा
कहता है दिल छिपा दूं में ख़ूब निगाहे तेरी
आंखें यह कहती हैं कि छिपाया न जायेगा
तेरा छिपाना आंखें लाले हैं यार से वह
जोबन बहार पर है छिपाया ना जायेगा
लाखों को ख़ाक में तो मिलाने का आरज़ा तुम्हें
ज़ालिम से कौन दिलको मिलाया न जायेगा
दिल गेसुओं में हमसे फंसाया न जायेगा

—:-०-:—

P. 1819 ठुमरी भैरवीं पी० १८१६

हंस हंस गर्वा लगाए—कन्हैया मोरा रे हंस हंस - -
सुख से कटती सारी रैन श्याम—जब होत प्रभात जिया छीन ले जावे
हंस हंस गर्वा लगाए—कन्हैया मोरा रे हंस हंस - - -
कुछ दवाई यह दिलो जिगर न हुई—मर गये हम उन्हें ख़बर न हुई
गर्वा लगाए—कन्हैया मेरा रे हंस हंस गर्वा लगाए - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा भैरवीं

गाऊं मोरी ननदी तेरा गुन गाऊं—तेरा गुन गाऊं—गाऊं मोरी - - -
जो मोरे पिया को बेग ले आओ—तन मन वांरू
वांरू मोरी ननदी—गाऊं मोरी ननदी तेरा गुन गाऊं - - -
दर्द उटता है क़यामत दिले नाज़ुक—अब हम सांसके लेनेसे मरे जाते हैं
ज़िन्दगी मौतसे बदतर है हमें फ़ुर्क़त में—ऐसे जीनेसे तो सब दुखसे
मरे जाते हैं
गाऊं मोरी ननदी - - - - - - - -

P. 1820. चैत भैरवीं पी० १८२०

सोवत निन्दिया जगाई हो रामा—भोर ही भोर
जब हम रानी बाली रे भोली तब सैयाँ मांगी न कवलवा हो राम।
भोर ही भोर—सोवत निन्दिया - - - - - - - -
जब - - तब सैयां - - भोर - - - सोवन - -

दूसरी तरफ़ :— होली भैरवीं

रङ्ग देख जियारा डराये—कन्हैया मोरा रे—रङ्ग - -
आज कुन्दन बिच ऐरी मचो है फाग मोरा—रङ्ग - - -
आंखें कचनार बुलाने को चलकर—का कून्दू गाड़ी सैयां
रङ्ग देख जियारा डराये - -

P. 1821. ग़ज़ल देश मल्हार पी० १८२१

ऐ अबरे सियह झमता आता है किधर से
शायद तूहो आया है मय साक़ी के घर से
कोयल की कहीं कूक है साग़िर का कहीं शोर
बुल बुल का तराना है कहीं साक़ी के घर से—ऐ - -
बिना यार सताता जो बरसात का मौसम
लन जाती है साहमन की झड़ी दीदये तरसे—ऐ - - -
क्या रात अन्धेरी में घटा उठी है काली
सुन करके हमें होता सोदा नये सरसे—ऐ - - -

दूसरी तरफ़ :— कजरी

गिरफ़्तार हूँ सितम में अरे सांवलिया
और से छीना है माल—किया वस्ल से इन्कार
बाक़ी रहा इन पै दरे शाम—छूटे कोई दममें सांवलिया—गिर० - -
तेरे दिलका ताबेदार—चाहे ख़ंजर ले के मार
आशिक़ कहता बार बार—उज़्र नहीं हम मेरे सांवलिया—गिर० - -

P. 3353. देश पी० ३३५३

बीती जात बरखा रुत सजन नहीं एरी—बीती जात - - -
नगन मोर पपीहवा बोलत पीहू पीहू करे पुकार
उनके जोबन बिरहा सतावे ऐसी पिया दुख देरी
बीती जात बरखा - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— सावना

पपीहरा पीऊ पीऊ करे बोली पपीहरा न बोल
पिया देश विदेश डरे मोरा जिहू—पपीहरा पीहू पीहू करे - - -
कारी बदरिया पिया मोरा परदेस बरसन लागा मेंह
पास नहीं मोरा पीहू—पपीहरा पीहू पीहू करे

P. 4342. सोहनी पी० ४३४२

हाय वह दिन कि गुज़र जाती थी शब बातों में
अब न बातों में मज़ा है मुलाक़ातों में—हाय - - -
आगया ग़ैर को सोहबत का असर बातों में
कुछ हो गये तुम अकबर के बहकातों में—हाय - - -
प्यार है दिलमें वह बुत देखिये क्या मिल निकला
कैसी कैसी अदावत चलने लगी बातों में—हाय - - -
लुत्फ़ क्या है उनकी मुलाक़ातो में
कुछ रुखाई के सिवाय बात नहीं बातों में—हाय - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

मैंने देखा रक़ीबों से तेरी नज़रिया ख़ूब लड़ी
हमसे बहाना सौतन घर जाना—पहले कही मैंने जाना
नज़रिया ख़ूब लड़ी—मैंने देखा - - -
हमसे बहाना - - - पहले - - - नज़रिया - - - मैंने - - -

—:०:—

P. 4562. ग़ज़ल पी० ४५६२

बलबले दिल में तसव्वर के हैं आते जाते
किया तो करते हैं ग़म में भुलाते जाते
अपने दीवानों को वह देख के फ़रमाते हैं
जिस के सौदाई हुवा है ख़ाक उड़ाते जाते
मैं तो बैठा हूँ दरे राह तो मतलब यह है
देख लेते हैं तिनकियों से वह आते जाते
दिल लगाना नहीं क़ातिल है किस लिये मतलब
जो हो दो दिनके लिये रीत बढ़ाते जाते—बलबले - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

काफ़िर हो जो सजदा करे बुतख़ाना समझ कर
सजदा किया हमने दरे जाना समझ कर
हम रोज़ सरे बाज़ू जला करते हैं लेकिन
परवाह नहीं करता कोई परवाना समझ कर
अच्छा है न आये वह मेरे ख़ानये दिल में
अरमान निकल जायेगे जो बीराना समझ कर—काफ़िर - - -

P. 4590. **बिहाग** पी० ४५६०

सखी प्यारी प्यारी अखियां राखेजी—मन मोह लियो
सखी प्यारी - - - -
शामसुन्दर हमरो हाथ छोड़ो—देख कहीं अरझाय री
सखी प्यारी - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **दादरा**

ना छेड़ो सैयां बाली उमर लरकैयां
छोड़ो छोड़ो मोरी बैयां—न छेड़ो सैयां बाली - - -
इश्क़ के हालसे या रब कोई आगाह न हो
पांव इस राह में रख कर कोई गुमराह न हो
ख़ुवाहिश जिससे रुतबा सरे बाज़ार न हो
हुस्न यूसुफ़ भी नज़र आयें तो कुछ चाह न हो
मानो जी मानो मोरे संयां—न छेड़ो - - - न छेड़ो - - -
छाड़ो छाड़ो मोरी बैयां—न छेड़ो - - -

—:-•-:—

P. 4591 **ठुमरी पीलू** पी० ४५६१

पी की बोली न बोल पपीहरा
अरे पपीहरा रे—अरे पी की बोली—अरे पी की बोली न बोल
सुन पावें मोरी सास ननदिया ए देंगे पंख मरोड़
पी की बोली - - - -

दूसरी तरफ़ :— **दादरा**

मोरे जोबना पे आई बहार बालम परदेसा न जाइयो
मोरे जोबना - - - -
आओ पिया मैं सेज बिछाऊं गरवा लागूं करूं तोको प्यार
बलम परदेस न जाइयो मोरे जोबन - - - -

मिस मुमताज़ जान

P. 127. **क़व्वाली ग़ज़ल** पी० १२७

यह तो मैं क्यों कर कहूं तेरे ख़रीदारों में हूं
तू सरापा नाज़ है मैं नाज़ बरदारों में हूं
सोफ़ियों में हूं न रिन्दों में न मय ख़्वारों में हूं
ऐ बुतो बन्दा ख़ुदा का मैं गुनहगारों में हूं
मैं अज़ल से हुस्न जाना के ख़रीदारों में हूं
उसका मज़हब हूं उसीके नाज़ बरदारों में हूं
वाहरी ग़फ़लत नहीं है आज तक इतनी ख़बर
कौन है मतलूब मैं किसके तलबगारों में हूं
वह दरीदा होके बांधे एक पुरानी तर्ज़ से
मैं किसी ज़ुल्फ़ दुताके नाज़ बर्दारों में हूं
इश्क़ का जादू क़यामत है जो जिस पर चल गया
वह मेरे दिलदार है मैं उसके यारों में हूं
कर रहे हैं ज़ुल्म और उस पर यह तर्राह देखिये
पूछते हैं मुझसे क्या मैं भी सितमगारों में हूं

दूसरी तरफ़ :— झंझोट

सितम से बाज़ आ ज़ालिम क़यामत आने वाली है।
बपेश दावो महशर अदालत होने वाली है॥
किसी के हुस्न अफ़ज़ूं की शोहोरत होने वाली है।
नज़रबाज़ों सिंभल बैठो क़यामत होने वाली है॥
हमारे इश्क़ की दुनिया में शोहोरत होने वाली है।
क़िसी माशूक़ कमसिन की शरारत होने वाली है॥
ख़दग नाज़ का मुशताक़ दिल भी है जिगर भी है।
सितम यह है कि दोनों में रक़ाबत होने वाली है॥
न ठुकरा कर चलो हर हर क़दम पर ऐसी शोख़ी से
तुम्हारी चाल से बरपा क़यामत होने वाली है॥
लिगे शमशीर बरां आज वह मुक़तिल में आते हैं।
मुबारिक बाद मुशताकों शहादत होने वाली है॥

—:०:—

P. 351. ग़ज़ल भैरवीं क़व्वाली पी० ३५१

इलाही मुझको दिखला दे रुख़ ज़ेबा मुहम्मद का।
कि है अल्ला का दोदार नज़ारा मुहम्हद का॥
फ़लक पर कोई हैरान कोई आवारा मुहम्मद का।
फ़िदा एक एक साइत और सियारा मुहम्मद का॥
ख़बर थी सब उसे इसरार फ़लके कबरयाई की।
कि था रूह अलामें तिफ़ली से हरकारा मुहम्मद का॥
फ़लक की हरकतों से खुल गया असबाब अरफ़ा पर।
कि बरसों रहचुका है अर्श गहवारा मुहम्मद का॥
गया गरदों पै उनके शर्बते दीदार का पियासा।

मसीहा भी था बिलतहक़ीक़ दुख यारा मुहम्मद का॥
अफ़ान है नूर उस छलतान दीन की कोस शाहीका।
सदा बजता है पांचों वक्त, नक़ारा मुहम्मद का॥
पहुंच लेगा जन्नान में जब कि एक एक उम्मति उनका।
कहीं उस वक्त, होगा ग़म से छुटकारा मुहम्मद का॥

मिस मुश्तरी जान

P. 7374. गुलिस्तां पो० ७३७४

बहरे गुलदश्त गुलिस्तां की फ़िज़ा बन जाऊं
नग़में संगीन सब्ज़ बुल बुल की सदा बन जाऊं
बोसा लेने के लिये जामे शफ़ा बन जाऊं
कहिये तो लुक़मा शमशीर कज़ा बन जाऊं
ख़ाली साइल को मेरी जान नडर से टालो
नख़ल उल्फ़त हूं मुझे आबे वफ़ा से पालो
गुले ख़ुशरंग हूं अच्छी तरह देखो भालो
हार बन जाऊं गले से जी अगर मस डालो॥
पांव में तुम जो लगालो तो हिना बन जाऊं।
बहरे गुलदश्त गुलिस्तां की फ़िज़ा बन जाऊं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

बुल बुल नामुराद पर कोहे अलम गिरा दिया।
हां हां कोहे अलम गिरा दिया
दामने गुलसे कर जुदा बख़्ते सितम बना दिया।

हां हां बख़्ते सितम बना दिया
आये थे आज ख़ुवाबमें पूछने हाल दिल मेरा।
दर्दे जिगर ने उठके हाय मुझे जगा दिया
हां हां हाय मुझे जगा दिया
ऐ सितम फ़लक आशना तुझ कोन आया रहम तक
मुश्तर नामुराद पर कोहे अलम गिरा दिया
हां हां कोहे अलम गिरा दिय

—:o:—

P. 7437. सोहनी पी० ७४३७

चाहते हैं ज़ख़्म ताज़ा हो दिल दलगीर का
छेड़कर वह तज़ करा करते हैं अपने तीर का
सच तो है क्यों बे मरव्वत का कोई अहसान ले
है तक़ाज़े पर तक़ाज़ा इस राज़ो पीर का—चाहते हैं - -
क्या शिकन माथे पे है किस वास्ते नाराज़ हो
मुझ से क्यों पढ़वाते हो लिखा मेरी तक़दीर का

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

बुतों से बचकर चलने पर भी आफ़त आही जाती है
यह काफ़िर वह क़यामत है कि तबियत आही जाती है
यह सब कहने की बतें हैं कि मुझ को छोड़ बैठे हैं
जब आंखे चार होती हैं मरव्वत आही जाती है
क़ज़ा ही को रसाई है दिलोंका है ख़ुदा हाफ़िज़
जहां दिलमें मलाल आया कदूरत आही जाती है

कहीं आराम से बैठे फ़लक रहने नहीं देता
हमेशाह एकन एक सर पर मुसीबत आही जाती है।

——:o:——

P. 7466. ग़ज़ल पी० ७४६६

क्या जियें खाक़ जियें जीने का सहारन रहा
जो कुछ पहिले था वह ध्यान हमारा न रहा
एक मैं हूँ कि तुम्हें दिल से भुलायान कभी
एक तुमहो कि तुम्हें ध्यान हमारा न रहा। - - - -
आज तक सब्र किया मैंने तेरे वायदे पर
अब मेरी जान मुझे सब्र का यारा न रहा। क्या जियें - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

क़िस्साए इश्क़ मेरा दिल से सुना करते हैं
कितने भोले हैं मेरे हक़में दुआ करते हैं
गालियां भी हैं मज़े की जो लबे शीरीं की
और हम झिड़की भी दो चार सुना करते हैं—क़िस्सा० - - -
आशिक़ों के लिये हर आन फ़ना है लेकिन
वस्ल की आस में यह लोग जिया करते हैं
क़िस्साए इश्क़ मेरा दिलसे सुना करते हैं

P. 7590. नात पी० ७५६०

क्या देर है हशर में कब जलवा गिरी होगी
कब सामने जायें गे कब दाद रसी होगी
मैख़्वार तेरे साक़ी महरूम न रह जावें
सुनते हैं तेरे दर पर कल भीड़ बड़ी होगी
रोज़े में मुहम्मद के पहचान यही होगी
वह काली कम्बलिया भी कांधे प धरी होगी
(फिर दुबारा कुल राग)

दूसरी तरफ़ :— नात

दिलचस्प किस क़दर है दरबार चिशतियों का
नज़रों में बस रहा हैं मजमा बहिशतियों का
पीराने पारसा है सरताज है जहां का
ख्वाजा जो मुइनुद्दीन है बेकस की किश्तियों का
दिलसे भुला अपने बाग़ो बहारे जन्नत
अजमेर जाके देखो नक़्शा बहिशतियों का
दिलचस्प किस क़दर है दरबार चिशतियों का

7711. ग़ज़ल पी० ७७११

अज़ल के तौर कुछ अब आश कार होते हैं
जवानी आई है यह आप पर निसार होते हैं
शहीद होने पर मोक़ूफ़ है अगर मिलना
कटा कर सिर तेरे उम्मीदवार होते हैं
यक़ीन है कि कशिश खींच लायेगी इन्हें
इनके वास्ते अब बेक़रार होते हैं—अज़ल - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

क़दर कुछ रहती नहीं दिलसे उतर जानेके बाद
फूलमें ख़ुशबू नहीं रहती बिखर जानेके बाद
कमसिनी में ये अदाये हैं तो है हाफ़िज़ ख़ुदा
क्या क़यामत ढाये गे जोबन उभर जानेके बाद
क़दर कुछ रहती नहीं दिलसे उतर जानेके बाद
जब तो यह बोल उठे बाहें गलेमें डाल कर
भूल बैठे हैं वह मुझको अपने घर जानेके बाद—क़दर - - - -

P. 7851. ग़ज़ल पी० ७८५१

दस्ते नाज़ुक से वहां खंज़र जो चल कर रह गया
आज मुश्ताक़ शहादत हाथ मल कर रह गया
दिन दुश्मनों के फिरे मेरे भी फिरना चाहिये
क्या ज़माना एक ही करवट बदल कर रह गया
एक तो सूरत ग़ज़ब उस पर ग़ज़ब जोशे शबाब
जिस ने उस को देख पाया हाथ मल कर रह गया (वाह वाह सच है)
इतमिनान कर चुके सीने पर मेरे रख के हाथ
दर्दे दिल जाता कहां पहलू बदल कर रह गया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

अजब तरह से सितमगर ने दिल शिकार किया—हां अजब - -
बचा नज़र से तो चितवन ने चढ़ कर वार किया—हां - - - - - -
बड़ा कमाल तूने निगाहे चार किया
कि दिल पर तीर लागाया जिगर के पार किया-हां कि दिल - - -
यह हमने माना कि है नामुराद दिल से नफ़रत
किसी ग़रीब को फिर क्यों उम्मीदवार किया—हां दिल - - -
निकल के सीने से आखों में दम रहा था।
वहां किसी ने दम मर्द दिल फ़गार किया॥

P. 8027. ग़ज़ल पी० ८०२७

आज़ें रंगीन पै उस के ज़ुल्फ़ बल खाती रही
नागनी काली थी फ़र्शे गुल पै लहराती रही
वस्ल की उम्मीद जहां से हर घड़ी देती रही
याद उस की दिल में बैठी चुटकियां लेती रही
असमां रंगे शफ़क़ रोता रहा खूने जिगर
हल्क़े बुल बुल पर छुरी सैयाद की चलती रही
रहम ज़ालिम को न आया उस दिले नाशाद पर
वह ज़िबह करता रहा हसरत से वह तकती रही

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

रुख़सत ऐ शोख़ की दिल की ख़ुशी आज़ाद हुई
मेरे उजड़े हुए घर बेकसी आबाद हुई

उनको ग़म देने की आदत मुझ को ग़म सहने की ख़ू
अच्छी बेदाद हुई जिस की न फ़रयाद हुई
सदक़े हाथों के लिख लिख के मिटा दे तक़दीर
खल तेरा हुआ क़िसमत मेरी बर्बाद हुई

P. 8155. ग़ज़ल पी० ८१५५

वस्ल में छेड़ने का सिलसिला जाता रहा।
तुम गले से क्या मिले सारा गिला जाता रहा॥
एक तो आंखें दिखाईं और फिर यह शोख़ी से कहा।
एक मुद्दत हो गई सिल सिला जाता रहा॥
रोज़ आते थे ख़त किताबत रोज़ जाते थे पयाम।
तुम गले से मिल गये सारा गिला जाता रहा॥
वस्ल में छेड़ने का सिलसिला जाता रहा - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

ना तमन्नाई से नाज़ुक तबीअत मेरी।
तुससे पहले ही बदलने लगी हालत मेरी॥
एक तो आलम तेरा जलवे का तलबगार हुवा।
फूक देती है मुझे गरमिये शिद्दत तेरी॥
आप दुशमन के तरफ़दार हुवे तो हाफ़िज़।
बन्दा पखर मेरे साथ है क़िसमत मेरी॥
ना तमन्नाई से नाज़ुक तबीअत मेरी - - - -

P. 8276. ग़ज़ल पी० ८२७६

इर्फ़ सब मेट दिये मेरी वफ़ा के तूने
किस से सीखे हैं यह अन्दाज़ जफ़ा के तूने
हाय पिया मारा तेरी आशिक़ी ने मुझे
नहीं और सताया किसी ने मुझे - - - -
रुख़े अनवर पै यह जो काली ज़ुलफ़ जाना - - - -
इसका है मुझको सौदा उसका हूं मैं दीवाना
हाय किया ख़ल्क़ में रुसवा इसी ने मुझे - - - - -
पयामे ताजे दारा ऐ सबा तू किस लिये लाई मुझे
गदाई को दे हज़रत करूं क्या लेके मैं शाही
हाय दिया सब कुछ मेरे नबी ने मुझे -
तरीक़ा क्या है तेरा रस्म क्या है तेरी उलफ़त का
करूं मैं ताज़ीम कैसे तेरी इस बालीने इज़्जत का
ज़रा इसके बता दे क़रीने मुझे - -
पिया मारा तेरी आशिक़ी ने मुझे - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

जान पर आ बनी अब वक्त मसीहाई है
तेरे दर पै है एक दर्द जिगर लाई है
बुलबुलों में कोई चैहका न चमन में मैहका
अपने आशिक़ का कभी जी न बहलते देखा
कांधा देने के लिये आये रश्के मसीहा
अपने शैदा का जनाज़ा जो निकलते देखा
इश्क़ बाज़ों को सदा इश्क़ में जलते देखा
आशिक़ों को न कभी फूलते फलते देखा

———:०:———

P. 8634. ग़ज़ल पी० ८६३४

कूचये इश्क़ में ज़िल्लत भी है रुसवाई भी ।
लोग दीवाना कहा करते हैं सौदाई भी ॥
अपने माशूक़ से यारब न जुदा हो कोई
सच तो यह है कि बुरी होती है तनहाई भी ॥
लेके पैहलू में मुझे नाज़ से फ़रमाने लगे ।
मेरी फ़ुरक़त में भला चैन से नींद आई भी ॥
क्या करूं ऐ दिल अब तलक न आये हैं वोह ।
वादा किया और सर की क़सम खाई भी ॥
कूचये इश्क़ में - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मुझ को उन से उनको ग़ैरों से उलफ़त हो गई ।
मेरी शोहरत से ज़ियादा उनकी शोहरत होगई ।
बज़्म में मेरी उनकी ख़ास ख़िलवत होगई ।
हाय येह कैहकर मैं जाऊं शर्म रुख़सत होगई ॥
हम जो कैहते थे तुझे सोहबत ग़ैर की अच्छी नहीं ।
ग़ैर से मिलकर तुम्हारी ग़ैर हालत होगई ॥
बाद मरने के हां मेरे ख़बर हुई उनको उस वक्त ।
दफ़न मुझको करदिया तामीर तुरतब होगई ॥



P. 8689. सारंग पी० ८६८९

रोते हो तुम आते जाते मेरा मदफ़न देखकर
क्या कहेंगे हां दोस्त दुशमन देखकर

चश्मे गिरयां बस तुझे आता है रोना देख लूं
पुरज़े पुरज़े आस थी यास सामां देखकर
शमश्र मदफ़न बन गई आशिक़ का मदफ़न देखकर
रोते हो तुम - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

गुज़र इसवक्त. हुवा है सरे मदफ़न उनका
अबतो ऐ दस्ते तलब छोड़ न दामन उनका
वस्ल में क्या है मेरे पास जो मैं नज़र करूं
दिल अदाओं का जिगर नाज़ का तन मन उनका
तोड़कर तख़्तये मरक़द भी निकल आऊंगा
बेकसी नाम न लेना सरे मदफ़न उनका
गिर पड़ा दिल जो हमारा तो उठाने के लिये
सांस पर लोट गया गोशये दामन उनका
गुज़र इस वक्त. हुवा - - - - - - - -

——:-०-:——

P. 8870. ग़ज़ल पी० ८८७०

डरते डरते तेरे मिलने का ख़याल आता है
जिस प जाती हूं वोह अरमाने विसाल आता है
किसको दावा है यहां ज़ब्त का लेकिन ज़ालिम
तेरी रूसवाई का रह रह के ख़याल आता है
जाहिली आयेगी ऐ क़ैस अभी आते आते
आख़िरी वक्त. में इनका तो पैमाल आता है
क्या कोई शाद रहे क्या कोई न शाद रहे

उमर शोख़ी की दिया हार को उलझाकर
ता कि छलझा न सकें हार के टुकड़े करदें—डरते डरते - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हाय ज़ालिम बिस्तरे ग़म पर किसे नींद आय है
रंज सहते हिज्र का शब भर मुझे सरकाय है
बेक़रारी हिज्र में मुर्ग़ बिसमिल की तरह
सामना दिल को दिल पहलू से निकला जाय है
एक दिन वोह था कि मुझ से ख़ुश था बहुत
एक दिन वोह है कि तू दौलत को भी सरकाय है

——:०:——

मिस नसीम ज़ान

P. 7375. दादरा पो० ७३७५

मतवाले रङ्ग लाये नैनां तोरे मतवाले रङ्ग लाये
मोहे तिरछी नजरियों से मत मारे—रङ्ग लाये
इस दिल रुबा सनम का जब से हुआ नज़ारा
आंखें दिखाके उसने बेमौत मुझ को मारा
कुछ बस चला न मेरा बे साख़्ता पुकारा
मोहे तिरछी नजरियों से मत मारे—रङ्ग लाये नैना तोरे मतवाले

दूसरी तरफ़ :— दादरा

छिछिल नदिया बंसी लागत नाहीं
गोरिया रे सदा—हां घूंघट खोल, हां लगे रे नैना जिया मानत नाहीं

छिछिल नदिया बंसी लागत नाहीं
चुन चुन कलियां मैं रे सेज बिछायो रे, पुत्र तिरिया हाथ लागत नाहीं
छिछिल नदिया बंसी लागत नाहीं

P. 7591. ग़ज़ल पी० ७५९१

नुक़्ताचीं है ग़मे दिल उसको सुनाये न बने
क्या बने बात जहां बात बनाये न बने
मैं बुलाता तो हूं उसको मगर ऐ जज़बये दिल
उस पर बन जाये कुछ ऐसी कि बिन आये न बने
इस नज़ाकत का बुरा हो वह भले हैं तो क्या
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दीवाना हो गया रे उफ़ कहके दमबेख़ुद तेरा दीवाना हो गया रे
दो हर्फ़ थे कि जिनका अफ़साना हो गया रे। उफ़ - - -
तासीर कर चला था मेरा क़िस्सये फ़िराक़
वह सुनते सुनते सो गया अफ़साना हो गया रे। उफ़ - - -
वह सबसे पूछते हैं यों मेरे जुनूं का हाल
दीवाना बन गया हैं कि दीवाना हो गया रे। उफ़ करके - - -

—:-०-:—

P. 7660. ठुमरी पी० ७६६०

हां जाओरे सैयां को ले आओ रे —कोई जाओ रे - - -
मेरा दिन दिन बढ़त सुहाग सैयां नहीं आये रे—कोई जाओ रे - -

इन बिरहा ने खाइयो है मास बदन भयो खोखला
इन हारन ने कित जाऊं रे—सैयां नहीं आयो रे—कोई - -
मोरा दिन दिन बढ़त सुहाग - -
सैयां नहीं आयो रे—कोई जाओ रे - -

दूसरी तरफ़ :— पीलू

हां राम के करी मुड़इया—है रहे बलम हमारे
हो राम के करी मुड़इया - - - - - - -
हंस कर चढ़ अटरिया उतरी रोई
बालम तोरी रे छोड़ी—कुछ भीन खोई
हे राम के करी मुड़इया—हां रे हां—हो राम - - -
हो राम के करें - - - हां के करें - - - -

—:०—

P. 7852. ग़ज़ल पी० ७८५२

सितम है आदमी के वास्ते मजबूर हो जाना
जमीं का सख़्त होना आस्मां का दूर हो जाना
सितम है - - - - - - -
शबे वसलत मेरी आंखों ने यह अन्धेर देखा है
नक़ाब उनका उलटना रातका काफ़ूर होजाना—अरे काफ़ूर - -
हमारे ज़ख़्म दिलने दिल्लगी अच्छी निकाली है
छिपाये से तो छिप जाना मगर नासूर होजाना।

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

फिर किसी के तालिबे दीदार आंखें हो गईं
ज़िन्दगी भरके लिये बीमार आंखें हो गईं
देखिये अच्छी तरह दुशमन की जां अब देखिये
पहिले दो आंखें थी अब दो चार आंखें हो गईं
अब बुलायेंगे हमें क्यों और क्यों आयेंगे आप
अल्ला अल्ला अब तो ग़ैरत दार आंखें हो गईं

P. 8277. होली पी० ८२७७

अरे मैं तो जब जानूं पिया चतुर खेलारी - - -
होरी खेलन मोरे आवोगे मैं तो जब जानूं
पिया चतुर खेलारी - - - - - -
हमारी चुंदरिया रङ्ग में भिजोई रे अपनी फाग बचावे
मैं तो जब जानूं पिया चतुर खेलारी - - - - - -
हां होरी खेलन कोरे आवोगे - - -
हमारी चुंदरिया रङ्ग में भिजोई रे अपनी फाग बचावें

दूसरी तरफ़ :— कालंगड़ा

अलबेलियां कैसे जगाऊं रतियां हां अलबेलियां - - - -
हमरे पिया परदेस सिधारे लिख लिख भेजि हैं चिठियां - - -
हां अलबेलियां कैसे जगाऊं रतियां - - - - -
हमरे पिया परदेस सिधारे लिख लिख भेजि हैं - -
हां अलबेलियां कैसे जगाऊं - - - - - - - -

मिस राधा बाई

P. 7661. भजन पी० ७६६१

सुना है तारे हैं तुमने लाखों - - -
हर एक भगत को दुखमें पा कर—स्वयम् सिंभाला है तुमने जाकर
बिगड़ रही है दशा हमारी—इन्हें सिंभालो तो हम भी जाने
सुना है तारे हैं तुमने लाखों

दूसरी तरफ़ :— भजन

समाय गयो मोरे हिरदे में मोहन—समाय गयो री मोरे - - - -
समाय गयो मोरे हिरदे में मोहन—समाय गयो री मोरे हिरदेमें मो०
मोर-मुकुट मुखरेकागृत कुडंल—अरे कुडंल की झलक दिखाय गयोरी
मेरे हिरदे में मोहन समाय गयोरी
सांवली सूरत मोहनी मूरत बजंती माल पड़ी—मेरे हिरदे में मोहन - -

P. 8028. खेमटा पी० ८०२८

करवटवा में चूरियां मुरक जइयो रे
सास ननद मोरी पनियां को भेजें पतली कमरिया लचक जइयो रे
करवटवा में चूरियां मुरक जइयो रे
सास ननद मोरी सजया पै भेजें बारि उमरिया बिगड़ जइयो रे
करवटवा में चूरियां मुरक जइयो रे

दूसरी तरफ़ :— खेमटा

गोरी रात क्यों न आई मोरा जिया घबराय - - -

L

तोरे होटों की लाली मेरी जान लिये जाय
तेरे गोटे की अंगियां सिंभाली न जाय
गोरी रात क्यों न आई - - - -

—:०:—

P. 8278. चैता पी० ८२७८

बलमा चैत मास चुनरी रंगादे रे बलमा लाली रे लाल—चैत मास - -
चुनरी रंगादे अंगिया सिलायदे रे बन्द बन्द घुंघरु लगायदे रे बलमा - -
चैत मास चुनरी रंगाय दे रे बलमा लाली रे लाल—चैत मास - - -

दूसरी तरफ़ :— होली

अबकी बेर हमारी लाज राखो रे मुरारी
जैसी लाज राखी अरजुन की—भारत युद्ध मचोरी
स्वार्थी होके रथ को हांको—संख चक्र गिरधारी
भक्तन की टेक ने टारी—ए अबकी बेर हमारी
जैसी लाज राखी अरजुन की भारत युद्ध मचोरी
स्वार्थी होके रथ को हांको - - -

—:०:—

P. 8635. दादरा पी० ८६३५

सखी री दो कुंवर सुन्दर मनोहर आज आये हैं
मुन्नी छोटी सी उमर में उन्हें हम राह लाये हैं। सखी री - -
धनुष करमें लिये हैं गले में फूलमाला है—गले में फूलमाला है
पड़े हैं कानों में कुन्डल मुकट सिर पै लगाये हैं। सखी री - - -

मुन्नी छोटी सी उमर
बड़े को राम कहते हैं लखन है नाम छोटे का । लखन है नाम छोटे का

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

बांकी जोड़ी बनी मन भावनियां--मन भावनियां दिल चुरावनियां
इधर तो किरीट और कुणडल की छव अनोखी है
उधर चन्द्रकला चित चोरने में चोखी है
इधर रोरी भाल उधर खोर केसर की है
इधर नाशामनी उधर लटक बेसर की है
तापे नागिन सी ज़ुलफ़ें डसावनियां। बांकी जोड़ी बनी

——०——

P. 8871. दादरा पी० ८८७१

फुल बगिया अनोखे शाम आये री - - -
आरे कजरा रे भौंरा रे बाल घुंघराले नाग के छोना
छोटी छोटी कुंडली रे
मनमोहन मनोहरता हां छाये री। फुल बगिया - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

तनिक हंसे हो राज कुंवर--सुध बिसराये हेराये जात मन
रहत न तनकी संभाल। तनिक हंसे हो
दूर ही ते जाकी तन ताक़त मदन रही जर छाय
सोई तर पुरारी बिखारी देख धरे अलख जगाय द्वार-तनिक हंसे हो -

——:०:——

P. 8959. भजन पी० ८९५९

गोकुल बाजत बधैया नन्द घर आनन्द भये - -
बोलो री ऐ सास अपनी चर्वा चढ़ाई
नेग मांगे कन्हैया जोने जनम लियो-गोकुल - -
बोलो री ऐ ननद अपनी सतिया धराई
नेग मांगे कन्हैया जीने जनम लियो - गोकुल -

दूसरी तरफ़ : भजन

झूलइयो मोरी सजनी कृष्ण झूले पालना
अगर चन्दन का बना है पालना रेशन के फंदन-झुलाइयो - -

मिस राजदुलारी

P. 7376. दादरा पी० ७३७६

ओजी न्हाय रही राम गोरी नदिया किनारे
मैं तो न्हाय रही राम गोरी नदिया किनारे
कारी कारी जुल्फ़े हां जी री गोरे गोरे गाल
मोटी मोटीं आंखों में डोरे लाल लाल
गोरी नदिया किनारे न्हाय रही राम-गोरी - - - (वाह वाह)

दूसरी तरफ़ :— दादरा

नैना से निंदिया किधर गई रे राम
हाय मैं--तो किधर गई रे राम नैना से - - - - -
अरे हां हां राम नैना से निंदिया किधर गई रे
वजह तलाश में निकले तो क्या नहीं मिलता - - - - -
तेरा पता नहीं मिलता

अरे मैं तो ढूढूं को सोतन घर गई रे
राम नैना से निंदिया किधर गई रे

——(-:०:-)——

P. 7468. ठुमरी पी० ७४६८

निस दिन मोहे तड़प तड़प जात सखी री - - - -
मन की बिर्था साच कहूं जिया की बिर्था साच कहूं जियारा
दुखी री - - -
कहां ढूंढ़ जाऊं री सखोरी—निस दिन मोहे तड़प तड़प जात - -
जात सखो री हालो सखो री—निस दिन - - - - - - -
मनकी - - - - कहां - - - - -

दूसरी तरफ़ :— देश

पिया को सध सो मोरो कहियो जाय
कागा रे जारे जारे पिया को संधेसो मोरी कहियो - -
याद आवत मोहे उनकी बतियां कल न पड़त जिया जाय
पिया को संधसो मोरो कहियो जाय - - कागा रे - - - -

P 7592. ग़ज़ल पी० ७५९२

रसा इस क़दर मेरे नाले हुए हैं
फ़रिशते कलेजा संभाले हुए हैं
वह एक हाथ से वार करते हैं मुझ पर

वह एक हाथ से दिल संभाले हुए हैं
तेरे चश्में बीमार को तेरे गौहर
इधर और उधर से संभाले हुए हैं। रसा - -

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल

आंख मिलते ही लिया दिल यह नज़र तो देखो
हाय ज़ालिम की निगाहों का असर तो देखो। हाय
हम भी मुश्ताक़ हैं सूरत के तुम्हारी साहब
लो तुम्हें मेरी क़सम एक नज़र तो देखो
किस सकावट से चला हल्क़ पर ख़ंजर उनका
उफ़ न की मैं ने ज़रा मेरा जिगर तो देखो।

P. 7662. भैरवीं पी० ७६६२

जोगिया चलो हमारे देस - - -
पतली कमरिया लम्बे केस - - - जोगिया चलो - - -
अरे हां हां जोगी चलो - - - जोगिया - -
जोगिया चलो हमारे देस - - - - - -

दूसरो तरफ़ :— भैरवीं

लागी मोरी बिन्दया चमकन लागी मोरी
सो लागी मोरी बिन्दया चमकन लागी मोरी
हेरे राजा चमकन लागी - -

जो तुम सैयां गमनवा कीनो—लागी मोरी छतियां धड़कन लागी
जो तुम सैयां बारह बरस के हो लागो मोरी छातियां -
हेरे राजा चमकन लागी - - -

P. 7712. ठुमरी पी० ७७१२

रोको न छैल मोरी गगरिया मैं तो जाय कहूं ननद जी से
तोरी मोरी मानत नाहीं कनहिया करल फ़ेल गेल - रोको न - -
बरज रही बरजो नहीं माने एसो ढीट यह गंवार घनैया
बाट चलत हम से लरत देखो मोरी मान नाहीं कन्हैया
करत फेल गेल रोको न छैल मोरी डगरिया—रोको न —

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

रतियां सारी मोरी तरपत गई
सजनी री वह न आये मोरे पास मोरी आली
ननद उन बिन बैरन भई रतियां सारी मोरी
जब से गयो न रहयो वर्ग अंजन फूलन सेज सो सूल भई री
ऐरी सखी कहीं आवत देखें बात सुनत हूं नई से नई
रतियां सारी मोरी तरपत गई

P. 8029. ठुमरी पी० ८०२९

चूडियां करक गईं
कर पकरत मोरी नर्म कलाई देखो कैसी बल खाई—कर - - - -

चूड़ियां करक गईं

कर मेरो किशना घुलेले ननों है तन मत धन जोबन बस कीनो
अब कौन छुड़ावे मोहे ऐरी सखी सब छाय हैयो मर गईं
चूड़ियां करक गईं
ऐसे श्याम सजन शर्माव ता दिन से तो से ढंग हो न आवे—कर - -
कोई अली बख्श से जाके कहो दर्शन बिन आली तरसी रही।

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

आली वाकी अंखियां जादू भरइयां
न जानूं कैसे छल कीनो जीरा मोरा छीन लीनो
अब री मैं कैसे करूं-मोरी सजन - - आली - -
हूं तो नीर भरन को निकसी ऐसो री लगंर मोको आन मिलोरी
दौड़ झपट छल बगंरी गहै लीनी - - आली - - - -

P. 8156. ठुमरी पी० ८१५६

सखी मोरी बाईं नैन फरकत - - - - - - -
देखो सखो हम सांची कहत हैं वह आवत परदेसी बालम
गोइयां मोरी बाईं नैन फरकत - -

दूसरी तरफ़ :— बेहाग

नीके नजरिया जिया मोरा न माने गोइयां - -
तो से अपनी बृथा रोचे कि ननंद मोरी।

पत ते देख बिनां मोहे नैना--नीके नजरिया जिया मोरा -
बीगे माने छनाय बीगे आवेंगे सनद न आो रन्ना कीतं वफ़ा
तोहे नैनां नीके नजरिया - - -

———:०:———

P. 8157. फाग पी० ८१५७

रंग से बिहारी कारी चुदंरिया रसिया ने
छपंया को अचल गंवार याती तू मोरी
रंग से बिगारी कारी - -
मैने तो रंगाई का हो मोज से गजबी
तू कर लायो यासे डिबोया गजबी - -
रंग से बिगारी कारी चुंदरिया - -

दूसरी तरफ़ :— फाग

जोबन मेरो बसको नहीं रे पिया जोबना मेरो।
यू जोबना रे मेरे मकनो हाथी
अरे पियारा आंकुस देदे मै हारी रसिया
यू जोबना रे मेरो अलल बछेड़ी
अरे पियारा चाबुक ददे मै हारी रसिया।

—:०:—

P. 8279. होली पी० ८२७६

ए री जावो री पिया को मनावो री - - -
मोसे नाहक़ रूठ रहे कोइ समझावो री - ए री जावो री - -

ए री जावो री सैयां को मनावो री --
निकसो ही जात पिया बिन जियरा -- ए री पिया को --
चन्द्र चरणवा बेग लावो-कर जोड़ो सहावो री-तन जोड़ो सहावो री --
ए री जावो री पिया को मनावो री ---

दूसरी तरफ़ :-- होली

सखी री तुम देखो उधुम की ये बात --
काहन मोसे ढीट लंगरवा—होरी खेलन मोसे आयो अरे आधी रात
सखी री तुम देखो उधुम की ये बात -----
सब ही आवत साथ घर घर गावत - गारी देत और ईंट बघावत
मुख कोमल कर संग डरावें करत सौ सौ घात सखी री-तुम देखो उधुम

—:-०-:—

P. 8280. ग़ज़ल पी० ८२८०

छुपी हैं मेरे दिल में उलफ़त किसी की
ज़बह कर रही है मोहब्बत किसी की-छुपी है मेरे -----
बसा है मेरे दिल में नक़शा किसो का
इन आंखों में फिरती है सूरत किसी की - छुपी है मेरे --
दोआ मेरी तुझसे यही है इलाही
बसा है मेरे दिल में नक़शा किसो का
इन आंखों में फिरती है सूरत किसी की। छुपी है मेरे- ------
दोआ मेरी तुझसे यही है इलाही
किसी पर न आये तबीअत किसी की

दूसरी तरफ़ :— फाग

निक ठाढ़ो रे मोहन तो पा रंग डारूं

(वाहवा राज दुलारी क्या गारही हो)
तू ही कहे तो तू पा रंग ही मैं डारूं ------
अरे प्यारे गालन प गुलचे मारूं ------------
निक ठाढ़ो रे मोहन तो पा

—:०:—

P 8691. नात पी० ८६९१

मिसाले बर्क़ महफ़िल में जो वोह परदानशीं आया
तो बन्द आंखें हुई सब की नज़र कुछ भी नहीं आया-मिसाले बर्क़ --
ख़ुदा जाने नज़र क्या मुझको वक्त वापसीं आया
कि जिसको देख कर फिर होश मैहशर तक नहीं आया
कफ़न से हाथ बाहर हैं आख़िर सभी सबके
यह जामा सब के हाथ आया मगर बे आसतीं आया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिल सी चीज़ उनके हाथ जाती है-मेरी सब क़ायनात जाती है
किस ख़राबी में दिन गुज़रता है-किस मुसीबत में रात जाती है
आज मुज़तर की लाश जाती है-आवो देखो बरात जाती है

—<>—

8960. भजन पी० ८९६०

राधा छुप गई शरम की मारी-आइयो मोरो गलियन में गिरधारी
भनें कमान-तीर पलकन के नैनन अंजन सारी
बिरहा के बान आन लगे हैं कैसे बचें राधा प्यारी-आइयेरी --

दूसरी तरफ़ :— मलहार

जो बरसत मेघा घरसे जाते हो तुमहीं अनोखे बिदेस ---

जबइया पिया हा बरसत मेघा घरसे जाते हो तुम हीं - -
ऐसा समय में जाने न दूंगी भर गये चलत नाले चलइया पिया-बर०
गहरी जो नदिया नाव पुरानो तुम्हीं खिवैया पार कंधैया-बरसत - -

—:-०-:—

मिस रोशन आरा

P. 5280. ग़ज़ल पी० ५२८०

वह शहीदे तेग़ जफ़ा हूं मैं जिसे आसमां ने मिटा दिया
मेरे मुंह से निकली न आह तक मुझे गोलियों से उड़ा दिया
हमीं जां निसार हैं ताजके हमीं दिल दिल बिगाड़े हसरत के
हमें पास महरे वफ़ा कहे उन्हें जान देके दिखा दिया
वह यतीम करते थे बारियां नसीब जिनके बदख़ुवारियां
वो घरोंमें रोती नारियां जिन्हें हाय बेवा बना दिया
वह शहीदे- -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

करेंगे सेवा स्वदेश भूमन इसीमें तन मन लगायेंगे हम
इसीके भोजन इसीके पानीसे पियास अपनी बुझायेंगे हम
गरीब कोई हो अमीर हो चाहे नहीं हमको ज़रा भी खटका
सब ही कष्ट सहकर सभी तहर से सफल यह जीवन बनायेंगे हम
सो तंत्र भाजाके स्वदेशो स्वदेशी होगा लिबास अपना
स्वदेशी पावर की लेके धोती बदन में अपने रमायेंगे हम—करेंगे...
स्वदेशी भूमी की राजको लेकर इसीसे अपने करेंगे बदनम
स्वदेशी बातें सुनाके सबके सबोंके दिलको लुभायेंगे हम—करेंगे...

—:-०-:—

P. 5672. ग़ज़ल पी० ५६७२

बेकार हसीनों से उम्मीदे वफ़ा करना
दिल लेके मुकर जाना उनपर यह जफ़ा करना
न हंसो दिलदार महमां हूं कोई दम का
फिर में नहीं मिलने का तुम हाथ मला करना—बेकार०
एक शोर मचाते हैं घूंघरू तेरी छागल के
इस चाल के मैं सदक़े महशर न वफ़ा करना—बेकार०
पढ़ते हैं तेरा कलमा जपते हैं तेरी माला
ऐ हुस्न के परमेश्वर हम पर भी दया करना—बेकार०

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

बादशाहों को कभी इश्क़ की लज्ज़त न मिली
हमको इस ज़ीस्त की तरह बदौलत कभी राहत न मिली
तुमको ऐ जांनेजहां फूलसे निसबत क्या है
उनको रङ्गत जो मिली ऐसी नज़ाकत न मिली
वो हक़े मर्दे नज़र हमको तड़फते देखा
उनसे ख़ंजर न उठा हमको चाह तक न मिली—बादशाहों०

—:०:—

P. 5804. भैरवीं पी० ५८०४

जिगर के टुकड़े हैं यह हमारे जो बनके आंसू निकल रहे हैं
यह ताब हसरत नहीं है दिन दिन सदाक़त काबे में जल रहे हैं
कहा जो मरने को मर गये हम कहा जो जीनेको जी उठे हम
बस और क्या चाहता है ज़ालिम तेरे इशारों पर चल रहे हैं—यह०

अभी तो दिन खेल कूद के हैं तमीज़ क्या है बुरे भले की
हमारे दिलको मिसाले ग़ुचां वो चुटकियों से मसल रहे हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

नालाये दलगोर नहीं आहमें तासीर नहीं—आहमें०
हां अब मिलने की उनसे कोई तदबीर नहीं—तदबीर०
आशिक़ ज़ुल्फ़ हूं लेकिन नहीं ज़ोरो दम इज़्ज़त
जनूं मुझको मगर क़ाबिले ज़ंजीर नहीं—क़ाबिले......
एक है के हर एक बात है जिस की जादू
एक तो मैं हूं कि मेरी आह में तासीर नहीं—आह० ......

—:o:—

P. 5840. दादरा पी० ५८४०

कही मानो कचहरी न जाओ पिया—जाओ पिया......
आपके वास्ते किया मैंने दिलदार पिया
सेज फूलोकी चुन चुनके तैयार पिया
ज़रा जोबन चमन की देखिये बहार पिया
हर एक क़िस्म की फूली है क्या फुलवार पिया
जरा सीनेसे सीना मिलाओ पिया—कहीं......
फ़िकर तुमको पड़ी करने अदा ज़ुमाने की
मुझको ख़्वाहिश है सनम सेज पर सुलाने को
बहार आई सनम मज़ेके बुलाने की
घड़ी हसरत की गई फिर नहीं आने की
क्यों मज़ेका मौसम गंवाओ पिया—कही......

दूसरी तरफ़ :— दादरा

इन मोहन से यारी अबही मोहे लग गई रे
सांवली गोरी दोई जना रे दोनों चली गई बज़ार रे—अब ही...
गोरी मोरी रे काजल डारे सांवलिया ख़रीदे पान—अब ही......
गोरीका कजला उड़ गया रे सांवलिया के रच गया पान—अब ही...
गोरीके मांगे पांच रुपया सांवलिया के मांगे पचास—अब ही...

—:o:—

P. 5939. ग़ज़ल पी० ५९३९

मिन्नत करे क़दम पै गिरे इलतजा करे
उस पर भी तू न माने तो फिर कोई क्या करे—मिन्नत० ...
एक दिन है यार और करो ग़मका सामना
आइन्दा यह ग़रीब किधर जाय क्या करे—मिन्नत० ......
खोला क़फ़स तो था भला परवानो न दी
इससे तेरे नसीब को सैयाद क्या करे—मिन्नत० ......

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

माशूक़ से सव है के किसीको भी वफ़ा है कब उनको हया है
आशिक़ को सदा यारके कूचेमें फना है पाबन्दी रज़ा है
हम उनकी मोहब्बत में डुबे जानसे मेरा अब जीना है दुशवार
लिल्लाह कोई पूछो तू क्यों मुझसे ख़फ़ा है क्या मेरी ख़ता है
जो ख़ूब निकाला है नया ग़ुलमो का अन्दाज़ सुनते नहीं फ़रयाद
तेग़ ज़बां करते हो क्या मेरी ख़ता है यह कैसी सज़ा है

—(:-o-:)—

P. 6118. ग़ज़ल पी० ६११८

इक़रार मेरे आपके तो बार हा हुए
बता तुही न एक भी वोयदे तफ़ा हुए
शिक्वा न यारका न सितम का गिला हुआ
लिखा मेरे नसीब में जो था अदा हुआ—इक़रार० ......
फिर कीजियेगा जोर मगर यह बताइये
आख़िर क़सूर मुझसे मेरी जान क्या हुए—इक़रार...

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

वां जवानी आई है मिन्नत बढ़ाने के लिये
मुझसे कहता है दिलोंसे दिल लगाने के लिये
दिल लगाना कोई भी मुशकिल नहीं माशूक़ से
जिगर में सर हो लहू आंखों बहाने के लिये - वां जवानी - -
नाज़ अपनी उलझन का क़िस्सा जब उन्हों ने सुन लिया
आइना रख कर के या देते बनाने के लिये - वां जवानी - - - -

P. 6182. ग़ज़ल पी० ६१८२

तेरे बन्दों से करते हैं यह बुत दावा ख़ुदाई का
तमाशा देखता हूं तेरी चाहने की दमाई का - तेरे
इलाही कौनसे मुजरिम शियामत है क़यामत में
हुवा है हुक्म रहमत को यह शीशी पेशवाई का - तेरे
यह किस बदाद ने दरसे निकारी आगमें क्यों कर
यह फ़रयादी है अब तक नींद उठना उस क्लाई का - तेरे

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हुए हैं तुम पर आशिक़ हम भला मानो बुरा मानो
उठाये लाखों रंजो ग़म भला मानो बुरा मानो
बुरों को मुंह लगाते हो भलों से तुमको नफ़रत है
कहेंगे बे मरौवत हम भला मानो बुरा मानो
भले हैं या बुरे हैं कुछ नहीं लेकिन तुम्हारे हैं
कहे जायेंगे हरदम हम भला मानो या बुरा मानो

P. 6240. दादरा पी० ६२४०

जो हो शौक़ीन पहनने वाली मेरी चुड़ियां ले लो मोल
जड़ाऊ चूड़ियां जो रंगीन बैंजनी ऊदी ज़र्द नवीन
किनारी लच्छे दार महीन अजायब मीना काली काली—मेरी - - -
शरबती लाखी लाखी लाल (वाह वाह) अरे जी कहता अजब कमाल
फिर तो अपनी है सब्ज़ पुरानी चाल आसमानी सब ही रंग काली-मेरा
पहनाऊं जोड़ जोड़ कर बन्द पहन कर हो हरएक परसन्द
कहे इन्द्र गोबिन्द बनाकर छन्द अजब यह रंगत नई निकाली-जो हो - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

रेल गाड़ीसे उतरा फ़िरंगी मैं बदला कर लेती रे
अरे बहनी गंजा होता बदल लेती
बालों वाला न बदला जाय मैं बदला कर लेती—रेल - - -
अरे बहनी अन्धा होता बदल लेती
आंख वाला न बदला जाय मैं बदला कर लेती--रेल - - -

अरे बहनी लगंड़ा होता बदल लेती
टांग वाला न बदला जाय मैं बदला कर लेती--रेल - - -
अरे बहनी बुढला हाता बदल लेती
दांत वाला न बंदला जाय मैं बदला कर लेती--रेल - - -

———

P. 6324. ग़ज़ल पी० ६३२४

अदा बताती है हरगुल के मुसकुराने की
तक़ार अब नहीं बुल बुलके आशयाने की
मज़ा दिल आहसे क्योंकर बुझाऊं दिल की लगी
नहीं अशयां हवा हवाओं से जी मिलाने की
बावफ़ा हूं मैं आंखोंमें दम झुका है मेरा
ख़बर सुनी है जो अब एक बे वफ़ा के आने की
फ़ना के बाद में यहां कोई अपना शादयां होगा
ख़बर हा गई ग़रीबो में उनके आनेकी--अदा० - - -

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल

चुपके जो तौर है अग़ियार के घर जाने का
है तरीक़ा वही यार इधर आने का
जाओ तो यार न लगा कर संभल जाता है दिल
हां फड़क जाता है दिल
जानता है उन्हें के शौक है तड़फाने का
वो मिटाते हैं मिटाये मेरी तुर्बत को मिटा
होगा कुछ ग़म नहीं मुझे ख़ुद से मिट जाने का

इस लौ यह न थमे रे हमसे उनको शराफ़त
ग़म किसीने किया बज़्म में परवाने का

——(०)——

P. 6370. ग़ज़ल पी० ६३७०

बताऊं फ़सले बहारी का क्या निशां सैयाद
न देखा एक नज़र मैंने बोस्तां सैयाद
खिली है कुंज फफस में मेरी ज़बां सैयाद-बताऊं - - -
चलो चमन से तुम्हीं बुलबुलों बराय ख़ुदा
जीयेंगे खायेंगे अगले बरस चमन की हवा
क़याम ख़ूब नहीं है यह सुना है मैंने
अब सुना मैंने बुलबुल का आशयाना जला
बाग़ में मशरा करते हैं बाग़बां सैयाद—बताऊं
यह माना मैंने के नफ़रत हुई तुझे मुझसे
मलैगा हाथों को पछतायेगा रो रोके
करैगा याद मेरे ज़मज़मों को बाद मेरे
हूं चन्द रोज़ तेरे घरमें महमां सैयाद
परों को खोल दे ज़ालिम जो ख़ैर करना है
हवाको लेके मैं उड़ जाऊंगा सैयाद - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

गुज़िशता ख़ाक नशीनों का यादगार हूं मैं
मिटा हुआ सा निशान सरे मज़ार हूं मैं
जो कुशता हो के मेरी लाशकी तरफ़ पहुंची

ज़मी पुकार उठी ख़ाक की मज़ार हूँ मैं—गुज़िश्ता - - -
बरोज़े हशर कहूँगा अपने क़ालिब से
ख़तायें बख़्श दे मेरी गुनहगार हूँ मैं—गुज़िश्ता - -
निगाहे करम से मुझको न देख ऐ दोज़ख़
ख़बर नहीं मुझेको किसका गुनहगार हूँ मैं—गुज़िश्ता - -

—ः-०-ः—

मिस ज़ोहरा जान

P. 7377. भैरवीं पी० ७३७७

बाईं छुंगलिया में पीर रे - पीर मोहे पीर रे - हां मोहे राजा रे
हां बाईं छुंगलियामें पीर रे - मोहे तो बलमा दर्दया बहुत हैं - हां राजा र
सैयां रे कहे राखो धीर रे - हां बाईं छुंगलिया में पीर - - -
देख देख तेरे जेठ - अरे हां भई जब लागो देत रे
बिन सैयां मोहे दर्द न जइयो - बाईं छुंगलिया में पीर - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

अरे सांची कहो मोसे बतियां पिया - हां पिया मोसो कहो - - -
जाओ सैयां जहां गंवाई सारी रतियां
हां साचो कहो मोसो बतियां - - -
हां रे बतियां प्यारे हां रे बतिया - पिया मोसे रे - -
अरे सांची कहो मोसे बतियां - - -

P. 7438. दादरा पी० ७४३८

बांके रंगीले छबीले मन मोहन-
आजा तोहे हंस के लगालूं मोहे साथ
हाँ तिरछी चितवन के - अल्लाह क़सम चितवन के
अल्लाह चितवन के तेरे निसार हूँ
हाँ प्यारे मुखड़े पे तेरे निसार हूँ - - -बांके छबीले मन मोहन - -
आजा तोहे हंस के लगालूं मोहे साथ - - - बाके रंगीले -
ख़ुदा के वास्ते एक बार फिर तो गाओ ज़रा
तुम्हारी अल्लाह क़सम तब से छागई ज़ोहरा
न इस तरह से कोई क़सम निभावेगा
मज़े में अल्लाह क़सम तो भी गागई ज़ोहरा
कहूना भूलना यह भूट अपना जोबना
आजा तोहे बांके छबीले मन मोहना

दूसरी तरफ़ :— दादरा

सजन बिन रोवत रैन गई - हां रैन गई - - - -
हम का छांड़ सोतन घर सोए - हमरी ख़बर न लई होय
सजन बिन रोवत रैन गई - - - - -
ज़ोहरा जगाइयो ख़ूब सताइयो
हां तरपत सजन बिन भोर भई - -
रोवत रैन गई - - - -

P. 7469. कजरी पी० ७४६६

तरसत जियारा हमारा नेहर में

बहुत तरसे जोबनवे को बहार - - - बज़ाहित कीनो औगुन वाई दीनो
अरे हां बीत गयो बरखा बहार नेहरेमें - - तरसत जियारा - - -
फट गयो चूनरिया मुड़क गई अंगियारे - - -
अरे टूट गयो मोतियों का हार हा नेहर में
तरसत जियारा हमारा नेहर में।

दूसरी तरफ़ :— कजरी

अम्बवा तले डोला रखदे मुसाफ़िर आई सावन को बहार रे - - - - -
अपने महल में मैं झूला झूलत थो बेसियां के आये कहार रे
ऐरी सखी मैं तो झूलने न पाई बेसियां के आये कहार रे
अम्बवा तले डोला रखदे मुसाफ़िर आई सावन की बहार रे
अपने महल में गुड़िया खेलत थी बेसियां के आये कहार रे - हेरी सखी
अम्बवा तले डोला रख दे मुसाफ़िर - - - -
ऐरी सखी मैं झूलने न पाई बेसियां के आये कहार रे
अम्बवा तले डोला रखदे मुसाफ़िर - - - - -

593. ठुमरी पी० ७५६३

गरे बहियां न डारोरे जाओ जाओ रे
छतियां चूमत है हां रे रे हां गई मोरी लाज रे
बइयां न डारो जाओ जाओ रे
तुम तो कहत है हाँ रे पाठ पै पूज
जब मैं जानूं पूज अरे हां हरो मोरी लाज रे
बइयां न डारो जाओ जाओ रे

दूसरी तरफ़ :— पूरबी

हां कटारी मारे नेह तोरी रस भरो अंखियां—हाय कटारी - - -
हे आमोरे बमना बैठ मोरे अंगना रे हां बिचारी दीहो ना
मोरे सैइयां का चित्तु अंगनवा बिचारी दीहो ना—हां कटारी - -
हां पठवा पर चढ़ लूं यहां रे बहारे वरे तो नहीं आयोरे
मोरा अलनवा भेजेगा तो नहीं आयो र हां नहीं आयोरे
हां रे हां हां नहीं आयो रे भुई हुई आयो नह
तोरी रस भरी अंखिया - - - - - -
अरे जबसे गये मोरी सुध हू न लीनी ए बिचारी दीहुन
मोरी मोहनी मुरतिया रे कटारी मारे ना।

———:-०-:———

P. 8281. चैत पी० ८२८१

हां हां कि नैनां भरके देखो न पैहलू में हो रामा - - -
अरे सबके सङ्ग ही से तू उछल क्यों धाये
अरे केतनो कि धाये हो रामा
रे उठ तेहवारे हुगली के हित दिन हो रामा - - -
(वाहवा ज़ोहरा जान)
हां हां कि नैनां भरके देखो न पैहलू में हो रामा - - - -

दूसरी तरफ़ :— चैत

अरे हां कि चलौ सखिया रे मलैया को बगिया हो रामा
फुलवा में लोरी रे लोरी अरे भरलूं चंगेरिया हो रामा
पिया भी गइल हो—मलैया जग भरवा हो रामा - - -

अरे मलैया के बगिया हो रामा - -
अरे चलो सखियां मलैया की बगिया हो रामा

P. 8961. ग़ज़ल पी० ८९६१

जानी जोबना पै न इतराया करो—ज़रा ख़ौफ़े ख़ुदा भी खाया करो
ग़ैर से इस दर्जे उल्फ़त दिलरुबा अच्छी नहीं
मान जाओ आशिक़ों की बद दुआ अच्छी नहीं
अपने आशीकों को यों न जलाया करो—जानी - - - -
क्यों हवाई उड़ रही है रूए रोशन पर तेरे
मैं न तड़पूंगा जो छींटें आयें दामन पर तेरे
ज़रा बच कर यों ख़ंजर चलाया करो—जानी - - -
आज देखा जायगा किस की उल्फ़त तुमको है
सब पता चल जायेगा जिसकी मोहब्बत तुमको है
जानी दोदो न घर पै बुलाया करो—जानी - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

अल्लाह यह भी कोई अन्दाज़ गुफ़्तगू है
हमसे तो लाख पर्दे मूसासे दू बदू है
पर्दानशीं समझ कर पर्दे में गुफ़्तगू है
हसरत भरी नज़र है या शरहे आरज़ू है
गो सुर्ख़रू हैं दोनों फिर भी है फ़र्क़ इतना
तेरी हिना हिना है मेरा लहू लहू है
इक ज़ोहरा वशते दिलको खोये गये कुछ ऐसे
अब ऐ क़मर हसींको ख़ुद अपनी जुस्तजू है

——:०:——

स्वर्गीये मिस ज़ोहरा बाई

P. 344. ग़ज़ल कालंगड़ा पश्ते पी० ३४४

तेरे कूचे से ज़ालिम ऐसी मजबूरी से हम निकले
तेरे कसम कसम के आंखों को आंखों का दम निकले
हरएक मसीहा में जब हमने दिल अपना फसांया है
मगर तुमको बना निकले ग़ज़ब निकले सितम निकले—तेरे - -
कोई था, हरइक आज़ार हो क्योंकर लेकिन यह तमन्ना है
मैं सूरत देख लूं उसकी तो फिर आंखोंका दम निकले—तेरे - - -
कोई ख़ुवाहां न जिस बहबूद हैरत का ख़ुदा बन्दाये
बहुत तङ्ग आगाया अब मैं बुते दस्ते रङ्ग निकले—तेरे - - - -

दूसरी तरफ़ :— तराना टोड़ी एकताला

नादर दर तोम ना दर दर तोम दरना (इत्यादि)

—:-०-:—

P. 346. ठुमरी भैरवीं चाचर पी० ३४६

आजा सांवरिया गरवा लगालूं रसके भरे तोरे नैन
जाती है पीहरवा गरवा लगालूं रसके भरे तोरे नैन
दिन नहीं चैन रात नहीं नींद तड़फत हूं दिन रैन
सांवरिया रसके भरे तोरे नैन—आजा- - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं क़व्वाली

हज़ारों मानी मुराद व मिन्नत ख़ुदा ख़ुदा कर
कहां यह परदे सितमगर तुझे जब हुवा तो कोई नहीं गई

बनाया ज़ालिम हमींने तुझको हज़ारो अरमां दबा दबा कर
अरे लबों पर अब जान आ रही है तेरी तमन्ना सता रही है
दिल मुज़तर है बुत तूही बतादे दवा दवा कर
ग़ज़ब किये बदगुमानियां हो के मेरी लाशों के पास आकर
झिजक झिजक कर वह देखते हैं जिसम को मुझसे हटा हटा कर
यह डर है मतलब न काढ़ जावे के मुफ़्त है ग़ज़ब का वो बुत
कलाम करती हूं उससे हज़ार बार पहलू बचा बचा कर

—:०:—

P. 347. ग़ज़ल पीलू पश्तो पी० ३४७

पी के हम तुम चले झूमते मैखाने से—पी के - - -
आच के कुछ बात कहो थी न पैमाने से
तुमको क्या फ़ायदा है पर्दों में जल जाने से—पी के - -
जो मरेंगे यह न पूछा कभी परवाने से—पी के - -
हमने देखी आज किसी शोख़की मस्ती भरी आंख
मिलती घलती है छलकते हुए पैमाने से—पी के - -
आपा जायेगो ख़ुदा आपके राज़ाये को
दिल बे काबू बहलता नहीं बहलाने से—पी के - -

दूसरी तरफ़ :— काफ़ी ख़मसा कहर्वा

राम करे कहीं नैनां न उरझे—नैना - - -
इन नैनन की बान बुरी है जब उरझे सुरभाये न सुरझे
एक रोज़ गोर ग़रेबां में जो मैं गया, देखता हूं वहां बज़ुर्गों के
अजहद मज़ार हैं
देखा एक मज़ार पै नरगस असर नबू, मैंने कहा कि तू यहां शबनम निसार है

कहने लगी ख़ामोश के नरगस मुझे न जान, मैं आंखें उसकी हूं कि जिस
का मज़ार है
उस रोज़से मुझे यह यक़ीन है के हाय हाय, आशिक़ के बाद मर्ग
भी इन्तज़ार है
जोने न देगी आंख तेरी सितमगर मुझे, इन ज़ड़बुतोंकी भांप रही है क़ज़ा मुझे

——:-०-:——

P. 348. सेहरा दादरा पी० ३४८

आज बांधा सरे नोशाह के पुरज़र सेहरा
सूरत कार शवाई यह मनव्वर सेहरा—आज - -
एक ले लेगी बलाये तो दुआयें एक नज़ीर
देखा मां बापने दुल्हा के जो मुंह पर सेहरा—आज - - -
पर चली आती है यह रस्म बराये याद रहे
बांधना सरसे अज़ीज़ों के दुवा कर सेहरा—आज - - -
आप मरकुल के है तेरी आंखों के फ़लक पर होकर
गारहे है जो हसीनों ने सनोबर सेहरा—आज - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

वह मस्त नाज़ हरसू जलवा दिखा रहा है
रग रगमें दिखा रहा है दिलमें समा रहा है—वह - - -
यह तेरी गली में क्योंकर हमने अदा बना कर
कोई तो आ रहा है कोई जारहा है—वह - -
बहरे फ़नामें अपना है फ़न जाब मन है
तूफ़ान इस तजम्मुलका लहरे दिखा रहा है—वह - -

थम थम कर दर्द होवे रुक रुक के गले पर
रह रह के दिलमें कोई नशतर लगा रहा है—वह - - -

——:-०-:——

P. 349. ठुमरी खम्माच पी० ३४९

सांवलिया रे काहे मारे नजरिया—नजरिया—सांवलिया - -
चल चल गोरी मद भरे नैना चितवन मारे कटरिया—काहे - -
बिन्द्राबन की कुंज गलीरे मथरा नगर की गुजरिया रे—काहे - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी देश दादरा

निपट निडर नटवर वारो डगर सगर घेरो
खट पट नित करत रहत सांज हूं सबेरे
बृज के छैल नन्द क लैल पाछे फिरे मोरे
रथके दुर्गन के मेरे कहा मनमें तेरे—निपट - -

——

P. 353. बर्वा पीलू पी० ३५३

कस कर मारा तीर रे मेरे बारे जोबन पर—कस कर - -
बरछी का मारा कोई दम जीवे नैनों का मारा फ़क़ीर—कस - -
तेरी निगाह के मजनूं और भी है कई
किसी के दिलमें रही और किसी के पार गई
मगर यह मुझसे कही तरफ़ तूने ताब लाई
धरूं न सीने पै मुख़लमों पै निशान ज़नी

माहर रक़म के अजब सीने पर कमाज़ दई
मेरे जोबन पै कस कर मारा तीर

दूसरी तरफ़ :— होली भैरवीं

रङ्ग देखे जिया ललचाय—रे मोरा जिया - - -
या कृष्ण मन है पाक री मोरा—रङ्ग देखे जिया - -
कृष्ण कन्हाई गुलाल उड़ावे—धन धन मोरे जीवन मोरा
रङ्ग देखे जिया ललचाय—

——:०:——

P. 1165. गौर सारंग पी० ११६५

कजरारी गोरी तोरे नैन सलोने

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

कोयलिया कूक सुना दे
सखी री मोहे बिरहा सतावे
सजन बिन अन्धयारी कारी जिया मोरा डर पावे
इस बिध मोरी उससे कहियो जाय
तुम बिन जिया मोरा निकसो जावे
पिया मोरा घर न आवे रे—कोयलिया - - -

P. 1168. **पुर्या धनाश्री** पी० ११६८

चलो री माई औलिया पीर के दरबार
सखी बिध बनाय चलोरी माई औलिया - -
बियाहन चढ़े सुलतान निजाबुद्दीन-सकल पंच मिल भई बरात
पूरन भये काज—चलो री माई - - -

दूसरी तरफ़ :— **पुर्या**

अर्ज़ सुनो दस्तगीर पीर मोरी—पड़ी मोपें भीर मोरी— अर्ज़ - -
सब पीरन के पीर तुम्हीं हो—आओ बचाओ हमरी भीर मोरी
अर्ज़ सुनो - - - -

P. 4023. **ज़िला** पी० ४०२३

नाहीं नाहीं जाना सौतन घर सैयां
मैं पड़ी मंझधार—नाहीं नाहीं जाना सौतन घर संयां
ऐ सैयां लागूं पैयां—नाहीं नाहीं जाना सौतन घर सैयां
कर जोरत तोरी बिनती करत हूं बांह गहो मोरी सैयां
नाहीं नाहीं जाना सौतन घर सैयां

दूसरी तरफ़ :— **ज़िला**

दादर्वा बोले मोरा शोर करत
कोयल कूक सुना नारी—बिरहा की मती दर दर कांपे जिया मोरा
दादर्वा बोले मोरा शोर करत

P. 4291. **ग़ज़ल** पी० ४२९१

बेताबियां भरी हैं मेरे सुख़न सुख़न में
दिल की कली खिली है गोया चमन दहन में
मिलना तो खूब चाहता है फिर मिलना तो जान देना
नशतर हो बाज़ की में ख़ंजर हो पाक आकुल में—बेता - -
ज़ोहरा कैसे शमय वालों में हो रोशन
यूं ही वो नूर ख़ालिक़ इनसान के पीरख़न में—बेता - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

आंखों वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे
दीदाको कोई कुजा नज़र का देखे
रुख़ रंगी जो तेरा गिलराना देखे
अरे फिर न गुलशन की तरफ़ बुल बुल शदा देखे
चश्म मजनूं के अगर पर्दा ग़फ़लत हट जाये
अपने दिलही में जमाले रुख़ लैला देखे
दिल अगर दीदा वहदत का तमाशा देखे
जुरान में खुला नज़र क़तरे में दर्या देखे

P. 5064. **सारंग** पी० ५०६४

निर्मो ही मोरा जियारा कैसा जादू डारा—निर्मो ही - - - -
जबसे पिया तोसे नेहा लगी है
नैना धर लागे बदन भरो—निर्मो ही - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— खम्बाच

निराली शोख़ियां हैं ख़ुद बख़ुद इतराई जाती है
तेरी तदबीर उसमें से बाहर आई जाती है
इधर जाती है आंखों के निकर जाती है अर्श पर
नहीं है कोई भी गुल अपने बाग़े आलम में
हवाऐं ऐसी चलती है कली मुरझाई जाती है-निराली - -
जलाया दिलके सरपां को है तूने ज़ोहरा
क़्यामत है जो सूरत में दिखलाई जाती है - निराली - -



मरदों के गाने



अबदुल्ला

P. 5242. चौबोला जान आलम पी० ५२४२

ऐ माह पारा गुलबदन ऐ शीरीं गुफ़्तार
माशूक़ा माहिर दहनी मलका मेहर निगार
मलका मेहर निगार मार तलवार चश्म की पैनी
किधर गई या ख़ुदा परीरू पियारी वह गुंचे दहनी
हाय वो अभी बैटी थी वो पलके पर मृग नयनी
ज़रा दिखला दे शान को मार कर उस छुभान को
जान ले मेरी जानको—के इस दम बस तबाह है जान गई या तो मैं गया
ज़लज़ला हुस्न तेरेका मेरे जी में समा जावे
नक़्श भोली सी सूरत का मेरी आंखों में छा जावे ।

दूसरी तरफ़ :— चौबोला तिरिया चरित्र

फक्कड़ की सूरत निरख लगा इश्क़ का तोर जी
बार बार पैयां पड़ूं तो कोई बंधे न दिलको धोर जी
बंधे न दिलको धीर कृपा करो महलन में पग धारो
मुद्दत की आस पूरीके जोगी जी करो हमारो
तुम तज लाख नियत हमरा तरस विचारो
कि भोजन यहां करो नृप जो पास हां तुम्हारो
तेरी गोरी बाबा जी अजब करमों मनको लागी
इस ढब पीर घटेगी बिना हशर सेज पे सनम जब तनकी खसक मिटेगी

—:o:—

P. 5281. **चौबोला (शंकर गढ़)** पी० ५२८१

या रब इस नाज़नीं को दिया ग़ज़ब का नूर
हुस्न सरापा हू बहू परिस्तान की हूर
के परिस्तान की हूर बरस चौदह पन्द्रह का सिन है
तिरछी नज़र चूर भरपूर यह हूर जोबन है
छन छन कर हूर पर भरपूर का जोबन है
कि सूरज उस पर चांद क्या चांदनी सा चेहरा रोशन है
सूरज सा चांद सा चांदनी सा चेहरा रोशन है
किस क़दर छोटी सी इस सूरत पर भोलापन है
अगर यह जान जावेगी तो मैं इस ग़मसे छूटूंगा
हमारा बस चला तो मज़ा बस मोहब्बत का लूटूंगा

दूसरी तरफ़ :— **चौबोला शंकर गढ़**

तुम चाचा जाओ मती मोय देओ तलवार जी
जा पहूंचू दरबार में हो लहू या तो पार जी
जो हो एतबार मुझे गैंडेकी ढाल मंगादो
मुझे गैंड़े की ढाल मगांदो—
चलूं जंग जीतनको चाचा रन कंगन बंधवादो
इतनी तस तस करू कि तुम्हे अपना हुनर दिखा दूं

—:०:—

P. 5334. **चौबोला (नोटंकी)** पी० ५३३४

तेरी ख़िदमत ख़ातरी नहीं मुझको मंजूर
भाभी जी तुमको बड़ा छाया आज ग़रूर

छाया आज ग़रूर भाई मग़रूर नूर मस्तानो
क्या मुझको समझाती है ले खान बिलस ले जानी
तेरे हाथका पीऊं न जल पियारे नोटंकी रानी
नैनन की कारी कटारी मेरे सीने में मारो हो गई तनमें कारी
जब मुंह तुझे दिखाऊंगा बर लाऊं नोटंकी रानी

दूसरी तरफ़ :— **चौबोला (नोटंकी)**

सुनो सिफ़त माशूक़ की दिलको रही न ताब
और दिल मेरा मुज़तर हवा जूं माही बे आब
जूं माही बे आब उतरता टूटा कोहो अनन्ता
जब बयां किया जाय वह क़िस्सा अपने ग़मका
जान लबों पर है मेरो महमां हूं कोई दमका
निकले दिल अरमान जब होवे वस्ल सनम का
तू तो इश्क़ की मारी लाख जतन कर हारी
इश्क़ चक्कर में फंस करके नफ़ा ना किसी ने पाया है

P. 5534. **चौबोला तिरिया चरित्र** पी० ५५३४

बहुत देर यहां पर भई अब जावे अस्थान
अग्रहन महीने बीतते आना तुम दिलजान
आना तुम दिलजान मनीको मैं हो चला रवाना
रखता मैं तो तुझको दिलमें दुशमन तू क्यों हुआ दिवाना
वो तो लड़की साहूकार की मै फक्कड़ मस्ताना
जो मालूम पड़ जाये तो जान मेरी का नहीं ठिकाना

विकल मेरी को चलता है जाने गई कहां कहां है
यह चमन भी नहीं छहाता जोग मुझको नहीं भाता
के पियाही के दीदार बिना एक पल बरस बराबर है

दूसरी तरफ़ :— चौबोला तिरिया चरित्र

बिगड़े जोबन आपका भस्म लग रही मम अङ्ग
पी पी सुलफ़ा चरस का मेरो जारो सकल अङ्ग
जारो सकल अङ्ग करे तङ्ग जोबन मतवारी
कोई सग व क़द शहज़ादा ढूंढो मेरी पियारी
तेरे तनसे बदन मिलाय वही मेटेगा कसक तुम्हारी
हम जोगी अबधूत किसी गुलबदन से जो लो लागी
महल अपने को जाओ ईश्वर से ध्यान लगाओ
पिया अपने को बुलवाओ जब बस प्यारी दिलके अरमान मिटाओ

P. 5723. चोबोला दयाराम गूजर पो० ५७२३

खींचा मैंने ज़ोर से अब घोड़े का तङ्ग
हुवा हाल तैयार मैं चला करने को जङ्ग
चला करने को जङ्ग अङ्ग मेरेमें गुस्सा छाया
दी मस्तक पर जभी एड़ घोड़ी अपनी चमकाई
सूरत मेरी देख सूरमा के मुंह ज़र्दी छाई
सवारों छनो हमारी न डोला जाय अगाड़ी
क़दम को मती बढ़ाओ - - - - -

दूसरी तरफ़ :— चौबोला दयाराम गूजर

अरे भतीजे लाड़ले कहीं तेरो परमान
बे उमर ख़ंजर नहीं देता अभी तू है नादान
बे उमर लाल नादान खेलो अपने जाके
जङ्ग करने को जायें तो वहां पर होंगे भारो साके
जिस दम लखना पड़े तेग़ फिर किधर न जाये धाके
नेकी बदी हो सङ्ग में तेरी मात मरेगी घबरा के
न तुमसे समर सदेगा देख तलवार भजेगा
बस जने कोई ऐसा बोला के तुम्हे क्या पर्वा लाल
जब तक बाक़ी यह है

---:०:---

P. 5842. चौबोला अमर सिंह पी० ५८४२

जाने दे जाना मुझे मत करो रंजो मलाल
अरे तेरे इश्क़ का नशा मुझे हो रहा सवार
बहुत सवार मुझे मना मत कर जाने को
क्या लिखा खड़ा नज़र कर शाही पर्वाने को
बट्टा मत लगने दे मेरे रजपूती बाने को
इस ग़ैरत से मेट बस अदा करने दे जुर्माने को
तू रह प्यारी रे बेखट के जी

दूसरी तरफ़ :— चौबोला अमर सिंह

एक दिनका एक लाख क्या जुर्मान है बात
लाख लाख की घड़ी है तीन तीन के है रात

तीन तीन की है रात रातमें तर्क करो जाने को
लूटो मौज बहार भाड़में पटको पर्वाने को
नो करोड़ का हार मेरा हाज़िर है जुर्माने को.
काफ़ी है एक लड़ी तेरी आज चौकस भुगताने को
कही मातो कचहरी न जाओ पिया

P. 5924. चौबोला लड़ाई अमर सिंह पी० ५९२४

मेरे इस दरवार में है कोई ऐसा शेर
गिरफ़्तार करके करे अमर सिंह को ज़ेर
अमर सिंह को ज़ेर करे कोई ऐसा हिम्मतवर है
जो उस तेग़ बहादुर नरसे डरे न दिल अन्दर है
जावे करे न देर उठावे बीड़ा बढ़कर है
देख कर जवानों ने पठानों ने रजपूतों ने
जो दिलमें रक्खे इरादा

दूसरी तरफ़ :— चौबोला अमर सिंह

देख लिये कुल आपके सूर बीर सुलतान
उठा पान लीना और मैं तेग़ करन को जान
तेग़ करूं अभी नौ महले को जाऊंगा
रजपूती का हश्र अमर सिंह से करके आऊंगा
या तो क़ैद करूं या सीधा सुरपुर पहुचाऊंगा
इतने काम किये बिन सरकार मुंह न दिखलाऊंगा
अमर सिंह की घातों से हुवा सब बातों से
देखना मेरे हुनर को और किसी की ताब नहीं जो पकड़े उस नाहरको

P. 5940. चौबोला पूरन मल पी० ५९४०

बांदी की सुन दास्तां छूटा सब्र क़रार
मुशफ़िक़ मन इस वक्त आ नहीं तो आती ताब
नहीं तो आती ताब यार भर भर आवे छाती है
इस दम तबयत ग़ममें ग़ोते खाती है
बांई आंख तो फड़की असगुन दिखलाती है
एक तो दर्द भारी मौसीके बतलाती है
इसी सोचमें जान पड़ी है बमुश्किल कटे घड़ी है
क्या आफ़त हुई खड़ी हुई यकायक मौसीको क्या मर्ज़ हुआ है

दूसरी तरफ़ :— चौबोला पूरन मल

तनक तसल्ली कीजिये बांधो सब्र क़रार
ऊंच नीचका महरबां मरलो ज़रा बिचार
करलो ज़रा बिचार यार भर भर आवे छाती
बीमारी बे ग़फ़लत के बता कौन जाती है
बांई फड़के आंख पलक असगुन दरसाता है
महल मौसीके मुझको शुबाह नज़र आता है
यार जाना नहीं चहिये—गर कहूं क्या समझइये
मुझे संदेह यही है—श्रीराजके मौजूद महल मुझे क्यों बुलाय रही है

P. 6241. चौबोला अमर सिंह पी० ६२४१

शहनशाह जांहपनाह को बन्दे का आदाब
कमतरीन पामाल की सुनिये या जनाब
सुनिये अर्ज़ तो हो रवा जो दिलमें है या जनाब

इरादा करके जा यह दिन फिर आया है
रंजा बदो पंचमीका गाना करार पाया है
मुझको भी क्यों सूलीसे हलकारा कफ़नाया है
रुख़सत मिले तो हज़र से अर्ज़ करने आया है
गुज़ारिश यही है हमारी हुक्म होवे सरकारी
इनायत हो हज़ूर की तो अर्ज़ करें क्योंकि महफ़िल है भारी

दूसरी तरफ़ :— चौबोला अमर सिंह

कुल राजपूतों में हुआ रुतबा तेरा बुलन्द
अरे अमर सिंह तू हर तरफ़ रोशन है मिस्ल शमय
तू ऐसा लच्छन समझ यह है मौक़ा मजबूरी
रहे हमेशाह हरएक को हर घड़ी तुझसे काम ज़रूरी
चन्द रोज़ की छुट्टी की हो जावे मंज़्री
ग़ैरहाज़री न हो ज़रा रुख़सत होनेसे मेरी
चाहे अपना इन्तजाम कर चाहे अपना काम कर
तुम उसी दिन आजरना बरना एक लाखका जुर्माना

——:-०-:——

P. 6307. चौबोला पी० ६३०७

सोते सोते यारमें लगा देखने ख़ुवाब
आई एक शीरीं बदन जिसका नहीं जवाब
जिसका नहीं जवाब न मालूम कि वह कौन परी थी
आन परदे के पास खड़ी थी ज़र्क़ बर्क़ जुवाहर से पोशाक जड़ी थी
वह कैसे नाज़ुक़ चेहरे से यारों खड़ी थी
माहेताब कि आफ़ताब चेहरे से या वह परी थी

या अर्श से फ़र्शपर बिजली टूट पड़ी थी
मेरी जो जान मिलावो अरे जानवर पालते जाओ
होवे अहसान तुम्हारा हमदम तेरे दमको हमदम नहीं होजावे किनार

दूसरी तरफ़ :— चौबोला

महरबान मनदोस्त मन मुशफ़िक़ मन ग़म ख़्वार
पता लगा कर ख़ुवाब का लाया जान निसार
लाया जान निसार लगाकर पता तेरे हमदम का
माहेरू माहेजबीं माहेलक़ा मुकर्रम का
मारा थका सफ़र का हूं मारा ग़मों रंजो अलम का हूं
आपके सामने जाना बेदार खड़ा ह मुकरर्म का
यारों दिलशाद करो तुम ख़ुदा को याद करो तुम
रंज ग़म छूठा जिगर को लाया पता लगा कर टुकड़े दोनो दिलका
अगर यह जान जावेगी तो मैं इस ग़मसे छूटूं गा
हमारा बस चलेगा तो मज़ा उल्फ़त का लूटूं गा

——:०:——

मास्टर अमीर अली

P. 5294. ग़ज़ल पीलू पी० ५२९४

तरक्क़ी और हो दुनियां में या रब हुस्न वालों की
मज़े लेनेके बदले हैं दुआ है मरने वालोंकी
कहां फिर फूला मैं करके दाता दार बन जाता
जुदाई में रङ्गत मेरे दिलबर के गालों की—तरक्क़ी - - -
जो मैं मरता हबाब से बताया मैंने दोसो को
जिस्म में है ऐ यारो मेरे सीनेके छालों की—तरक्क़ी - -

दूसरी तरफ़ :— पीलू

क़ाबू में हो रहे हो तुम और ही किसी के
कैसे कटेंगे यह दिन अब मेरी ज़िन्दगी के
महफ़िल मेरीमें आ चल हम लूट गये सितमगर
अब मेरी दिल रे सदक़े तेरी हंसी के
चुटकियें तेरी क़ातिल रुक रुक कर चल रही हैं
क्या ले रहा हूं बदले ज़ालिम कभी कभी के
बोसोंके झूटे वायदे करता है रोज़ कल के
इतना समझ ओ ज़ालिम दिन हैं चला चली के
क़ाबू में हो रहे हो तुम और ही किसी के

P. 5724. ग़ज़ल पहाड़ी पी० ५७२४

दिल चुराये हुए दुज़दीदा नज़र जाता है
दिल टूटते हुए अल्लाह का घर जाता है
मैंने कहा मेरे निशांको इनसान से पर्दा है ज़रूर
बात रह जाती है पर वक्त गुज़र जाता है—दिल ...
क्यों डराते हो मुझे तीर नज़र दूरी से
मरने वाला तो फ़क़त बात पै मर जाता है—दिल ...
तुम नहीं जानते तसक़ीं की लज़्ज़त क्या है
ऐसा करने से सिर भी हां बिगड़ जाता है—दिल .

दूसरी तरफ़ :— माष्टर सादिक़ ग़ज़ल

इश्क़ का शोला ग़ज़ब है दरबदर हो जायेगा
चांदनी छुप जायेगी मैला बदन हो जायगा

मिट्टी पढ़ पढ़ कर न मारो ऐ सनम मेरी क़ब्र पर
ख़ाक छन छन कर मेरा मैला कफ़न हो जायेगा
जी में आता है लगादूं आपको यह रूए तो
पर ख़याल आता है मुझको बे वतन हो जायेगा

P. 8962. माष्टर अमीर अली ग़ज़ल पी० ८९६२

बरसों से तड़पता हूं मैं बिसमिल नहीं होता
इतना सा मेरा काम भी क़ातिल नहीं होता
जिस बज़्म में वह रुख़ से उडा देते हैं पर्दा
पर्वाना वहां शमय पै मायल नहीं होता
तीर उसने लगाया वह पड़ा आके जिगर पर
कमसिन है वह क्या जाने इधर दिल नहीं होता
वह हम हैं कि ज़िन्दा हैं और उस कूचेमें पहुंचे
बे मौत कोई ख़ुलद दाख़िल नहीं होता

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

रहमतुल्लायालमीन तुम जाने क्या पर्दे में हो
देखने में मुस्तफ़ा हो पर ख़ुदा पर्दे में हो
पर्दे पर्दे में तो यह हो—हो जो बेपर्दा तो क्या
यह भी अच्छा है कि तुमनामे ख़ुदा पर्दे में हो
मुजमा अग़ियार में मिलना भी मिलना है कोई
लुत्फ़ आजाये अगर रोज़े जज़ा पर्दे में हो
जिसका साया भी न हो और जिसका साया सब पै हो
वह मोहम्मद मुस्तफ़ा हो या ख़ुदा पर्दे में हो

अंगनलाल

P. 6595. ग़ज़ल पी० ६५९५

अगर प्यारी सूरत तुम्हारी न होती, मुलाक़ात तुमसे हमारी न होती
ज़रा ख़्वाबमें हम तुम्हे देखलेते, तो फिर इस क़दर बेक़रारी न होती
हसीनों की न हरगिज़ करते ग़ुलामी, जो क़िस्मतमें यह ताबे दारी न होती
तेरे वस्ल की मैं जो घड़ियें न गिनता मेरी आज एक दम शुमारी न होती
निगम वस्ल करने का इस दम मज़ा था, किसी की भी ज़िल्लत व ख़ुवारी न होती

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

रुख़ पे गेसू छारहैं आधे इधर आधे उधर
सांप से लहरा रहे आधे इधर आधे उधर
कल चमन की सैरको निकला जो मेरा माहेरू
गुलसे गुल शर्मा रहे आधे इधर आधे उधर
कल भरी महफ़िलमें हम ने यार का बोसा लिया
सबके सब शर्मागये आधे इधर आधे उधर
लेके शाना हाथ में वह ज़ुल्फ़ सुलझाने लगे
फिर भी वहां बल खारहे आधे इधर आध उधर

—:०:—

अनवर

P. 6979. शंकर गढ़ पी० ६९७९

क्यों साहब इस से करो कोई तड़क भड़क तकरार
कोन नज़ानी कहां है और बतलाओ सरकार

बतलाओ सरकार कोन राजा की यह रानी है आफ़ताब मानिन्द
जिस की चमकती पेशानी है और जोबनमें भर पूर देखकर हूर पेशमानी हैं
और क्या क़सूर इसका हज़र जिससे तेग़ तानी है
मारनेको तयार हो जल्लाद ग़ुस्सा आवे बेशुमार
मुझे अफ़सोस बड़ा है यह कौन कहां से आई और क्या झगड़ा है।

दूसरी तरफ़ :— मसख़रेका जवाब

क्यों क्यों क्यों मेरी सरकार—ऐसी कड़ी करो गुफ़्तार
मांगो गरदन हूं निसार मेरी सुन सुन सुन
चलहट नाबकार मक्कार बन जोरूका ताबेदार
मैं तो मूछें लू उखाड़ यहां से चल चल चस
चल चल चल अड्डे पै जान, तुझ को खिलवाऊंगा पान
रखवा दूंगा एक दूकान मेरी सुन सुन सुन
यहां के सारे बाशिंदे क्या ऐसे हैं यह गन्दे
नमनमें ज़रा डरें हैं रे
भले घरोंकी मस्तूरातों से भी दिल लगी करें हैं

P. 7034. चौबोला जमना पी० ७०३४

सोते हो क्या बेख़बर उठकर हो हुशियार
असनकी बिनती सुनो ऐ मेरे भरतार ऐ मेरे भरतार
किस कारन पिया जगाये
और खेल शिकार तुम्हारे छोटे भैया अब ही आये
करी दिल लगी हमने उनसे आज वहुत रिसयाए

बहुतेरे समझाये देवर बडे गुस्से में छाये
रसाई मेरी करादो और आप उनको समझा दो
फ़जर होते ही जावें रहे ठीक यह ठान बियाह नौटंकी को लावें

दूसरो तरफ़ :— चौबोला मोरध्वज

राजा कौ जाचंन गये बन बरहमन रघुबीर
और दुसासनके बल थके कोई आकहे कर देव चीर
दरोपता जब श्री पत किल कारी
और बन्दा से छल कियो आप जाल धर बने मुरारी
भसमा छरको भस्म कियो जब बनके नर सिंगारी
इन्दर बन तुम चरण कमल पर बार बार बलिहारी
मेरे बृजके रखवारे सदा संतनके प्यारे
गुज़ारे करो हमारे लीजो ख़बर द्वारका बारे

—:०:—

P. 7210. नौटंकी पी० ७२१०

जनां जो जाना तुम्हें तुम्हें जाना हो प्रभात
जाना हो परभात कौन वक्त. दर्बार काहै—इस दम आधी रात
इस दम आधीरात रातमें तरक करो जानेको
तरक करो जानेको लूटो मौज बहार भाड़में पटको परवानेको
नो करोड़का हार मेरा हाज़िर है जुर्मानेको
हाज़िर है जुर्मानेको काफ़ी है एक कड़ी लाख चौदह तक भुगतानेक
कही मानो कचहरी न जाओ पिया
फ़िकर तुमको पड़ी करने अदा जुर्मानेकी
मुझे ख़्वाहिश हैं सनम सेजपर सुलानेकी

दूसरो तरफ़ :— नौटंकी मालन

अरे हटो भो बावरे किन दियो बहकाय
कोन दियो बहकाय जल्दी यहां से जा चलारे ले जान बचाय
ले जान बचाय मुझे अब तरस तुम्हारा आवे
आया कहां सैर करते हक़ नाहक़ मारा जावे
अपाना हक़ नाहक़ मारा जावें
नौटंकी रानी का सुनियो नोलख बाग़ कहावे
औरतको नही मना मर्द जिसमें नहीं जावे
यां ख़बर रानी सुन पवे मुझे बेशक मर वावे
लेके खाल कुलहाड़े पकड़ वाये
लेके खाल कुलहाड़े पकड़वाये
जल्लादोंसे फिर तुझको क़तल कराये

—:०:—

P. 7378. चौबोला पी० ७३७८

चढ़ आये चौहान क्यारे करनेको संगराम
हां हां रे करनेको संगराम - - - -
अनी अनीसी भिड़रही फ़ौज़ें ऐ पड़ी तमाम
ऊदल देवर कनवजमें छाये जान अकेले मेरे पतिको पृथ्वीराज—चढ़ आये
चमक रही शमशेर धरे पर बचे न प्राण बचाये
मुसीबत बड़ी कड़ी हैरे और सील चौतर्फ़ अड़ी हैरे
नही है पारा मात भगवती तेरे सहारे हैगा लाल हमारा

दूसरी तरफ़ :— चौबोला मलखान

दिल्लीपत चौहानसे जो कोई जीता है संग्राम
श्रौर मुंह मांगा हर एक को दीजिये बांट इनाम
खूब दर्बार सजाना चाहिये श्रौर नौजवान कमसिन रंडी पातरा
बुलाना चाहिये
श्रहलकार जितने हैं सबको खुशी मनाना चाहिये - - - - - -
श्रौर क्या कलकी खबर है श्राज तो मौज उड़ाना चाहिये
श्रौर श्रहलकार जितने हैं - - - - - - - -

P. 7470. चौबोला पी० ७४७०

भिक्षा ले श्रातर चली पहुंची जोगी पास
भोजन लीजिये जती जी बड़ी लगाई श्रास श्रापने
स्वामी भोजन लीजिये बड़ी लगाई श्रास साहूकार ज़ादी
श्रपनीको दरस श्राप दीजिये
तुम तो दीन दयाल दया कर कृपा श्रापनी कीजिये
भोजन भीतर करो महलमें श्रौर ठंडे जल पीजिये
श्रापकी जो रुचू होई जी श्रौर करेंगे हाज़िर सोई जी टहल जो कुछ
बनि श्रावे शहज़ादी सबकरें श्रापका स्वामी दरस पावें - - - - -

दूसरी तरफ़ :—
नौटंकी

श्रब हम को क्या चाहिये भोजन मिले श्रगाय
श्रब हम जोगी श्रभदूत हैं श्रौर लौट मढ़ी को जाय
भोजनमें श्रब क्या काम हमारा श्रौर साहूकार है कौन किसाका

हम तकते नहीं सहारा बस्ती दीनी छोड़ बनहीमें करते रहें गुज़ारा
श्रौर हर से हर दम ध्यान जहांसे हमने किया किनारा - - - -
बांदीरी लगा गुरुका रंग श्रौर मोहममता सब तियागी
क्या बांदीरी नहीं किसी से काम

P. 7663. चौबोला रामसिंह पो० ७६६३

किस ग़फ़लत की नींदमें गये पलंगपर सोय
श्रौर चाचा मज़ा शराबका श्रब सब मालूम होय
श्रौर श्रब सब मालूम होय सीस चोधरीका चक्कर है - - -
सीस चोधरीका चक्कर है क्या था क़ौल बादशाहसे उसकी भी कोई फ़िकर है
उसकी भी कोई फ़िकर है श्रौर सात रोज़के चौदह रोज़ गुज़रे ग़रीब पर वर है
गुज़रे ग़रीब पर वर है श्रौर दुशमन दावे दार श्रापकी रहे शिकायत कर है
श्रापकी शिकायत पर है ज़िकर दरबारमें चाचा तुम्हारा श्राज श्राया है

दूसरी तरफ़ :— चौबोला रामसिंह

दहशत चाचाकी मुझे श्रौर हूं इससे मजबूर
वर्ना कुल दर्बारको मार पिलाता धूर
श्रौर मार पिलाता धूर-सलावतकी चुग़ली भुलाता - - - - -
सलावतकी चुग़ली भुलाता श्रौर कर देता जिन्नतरसीद भुट्टासा सीस उड़ाता
उड़ाता भुट्टा सा सीस श्रौर सात लाख चोखे चोखे पर खाता
बट्टा बियाज समेत इसका चोखा खाता नो महल ले जाता
श्रांख उठा खलक़में देखा ऐ तब हूं लाचार

असग़र अली

P. 266. **असीरे हिर्स** पी० २६६

तोरी छल बल है प्यारी तोरी कल बल है नियारी
करो बातें न मोसे सांवरिया जान,
तोरी ज़ुल्फ़ें हैं काली तेरे गालों पे लाली
तोरे नैनाके लागे कटरिया बान—तोरी० - - - - -
जाओ जाओ नादान मोहे न बनाओ जान
नैना से नैना मिलाओ मोरी जान
छोड़ो जी हाथ करो औरोंसे घात नहीं होगी यह बात
अजी वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह—तोरी छल - - - -

दूसरी तरफ़ :— **सुरि देशक**

कोई मुझे बूटी पिला के लुभाय गयोरे
बड़े सवेरे जो कोई छाने वाकी लम्बी डींग
उड़त चिड़इया वह पहचाने गिरी सड़क के बीच
सवेरे फिर छनेगी भंग—कोई मुझे - - - - -
दूसरे पहरे जो कोई छाने वाके लम्बे कान
तबा कटोरा बेच डालकर घर लोटेपर ध्यान
सवेरे फिर छनेगी भंग—कोई मुझे - - - - -
तीसर पहरे जो कोई छाने जूं भादों की कीच
घर के जाने मर गये आप नशे के बीच
सवेरे फिर छनेगी भंग—कोई मुझे - - - - -
चौथे पहरे जो कोई छाने बच्चा आप ही आप

बे जोरू बे छसेरे का हो वह बच्चोंका बाप
सवेरे फिर छनेगी भंग—कोई मुझे० - - - - - - - -

P. 268. **चन्द्रावली** पी० २६८

गजरा बेचन वाली नादान यह तेरा नख़रा
फूलों की डालो है तेरो निराली आंखों में है कैसी लाली कहीं अड़
गईं कहीं लड़ गईं यह तेरा- - - -
खूब निकाली है यह देखामाली-बातोंमें है भोली भाली कहीं डर गईं
कहीं मर गईं—यह तेरा- - - -
नाज़ दिखावे जो अदा बनावे-अजीनेकों में वह कैसे आवे
अरी चलरी नहीं फलरी—यह तेरा- - - -

दूसरी तरफ़ :— **चन्द्रावली**

ऊंचे ऊंचे जोबना पै जिया ललचाय तन देखो हमरी ओर - - - -
ऐसी गोरी गोरी छोरी मैंने देखो नहीं राम
कैसी भोलो भोली प्यारी प्यारी करे बिसराम—तन देखो - -
चांदी जैसा रूप चमके सोना जैसे गाल
नागन जैसी चुटिया लटकें वाके करिया बाल—तन देखो - - -
गाल पेड़ें मथुराजी के होंट कद्दू को फांक
भया ऐसी मोटी आंखें गाजर जैसी नाक—तन देखो
ऊंचो ऊंचो जोबना पै जिया ललचाय तन देखो हमरी ओर
ऐसी गोरी गोरी छोरी मैंने देखी नहीं राम
कैसी - - - - - - - -तन- - - - -

चांदी जैसी- - -नागन जैसो- - - - - - - - - -

गाल- - - - - - - - - भैया ऐसी - - - - - तन देखो- - - -

——:०:——

बाबू क़ौवाल

P. 8579. ग़ज़ल पी० ८५७९

सदहा शहीदे नाज़ मेरी ज़ान होगये

क़ुरबान सैकड़ों तेरे क़ुरबान होगये—सदहा शदही - - - - -

खोले किसी ने बाल तो वाबस्तगाने ज़ुल्फ़

मानिंद बूये ज़ुल्फ़ परीशान होगये

आमद प उन बुतों के क़यामत हुई निसार

जितने ख़िरामे नाज़ थे क़ुरबान होगये

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तेग़े निगाहे नाज़ अचानक जो चलगई

बिजली की तरह ख़िरमने दिल पर मचलगई

तेग़े निगाहे नाज़ - - - -

मनसूर को चढ़ा दिया सूली प इसलिये

एक बात जोशे इश्क़ में मुंह से निकलगई

रख लो सिराज सीने में तसवीर यार की

देखा जो सर झ काके तबीअत बहेलगई

——०——

बख़्शी

P. 6956. जिला पी० ६९५६

दोहा :—तुलसी मूरत रामकी घट घट रही समाय

जूं महंदी के पातमें लाली लखीन जाय

नाथ मुझको भूल बैठे क्या मेरी तक़सीर है

किस लिये मुझको भुलाया क्या बुरी तक़दीर है

होके अरधंगी तुम्हारी बसमें रावनके पड़ी

राक्षस मुझको डरावे हाथमें शमशीर है

इतने अंगारे गगन में एक भी गिरता नहीं

फूंकते नहीं क्योंकि दिलमें आपकी तसवीर है

दूसरी तरफ़ :— भजन

मेरे शिम्भू तू लीजो ख़बरिया मेरी

देखो तुम ही से लागी नजरिया मेरी

जटा में गंग बहे पाप नास दुख हरनी

करें वह मोक्ष सभीका वह आप बेतरनी

हरी द्वार पै कीजो जी मुकतिया मेरी-मेरे शम्भू - - - - - - - -

गिर कैलाशके बासी हो आप शिव नाथा

नाम जो जो जपे पाप उनके सब नासा

बख़्शी द्वार पै गावे है किरतिया तेरी-मेरे० - -



P. 6980. पीलू पी० ६९८०

लिया था जब दिल किया था वायदा कि रोज़ तुमसे मिला करेंगे

कहीं जो मिलना कज़ा करेंगे तो उसका बदला अदा करेंगे

मज़ा इसीमें है दिल लगी का कि शोख़ियां हों शरारतें भी
अगर वह हम से हया करेंगे तो छेड़ कर हम ख़फ़ा करेंगे
क़ब्रमें गर मिले न साक़ी तो बता तो फिर क्या पियेंगे नादां
यहां से शीशा बग़लमें से चल मज़े ले ग़ट ग़ट पिया करेंगे।

दूसरी तरफ़ :— ज़िला

शर—गुले रुख़सार जानां पर यह कालासा नहीं तिल है
किसी आशिक़ का जल भुनकर सिमट कर रह गया दिल है
ग़ज़ल—चश्म में हो मय भरी दिलमें जानां नां रहे
है मज़ा काबेमें भी छोटासा बुत ख़ाना रहे
या ख़ुदा हम मयकशों को इस तरह होवे अज़ाब
आंख दोज़ख़ में रहे और हाथ में पैमाना रहे

—:-०-:—

P. 7211. दादरा पी० ७२११

मारूंगी नैना बान बचे रहियो
बारह बरस की मोरी उमरिया-आंचल जोबन मोरी पतली कमरया
लालन में छुपे रहियो बचे रहियो-मारूंगी नैना बान - - - -
चूमले दंदान न कोई इस लिये पहना बुलाक़
क़ुफ़्ल सोने का लगा है गोहर संदूक में

दूसरी तरफ़ :— दादरा

नैनां मार बुलावे इशारोंसे-मेंहदी वाले हैं हाथ प्यारे प्यारे
सांवरी सुरतिया मोहनी मुरतिया-तेरे ज़हरीलेकेस कारे कारे
नैनां मारे - - - ओहोजी नैनां - - - आहाजी नैनां - - -

पन घट पर मोरी अंखियां लड़ी हैं मेरी लीजो ख़बर पिया प्यारे
नैना मारे - - आहाजी नैना मारे - - ओहो नैना मारे -

—:-०-:—

P. 7664. परशुराम सम्बाद पी० ७६६४

लखनलाल के हृदयमें भरा हुआ था जोश
परशुराम की बात सुन रह न सके ख़ामोश
बोले सुख का सम्बाद कभी दुख का कारण हो जाता है
मीठा और मधुर बोलने से तोता पिंजरे में आता है
जो ज़यादा मीठा होता है वह अपना नाश कराता है--हे जी रामा --
मीठे गन्ने को देखो तो कोल्हू में पीला जाता है
भाई ने मीठे वचन कहे तो क्रोध और चढ़ आता है।
सब से पहिले यह बोल उठे इसलिये चोर ठैराया है
अच्छा अपराधी हमीं सही हमने ही ज़हर निचोड़ा है
जो कुछ करना हो करें आप शिव धनुष हमीं ने तोड़ा है
क्षत्री बालक का सुना जब यूं गरम जवाब
पर्सराम जी हो गये ग़ुस्से से बेताब
बोले ओ राजा के लड़के तू मुंह नहीं सिंभालता है
मुझ जैसे क्रोधी के आगे क्यों आंखें लाल निकालता है
श्री महादेवका महा धनुष सारी दुनियां में अज़हर है—हे रामा -
क्या इतना बड़ा बड़ चंड डंड छोटी धुनियां के हम सर हैं

दूसरी तरफ़ :— परशुराम सम्बाद

वह तो कुछ नये नये भी थे यह जीरन पुराना धनु हुआ
छूते ही त्रण सा टूट गया सोचा था अच्छा बुरा हुआ

यह कोई बड़ा अहार नहीं मामूली कंवर कलेवा है
इस तुच्छ बात पर क्रोध करें यह नहीं आप को ज़ेबा है
श्री महाराज तुम ब्रह्मण हो इसलिये मुझे यह कहना है
तुम को यह ज़ेब नहीं देता जो क्रोध का ज़ेवर पहना है
यह गहना है राजपूतों का जो पहना जाता है रणमें
अपराध क्षमा हो महाराज चहिये शान्ति ही ब्रह्मणमें
लखनलाल ने जब किया ऐसा वचन विरोध
परसराम के हृदय में बढ़ा और भी क्रोध
बोले शठ तुझे हुआ है क्या जो बात काटता जाता है
क्या तू हमारी बातें समझा जो मुझे डांटता जाता है

P. 7713.

कथा रामायण

पी० ७७१३

परसराम कहने लगे बढ़ा न और विवाद
वरने सूरज वंश में होगा बड़ा बिखाद
नादान हंसी अच्छी नहीं इस हंसी में तू रोजायेगा—हे जी रामा
मेरे परशे की तुरशी से सब नशा हरन हो जायेगा
और यह नन्ही सी ज़बान परवत की बातें करती हैं
अफ़सोस दूध वाले मुख से ज़हरीली धारा जरती है
हर बार यह आता है जी में बस अभी मारूं मार है यह
सुन्दर मुख देख के सोचता हूं जीने दो अभी कुमार है यह
नालायक़ लड़के होश में आ क्यों मुझ से लड़ के मरता है
मुझ जैसे क्रोधी के आगे किस लिये लड़कपन करता है
लक्ष्मणजो ने फिर कहा ऐसा वचन विरोध

रहे आप ही की तरफ़ नाथ आप का क्रोध
श्रीमहाराज हम लड़के हैं लड़के ही लड़कपन करते हैं
पर तुम्हे नहीं शोभा देता जो लड़कों के मुंह लगते हैं

दूसरी तरफ़ :—

कथा रामायण

यह सुन के कहने लगे परसराम ललकार
अपराधीके वास्ते है कठार की धार
लक्ष्मण बोले फिर वही रहा न जाता मौन
अपराधी रघुराज हैं यह कह सकता कौन
अपराधी तो तुम हो जनाब जो जलसा बिगाड़ने आये हो
भाई जब दही बिलोय चुके तो घी निकाल ने आये हो
यह धानुष अनेकों वर्षों से मिथलापुर में था पड़ा हुआ
क़बजे में मिथलेश्वर के था इस से हक़ उनका बढ़ा हुआ
जिस का हक़ था उसने हो उसे अपने आगे तुड़वा डाला
अब कहिये तुम होते कौन जो करते हो गड़ बड़ झाला
क्या मरे हुए इस धुनवा को साहब तुम रोने आये हैं—हे जी रामा
या देख क्षत्रियोंका समाज यूं ही सर होने तुमजी आये हो
परसराम उबले कहा फिर वह ही बकवाद
इस गुसताख़ी का तुझे अब मिलता है जवाब
जो पिता के ऋण से उऋण हुआ वह माता का बलदाता है
वह हाथ गुरवानके कारण फिर एक बार खुजलाता है

P. 7853. **ग़ज़ल** पी० ७८५३

ज़बह करता तो सैयाद मचल लेने दे
कोई अरमां दिल बिसमिल का निकल लेने दे
आप के पांव की महन्दी तो न छुट जायेगी
अपने तलुओं से दिलज़ार को मल लेने दे-हांजी ----
ऐ शमय रू मुझे मतरोक यहां आने से
मिसल पर्वाना हूं इस आगमें जल लेने दे
क़ब्रमें चैन घड़ी भरके लिये लेने दे
कल से बेकल हूं मुझे आज तू कल लेने दे हां जी --

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

वजह ख़ामोशी न पूछो आप मुझ दलगीर से
एक दिल पाया था वह भी छिन गया तक़दीर से-हां --
साफ़ ज़ाहिर है मेरी छरमें के तहरीर से
दो हरन जख़्मी किये सैयाद ने एक तीर से-हां ---
आप मिलये यान मिलये इसका तो कुछ ग़म नहीं-हां ---
हम शिकायत जा करेंगे कातिबे तक़दीर से—हां कातिबे ---.

———:०:———

P. 8030. **दादरा** पी० ८०३०

किसी को क्या घायल करोगी मोरी जां
क्या ख़ूब मेरे दरद का अरमान है निकाला
दुखतें हुए ज़ख़्मों पर नमक पीस के डाला
आप मुझ से छिपे जैसे कभी देखा न भाला

बे साख़्ता तंग होके दिलने किया नाला
किसी को क्या घायल करोगी मोरी जां
देखा जो दरे यार पर हंगामा है बरपा
जां बाज़ों का जमघट है दिल अफ़गारों का मेला
बिसमिल हैं कोई बेताब तड़पता है सिसकता
और कोई जिगर थामे करता है यह नाला
किसी को क्या घायल करोगी मोरी जां

दूसरी तरफ़ :— **दादरा**

चाहे सैयां मार डालो यारी करेंगे-यारी करेंगे मज़ेदारी करेंगे
मुद्दतसे आरज़ू थी कोई दिल रुबा मिले
एक आप भी मिले तो ग़र्ज़ आशना मिले
हम से ख़िलवत दिल से मिलो तब मज़ा मिले
दुनियां के देखनेको मिले तब तो क्या मिले-चाहे ---
ऐ ज़ब्त देख इश्क़की उस को ख़बर नहो
दिल में हज़ार दर्द उठें आंखतर न हो
एक फूल है गुलाब का आज उनके हाथ में
धड़का है दिल में किसी का जिगर नहो-हां जी --

——(-:०:-)——

P. 8692. **सेघंड़ा** पी० ८६९२

मन्ज़ूर है ख़ातिर दिले नाशाद किसी की
अरे हां कोई याद रहे याद रहे या न किसी की
हां रोयेंगे उन्हें खींचकर फ़रयाद किसी को

अरे हां मेहनत भी कभी जाती है बरबाद किसी की
जो मुझ पै गुज़रती है वोह तुम पै गुज़र जाय
अल्लाह करे तुम को भी चाहत हो किसी की—
मन्ज़ूर है ख़ातिर - - -

तोबह यह हम करें क्या उम्मीद बुतों से
अरे हां पत्थर भी कभी सुनते हैं फ़रयाद किसी की—
मन्ज़ूर है ख़ातिर - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

तसवीर शमअ हूँ में सोज़े ग़मे निहां से
मेरी ज़बां जला दो गर उफ़ करूं ज़बां से
तारों के टूटने को तुम ग़ौर से न देखो
तिनके उतर रहे हैं यह तुम पै आसमां से—
तसवीर शमअ - - -
उनके ख़याल का है दोनों मकां से नफ़रत
हर रोज़ एक नया दिल लाये कोई कहां से—
तसवीर शमअ - - -
मेरी ज़बां जला दो - - -

—:o:—

P. 8872. थियेट्रीकल पी० ८८७२

बांकी चितवन की ताक ताक मारी रे कटारी अलबेला
डबेला जवान - - -
बातों में टोना निगाहों में जादू कितो हैं ज़हरीले नैनवा के

जावो सखी जावो जावो मोहे न सतावो
कैसा भोला है बांका जवान बांकी चितवन - - -
बातों में टोना - -
बांकी चितवन - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

चली सुन्दर नार पिया के नगर अब मात पिता से रुख़सत हो - - -
जब पी ने बुलावा भेज दिया फिर चलने का कौन महूरत हो
मैके में अब तक सुख में रहो दुख दर्द की बात न कोई सही
थी कुनबे में तो बनो बात तेरी गो सोहानी सूरत हो
क्यों आप तो चुड़िला पहिनत हो क्यों आप सिंगार बनात त हो
गुन मुझको सिखादे ऐसा कोई मेरे रूप की वाको चाहत हो

———:———

पण्डित बुद्धि चन्द्र

P. 6473. कथा महाभारत भाग १ पी० ६४७३

(द्रोणाचार्ज के क़िले चक्रव्यूह के वक़्त, महाराज युधिष्ठर की चिन्ता)
चक्रव्यूह का नाम सुन करने लगे विचार
आज किसी रणसूर का है अवश्य संहार
निश्चय कलङ्क का टीका हम सब को लगने वाला है
अर्जुन की अनुपस्थिति में यह कैसा जंत्र निकाला है
सम्बाद यदि यह सच्चा है तो बस परिणाम भयङ्कर है
भाई कोई युक्ति समझाओ समविकार का अवतर है

महाराज युधिष्ठिर को अधीर देखा जब मंझले भाई ने
आह धीरता का अमृत छिड़का तब दुख सहाई में
जब तलक प्राण हैं शरीर में तब तक आशा नहीं छोड़ेंगे
मुख मलिन किसे होता है हम चक्रव्युह को तोड़ेंगे
महाराज आंख भर कर बोले बीरो अब जगत हंसाई है
अर्जुन संग तब तक दलमें है हमरा राम सहाई है

दूसरी तरफ़ :— कथा महाभारत भाग २

यह काम उसी रणधीर का है मैं हालमें जिसका नाम लिया
अत्यावश्यक वह चाहिये था मैं भूल से उसको जान दिया
संसार कहेगा पांडव दल बीरोंसे बिलकुल ख़ाली है
क्यों हक़ीस्त माने बुद्धि तो उलझझुक़ कर डाली है
वह तो सोचमें लग गया अभिमन्यु बलबीर,
महाराज बिन पिताके हैं अति ही अधीर
इस चक्रव्युह का चक्र देख सब की बुद्धी चकराय गई
होसले सबके पस्त हुए चिन्ता की ज्वाला छाय गई
ह किन्तु क़दम बढ़ाय अपना पीछे हटने का वक्त नहीं
इस वक्त अगर डर जायेगा तो तू अर्जुन का रक्त नहीं
जीवन जाय तो जाने दे मिट जाय जान प्रमान रहे
पामर बनकर क्या जीना है निज देशका मान रहे

P. 6510.

कथा रामायण पी० ६५१०

(कटी हुई भुजा को देख कर सलोचना का विलाप)
सन चुकी हूँ काल तुम्हारा मैं उस पुरुष के हाथों से होगा

निद्रा नारी भोजन जिसने नहीं बारह बरस तलक भोगा
वह कौन है यह तो बतला दो लेखनी पता मंगवाती हूँ
सियाही से लिख दो पांच चार अक्षर करुणा में चाहती हूँ
यह कहा धर्म की ताक़त ने अनहोनी बात हुई जाती है
लेखनी कहां और भुजा कहां वह सब कुछ पत्र बताती है
लेखनी उससे पकड़ कर भुजा लिखती है
अक्षय अखंड अविनाशी जो वितत्रय मूर्ति धरने वाला
और जिसे अजमान कहते हैं ला जहां मुझे करने वाला
सलोचना शीश गया रघुराज के दर्शन की अभिलाष
तब परतीति तेरी भुजा पड़ी युद्धमें लाश
जो कुछ भी लिखा भुजाने था वह बांच सलोचना घबराई
गिर पड़ी मूर्छा खाकर के लछमन ने चोट जिगर लाई
स्वामी तुम काग़ज़ पर लिख लो—सीने पर सोर अभिमान हैं
बस काल मेरा और आपका है लछमन का वह जो गुमान ह
जिस भुजा की ताक़त से हाय देवता सती चिंघाते थे
पृथ्वी आकाश सागर पाताल थरर थरर थर्राते थे

दूसरी तरफ़ :— सलोचना का रामचन्द्रके दलमें जाना

देख सुलोचना डरती है मैं ख़बर किस तरह पहुंचाऊं
रामा दल बड़ा भयानक है अब पार इसे कैसे पाऊं
बानरों ने देख कहा यारो लङ्कासे डोली आई है
शायद सीता ही है इसमें बस मिटी लड़ाई जाती है
आ हा छत मेघनाथ के मरने से क़ायम रावण के होश हुए
अब विजय हमारी होगी असुरों के ढीले जोश हुए
जो सीता कारण जङ्का था वह सीता बिन श्रम आन मिली

बनरों से राक्षस भाग गये यह हमें होश की हां मिली
जो रहे वियोगी सीताके अब वियोग भी उनका छटा
बिन कलेश ईश्वर की माया यारो अब लङ्का गढ़ टूटा
बनरे डोली देखकर हुए हर्ष अपार, काज सभी महाराजने किये
हमारे यार
क्या जाती है लेकिन बनरोंसे समझाती है लजाती है
पर रामचन्द्र का ध्यान धरे पालकी वहां पहुंचाती है
लोचनोंसे देखे सुलोचना बस ओमकार में लीन हुई,
स्वामी का मगर वियोग भी है यह कि बिचारी दीन हुई

P. 6677. **ग़ज़ल** पी० ६६७७

तू शहनशाह मैं दरका गदा जुज़ रूह है एक तक़दीर दो
तू तख़्त नशीं मैं ख़ाक नशीं है मुल्क एक जागीरें दो
तू ज़र नसीब मैं ख़ाक है असर एक अक्सीरें दो
तू ज़ाहिर है मैं बातिन हूं है ख़ाक एक तासीरें दो
तू बस्ती में मैं जङ्गल में है वतन एक तामीरें दो
तू गुले चमन मैं ख़ारे दश्त नक़्काश एक तस्वीरें दो
तू फ़िक्रमन्द मैं दर्दमन्द है तीर एक नख़्वीरें दो
तू क़लम बन्द मैं ज़बां बन्द बंदिश एक ज़ंजीरें दो

दूसरी तरफ़ :—

ग़ज़ल

मौत कहती है मुझ मैं मार कर कर दूं फ़ना
रूह कहता है समझ कर होश कर ऐ बदगुमां
मौत कहती है तेरा रहने न दूं बाक़ी निशां

रूह कहता है कि मैं पहिले से हूं बेनिशां
मौत कहती है तेरा यह जिस्म पारा पारा हो
रूह कहता है मेरे रहने को हैं लाखों मकां
मौत कहती है मैं दुनियां ही न रहने दूं अगर
रूह कहता है मैं जाऊं बेनिशां में बेनिशां
तै हुआ झगड़ा असिल में मौत बच्चों की है खेल
बुद्धि चन्द्र यह तो सच है रूह का मरना कहां

P. 6698. **कथा रामायण** पी० ६६९८

(लक्ष्मण को बेहोश देख कर रामचन्द्रजी का विरलाप)

लक्ष्मण के धोरे खड़े रोवें सब रणबीर
दशा देख कर रघुबीर की करने लगे तदबीर
ओ बजरंगी ओ महाबीर तू बलवान कहाता था
बे वक़्त आनकर बैर लिया मुझ को भक्ती दिखलाता था
लक्ष्मण के शक्ती लगने से मैं देखली तेरी भगती
ना मर्द बता क्यों न रोकी तें बनके हाथों की शक्ती
जा जा भाई के मुखड़े पर अंधेरा पाता जाता है
बादल बन कर यह मूढ़मती चन्द्रमा छाता जाता है
किस बिध दिल आराम हो रामन्द्रके आज ——
भालू पंजरो की वहां देखे सकल समाज
अरे जागो भाई जागो भाई ज़ख़्मी दिल होता जाता है
यह निद्रा कौन ज़माने की जिस में तू सोता जाता है
यह गुलाब के पौदे सोर मुरझाये हुए लटकते हैं
तेरे दम साथ उन्हों के दम घुटनोंमें आन अटकते हैं

दूसरी तरफ़ :— कौशल्याका रामचन्द्रको संदेश

कौशल्या बोली हे कपीश मेरा संदेश बता देना
जो कुछ मुख मेरे से निकले वह रघुबीर कानों में पादेना
जितने घरसे तुम निकले हो उतने होकर आना होगा
नहीं तो कौशलिया को बेटा मत मुखड़ा दिखलाना होगा
बेहतर है तुझ को यही लाल भाई संग जाना होगा
जिस जगह लखनका वेद गिरे उस जगह ख़ून बहाना होगा
ऐ आंख तू छोटे बेटा को किस दिन देखेगी भर भर कर
कृत कृत्प हाथ तब करूं लखनके सीने के ऊपर धर धर कर
ऐ मुख कब चूमने जावेगा चन्द्रमा से सुन्दर मुखड़ा को
वह कौन वक्त हो कान बाज़ आऐं सुनने से दुखड़ा को
लखन सिया को साथ ही लेते जइयो लाल
भाई संग जिद जावना अवधका छोड़ ख़याल
तब कहा भरतने बजरंगी तू रजनी में नहीं जासकता
तू मेरे लक्ष्मण भाईको औषधी नहीं पहुंचा सक्ता
ले तीर मेरे पर सवार हो लंका पर तुझे पहुंचादूं मैं
बुद्धि कहें तो सातों समुद्रही इक तीर के साथ दिखादूं मैं

—:-०-:—

P. 6714.

भजन पी० ६७१४

तू इस जमना के तट ऊपर बंसी बजाया कर
मुझे तेरी तमन्ना है मधुर बंसी सुनाया कर
तू सब गुलशन का मालिक है तू इस गुल पर भी आया कर
हमेशाह शौक़ तेरा है ज़रा जलवा दिखाआ कर

मोहब्बत टूट न जायें यही है आरज़ू मेरी
सुबह उठकर ऐ रूहे पाक उल्फ़त से बुलाया कर
मेहं रहे बुद्धि चन्द्रकी जसोधा लाल के आगे
मैं क़दमों प धरूं सर को तू हाथों से उठाया कर

दूसरी तरफ़ :— भजन

बख़्शो बख़्शो प्रभु मैं हूं ख़तावार तेरा
गर्भ का भूल गया वायदा व इक़रार तेरा
होके दुनिया में भूला तुम्हारा गायन
भूला अहसान तेरा भूल गया प्यार तेरा
ग़लती अज़ हद है मेरी मैंन हुआ वायदे वफ़ा
फूल कैफ़से बना हाय चमन हार तेरा
गुल से लगता था कही चुभ गया मैं उंगली
दिल में हसरत ही रही मैंन बना हार तेरा
बुद्धि चन्द्र मैं तेरे पांव की पैज़ार हूं
हाय नोचले खाल मेरी मैं हूं गुनहगार तेरा

पण्डित चांद नरायण

P. 403. सिंध भैरवीं दीपचन्द पी० ४०३

अगर हम ख़ाक पा को देख पाते अपनी आंखोंसे
तो सुरमे की जगह उनको लगाते अपनी आंखों में
हमें नरगिस का दस्ता ग़ैर के हाथों से क्यों भेजा

अगर आंखे दिखाई थीं दिखाते अपनी आंखों से
मुनासिब आप से लेने जाते हम अपनी आंखों से
तेरे बीमारे उलफ़त का सताया गया है आँखों से
अगर भूले से हम को वह बुला लेता कभी ज़ालिम
कोई आता है पैरों से हम आते अपनी आंखों से

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल भैरवीं पश्तो

शमय को देख मेरे जी के जलाने वाले
आप ही को देख ओरे भरमाने वाले
जिस ने नुकीला की अपनी दौलत काम से
कभी भूल के नाम यह कुल मरने वाले
इक तीर गिन मैयत मेरी बार पनाह
रंज व ग़म फिर हो के नहीं यार जाने वाले

P. 984.

होली

पी० ९८४

तुम तोत करत बाराजोरी चलो क्यों नहीं खेलो होरी
बीच डगर मेरी बैयां पकड़ के छतियन हाथ डलोरी
मैं सेजो हूँ आऊं तबहूँ न बोले—होरी की होगई जोरी
मारे रङ्ग की भर पिचकारी मारी गैलन की अतिजोरी
नट खट तुम से हम खेलत री फटी गगरिया मोरी

दूसरी तरफ़ :—

माण्ड

सजन सकारे जायेंगे और नैन मरेंगे रोय
विधना ऐसी बात करे के भोर कबहू न होय

प्यारी सब यह तुम पर कुर्बान—तो पै कुर्बान
तन मन तुम पै बारा सारा—जियारा निस्तारा सारा—तो पै - - -
कागा नैन निकार के तू पिया पास ले जाय
ऐ ले दरस दिखा दे दीजो पिया के हाथ—प्यारी सब - - -
कागा सब कुछ खाइयो चुन चुन खइयो मास
दो नैनन ना खाइयो पिया मिलन की आस—प्यारी - - -

——:o:——

P. 985.

सारंग

पी० ९८५

हाय हाय नौकरी बुरी ऊई ऊई नौकरी बुरी
कभी कहें इधर को आ—कभी कहें पानी पिला
कभी कहें हाथ धुला—कभी कहें बाहर को जा
हाय हाय नौकरी बुरी - - - - - - - - - - -
अब तो दिलमें ठान लई पड़ें जाके अहदी कहीं
रक्खे जाय उंदलीब—मैंने जाके लन्दन लतीफ़
हाय हाय नौकरी बुरी - - - - - -
कभी कहें - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा—सारे - - -
उम्बल फूले हैं जिसकी यह गुलिस्तां हमारा—सारे - - -
आती रोज़ गङ्गा वह दिनमें याद तुझ को
उत्तरा तेरे किनारे वह कार बान हमारा—सारे - - - -
पर्बत वह सब से ऊंचा सब यहां तक वह
बन कर करे हमारा वह पासबां हमारा

इक़बाल कोई महरम अपना नहीं जहां में
है कौन छनने वाला तरसे नहा हमारा—सारे - - -

———:०:———

छम्मू साहब

P. 6308. मज़ाक़िया पी० ६३०८

ताक धिना धिना जान मेरी—ऐ वल्ला जान मेरी मुर्ग़िया प्यारी चोरी गई
ताक में बोलती नहीं है लाल पलङ्ग वह मांगे
अरी मेरी सेजों की सोने वाली, अरी मेरी अण्डों की देते वाली
अरी मेरी बच्चों की देने वाली—मुर्ग़िया प्यारी चोरी गई—ताक - - -
काला गण्डा परों में बांधा जब वह देवे अण्डा
अरी मेरी अण्डों की देने वाली—अरी मेरी बच्चोंकी देने वाली
अरी मेरी सेजोंकी सोने वाली—राजा मेरी सेजोंकी सोने वाली
मुर्ग़िया प्यारी चोरी गई—ताक - - -

दूसरी तरफ़ :— नई तर्ज़

मेरी फली फूली जवानी की बगियां
कोई माली यहां रंगे रतियां—मेरी फली - - -
कच्ची कच्ची उभरी अनार की कलियां
जैसे पट कीपा धरा हो कारवां—मेरी फली - - -
एक दिन पूछा भवोंने नचार से—हम दोनों में दे गये बार से
एक गला काटे तो एक दिल छीने—कहा मैंने दोनों बहाये लहू नदिया
मेरी फली - - - - -
एक दिन - - - मेरी - - -

——(०)——

भाई छेला

P. 5725. ग़ज़ल पी० ५७२५

आप की जुल्फ़ों को छू कर यह परेशानी हुई
मुझको वहशी देख कर ख़लक़त भी दीवानी हुई
इश्क़ दिलमें आग और आंखोमें आंसू बन गया
यह वोह आतिश है कि जब हदसे बड़ी पानी हुई
कौन कहता है कि हमसे कैसे सबक़त ले गया
ख़ाक भी उसने जो छानी थी वह थी छानी हुई
महरबां आये सरे बाजार बनके मुशतरी
आज कुछ क़ीमत तेरी ऐ यूसुफ़ सानी हुई

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

क्या शराब नाबने पारसती से पाया है अरूज
सर चढ़ी है हलक़ से ख़ंजर उतर जाने के बाद
दिलके ले लेनेमें पहिले क्या ख़ुशामद उन को थी
कैसी आंखे फेर लीं मतलब निकल जाने के बाद
उम्र भरमें दो घड़ी मुझ पर भी गुज़री है कठिन
आप के आने से पहिले आपके जाने के बाद

———

P. 5807. भीम पी० ५८०७

सीनेका जख़्म आह की सख़्ती से छिल गया
अच्छा हुआ मज़ा तो मोहब्बत का मिल गया

ऐसे सितम किये कि मेरा क़ल्ब हिल गया
और इस तरह से सीना का हर दाग़ छिल गया
देखा निगाहे नाज़ से उस बुतने उस तरफ़
फ़रयाद कर रहा है जिगर हाय दिल गया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मुसकराते जाते हैं कुछ मुंहसे फ़रमाने के बाद
बिजलियां चमका रहे हैं फूल बरसाने के बाद
सर्ख़रू होता है इनसान आफ़त आजाने के बाद
रंग लाती हैं हिना पत्थर पर घिस जाने के बाद
गुल चढ़ायेंगे लहद पर जिनसे यह उम्मीद थी
वो भी पत्थर रख गये सीने पै मर जाने के बाद

P. 5843. ग़ज़ल पी० ५८४३

आसमां ने हम पै जब वेदाद पर बेदाद की
आह ने नाला किया फ़रयाद ने फ़रयाद की
इस क़दर गर्मी है ख़ूने आशिक़ नाशाद की
मोमबत्ती बन के पिघलेगी छुरी ज़ल्लाद की
ख़ून के दर्या बह गये हैं आशिक़े नाशाद की
सुर्ख़ मछली बनके तैरेगी छुरी जल्लाद की
रखके गर्दन पर मेरी ख़ंजर अदा से यूं कहा
रूठ जाऊंगा अगर तूने ज़रा भी फ़रयाद की
चौंक उठा हूं समझ कर कुश्तये हाल सनम
बेड़िया किसने दिलादीं क़ैसर नाशाद की

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

महरबां हो जायेंगे दर्दे जिगर होने तो दो
ख़ुद चले आयेंगे नालों में असर होने तो दो
लाखों बिसमिल होयेंगे और सर कटेंगे सैकड़ों
उनकी महफ़िल में ज़रा तिरछी नज़र होने तो दो
ख़ाक उड़ाते आयेंगे मेरी लहद पर देखना
मेरे मरने की ख़बर उनको ज़रा होने तो दो
जानमन जानेकी तुमको इस क़दर जल्दी है क्या
रात बाक़ी है चले जाना सहरा होने तो दो

P. 6183. ग़ज़ल पी० ६१८३

लेके चुटकी में नमक आंखों में भर कर आंसु
इस पै मिचले हैं कि हम जख़्मे जिगर देखेंगे
यां तो अच्छे न हुए ज़ख़्म जिगर रस रस के
वां तो छिड़के गये चुटकी में नमक पस पस के
इनके मुजरिम भी बने मुजरिम उलफ़त भी बने
हमने इस इश्क़में इलज़ाम लिये कस कस के
इनके दरसे न दवा दर्द मोहब्बत की मिली
हमने तक़दीर को भी देख लिया घिस घिस के
दोहा—एक दिन मजनू को हमने भी कहीं देख लिया
सूख कर इश्क़ में लैला के हुवा था कांटा
क्या कहूं हाल बयां उसके तन लाग़िर का
दश्त ग़ुर्बत में वो रो रो के यहां कहता था
हमने तक़दीर का भी देख लिया घिस घिस के

दूसरी तरफ़ :— गज़ल

शबे फ़ुर्क़त में मेरे लबसे जो नाले निकले
देखने हाल मेरा आस्मां वाले निकले
तेग़ निकली है ज़बां निकली है भाले निकले
लो मेरे क़त्ल को क्या क्या नये आले निकले
गिला दिलबर पै नहीं दिल पै है जिगर पहलु में
दुशमन जान यह मेरे नाज़ के पाले निकले

——:-०-:——

P. 6242. गज़ल पी० ६२४२

तोहमत तुम्हारे इश्क़ की हम पर लगी हुई
या रब बुझेगी आग यह क्यों कर लगी हुई
लाओ तो क़त्ल नामा मेरा मैं भी देख लूं
किस किसकी मोहर है सरे महज़र लगी हुई
उलफ़त का जब मज़ा है के हो वह भी बेक़रार
दोनों तरफ़ हो आग बराबर लगी हुई
क़ासिद अगर वो पूछें तो कह दीजो यह हाल
लब पर तो दम है आंख है दर पर लगी हुई

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

यास का आलम न था यूं बेकसी छाई न थी
सौ बलायें थीं शबे ग़म एक तिनहाई न थी
याद हैं वो दिन भी तुम को जब हुस्न में शोख़ी न थी
आंख में जादू न था लब पर मसीहाई न थी

दर्द से वाक़िफ़ न थे ग़म से शनासाई न थी
हाय वो दिन थे तबियत जब कहीं आई न थी
बेक़रारी क्यों न हो ताज़ा शिकार ईश्क़ हों
चोट वो खाई है दिल पर जो कभी खाई न थी

——:-०-:——

P. 6309. ग़ज़ल पी० ६३०९

आपकी नज़रें इनायत मुझ पै गर हो जायेगी
ज़िंदगी आराम से अपनी बसर हो जायेगी
देख कहना मान मेरा तू न छू इस जुल्फ़ को
वो बिगड़ बैठेगी ऐ दिल तेरी शामत आजायेगी
बाल क्यों खोले हैं तूने ऐ मेरे नाज़ुक बदन
बार गेसूसे तेरी दूहरी कमर हो जायेगी
हम गुनहगारों का बेड़ा पार ही हो जायेगा
हशर के दिन जोश पर जब तेरी रहमत आयेगी

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मज़ेके दिन हैं मुरादों पर वह हैं आये हुवे
उड़ाये फिरता है जोबन परी बनाये हुवे
जो मेरे पास भी बैठे तो कसमसाये हुए
बदन चुराये हुए और कुछ छुपाये हुए
निगाहे नाज़ से बेसाख्ता न देखा कर
उन्हीं अदाओं के ज़ालिम हैं हम सताये हुए
किसी का हाय यह रातों को छिप के यूं आना
चढ़े चढ़ाये हुए पा नीचे उठाये हुए

P. 6325. शब्द पी० ६३२५

मुझे अपना जलवा दिखा कलग़ी वाले
मेरी जान तुझ पर फ़िदा कलग़ी वाले
सदा आके ज़ालिम सताते हैं हमको
तू इनसे अब आके बचा कलग़ी वाले
बिला तेरे कोई नहीं आसरा है
मेरे हाल पर तरस खा कलग़ी वाले
मेहर करके बलबीर के बख्श असेसां
यही तुझसे है इलतजा कलग़ी वाले

दूसरी तरफ़ :— शब्द

जोत को एक जोत से सत गुरु ने पैदा कर दिया
अङ्ग से अपने लगा लहने को अङ्गद कर दिया
दर पै आ सतगुरु के जिसने एक दफ़ा सजदा किया
प्रेम के इक तीर से सीनेको बिसमिल कर दिया
लेहना जी आये थे जिस दिन प्रेम के बाज़ार में
प्रेम के बदले में अपना दिल जिगर सब धर दिया

P 6352. ग़ज़ल पी० ६३५२

दिल लेते ही मिज़ाज तुम्हारा बिगड़ गया
अब क्या ग़रज़ किसी से जो मतलब निकल गया
तस्वीर यार आंख की पुतली में खिच गई
क़द उसका गोया नूर के सांचे में ढल गया
दिल को बिगाड़ ही बिगड़ता है आदमी

जिस ने उसे सिभाल लिया वह सिंभल गया
होता नहीं शरीक बुरे वक्त. में कोई
हमसे तो दर्द इश्क़ भी आंखें बदल गई

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिन की आहें न गईं रात के नाले न गये
मेरे ग़मख्वार मेरे चाहने वाले न गये
तज़करा सूज़ मोहब्बत का किया था इक बार
तादमे मर्ग ज़बां से मेरे छाले न गये
दिल जलाने पै फ़लक तुझ को बहुत ग़ुर्रा है
क्या कहूँ और कुछ ऊंचे मेरे नाले न गये
तोरसे छेद के दिल उस बुते काफ़िर ने कहा
फिर न कहना मेरे अरमान निकाले न गये

P. 6371. ग़ज़ल पी० ६३७१

फ़ना के बाद भी उलफ़त जिताई जाती है
सरे मज़ार क़यामत मचाई जाती है
तुफ़ंग व तेग़ व तीर और सपर के टुकड़ों से
शहीद नाज़ की तुर्बत सजाई जाती है
ख़ुदा करे तेरी तस्वीर हो नकीर के पास
सुना है क़ब्र में सूरत दिखाई जाती है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

जब नैन पिया सङ्ग अटके थे—मोरे ख़ार जिगर में खटके थे
सब हमसे रहे तब हटके थे—कोई पास न आकर फटके थे

इस इश्क़ का राज़ न कहना ऐ दिल—जिसने भी कहा बदनाम हुआ
किसीने देदी है जान अपनी—कोई दारके ऊपर लटके थ
इस इश्क़ के फंदे में हम भी फंसे—पर ख़ूब हुए थे ख़्वार व तबर
जुल्फ़ों में सनम ने बांध के दिलको—ख़ूब दइयेफिर झटके थे
क्या इश्क़ में हम उस्ताद हुए—जितने थे सबक़ सब याद हुए
गोक़ीस हुए फ़रहाद हुए—कुछ हम भी न उन से घटके थे

———:-०-:———

P. 6511. मज़ाक़िया पी० ६५११

मत कोई करियो दू जनिया—करी धरी को क्या भरोसो
बड़ो भरोसो बियाही का जूता है नादरशाही का
भले डंडी ल्यावे व्याही को - सुरमा ल्यावे ब्याही को - काजल
ल्यावे ब्याहीको
लड़ें मरेंगी दुजानियां - ख़राब करेंगी दू जनियां
चढ़ कोठे ते हेल्यामारो - सुनो रे मोरे भाई भतीजे - सुनो रे नगर के लोगो
कोई मत करियो दू जनयां लड़ें मरेंगी दू जनीयां
दोनो सोतन चक्की पीसें - दाने सारे चाब लिये - हत्था उसका फोड़ दिया
दोनो सोतन सोने जात हैं - गुदड़े सारे फाड़ दिये
दाढ़ी मियां की चूंट दई - आधी आधी के छतड़ियां

दूसरी तरफ़ :— पनहारी

कुएं की पन हार पानी पिया देना
री मैं दूर से चलकर आया - री कुएं पर डेरा डाला
पियासे की डोल गई काया - री कुएं की पनहार पानी पिया देना
अरे तोहे मैं नोर कैसे पियाऊं रे - लोट लाग रही भाटी

तोरे दांते किरकिले हो जायेंगे - तोरी तबियत हो जायेगी खाटी
मोंहे थोड़ा सा नीर पिला दे री - घोल पिला दे गारा
अरी मख़मल का कुरती सिलाय दूंगा - घोटे का सिंवाय दूं नाड़ा

—:०:—

P. 6597. ग़ज़ल पी० ६५९७

कभी जो भूले से वह ग़रीब ख़ाने पर आये बन ठन
मैं सदक़े जाऊं बलायें लेलूं करूं मैं क़ुर्बान जान तन मन
फिराक़ जानां ने है सताया - कलेजा अपना है मुंहको आया
हमारे दिल की निकलती हवस - तमन्ना आतिश के शोले बनबन
यह सदमा है अपने दिल पै भारी - किया रक़ाबत में जिगर पारा
ख़ुदा दिखाये कभी तो वह दिन - के हों रक़ीबों से उन की अन बन
कभी जो भूले - - - - - - - -

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल

गुलन कर मुर्ग़ क़फ़स सोता है सैयाद अभी
कोई सुनने का नहीं नाला व फ़र्याद अभी
लुत्फ़ पर वाज़ गुलिस्तां है मुझे याद अभी
दिल क़फ़स में मेरा लगता नहीं सैयाद अभी
दिल में रह जाये तड़पने की न हसरत बाक़ी
तहे दाम और फड़क लेने दे सैयाद अभी

————०————

P. 6679. ग़ज़ल पी० ६६७९

मैं ने उस जल्लाद की बेदाद पर बेदाद की
आह पर उस ने मेरी फ़र्यादि पर बेदाद की

ज़ुल्फ़ लैला और लब शीरीं का दीवाना हूं में
मेरे ही दम से है शोहरत क़ैस और फ़रहादकी
हो गया पानी पिंघल कर उस बुत काफ़िरका दिल
मेरे अश्कों की रवानी जबकि उस ने याद की
हम शहीदाने बफ़ा के खूं का दर्या जब वहा
छर्ब मछली बनके तेरेगी छुरी जल्लाद की

दूसरी तरफ़ :— गज़ल

हूं तो दीवाना मगर खाली नहीं तदबीर से
में न बांधा है जनूं को हलक़ये ज़ंजीर से
मुज रिमाने इश्क़ को क्या ख़ौफ़ है तक़दीर से
बचके क्यों चलता है ख़ाके आशिक़ दलगीर से
आदमी अकसीर बनता है इसी अकसीर से
हूं तो दीवाना मगर ख़ाली नहीं तदबीर से

———o———

P. 6957. देस पी० ६९५७

यह दुआ है आतेश इश्क़ में कि मेरी तरह तू जला करे
न नसीब हो तुझे बैठना तेरे दिल में दर्द उठा करे
खुले बाल हों और चश्म तर - कभी लब पै नालां हो नूहे गर
के मेरी तलाश में दरबदर तू पकड़के दिल को फिरा करे
तू भी चोट खाये जो बे वफ़ा - आये दिल दुखाने का फिर मज़ा
करे दर्द से आहो ज़ारियां - मुझे बेवफ़ा तू कहा करे
इक प्यारी को था दिल दिया - उस का नतीजा मिल गया
माशूक़ हैं सब बेवफ़ा - बलबीर सब को कहा करे

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

हटो काहे को झूठो बनाओ बतियां - वहीं जाओ जहां रहे सारी रतियां
दोहा—सदा फिराक़ में हाले ख़राब रहता हूं - मिसाले अश्क़ में तूफ़ान ग़म में बहता हूं
जफ़ा व ज़ोर के सदमें हज़ारों सहता हूं - हमेशा याद में उन की यही मैं कहता हूं—हटो काहे को - - -
तुम अपना राज़ भला मुझ से क्यों छिपाते हो
ख़बर है मुझ को जहां रोज़ छिप के जाते हो
मैं सदक़े जाऊं मुझे क्यों नहीं बताते हो
मज़े जो ग़ैरों से मिल कर वहां उड़ाते हो
वहीं जाओ जहां रहे सारी रतियां—काहे - - - - - -
यह अब्स कहते हो मौक़ा नथा और घात नथी
आने को क्या सकतेन थे आने को क्या रात नथी—हटो काहे

———o———

P. 6981. सोहनी पी० ६९८१

अगर चे बन्दा नवाज़ी की तुझ में ख़ू हो जाये
तो क़सम ख़ुदा की ख़ुदाई में एक तू हो जाये
मुझे तो डर नहीं बदनामियों का उलफ़त में
ख़याल यह है के रसवा न यार तू होजाये
अगरचे पर्दा दरी का ख़याल है तुझको
तो पर्दे पर्दे में एक रोज़ गुफ़्त गू हो जाये

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ो

हूर में मस्ती कहां जो तेरे मस्ताने में है
मय वह जिन्नत में कहां जो तेरे मैख़ाने में है
न ख़ुदा काबे में देखा है न बुत ख़ाने में है
शेख़जी रिन्दों से पूछो दिलके काशाने में है
मना करदो वो यहां आयें कभी फिर डर न जायें
उम्र कमसिन उनकी है यां क़ब्र वैराने में है

P. 7014. ज़िला पी० ७०१४

अल्लारे मेरे दिल की तड़प अज़तराब में
घबराके करवटें लगे लेने वो ख़ुवाब में
ऐ बरक़ तू ज़रा कुछ तड़पी ठहर गई
यां उमर कट गई है इसी इन्तज़ार में
आई क़यामत उसने लगाया है मुंहसे जाम
है इतसाल माहमें और आफ़ताब में—अल्लाह रे - - -
मिलने का वायदा मुंह से तो उनके निकल गया
पूछी जगह जो मैंने कहा हंस के ख़ुवाव में—अल्लाह - - -

दूसरी तरफ़ :— मालकूस

मुर्दे जी उठे हज़ारों क्या ख़ुरामे नाज़ है
यार की पाज़ेब में भी तौर की आवाज़ है
ख़ुद खिंचे आते हैं जज़्बे आहसे लाखों हसीं
यह हमारे इश्क़ की तासीर का आग़ाज़ है

वस्ल की शब हाय यह कहना किसी का नाज़ से
कल सही मेरी तबियत आज कुछ नासाज़ है

—:o:—

P. 7035 पीलू पहिला भाग पी० ७०३५

शर—इन्तज़ारी ने तेरी ख़ूब दिखाया लहरा
सुबहसे शाम हुई शामसे पिछला पहरा
मेरे ख़ुवाजे अजब हैरान हूं मैं - लाचार हूं बे सामान हूं मैं
ग़ौर तो कीजिये कहां मैं और कहां बामे मुराद
अपने मैख़ाने से भर दीजिये मेरा जामे मुराद
परदेसी हूं और महमान हूं मैं - - - - - - - -
बदे सबा बेदम गुलशन हैं जाबजा
कुछ घास सा ग़रीबों की तुर्बत पे है उगा
आशिक़ तो सो गये मगर इश्क़ जागता रहा
घुट घुट के कह रहा हूं सबासे के ऐ सबा
परदेसी हूं और मटमान हूं मैं - - - - - - - - - -
क्या सताना और बाक़ी है दिले बीमारको
घरको छोड़ा आशना छोड़ा है छोड़ा यारको
आख़िर तो फ़लक इनसां हूं मैं - मेरे ख़ुवाजा अजब हैरान हूं मै

दूसरी तरफ़ :— पीलू दूसरा भाग

मेरे ख़ुवाजा अजब हैरान हूं मैं - लाचार हूं बेसामान हूं मैं
सदा फ़िराक़ में हाले ख़राब रहता हूं - जफ़ा व जोरके सदमे हज़ार सहता हूं
हमशा यादमें उसको यही मैं कहता हूं - मेरे ख़ुवाजा अजब हैरान हूं मैं
अर्ज़ जाके हाल दिल ख़ुवाजा से करने दे मुझे - सरजो है सौदा भरा
क़दमों पे धरने दे मुझे

पामाल सितम दरबान हूँ मैं - - - - - - - - -
तेरे रोज़ेकी जो आज ज़यारत होगई-शुक्र है अल्लाहका आसां मुसीबत हो गई
तेरे दर का गदा इनसान हूँ मै - मेरे ख़्वाजा अजब हैरान हूँ मैं

P. 7099. कालंड़ा पी० ७०९९

पहले तो माहे जबीं शर्तें वफ़ा करते हैं
लेके दिल परदा से फिर जोर जफ़ा करते हैं
हम तो उस शोख़ पै जानो दिल सेफ़िदा करते हैं
वह सितम हम पै सुबह व शाम किया करते हैं
कैसे होते हैं यह ज़ल्लाद नहीं डरते ज़रा
ख़ून आशिक़ का लगा रंगे हिना करते हैं
ख़ुर्द साली में तो इक़रार वफ़ा करते हैं
पहिले तो माहे जबीं शर्त वफ़ा - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

यह न पूछो कि शबे हिज्रमें क्या क्या देखा
मुहं को आये हुए सौ बार कलेजा देखा
बुज़्म में शोख़ी तो ख़िलवत में हया करते हैं
इन हसीनों का भी अदांज़ निराला देखा
(माशूक़ ऐसे ही बेवफ़ा होते हैं)
दिल गया जान गई आबरू रेज़ो भी हुई
ऐ शह हुस्न तेरे इश्क़ में क्या क्या देखा
हम मरे आप पर और आप मरे ग़ैरों पर
आप का तर्ज़ मोहब्बत भी निराला देखा आपका तर्ज़ - - -

P. 7212. ग़ज़ल पहाड़ी पी० ७२१२

बरहम ही रहा ज़ालिम कर देखे जतन सारे
कितना कोई समझाये कितना कोई सर मारे
इतना ही कहा था के आशिक हूँ तेरा प्यारे
आमादा बक़त्ल मन आं शोख़ सितम गारे
ईं तरफ़ा तमाशाबीं नाकरदा गुन हमारे
गो लाख तबीबों ने नुसख़े पै लिखा नुसख़ा
लेकिन मरीज़ फ़ुर्क़त बढ़ता रहा है दूना
ऐ ईसा बीमांरम दरहिज्र तू रंजूरम्
शायद न ख़बरदारी अज़ हालते बीमारे
मुझ को न रूला क़ासिद और ख़ुद भी न रोक़ासिद
सदक़े तेरे क़दमों का यं वक्त नखो क़ासिद
कह देना यही जाकर
गर नामो निशान मन परसन्द बगू क़ासिद
आवारा मजनूं ने रसवा सरे बाज़ारे

दूसरी तरफ़ :— कालंगड़ा

आहिस्ता बर्ग गुल ब फ़शां बर मज़ार मा
पस नाज़ुक अस्त शीशायों दिल बरकनार मा
दोहा—एक दिन जो सोये गोर ग़रीबां हुआ गुज़र
कुछ देर टूटी क़बरों की आई मुझे नज़र
चादर चढ़ाई अश्कों की मैं ने बचश्म तर
आई सदा किसी की किए मेरे नूहे गर—आहिस्ता बर्ग - - -
देखा तो एक तहीद वफ़ा की वह क़बथी

मिस्ल अरूस इत्र हिना में बसी हुई
सर पीटते थे हसरत व अरमां व बेकसी
आई थी बारबार वहां से सदा यही

—:०:—

P. 7236. पीलू प्रथम भाग पी० ७२३६

इन को सूझी है ज़ुल्फ़ें बनायेंगे हम
और बन ठन के सैर को जायेंगे हम
ज़ुल्फ़ लटकाये हुए मेरा यार तरहदार चला
शोर हर सू में हुआ मार चला मार चला
और बन ठनके सैर को जायेंगे हम
या इलाही ख़ैर हो क़ातिल के दिलमे और है
कुंद ख़ंजर हो गया बिसमिल के दिलमें और है
हल्क़ ग़ैरों के हाथ कटायेंगे हम
ओ सितमगर जां निसारों से दग़ा अच्छी नहीं
बेवफ़ाई हम से ग़ैरों से वफ़ा अच्छी नहीं
ऐसे सदमे कहां तक उठायेंगे हम

दूसरी तरफ़ :— पीलू दूसरा भाग

इन को सूझी है ज़ुल्फ़ें बनायेंगे हम
और बन ठन के सैरको जायेंगे हम
ज़िंदगी से दूर है और मौत से हम हैं क़रीब
आरिज़ गुलगों के लें बोसे तेरे ज़ालिम रक़ीब
अब तो औरों से दिल कोन लगाया करों
काम क्या है हमको मै ख़ानेके दौर से
जिसके शैदा हैं उसींके हैं गर्ज़ क्या और से

दरपै उसी के धूनी रमायेंगे हम
पूछा किसने मारा जब हालत मेरी देखी ज़बूं
साफ़ मैं ने कह दिया सरकार तो बोले कियूं
तोबा अब से न तुझको सतायेंगे हम

—:०:—

P. 7392. ग़ज़ल पी० ७३९२

कह रही है हश्र में वह आंख शर्माई हुई
अरे हाय कैसी इस भरी महफ़िल में रुसवाई हुई
ठोकरें खिलवायेगी यह चाल अठलाई हुई
क्या जवानी फिरती है जोबन पै इतराई हुई
वस्ल में अग़यार से ख़ाली हुई महफ़िल तो क्या
शर्म भी जांय तो मैं जानूं कितिनहाई हुई
गर्द उड़ी आशिक़ की तुर्बत से तो झुंझला कर कहा
वाह सर चढ़ने लगी पांव की ठूकराई हुई

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

याद आऊंगा तुम्हें मिट्टी में मिल जाने के बाद
होगी हसरत और भी यह दम निकल जाने के बाद
क़त्ल करना सोचकर पहले मुझे रश्के क़मर
वरन पछता ओगे जाना वार चल जाने के बाद
आके तुर्बत पर मेरी करना न तुम आहो फ़ुग़ां
हो नहीं सक्ता है कुछ भी वार चल जाने के बाद
ता न निकले हसरते दिल इश्क़ के बीमार की
मेरे घर में आये भी तो दम निकल जानेके बाद
याद आऊंगा तुम्हे मिट्टी में मिल जाने के बाद

—:०:—

P. 7440. पहाड़ी पी० ७४४०

ज़रूरत क्या उन्हें तेग़ोतीरकी - अदा काफ़ी है इक तिरछी नज़र की
वह क्या जाने किसे कहते हैं उल्फ़त - ख़बर क्या है उन्हें दर्दे जिगर की
तुम्हे मालूम है तुझ पर सितमगर - शबेग़म किस तरह हम ने बसर की
अरे चले जाते हो मुड़ कर देख जाओ - कस्म है आपको तिरछी नज़र की
ज़रूरत क्या उन्हे तेग़ो तीर की।

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

ख़ाक अरमानों पे डाली जायेगी - यूं मेरी हसरत निकाली जायेगी
अरे हो गुल रूख़सार चुननेके लिये - चश्मे आशिक़ बन के मारी जायेगी
अरे लाश ठुकराके वह यूं कहने लगे - अरे इसमें क्या अब जान डाली जायेगी
कुछ न ले जायेगा कोई अपने साथ - सारी दुनिया हाथ ख़ाली जायेगी

—:०:—

P. 7472. ग़ज़ल पी० ७४७२

नहीं हैं नामसे वाक़िफ़ वफ़ाके - हसीं जितने हैं उतने दग़ा के
सवाले वस्ल पर गर्दन झुकाली - ज़रा कह दीजिये हां मुसकुराके
अरे नई इक बात देखी फ़ितनागर में - वह ले लेता है दिल आंखें मिलाके
न की कुछ क़दर तुमने ओ सितमगर - दियाथा दिल बहुत समझा बुझा के

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हां हां लगा वह तीर मेरा दिल यही तो है - अरे हां हां लगाओ
अरे कुछ और फ़ायदा न सही दिल लगी तो है -
मरते तो हैं तुम्ही पे तुम्हें क्यों है नागवार
अपनी पसन्द अपनी नज़र अपना जी तो है - - -

आंख अपनी उसने देख कर आइने में कहा
बीमार सब बताते हैं अच्छी भली तो है - अरे हां - - -
क्या अपना हक़ अजल के लिये वक़्फ़ कर दिया - रे हां—
बाले से क्यों तुम उठके चले जान अभो तो है - अरे हां - - -

—:०:—

P. 7595. ग़ज़ल प्रथम भाग पी० ७५९५

अरे यार दर ख़ानाये मागर्द जहां मों गरदम्
हां रे आबदर कूज़ाये मातशना लबां मी गरदम्—यार - -
जब कि आदम में हुआ जलवा नशीं नूरके दम्
दम कशाकश मे हैं मां बहन वजो दावर अदमे
जबकि दम को हुआ ज़ाहिर कि यहो है हरदम
मुज़ तरिब होके लगा पढ़ने यह मज़मूं हरदम—यार - - -
ज़र्रे ख़ुर्शीद की ख़ुवाहिश में उड़ते फिरते हैं
ज़न ख़ाने से जिस बक्त. शुआ पाते हैं
ख़ुद चमकते हैं ज़बान पर यह सुखन लाते हैं—यार - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल दूसरा भाग

ओरे यार पर ख़ानाये मागर्द जहां मों गरदम
आबे दर कूज़ा मातशना लबां मी गरदम
ओ रे शमय फ़ानूस के पर्दे में है देखो आख़िर
एक सा जलवा दिखाती है वह अन्दर बाहर
जब कि पर्वाना हुआ राज़ से इस के माहिर
बेक़रारी से लगा कहने कि देखो आख़िर—यार - - -
माहये तशना जो दर्या में फिरे है मुज़तर

ढूंढती पानी को ख़ुद पानी के वह है अन्दर
बूंद लेती है वह जब पानी के ऊपर आकर
अरे डूब जाती है इसी ग़म में यह फ़िक़रा पढ़कर—यार - - -
आबे दर कूज़ा मातशने लबां मी गरदम
यार दर ख़ानाये मागर्द जहां मो गरदम

——:-०-:——

P. 7666. **दरबारी** पी० ७६६६

अपने आशिक़ का ज़रा ख़ूने जिगर होने तो दो - - हां ज़रा - - -
ख़ंजर अबरू लहू से तर बतर होने तो दो - अपने - - -
कौन कहता है कि वह मुर्दा जिला सकते नहीं
इक शहीदे नाज़ पर तिरछी नज़र होने तो दो
दिल दुखाने का मज़ा तुझ को चखाऊं तो सही
दावर महशरके आगे चश्म तर होने तो दो
कमसिनी में इस क़दर शौख़ी तुम्हें भाती नहीं
हां ज़रा अपनी जवानी बा असर होने तो दो - दां - - -

दूसरी तरफ़ :— **पहाड़ी**

ज़ब्त कर बहरे ख़ुदा शिकवा बेदाद न कर
ऐ दिले कुशतये ग़म नालाये व फ़रयाद न कर
बेकसी ही दिल वैरां को बसाने आये
शादमानी तो यह कहती है मुझे याद न कर
साथ गदुंम के न पिस जाये कहीं घुन की तरह
आस्मां वक़्त बुरा है मेरी इमदाद न कर

——०——

P. 7715. **ग़ज़ल** पी० ७७१५

उम्र सब मुफ़्त में खोया किये नादान रहे
आइने रूख़ को तेरे देख के हैरां रहे
अरे यूं तो देखे की होती है मोहब्बत सबको
जब मैं जानू कि मरे बाद मेरा ध्यान रहे
बाद मरने के मेरी क़ब्र पै बेला बोता
नागनी ज़ुल्फ़ का मारा हूं यह पहचान रहे
अश्क बारी जो करे दीदये गीरां मेरे
सकड़ों कोस तलक सब्ज़ बयाबां रहे - उम्र सब - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

काफ़ी है मेरे क़त्ल को शमशीर नज़र की
हाजित नहीं तुम को किसी तेग़ो तबर की—अरे हां तेग - - -
वह आये शबे वायदा तो किस काम के आये
तकरार ही तकरार में ज़ालिम ने सहर की - अरे हां तेग़ - - -
अरे हां हो वस्ल मयस्सर मुझे तो मैं ही बता दूं
गर तुम को दवा याद न हो दर्दे जिगर की
अग़ियार उड़ाते हैं मज़े बज़्म में तेरी
भूले से कभी बात न पूछी आने जिगर की—अरे हां - - -

———

P. 7854. **पहाड़ी** पी० ७८५४

ओरे—न दिल को आज कल पहलू में पाता हूं न जानां को
बताओ हम नशीनो दर्द को ढूंढ़ के दरमां को
होरे—दिया था दिल समझ कर और कुछ इस दुशमन जाय को—अरे हां - -

मिलाया ख़ाक में मुझ को मिटाया मेरे अरमां को
होरे—अभी की इश्क़ से तोबा अभी हम बन गये मजनूं
कभी सिलवाया दामन को कभी फाड़ा गरेबां को
तुम्हे सजदा करें ये सामने दो गवाहों के
बुला कर दहर से हिन्दू को काबे से मुसलमां को
न दिल को आज कल पहलू में पाता हूँ न जाना को

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

ऐ बला सोच जो ज़ुल्फ़ में फंस जाते हैं
ता क़यामत वह पड़े पेच में बल खाते हैं
अरे किस शमय रू की शकल का पर्वाना बन गया—हां - -
ए दिल तू किस की याद में दीवाना बन गया - - -
अव्वल तो छीना दिल मेरा पहलू में बैठकर - - -
हम उसके जब हुए तो वह बेगाना बन गया
ऐ हालत को मेरी देख के रोते हैं सब परन्द
जब से हमारा दश्त में आशयाना बन गया
अरे हज हरम को चल दिये लीजिये वो माह लक़ा
काबा ख़ुदा की शान है बुत ख़ाना बन गया

P. 8031. ग़ज़ल पी० ८०३१

अरे दिखाके शोख़ये रफ़्तार दिल मसल के चले—अरे हां रे दिल - -
ज़रा सुनो तो कहां तेवरियां बदल के चले—अरे तेवरियां - - -
यह किस के दस्त हनाई की चोट है दिल पर
कि चारागिर मेरे बालें से हाथ मलके चले

बढ़ा कुछ और हंगाम मेरी तुर्बत पर
क़यामत आई जो पर्दे से तुम निकलकर चले
अरे बिठा लिया हमें कांटो से तुम थामके दामन
कभी जो दश्त से बस्ती को हम निकलके चले

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

करता हूँ तेरी सुमरन पढ़ता हूँ तेरा कलमा
ऐ हुस्न के परमेश्वर हम पर भी दया करना
टपक पड़ते हैं आंसू जब उन्हें हम याद करते हैं
हमें तर्क मुहब्बत पर भी अब इतनी मोहब्बत हैं
बुत को बिठाके सामने याद ख़ुदा करूं
इसका करूं तुआफ़ और हज को अदा करूं
तैयार थे नमाज़ को हम सुन के ज़िक्र हुर
जलवा बुतों का देख कर नीयत बदल गई—बुत को - - -
पर्वाना शमय पर नहीं गर लुत्फ़ जल मरे
जब तक जिऊं मैं इश्क़ मे तेरे जला करू
काबा तो ख़ाली यारसे फिर हजको जाये कौन
अरे दिल ही ख़ुदा का घर हैं इसीमें रहा करूं

P. 8158. नात पी० ८१५८

जुदाई मोहम्मद की तड़पा रही है।
अरे घटा काली ग़म की दिल पे छा रही है ॥
मोहम्मद की सुन सुन के आमद चमन में।
नसी मे सहर आज इतरा रही है ॥

घटा देखकर सखरे दीं के गेसू।
घुटी जाती है और शरमा रही है॥
पिला साक़िया जामे इश्क़े मोहम्मद।
कि आज आसमां पर घठा छा रही है॥

दूसरी तरफ़ :— नात

जब इश्क़े मोहम्मद ने सीने में बिना डाली।
तसवीरे सियहकारो रहमत से मिठा डाली॥
रहमत कि नज़र मुझ आसी पे है जब डाली।
बिगड़ी हुई मैहशर में हर बात बना डाली॥
था मिस्र की गलियों में यूसूफ़ का बहुत चरचा॥
पर हुस्ने मोहम्मह ने एक धूम मचा डाली॥
अल्लाह हुवा आशिक़ जिबरील बने क़ासिद।
जो बात न देखी थी दुनिया को देखा डाली॥
जब इश्क़े मोहम्मद ने- - - - - - - -

P. 8159. ग़ज़ल पी० ८१५६

हां तड़पते लोटते हैं नाला वो फ़रयाद करते हैं।
हम अपने ढ़ूंडनेवालों को फिर भी याद करते हैं॥
न पूछो कौन है क्यों नाला वा फ़रयाद करते हैं।
अरे बुतों के हम सताये हैं ख़ुदा की याद करते हैं॥
जो तेरो बेवफ़ाई हम न भूले हैं न भूलेंगे।
दिया है जो सबक़ तुमने वह अब तक याद करते हैं॥

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

अरे नादां थे वह शबाब ने हुशियार कर दिया
फ़ितने को ख़ाबे नाज़ से बेदार कर दिया
नरगिस को भी फ़िराक़ ने अरे रोना इलाही कर दिया
आंखों के इनतिज़ार ने बीमार कर दिया
तलवार हो कि तीर हो ख़न्जर हो या सिनां
सब को तेरी निगाह ने बेक़ार कर दिया
बस मानिन्द कूचये क़ातिल की थी ख़न्जर
बिसमिल ने जोट लौट के गुमराह कर दिया।

P. 8282. ग़ज़ल पी० ८२८२

जब से जानां तुझको देखा बस तेरा दोवाना था
शमअ तो क्या शमय के परवाने का परवाना था
पी गये लाखों हज़ारों जाम वहदत मुझको क्या
मैं निगाहे नाज़ पर तेरी फ़क़त मसताना था
एक तरफ़ थी शमअ जलती एक तरफ़ परवाना सोज़
शमअ थी परवाना या परवाना ही परवाना था
दी गई मन्सूर को सूली अदब के तर्क पर
था अनलहक़ हक़ मगर एक लफ़ज़ गुसताख़ाना था
अरे जब से जाना - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हाथ निकले अपने दोनों काम के
दिल को थामा उनका दामन थामके

घूंट पीकर बादये गुलफ़ाम के
बोसे ले लेता हूं ख़ाली जाम के
इस नज़ाकत का बुरा हो बज़्म में
उठते हैं वोह हस्ते दुशमन थाम के
है गदाये मैकदा भी क्या हरीस
भरलिये झोली में टुकड़े जाम के

P. 8520.

ग़ज़ल

पी० ८५२०

अजब तरह का ये आदत है परस्तानों में।
हां रे परस्तानों में - - - - -
अपने शैदा को समझते हैं वोह बेगानों में॥
बोसे हम ख़ूब लिया करते हैं रुख़े जानां के।
बन के बालो जो लटक जाते कभी कानों में॥
ग़ैर मुमकिन है कि जन्नत में हो लुत्फ़ ऐसा नसीब।
जो मज़ा मिलता है मैख़ारों को मैख़ाने में॥
गर भला चाहता है इश्क़े बुतां छोड़ हसन।
अरे मिलना दुशवार है अल्लाह का बुतख़ाने में॥

दूसरी तरफ़ :—

ग़ज़ल

वोह जाम पिला मुझको ऐ साक़िये मैख़ाना
जिस पर में नज़र डालूं होजाय वोह मसताना
इस शोक़ से पिलवादे पिलवादे तू ऐ साक़ी
अरे जलवे नज़र आ जायें पीकर तेरा पैमाना
अन्दाज़ में लैला के और हुस्न में शीरीं के

जो नूर झलकता था उसका हूं मैं दीवाना
मेहशर में उठेंगे यूं साक़ी तेरे मसताने
एक हाथ में बोतल हो एक हाथ में पैमाना
वोह जाम पिला - - - - - - -

P. 8580.

ग़ज़ल

पी० ८८८०

अदा बांकी तिरछी दिखाये चला जा
मुझे अपना शैदा बनाये चला जा—अदा बांकी तिरछी - - - -
पिला वोह नशा जिसमें बस तूही तू हो
मेरी मैं को मैं से मिटाये चला जा
अरे बुला लेंगे दिल की कशिश से तुझे हम
चला जा चला मुंह छुपाये चला जा
रहे ख़याल दुनिया न कुछ होश दीं की
मेरे दिल से दोनों भुलाये चला जा—अदा बांकी तिरछी - - -

दूसरी तरफ़ :—

ग़ज़ल

तीरे निगाहे नाज़ किसी ख़ुश जमाल के
पेहलू से लेगये जिगरो दिल निकाल के
फ़ितने भी पायमाल हों ठोकर से राह में
मेहशर भी ले क़दम तेरी मसताना चाल के
कुछ पी गये हैं आज मुक़तररर जनाब शैख़
हू हक़ जो कर रहे हैं अमामा उछाल के
दो घूंट क्या पिलाये कि मदहोश कर दिया
क़ायल हैं हमतो तीरे निगह के कमाल के

—:o:—

P. 8636.

ग़ज़ल

पी० ८६३६

करगया मुझको वोह ज़ालिम दमे रुख़सत बरबाद
अब रहूंगा मैं यूंही ता ब क़यामत बरबाद
अपने मरने का हमें ग़म नहीं लेकिन ऐ जान
हम न होवेंगे तो येह होजायगी मोहबत बरबाद
साथ ग़ैरोंके न जाया करो कहना मानो
कूचा गरदी से हुवा करती है इज़्ज़त बरबाद
करगया मुझको - - - - - -

दूसरी तरफ़ :—

ग़ज़ल

सितम सहेंगे जफ़ा सहेंगे हज़ार ज़िल्लत उठायेंगे हम
सर अपना दे देंगे तेरे दरपर लेकिन यहां से न जायेंगे हम
येह चारागर तुझसे आरज़ू है लगा न ज़ख़्मों प मेरे मरहम
कभी जो सफ़्फ़ाक बीह मिलेगा तो ज़ख़्म अपने दिखायेंगे हम
है रात बरसात की येह साक़ी लगा दे मुंह से जो कुछ है बाक़ी
ख़बर है क्या वक़्त फिर नशे का ये पायेंगे या न पायेंगे हम
सितम सहेंगे - - - - -

8693.

ग़ज़ल

पी० ८६९३

बाहें गले में उन के शबो वस्ल डालके
लूटा किया मज़े से मज़े में विसाल के
हम निकले रात कूचे से उस ख़ुश जमाल के
हाथों से दिल पकड़ के कलेजा संभाल के

नाज़ुक कलाई तेरी ऐ जान दुख न जाय
आशिक़ के दिल प तेग़ लगाना संभाल के

दूसरी तरफ़ :—

ग़ज़ल

वस्ल होजाय यहीं हथ में क्या रक्खा है
आज की बात को क्यों कल प उठा रक्खा है
मोहतसिब पूछ न यह शीशे में क्या रक्खा है
पारसाई का लहू इसमें भरा रक्खा है
कुछ ख़बर उनको नहीं मरते हैं हम जिस बुत पर
फिर इलाही हमें क्यों तूने जिला रक्खा है
दिल तो हम ले चुके अर सीने में क्या रक्खा है ।

P. 8694.

ग़ज़ल

पी० ८६९४

मैं माजराय चमन क्या करूं बयां सैयाद
खुली है कुन्जो क़फ़स में मेरी ज़बां सैयाद
छूरी ने याद किया या मेरी क़ज़ा ने मुझे
क़फ़स मे क्यों चली आती हैं हिचकियां सैयाद
इलाही देखिये क्योंकर निबाह होता है
ज़बां दराज़ हूं मैं और बदज़बां सैयाद
मैं माजराय - - - - - - - - -
ग़ज़ब तो यह है कि वोह नाचकर लगता है
मेरे कज़म में मेरे पर की तालियां सैयाद

दूसरी तरफ़ :—

ग़ज़ल

कहां से लायेगा क़ासिद बयां मेरा ज़बां मेरी
मज़ा जब था कि ख़ुद सुनते वोह मुझ से दास्तां मेरी

तक़ाज़ा है गरेबां का कि मुझ को चाक कर डालो
तमन्ना है यह दामां की उड़ादो धज्जियां मेरी
अगर दावा मोहबत का ग़ज़ब है लीजिये ख़न्ज़र
हक़ीकत साफ़ खुल जायेगी बक्त. इमतिहां मेरी
कहां से लायेगा - - - - - - -

P. 8873. ग़ज़ल भाग १ पी० ८८७३

तेरे दीद को हैं तरसीं गुलज़ार मेरी आंखें ।
हर बक्त. रो रही हैं बस ज़ार ज़ार आंखे ॥
हसरत यही है दिल में आंखों से तुझ को देखूं ।
जा जाके तेरे सदक़े करदूं निसार आंखें ॥
क्योंकर छिपाऊं प्यारे तेरे राज़ इश्क़ को मैं ।
रुसवा मुझे हैं करती मेरी अश्कबार आंखें
तेरे दीद को हैं - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल भाग २

तेरे दीद को - - - - - -
तुरबत प मेरी होगा नरगिस का पौदा ज़ाहिर ।
मैहशर तलक करेंगी तेरा इन्तिजार आंखें ॥
गर तुझको एसी ज़ालिम करनी थी बेवफ़ाई ।
हंसकरके नाज़ से न करनी थीं चार आंखें ॥
तेरे दीद की - - - - - - - - -

P. 8936. ग़ज़ल पी० ८९३६

हज़ारों बार निकले अश्क लेकिन फिर भी कम निकले
इलाही और कैसे अरज़ू से चश्म नम निकले
ख़िराम नाज़ से मुर्दे हज़ारों हो गये ज़िन्दा
मसीहा से भी बढ़कर तेरे अन्दाज़ क़दम निकले
हज़ारों बार छेड़ा जोश से ग़म हाय फ़ुर्क़त में
हज़ारों बार आंसू आपके सर की क़सम निकले
कहा फिर - - - हज़ारों बार निकले अश्क - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

क्यों जनूं उसको हुआ था किसके दीवानों में था
दिल हमारा कौन सी महफ़िल के पर्वानों में था
बरमला महशर में कह दूंगा जो पूछेगा कोई
मैं नहीं कुछ जानता हूं मैं तो दीवानों में था
बाह रे तक़दीर हम जब पहुंचे बज़्मे यार में
शतय भी गुल हो चुकी थी दम न पर्वानों में था
शमय रू ख़ामोश थे बहते थे आसूं शमब के
रातको मातम हमारे दिलका पर्वानों में था

P. 8964. दुतारा पी० ८९६४

ओ ज़ालिम दुतारे वाले - - - तूही मेरा मन ले गयो रे - - -
एक टके की छइयां मंगाई एक टके का धागा रे
रल मिल सैयां सीवन लागीं ले गुदड़ी वह भागा रे—ओ ज़ालिम - -
एक टके के चावल मंगाये एक टके का आटा रे

रख मिल सैयां हंडिया पकाई ले हंडिया वह तो भागा रे—ओ - -

दूसरी तरफ़ :—आग़ा फ़ैज़ व मिस दुलारी ड्रामा मुरीद शक व

मुरीद शक—वह आया वह आया वह गया वह गया

फ़ीरोज़ गुलनार—ख़ैर तो है नेक मर्द—तुम्हें है किस बला की तलाश

मु०—हज़र मुझे तलाश है एक चोर की

फ़ी०—तो वह चोर कहां है ज़रा फ़रमाइये न

मु०—यहां है

फ़ी०—यहां तो कहीं भी नहीं है जनाबआली—अगर वह चोर यहां है तो बतलाइये या उनके मददगारों को बुलवाइये।

मु०—लो मैं उनको बतलाता हूं ज़रा ग़ौर से गिनयेगा

फ़ी०—हां हां फ़रमाइये ना

मु०-नाज़—अन्दाज़—अशवा—फ़ितरत

फ़ी० नाज़—अन्दाज़—अशेब फ़ितरत क्या क्या ख़ाक धूल तुमने बका यह कौन मुल्क के चोरोंके नाम हैं और कौन सी जगह आबाद हैं

मु०—वह प्यारी यहीं हैं—फ़ी० यहां हैं तो बतलाइये बतलाइये

मु०—लो तुम मेरी चोर हो फ़ी०— हां

मु०—हां हां प्यारी शहज़ादी मैं यह चाहता हूं कि तुम्हारी मेरी शादी हो जाय हाय देखिये मिलते हैं क्या हमको समर उल्फ़त के अरे बनके बरबाद हुए सैकड़ों घर उल्फ़त के

फ़ी०—तबीयत दोही दिनमें भर जायेगी चढ़ी है यह नदी उतर जायेगी अच्छा अगर ऐसा है तो मेरे बाप प्रभुसे अपनी क़िसमत की आजमायश कीजिये और मेरी तक़दीरकी भी आज़मायश होजायेगी

(दोनों का गाना)

भले आये कुमार तोरे प्यारे छैल मोरी आंखों में

हाय कहो नाईं छुन्दरया—पड़े चैन संवरिया - - -
उमड़्यो है उमड़ बदरिया—उभरिया छुन्दरया लहरया—भले - - -
हो आनन्दन तोरा दर्शन पायें जो मात पिता
हे राजन—दो दर्शन - हो प्रसन्न जो आज
बातें तेरी छुन आज घड़ी बिच शुभ पल घड़ियां है पलियां
यह भलयां—भले आये - - -

भाड़ देसा

P. 8874. ग़ज़ल मालकोस पी० ८८७४

शेर—मुझे पेहले तुम एक नज़र देख लेना
जिधर चाहना फिर उधर देख लेना
तुम्हारी निगाह के नीचे खड़े हैं
जवानी का सदक़ा इधर देख लेना
बैठे हैं आके कूचये दिलबर के सामने
तुरबत बनेगी अब तो इसी दरके सामने
तुझ को गले लगाने भी पाया न ख़ाब में
हसरत लिपट के रोई तेरे दर के सामने

शेर—उठते उठते नाज़ुकी से दस्ते जानां रह गया
मुझ को हसरत रह गई क़ातिल को अरमां रह गया
वस्ल का आज उस परी से सामां रह गया
ऐ शरम तेरा बुरा हो दोनों का अरमां रह नया
दिलका क्या हाल कहूं सुब्ह को जब उस बुत ने
लेके अङ्गड़ाई कहा नाज़ से हम जाते हैं
सरवर की यही अर्ज़ है ग़फ़ूरुर रहीम स
जन्नत में दे मकां मुझे उस दरके सामने

दूसरी तरफ़ :— बागेसरी

दर्द फ़ुरक़त में भी क्यों शिक्वाये बेदाद न हो
जो सबक़ आप पढ़ाये वोह मुझे याद न हो
फ़ितनागर मुझको मिटाकर मेरी तुरबत न मिटा
मैं हूँ बरबाद मेरी ख़ाक तो बरबाद न हो
उड़ती है कि ख़ाक तेरे ख़ाकसार की
मुश्ते गुबार फिर नहीं सुनता सवार की
यां तक तो लुटे आशिक़ी में हम तो बादे मर्ग
मिट्टी भी उड़ गई है हमारे मज़ार की—मैं हूँ बरबाद - - -
झूठा वादा भी बड़ी चीज़ है आशिक़ के लिये
मुझको तो याद है गर आपको यह याद न हो

——:०:——

मास्टर दुल्हा मियां

P. 8637.

गज़ल पी० ८६३७

मिट गया जब मिटने वाला फिर पयाम आया तो क्या
दिल की बरबादी के बाद उनका सलाम आया तो क्या
दर से काबे को पौहूँचा ग़ैब से आई सदा
ठोकरें खाकर मुऐ मैहशर हरम आया तो क्या
काश उनकी ज़िन्दगी में हम ये मन्ज़र देखते
यूं सरे मक़तल कोई मेहशर ख़िराम आया तो क्या
ऐ दिले नाशाद मिटजा आज कूऐ यार में
तू मेरी नाकामियों के बाद काम आया तो क्या

दूसरी तरफ़ :— गज़ल

हमारी सारे असीरों में आबरू हो जाय
कमन्दे ज़ुल्फ़ अगर हलक़ये गुलू हो जाय ॥ हमारी सारे - - -
इशारा सोज़ने मिज़गां से गर ज़रा कर दो।
तो चाके दामने ज़ख़्मे जिगर रफ़ू हो जाय ॥
और दूनिया की जो ख़ूबी है वोह दुनिया को मिलै।
मेरी तक़दीर में अल्लाह करे तू हो जाय ॥
जफ़ा व ज़ुल्म की जब क़द्र तुमको हो मालूम।
जो यार तू है वोह मैं हूँ जो मैं हूँ तू हो जाव ॥

——:-०-:——

P. 8695.

दादरा पी० ८६९५

मिल लेव राजा सड़कियों पै मिलना - - -
अरे हां सुनो राजा यह ही मिलन से मिलना
हां मिल लेव राजा सड़कियों - - - -
सुनो सिपाही मियां दूर देस मत जाना
मंगवा दूंगी नारंगी तोरे दम को
आई है जियो बिटिया नाचो टहनी गट्टा ढोलक
भइया तबलिये रोके रहो भइया सरंगिये धीरे धीरे
भइया मंजीरी ठुन ठुन ठुन
आई है नाचो बिटिया देखो तनिक बैठे हैं महाराज.
मिल लो राजा - - -
मिल लो राजा सड़कियों पर - - - (आ पहुंचा सड़क यह है)

दूसरो तरफ़ :— जगत पीलू

सांवरिया ने जोग लियो अब मैं किस बिध पार लगाऊं
हरे हरे पतवा पे फूल लगाऊं हां मालिन बनके मैं जाऊं
सांवरिया ने मालिन बनके मैं जाऊं सांवरिया ने जोग लियो - -

स्वर्गीय एच० एन० दत्त

P. 7570. भजन पी० ७५७०

(मनवा) साधन करना चाही रे मनवा भजन करना चाही
प्रेम लगाना चाही रे मनवा प्रीत करना चाहो - - मनवा - - -
तुलसी पूजे हरि मिले तो पूजे तुलसी पहाड़
पत्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजी पहाड़ - - - मनवा - - -
नीन्द न होवन से हरि मिले जल जन्तु होय
फल मूल खाके हरि मिले तो गादड़ बन्दर होय
तृण भखन से हरि मिले तो बहुत मिले अजा
बिवि छोड़ के हरि मिले तो बहुत मिले खोजा
दूध पीवत से हरि मिले बहुत वत्स बाला
मीरा कहे बिना प्रेम से ना मिले नन्दलाला - - मनवा - - -

सरी तरफ़ :— भजन

सुन्दर लाला सची दुलाला नाचे श्रीहरि कीर्तन में
भाले चन्दन तिलक मनोहर अलका शोभे कपोल मनमें
तेरे चूड़ा करत निराले गले फूल माला हिया पर दील
बहीरन पीत पठाम्बर को ले सनु झुनु नुपुर चरनन में

कोई गाइत है पंचम तान कृष्ण मुरारी हरि के नाम
मंगल ताल मृदंग ताल बजाता है कोई रगंम में
राधा कृष्ण एक तनु है निधुबन में जो रंग मचाय
विद्या रूपक प्रभु जी तोही अब तो प्रकट ही नदिया में

आग़ा फैज़

P. 5282. ग़ज़ल पीलू पी०५२८२

जामे ज़मर्दीं का है दौर अंजमन में - ताऊस नाचता है किस शौक़से चमनमें
अब्रे बहार बरसे खोले जो बाल सिरके क़तरा टपक २ कर मोती बने लगनमें
माथे पै चांद टीका रक्खा जो महजबींने-गर्दिश हुई क़मरको चांम आगया गहनमें
मुर्झाये ज़ख़्म दिलके ज़ीनेसे जब वह निकले-मुद्दतके बाद यारो ठंडकपड़ी जलनमें

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल भैरवीं

देखिये आज वह बन ठनके किधर जाते हैं-दिल जलानेके लिये ग़ैरके घर जाते हैं।
ऐसी बेदिन की जवानी पै न इतराइयेगा-ऐसे दरया भी तो चढ़ २ के उतर जाते हैं ॥

जलाओगे तो जला करोगे यह दस्त हसरत मला करोगे
हम आशीक़ों का भला करोगे तो तुम भी फूला फला करोगे
रुला लो जितना रुला सको तुम-सता लो जितना सता सको तुम
मगर तो इतना बता दो हमको कि हम न होंगे तो क्या करोगे
ज़रा ज़माना किसीका यकसां कभी रहा है न अब रहेगा
हमारी हालत पै ऐ बुतो तुम बता दो कबतक हंसा करोगे

P. 5808. ग़ज़ल पी० ५८०८

रुख़सत ऐ ज़ंदान जनूं ज़ंजरी दर खड़काये है
मुज़दा ख़ार दश्त फिर तलवा मेरा खुजलाये है
दोहा—तिल समझ कर बन गई इस नाजनीं रुखसार का
वस्ल की शबमें बढ़ाया और जोबन यार का
फिर न हो दीवानगी का क़ैसको दावा कभी
शोर गर सुन ले मेरी ज़ंजीर की झनकार का
वस्ल की पहिली है शब और वह परी शर्माई है
दिल मेरा घुटता है जूं जूं रैन घटती जाय है
ऐ परी वह याद है वस्ल में आना तेरा
मुहंको शर्मांके दुपट्टे में छिपाना तेरा
वह परी शरमाय हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

ना सहामत कर नसीहत क्यों हमें समझाय है
वह हुस्न वह शबाब वह नाजो अदा नहीं
नाज़ां हैं जिस पै आप वह पहली हवा नहीं
न सहा नसीहत आपकी जा है मगर मुझे
उल्फ़त के पेंच व ताबमें कुछ सूझता नहीं
नेक व बद सूझे नहीं जब दिल कहीं लगजाय है
न किसीका दिल दुखा और न किसी की आहले
दिलके दुख जानेसे ज़ालिम अर्श भी मिल जाय है
न तसल्ली न तशफ़्फ़ी न दिलासा न प्यार
हो जवानी से वह ग़ारत जो तुम्हें सिखाया है

सर बवक्त जिबह मेरा उनके ज़ेर पाय है
यह नसीब अल्ला अकबर लोटने की जाय है

——(-:०:-)——

P. 6184. ग़ज़ल पी० ६१८४

किसने कहा कि दाग़ वफ़ादार मर गया
वह हाथ मलके कहते हैं क्या यार मर गया
आंखे खुली हुई हैं पस मर्ग इस लिये
जाये कोई कि तालिबे दीदार मर गया
किन सख़्तियों से दाग़ने अफ़सोस जान दी
पढ़ कर तेरे फिराक़ में अशआर मर गया
दोहा—हमने मानां कि तुम्हें हुस्न ख़ुदा देता है
पर तो यह नाज़ तुम्हें कौन दिखा देता है
शिक्म मादर ने तो हम सीखके आये थे यह पर
चाहने वाले ही कम्बख़्त दिखा देते हैं

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

दोहा—नाज़ुक कमर लचक गई बालोंके बार से
सीना पसीना हो गया फूलों के हार से
जहां बात उस शोले रू की चली ह
तो ख़ुद भी शमय वे जलाये जली ह
कहा आंसुओं से कि मुंह को न धोए
अभी ख़ाक उस दर की मुंह पर मली ह
तू काबेको जाता है ज़ाहिद तो अच्छा
मेरा काबा तो यार की ही गली ह

निकल हम गये दश्तें मजनूं से आगे
ख़ुदा जाने वहशत किधर ले चली है

—:-०-:—

P. 6243. ग़ज़ल पी० ६२४३

मारो भी तुम जलाओ भी तुम तुमको क्या कहूं
तुमको ख़ुदा कहूं या ख़ुदाको ख़ुदा कहूं
मन्दिरमें बुत बने कभी काबेमें बुत शिकन
जब सबमें तुमही तुम हो तो फिर तुमको क्या कहूं
जो चीज़ दिलसे चुपके निकल जाये क्या कहें
इसको क़ज़ा कहूं कि तुम्हारी अदा कहूं

दूसरी तरफ़ :— संधड़ा

जब तुम्हीं ठैरे हमें हरदम सतानेके लिये
फिर कहां ले जांय क़िसमत आज़मानेके लिये
रूठ जाता हूं तो रहता है मुझे हरदम खयाल
शायद अबभी आदमी भेजें मनानेके लिये
इश्क़में जोगी बना और लोग यूं कहने लगे
रूप तो अच्छा निकाला मांग खानेके लिये
मांग तेरी ने लिया दिल और मांगकी अन्दाज़ने
ज़ुल्फपर आशिक़ हुआ हूं मार खानेके लिये

P. 6310. ग़ज़ल पी० ६३१०

कबतक खिंचे रहोगे कबतक तनी रहेगी
किसकोबनी रही है किसकी बनी रहेगी

भला ग़रूर न कर ख़ाकमें मिलाके मुझे
कभी न चनसे सोएगा सताके मुझे
वह आज आये हैं तुर्बत पै फ़ातहा पढ़ने
सबाब लूटते हैं ख़ाकमें मिलाके मुझे
पूछा न जीते जी कभी फ़ुर्क़तका माजरा
मरनेके बाद क़ब्र पै आया वह दिलरुबा
फूलोंको जब चढ़ाने लगा पढके फ़ातहा
मैंने दहन क़ब्रसे चिल्लाके यूं कहा
वह आज आये हैं तुर्बत पै फ़ातहा पढ़ने
न आप आये वह शब भर न नींद आई है
पयाम आते रहे रात भर क़ज़ाके मुझे

दूसरी तरफ़ :— माण्ड

मलके मिस्सी आपने दांतोंका रुतबा कम किया
हाय ग़ज़ब तूने किया हीरेको नोलम कर दिया
मलके महन्दी कभी दरया पै न्हाया न करो
आग पानीमें मेरी जान लगाया न करो
देखा जो हुस्ने यार तबियत मिचल गई
आंखोंका था कसूर छुरी दिल पै चल गई
या रब दुआयें वस्ल न हरगिज़ क़बूल हो
फिर दिलमें क्या रहेगा जो हसरत निकल गई
हम तुम मिले न थे तो जुदाई का था ख़याल
अब वह मलाल है कि तमन्ना निकल गई
मैं तोबा कर चुका था मगर क्या करूं जलील
काली घटा को देख तबियत बदल गई

—:—

P. 6326. ग़ज़ल पी० ६३२६

दिल किस अदासे लेते हैं बतला दिया कि यूं
आहनसे मक़नातीस को दिखला दिया कि यूं
पूछा कि चांद गहनमें आता है किस तरह
सरका के ज़ुल्फ चेहरे पै दिखला दिया कि यूं
पूछा कि ईसा मुर्दा जलाते थे किस तरह
ठोकर से मेरी लाश को ठुकरा दिया कि यूं
पूछा कि दिल आशिक़ का सताते हो किस तरह
बाज़ू पकड़ के ग़ैर का दिखला दिया कि यूं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

देख कर तुम को हसीनान जहाँ मान गये
तुझ पै सदक़े हुए माइल हुए क़ुर्बान गये
ग़म गया दर्द गया जितने थे अरमान गये
इक तेरे आने से लाखों मेरे महमान गये
तान कर सीना जो घर से बुत पुरफ़न निकला
दिल हज़ारों के गये लाखों के ईमान गये

—:o:—

P. 6353. ग़ज़ल पी० ६३५३

दोहा—ढूंढनेको आये वह गोर ग़रेबा मुझे
और निराश क़ब्र तक उनको न मेरा याद हो
हर लहद को नाज़ से ठुकरा के यूं कहने लगे
बोल उठे जो हमारा आशिक़ नाशाद हो
इस घड़ी एक बे निशान तुर्बत से आई यह सदा

जानो दिल से आज भी हाज़िर हूं जो इर्शाद हो

रफ़्तार के चलन तो अजब दिल रुबा लिये
छोटे से सिन में यार ग़ज़ब तुम हो जा लिये
ना महरमों की आंख जो अंगिया पै जा पड़ी
सीना खुला हुआ है दुपट्टा संभालिये
बोसे पै इतनी गालियां अल्लाह की पनाह
अब मै भी कुछ कहुंगा ज़रा मुह संभालिये

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

इश्क़ अबरु क्या हुवा यह जानके लाले हुए
ख़ंजर फ़ौलाद शकले तेग़ में ढाले हुए
छोड़ दूं में उल्फ़त गेसू यकायक किस तरह
एक मुद्दत से यह काले सांप हैं पाले हुए
कह दिया आतिश परस्त अहले जहां ने देखकर
जब बलन्द ऊपर को मेरे आतशीं नाले हुए
क्यों कहो ऐ शेख़जी काबे में क्या आया नज़र
आते हो गर्दन में जो जन्नार को डाले हुए

——o——

P. 6372. ग़ज़ल अरबा पी० ६३७२

देख लेना यह न ख़ाली जायगी, आह जब दिल से निकाली जायगी
इनके वायदे पर दिल नादान न फूल-वस्ल की उम्मीद इनसे है फ़ज़ूल
बातों बातों में तो होते हैं मलूल-इन से क्या हसरत निकाली जायगी

जोश पर है आजकल इनका शबाब-हुस्न के दरया में उभरे हैं हबाब
अब्र में जाकर छिपेगा माहताब-ज़ुल्फ़ जब रुख से हटाई जायगी
तुझ से कहते हैं बुत बेदाद गर-अपने आशिक़ से न हो तू बेख़तर
कुछ न कुछ ले जायेगी यां पर नज़र-अजी इस भरे घर से न ख़ाली जायेगी

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

है दस्त बस्ता अर्ज़ यह तेरी जनाब में
रख लीजियो आबरु मेरी योम अल हिसाब में
मेरा पयाम ले के गया जब पयाम्बर
दे दें हज़ार गालियां उस को जवाब में

क्यों तलख़ हो रहा है मीठी ज़बान वाले
तेवर चढ़ा रहा है क्यों आन बान वाले
ख़ून कर रही है दिल का तेरे लबों की सुर्ख़ी
छुरियें चला रहें हैं यह होंठ पान वाले
दोहा—ख़ून करता है यह मेरा इसे खाया न करो
मान लो कहना सनम पान चबाया न करो
छुरियें चला रहे हैं यह होंठ पान वाले
तेरी बुराई मुझ से मेरी बुराई तुझ से
लड़वा रहे हैं हम को यह दर मियान वाले

——:०:——

P. 6512.

गज़ल पो० ६५१२

जाते हो कहां ऐ जाने जहां अभी दिल तो हमारा भरा ही नहीं
अभी बोसाये लब तो मिलाही नहीं अभी गुंचये दिल तो खिलाही नहीं

क्यों हंसता है मेरे रोने पर नासह तु ज़रा अल्लाह से डर
क्या जाने तू हालत दर्दे जिगर तूने दिल तो बुतों को दिया ही नहीं
कब तक भला समझाये कोई किस तरह न जान से जाये कोई
चाहे लाख उसे समझाये कोई उस बुत को तो खौफ़े ख़ुदाही नहीं
उनसे जो सवाल वसल हुआ ऐ हमदम यह मुझे जवाब मिला
तक़दीर में तेरी लिखा ही नहीं तेरे दर्दे जिगर की दवा ही नहीं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

क्या बात है किस वास्ते शर्माये हुये हो
क्या पहलूये अग़यार को गर्माये हुये
एक मेरी तबियत तो नहीं आंख पै आई
शैदा तेरी आंखों पै है यह सारी ख़ुदाई
क्यों कर वह बचे तुम से जिसे आंख दिखाई
इन तीरों से तुम लाखों को तड़फाये हुये हो
उन से जो कभी वस्ल की बाबत कहा रो रो
बोले यह हो सक्ता नहीं तुम हाथ न जोड़ो
फिर मांगा जो बोसा तो कहने लगे कि छोड़ो
इस क़िस्से को सौ मर्तबा दोहराये हुए हो

——:०:——

P. 6598. ग़ज़ल पो० ६५६८

जुल्फ़ने सीख लिया पेच में लाला दिलका
अब तो मुश्किल है हसीनों से बचाना दिलका
जितने दिलबर हैं सभी ख़ुवाहिश दिल रखते हैं
एक दिल और तलबगार ज़माना दिलका

उस रुख़े ज़ेबा पै बिखरी ज़ुल्फ़ बलखाने के बाद—ज़ुल्फ़ बलखाने के बाद
गुंज पर बैठो सियाह नागन यह लहराने के बाद—लहराने के बाद
तेरी हमदर्दी के क़ायल हम भी होते ना सहा
वस्ल की तदबीर भी करता जो समझाने के बाद
मैं यह समझा है यह बिजली या है शम्स या है क़मर
मुंह छिपाया उसने अंचल में जो दिखलावे के बाद
यह अनोखी छेड़ है यह है निराली दिल लगी
बज़्म से ख़ुद उठ गये वह मुझ को बुलवाने के बाद
उस रुख़े ज़ेबा पै - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

न बे हजाब हो तू चौदह बरस में आकर
ख़ालिक़ से डर सितमगर ख़लक़त से तू हया कर
मैं क्यों न ज़हर खाऊं कि आज हाय उसने
बोसे दिये अदू को मुझ को दिखा दिखा कर
की गर्म अपनी महफिल ग़ैरों के साथ उसने
सब को गले लगाया मुझ को हटा हटा कर
तू ने फंसा लिये हैं लाखों ही दिल सितमगर
ज़ुल्फ़ों का जाल अपने रुख़ पर बिछा बिछा कर
न बे हजाब हो तू - - - -

P. 6655. संधड़ा पी० ६६५५

लटकाये हुए माथे पर वह ज़ुल्फ़ दुता है,
क्या चांद पै छाई हुई घनघोर घटा है

बीमार मोहब्बत को शफ़ा होगी तबीबों
नुसख़े में अगर शर्बते दीदार लिखा है
ऐ दर्द दिल बता दे कबतक तू कम न होगा
हम दम बनेगा किस का जब तेरा दम न होगा
नुसख़ा हज़ार लिखिये हरगिज़ शफ़ा न होगी
इक़रारे वस्ल जाना जब तक रक़म न होगा
नुसख़े में अगर शर्बते दीदार लिखा है—लटकाये हुए - - -
मुर्दों के जिलाने का वह दावा न करें क्यों
पाज़ेब की झंकारमें जब कुन की सदा है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

जो भी जनाब इश्क़ से दो चार हो गया
वह दो जहां के जीने से बेज़ार हो गया
लज़्ज़त चशे फ़िराक़ को था लुत्फ़े इन्तज़ार
मैं वस्ल में भी जीने से बेज़ार हो गया
दिल किस निगाहे मस्त का बीमार हो गया
जो ज़िन्दगी में जान से बेज़ार हो गया

P. 6680. ग़ज़ल पी० ६६८०

वह हम से चुप हैं हम उन से चुप हैं बनाने वाले बना रहे हैं
शिकायतें दिल में हो रही है-मज़े मोहब्बत के आ रहे हैं
तमाशा मुक़तिल में जा के देखो-वह खेल करते हैं आशकों से
किसी को तीरे निगाह से मारा किसी को ख़ंजर दिखा रहे हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दोहा—ख़ुवाब में सैकड़ों बोसे लिये उस बुत के मगर
लब से मिस्सी न छुटी पान की लाली न गई
तू भी वेचैन न हुवा दिल के जलानेवाले
दर्द मन्दों की दुआ देख लो ख़ाली न गई
दिल दुखाने की सज़ा है उसने भी पाई हुई
है तबियत उनकी भी इक शोख़ पर आई हुई
कल अदू की बज़्म में मालूम है क्या कुछ हुआ
अजी सामने होती नहीं है आंख शर्माई हुई
खिल खिला कर ग़ैर से हंसता है वह ग़ुंचे दहन
और मेरे दिल की कली रहती है मुर्झाई हुई
मिल गया ग़ैरों को मौक़ा बात करने के लिये
इनकी महफ़िल में मेरी इस दर्जे रुसवाई हुई

P. 6699.

ग़ज़ल पी० ६६६६

सिधारे शेख़ काबे को हम इंगलिस्तान देखेंगे
वह देखें घर ख़ुदा का हम ख़ुदा की शान देखेंगे
ख़ाक छनवाती हैं हम से अब जुदाई यार की
वाह रे जोश मोहब्बत ख़ूब मिट्टी ख़ुवार को
शेख़ साहब महफ़िल रिन्दां जो आये एक दिन
दुख़्तर रज़ को जो देखा बहुत ही तकरार की
रिन्द सारे गर्द होकर हाथ लेकर जाम को

बोले अब तो पीजिये यह नजर है सरकार की
पहिले तो कुछ क़िबला जाने बहुत सी इसरार की
हाथ पैर धीरे बढ़ा कर मय लबों के पार की
बे ख़ुदी ऐसी हुई मुफ़्त ही गये फिर मांगने
बज़्म रन्दांन में हुआ गुल अब मोल लो दस्तार की
शेख़ साहब जब कि अज़हद हो गये बे होश गुम
रिन्द एक बोला कि उठो या उठाऊं कह के ग़म
एक बोला शेख़ जी यह अर्ज़ है बदकार की
बोले अब तो कितनी पीओगे सात की या चार की
रिन्द बोले शेख़ पकड़ा ख़बर मस्जिद में करो
शेख़ साहब रोकर बोले राहे लिल्लाह छोड़ दो
रिन्द बोले शेख़ जी जो फिर कभी तकरार की
यह समझना धज्जियां ऊड़ जायेंगी दस्तार की

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

एक रोज़ एक मौलवी रेशाये बा सफा
दस्तार सर पर बांधे लिये हाथ में असा
मूंछे कटी हुई सर अक़्दस घुटा हुआ
जारी ज़बां पर मिसलिये तोहय्यद बर मला
मसरूफ़ मय में मुझ को जो देखा तो यूं कहा
ओ ग़ाफ़िल माइल तू अब्स कर रहा है क्या
छूना भी ऐसी चीज़ का हरगिज़ नहीं रवा
मैंने कहा दुरुस्त है इरशाद जो हुवा
पर क्या करूं शबाब का आलम तो है बुरा
मीना हो मय हो जाम हो साक़ी हो मय लक़ा

छाई हुई हो मौसम बरसात की घटा
एक मिस परी हो बियूटी फुल हो जो साथ इस जगह
आ बैठ जाये आप के ज़ानों पै बरमला
एक हाथ से हज़ूर के नीचे को दे दबा
और जामे मय हज़ूर के होटों से दे लगा
फिर गुंचये दहन खोल के मुंह को यह दे सदा
वल ! मौलवी यह बात नहीं है गुनाह का

P. 6716. **पहाड़ी पहिला भाग** पो० ६७१६

कोई प्रीति की रीति बता दो सखी कर कर के जतन मैं तो हार गई - कोई - -
छल छंद हैं छैल की नस नस में नित खात हैं झूठी मेरी क़समें
मन डाल के सौतन के बस में-सुध शाम ने मेरी बिसार दई
तज मान गुमान वह आन मिले-कोई प्रीति - - -
बोहतान हैं यह उन की बतियां-रस रंग में काटत हैं रतियां
नित शाम लगावत हैं छतियां-यूं ही रात गुज़ारत कहीं कहीं
सच बात है जो यह गिला मैं करूं-कोई प्रीति- - -
कर कर के जतन मैं तो हार गई - कोई प्रीति - - -

दूसरी तरफ़ :— **पहाड़ी दूसरा भाग**

जो चाहो प्रीतम होवे अपना पती नाम की माला सदा जपना
नहीं ग़ैर का देखो कभी सपना तुम जानो यह देह पवित्र भई
इसी मोहनी मंत्र का जाप करो -कोई प्रीति - - -
भला छोड़ के मिसरी भली से भली-कभी खायेगा क्या कोई गुड़ की डली
यह है काम पिता की दुरंग कली-में कटीली हूं कंस की धूल मिली

मोहे काहे लगाये गे शाम गले-कोई प्रीति - - -
जो चाहो कि प्रीतम हो अपना-जिस की है पति पर प्रीति घनी
नहीं साजन की है खरी सजनी-उसी का दिन है उसी की रजनी
जिन जान बलमवा पै वार दई-वही भागवती है सुहाग वती
कोई प्रीति की रीति - - - -

P. 6958. **पहाड़ी** पो० ६९५८

छोड़ दे हठ को सिया देख सियानी होजा- राम लछमण को तजो लंक की रानी होजा
तेरी थी लगन मुझे तेरे स्वयम्बरमें लगी-मान ले मेरा तू कहा मेरी तू रानी होजा
मैं ग़नी हूं मुझे पर्वाह नहीं है दौलतकी-सारे महलोंमें हुक्म तेरा तू रानी होजा
छोड़ दे हठ को सिया देख सियानी होजा

दूसरी तरफ़ :— **पहाड़ी**

आखोंसे दूर ऐ रावण अभिमानी होजा-है अगर मर्द तो बस शर्म से पानी होजा
रामसे डरता मुझे लाया उठाकर चोरी-नाक कटवाके गर्क़ और बदगुनामी होजा
सुना बालीकी रहा क़ैदमें मुद्दत भर तू-सरमा अब तो बेशक अपनी जवानी होजा
बल तो है यह तेरा न टूटा स्वयम्वरमें धनुष-महलोंमें शर्मसे जा बैठ ज़नानी होजा

P. 6982. **रुबाई पहिला भाग पोश्तू** पी० ६९८२

लबों पै है दम या मोहम्मद सभालो-गुनहगार आसी को अपने बुला लो
मैं इस हिन्द में ही कहीं मर न जाऊं-मुझे मेरे मौला मदीने बुला लो
मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे-या मोहम्मद बुलालो मदीने मुझे
ग़मे हिज्र तो देगा न जीने मुझे

क़ाफ़ले वाले गये मैं हाथ मलता रह गया
जान तड़पती रह गई और दिल मचलता रह गया
लिया साथ अपने न किसी ने मुझे
मेरे मौला बुला... ... ...ग़मे हिज्र तो देगा न ... ...
मार डाला इस फ़लक ने और हिन्दोस्तान ने
बेकसी ने मुफ़लसी ने हसरत व अरमान ने
दिये रंज पै रंज सखी ने मुझे

दूसरी तरफ़ :— पीलू दूसरा भाग

मेरे मौला बुला लो मदीने मुझे-या मोहम्मद बुलालो मदीने मुझे
ग़मे हिज्र तो देगा न जीने मुझे
न सवारी है न ताक़त है न दौलत है न माल
किस तरह जाकर मदीने आप का देखूं जमाल
यही सोच है बारह महीने मुझे
मेरे मौला बुला लो मदीने मुझे
साक़िया तू सरबस अब जल्दी बुला लीजे मुझे
एक पियाला आवे ज़म ज़म का पिला दीजे मुझे
पड़े हिज्र में आंसू न पीने मुझे
मेरे मौला बुला लो मदीने मझे
जान आई है लबों पर या मोहम्मद मुस्तफ़ा
वास्ते मुश्किल कुशा के अब ज़रा लेना लगा
बिस्तर से उठा कर सीने मुझे
मेरे मौला बुला लो मदीने मुझे

P. 7016. पीलू पहिला व दूसरा भाग पी० ७०१६

नया शगूफ़ा न ऐ दिल कहीं खिला देना
कहीं न अश्कों में लख़्ते जिगर बहा देना
अभी से ज़ुल्फ़ दुता से न बांधो हाथ मेरे
करूं जो दस्त दराज़ी तो यह सज़ा देना
दिले तपीदा तो पहिले ही एक फोड़ा है
दुखे हुये को न ज़ालिम कहीं दुखा देना

ज़ख्मी दिल को न मेरे दुखाया करो
न किसी को गले से लगाया करो
दिल भी लो और जान भी लो दीन और ईमान भी लो
पर सनम बहरे ख़ुदा इक बात मेरी मान लो (वह क्या)
आंखे ग़ैरों से तुम न लड़ाया करो-ज़ख्मी दिल को न —
दिल लगी में मैंने एक बोसा जो उन का ले लिया
तो मुझे आंखें दिखा कर उस सितम नर ने यह कहा (क्या)
मेरे मुंह से न मुंह को लगाया करो
हाय ! ज़ख्मी दिल को न मेरे दुखाया करो

दूसरी तरफ़ :— पीलू

अभी कमसीन हो क्यों इतने बने हो महू अरायश
सितम ढाना ग़ज़ब लाना मगर कुछ नो जवान होकर
सितारे जो समझते हैं ग़ल्त फ़हमी है यह उनकी
फ़लक पर आह पहुंची है मेरी चिंगरियां हो कर

अभी कमसिन हो रहने दो कहीं खोयेंगे दिल मेरा

तुम्हारे ही लिये रक्खा है ले लेना जवां होकर

तुम्हारी दोनों जुल्फ़ें लड़ रही थीं एक बोसे पर

तुम्हारी मांग ने झगड़ मिटाया दरमियां हो कर

ज़ख़मी दिल को न मेरे दूखाया करो

न किसी को गले से लगाया करो

तुम ने सारी रात काटी है किसी दुश्मन के घर (हां हां हां)

दे रही मुझ को पता हैं आप की नीची नज़र

कोई बात न हम से छिपाया करो

जख़्मी दिल न मेरा सताया करो

P. 7036. पील्लू पी० ७०३६

क्यों क़सम खाते हो झूठी मेरी सर की बार बार

आप और अग़ियार से बेज़ार रहने दीजिये

बोसा लब का दीजिये तकरार रहने दीजिये

हो चुका इक़रार अब इनकार रहने दीजिये

इक़रार से ऊं हूँ कभी इनकार से ऊं हूँ

हर बात पे हम सुनते हैं हर कार से ऊं हूँ

पूछा जो कभी मैंने मिजाज़ आप का खुश है

गर्दन झुका कर यह कहा प्यार से ऊं हूँ

तुम दो कि न दो आज तो हम ले लेंगे बोसे

इकरार से ऊं हू हो या इनकार से ऊं हूँ

दूसरी तरफ़ :— पील्लू

अबरु न संवार वगर न कट जायेगी उगंली

नादान हो तलवार से खेला नहीं करते

समझता हूँ ज़ालिम तेरे आंसू निकलने का (वह क्या)

धुवां आंखों को लगता है हमारे दिल के जलने का

अगर बैठे जिगर पर ऐ सनम यह तेरे होते हैं

मगर अफ़सोस के नाले ही बे तासीर होते हैं

बला की रात है रस्ता कठिन है उस पर यह आफ़त

कि गेसू सांप बन बन कर मेरे रहगीर होते हैं

लिये बैठे हैं वह मेरे दिल वैरान को पहलू में

कि जैसे कोई घर में साहेब जागीर होते हैं

लगा मत उन बुताने बेवफ़ा से दिल को ऐ नाज़िम

जवानी में दग़ा देते हैं यह बे पीर होते हैं

—:o:—

P. 7100. मज़क़िया पी० ७१००

मां बेटे के आनन्द दायक सवालो जवाब सुनियेगा

अरे बेटे जुम्मा! प्यारी अम्मां अरे बेटा थोड़ी सी आग तो ला दों-काहे को

अरे बेटा हुक्क़ा पीऊंगी-अम्मां मैं न जाऊं-न बेटा जाओ

प्यारी अम्मां अम्मा मुझे बुत्ता न दो

बेटा जुम्मां जुम्मां थोड़ी आग ला दो

आग ला दो तमाखू ला दो ला दो थोड़ा पानी
अरे हुक्क़ा भर के आगे रक्खो पीऊं बन के रानी
बेटा जुम्मा - - - - - - -
बलग़म नजला खांसी अम्मां हुक़्केसे हो जाये
तपेदिक़ और सिल का बादल हुक़्के से चढ़ आये
प्यारी अम्मां - - - - - - - - - - - - - - - -
हुक्क़ा भर के आगे रक्खो जब अब्बा घर आये
गुड़ गुड़ गुड़गुड़करके पीये फ़रहत ख़ूब उड़ाये
बेटा जुम्मा - - - - - -
ना अम्मां क़भी न मानूं हुक़्केसे मुंह मोड़
अब्बा को न अब्बा को न अब्बा को न पीने दूंगा . दूंगा हुक्का तोड़
प्यारी अम्मा - - - - - -
बेटा जुम्मा - - -हाय आग लादो - -

दूसरी तरफ़ :—

पहाड़ी

दोहा—न कुछ इलाज न कुछ देख भाल करते हैं
मरीज़ हिज्र की वह क्या संभाल करते हैं
जनाब शेख़ को गिरा कर पिला ही दी हमने
हराम चीज़ को ऐसे हलाल करते हैं
ले शेख़ आंख मीच के पीजा सवाब है
जो कुछ बची खुची मेरी झूठी शराब है
वह आये हम कफ़न में हैं क्या इंक़लाब है
वह बे नक़ाब रुख़ प हमारे नक़ाब है
बद ख़त बता के कर दिया इस सब्ज़ा ख़त ने चाक

ख़त की ख़ता नहीं मेरा लिक्खा ख़राब है
ले शेख़ आंख मीच के पीजा सवाब है

———o———

P.7213. मांड पी० ७२१३

एक पुरानी याद आयी है कहानी (क्या)
इस लिये आंखों में भर आया पानी
क्या अजब वह दिन निराले थे ऐ जानी (कौन से)
जब कि हम दोनों पै आई थी जवानी
जब कि हम तुम दोनों जवान थे प्यारी वह भी क्या दिन थे हमारे
जब फ़िदा होते थे हम पै सारे ज़िक्र होते थे घर घर हमारे
(कब) जब कि हम तुम दोनों जवान थे
मेरा छुप छुप के आना और तुझ को गले लगाना
क्या अजब था वह हाय ज़माना (कौन सा)
जब कि हम तुम दोनों जवान थे
अब तो लेना नहीं आता बोसा-तुम भी रोती हो मैं भी हूँ रोता
उन दिनों कौन था शब को सोता (कब)
जब कि हम तुम दोनों जवान थे

दूसरी तरफ़ :— मांड

टूट जाती है जो चलने में किसी कांटे की नोक
फूट कर रोते हैं क्या क्या पांव के छाले मेरे
क़ब्र में कोई ख़बर लेने न आया बाद मर्ग
ज़िंदगी तक तो बहुत थे चाहने वाले मेरे

हंस के फ़रमाने लगे छन छन के वह नाले मेरे
अजी आप कबसे हो गये हैं चाहने वाले मेरे
वह कहते हैं मुझ ही पर आपका आया हुवा दिल है
छिपाऊं किस तरह राज़ मोहब्बत सख़्त मुश्किल है
ग़ज़ब तुमने किया जाकर रहे जो ग़ैर के दिल में
तुम्हीं इन्साफ़ से कह दो वह घर रहने के क़ाबिल है
यह कह कर तोड़ डाला उसने आइना दमें ज़ीनत (क्या)
ख़ुदा गारत करे उसको यह क्यों मेरे मुक़ाबिल है

वह बुत जो बन संवर कर लबे बाम पर चढ़ा
मुंह अपना देखने लगा आईने को उठा
जब आईने में आप पै अपनी पड़ी निगाह
टुकड़े हज़ार कर के ज़मीं पर दिया गिरा
पूछा किसी ने आईने से क्या हुई ख़ता
तेवर चढ़ा कर आप ने ग़ुस्से से यूं कहा
(क्या) ख़ुदा ग़ारत करे इसको यह क्यों मेरे मुकाबिल है

—:-:—

P 7237. पीलू पी० ७२३७

फिरता रहा हूं बरसों जोशे जनूं से बन में
कांटो ने पी लिया है जो ख़ून था बदन में
ज़बां ख़ुश्क देखी हमने जब ख़ार मुग़ीला की
लगा दी हैं सबीलें दश्तमें पांव के छालों की
न रह जाये किसी सहरामें कांटे की ज़बां सूखी
इलाही आबरू रखना मेरे पांव के छालों की-फिरता रहा

इस हुस्न आरज़ी पर मत कर ग़रूर इतना
आयेगी देख लेना एक दिन ख़ज़ां चमन में
मन कर नकीर नादिम हो कर गये लहद से
जब मैं न लाग़री से आया नज़र कफ़न में
अहबाब दफ़न करके मुझ को चले गये जब
यह क़ब्र ने निदा दी तुम आ गये वतन में—फिरता रहा

दूसरी तरफ़ :— संधड़ा

देखिये होता है यूं सोजे मोहब्बत का असर
रात भर रोती रही है शमय पर्वाने के बाद
गर मेरा उसका तकाबुल इश्क़ में मंज़ूर है
कैस की सुनना कहानी मेरे अफ़साने के बाद
सर गुज़िश्ता अपना फ़साना है ज़माने के लिये
गुम हुए हैं हम जहां से याद आने के लिये
पास अपने दिल के रहने दीजिये मेरा भी दिल
एक ख़ुशी को चाहिये एक ग़म उठाने के लिये
जब कहा मरता हूं तेरे हिज्र में हंस कर कहा
अजी मौत आने के लिये है जान जाने के लिये

P. 7380. कौन्स्या पी० ७३८०

ओ मियां जाने वाले ज़रा चिलमन उठा देना
तुझे अपनी जवानी की क़सम सूरत दिखा देना
किसी का देखना और देखकर चिलमन गिरा देना
हमारा देखना और देख कर आंसू बहा देना

T

नीम बिसमिल क्या है उसने उठा के रुख से नक़ाब आधा
झलक दिखाते ही मुझ को इक दम वह छुप गया माहेताब आधा
रुखे मनव्वर पै गेसू बिखरे हुए जो देखे तो हम यह समझे
कि आज काली घटा में आया हुआ है यह माहेताब आधा
मैं चश्मो आरिज़ की याद में जान दे रहा हूं ख़याल रखना
मेरी लहद पै उगेगी नरगस तो साथ होगा गुलाब आधा
लिया जो कल मैं ने उस का बोसा तो हंसके बोले गुलाम सरूर
यह खुश नसीबी समझ लो अपनी कि हो गया कामयाब आधा
(अरे हां हां) कि हो गया कामयाब आधा

दूसरी तरफ़ :— ज़िला

थमते नहीं इकदम भी मेरे दीदये पुरनम
दिल रंजोग़म व यास से है दरहम बरहम
रहता है तसव्वर में सरया तेरा हरदम
आवाज़ मेरे मुंह से निकलती है यह हरदम
ऐसी क़िस्मत कहां सीने से लगाये कोई
हंस के बाहें मेरी गर्दन में जो डाले कोई
क़त्ल की फ़िक्र इधर खून के छीटों को ख़याल
अजी पकड़े तलवार या दामन को संभाले कोई
जब सित मगर मुझे कहते हैं सित मगर ने कहा
फिर मेरे सामने क्यों नामे वफ़ा ले कोई
ब खुशी आप ने बोसे दिये दुश्मन को हज़ूर
वरने मुमकिन है तुम्हें हाथ लगाये कोई

——(०)——

P 7441. भजन महाभारत पी० ७४४१

दूध समान अमोल कपोल-नू हंस समान है नन्द दुलारे
काहन हंस निवास करें निस वा सर शर समन्दर किनारे-दूध - - -
शाम भये घनशाम पधारत- आप के मन्दिर चात सकारे-आप के- -
लाख करें उठना उठना-उठ ने कब देत हैं नैन तिहारे - दूध समान - - -
शाम भये घनिशाम पधारत - - - - - लाख- - दूध - -

दूसरो तरफ़ :— भजन महाभारत

तोरी इतनी चूनरिया ने मन बस कीनो - - -
मारी बांध के उंगरिया मोहे बांध लीनो- तोरी - - -
(द्रोपदी) गिनती के हैं यह नो दस धागे- भाव बड़ा जो लाव पै लागे
(कृष्ण जी) लाख चीर लाके धरूं- सासन- पिसन-मखमल
अतलस कुछ भी नहीं उनके आगे - तोरी इतनी - -
(सहेलिया) विमल कम्वल लाग भाग जागे-हां हां हां हां हां इन के
सब से रहें खुश नसीव धागे- हां हां हां हां हा सच है
गोवरधन धार सखी- अब कट कर खून भई
देखो सखी खेल करत मोहन की उंगली
तन मन कुर्बान करूं नन्द लाल-हां हां हां हां सच है- विमल कम्बल- - -

---

P. 7473. पहाड़ी पी० ७४७३

सितम शआर की रे दोस्तो सज़ा है अजब
सितम कशों के सितम ज़ुल्म और जफ़ा है अजब
न कोई ज़ुल्म न कोई ख़ता सज़ा है अजीब मे अरे

किसी ने शैर भी यह खूब ही कहा है अजीब
गोरी सूरत पै न मरिये बड़ी बद खू होगी
अजी सूरते बेजा अन्दर बड़ी बदबू होगी
रज़ की बात छिपा अजी किसलिये चुप रहते हो
मुश्क को लाख छूपा वही खुशब होगी-गोरी सरत - -
असलियत की नहीं जा सकती है इनसान से
लाख दरया में धुले मछली में बदबू होगी —गोरी सूरत - - -

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी (शैर)

इस क़दर तेरा तसव्वर कभी बढ़ जाता है
आइना देखूं तो मुंह तेरा नज़र आता है
मेरी जान इसलिये मैं तुम को ख़फ़ा करता हूं
कि मुझे तेरे मनाने में मज़ा आता है
दर्द उठता है मगर उफ़ नहीं करते डरते
पर मुहं से घबरा के तेरा नाम निकल जाता है
दर्द रहता है तेरा याद तेरी रहती है
बेकरारी हैं शबो रोज़ हमारे
ऐ जान तेरी तसवीर कलेजे से लगी रहती है
तेरी तस्वीर तुझ से भी इक ख़ूबी निराली है (वह क्या)
लिपट ले जितना जी चाहे न घुड़की है न गाली है—तेरी तसवीर - - -
तेरी आंखोंका तसव्वर नहीं होने देता
अरे इसलिये आंखोंमें हर वक्त तेरी रहते हैं
दर्द रहता है तेरा याद तेरी रहती है

———:०:———

P. 7596. भजन पी० ७५९६

ओ माखन खा गयो मुरारी चोरी से—ओ माखन - - -
बिरहा की आग लगा गयो मुरारी चोरी से
रात बाट में रार मचावत छीन लीनी दूध की गगरी
लाज मरूं कुछ कहा न जावे सो सो नाच नचा गयो मुरारी चोरीसे—चोरीसे
विनती करत रही मैं तो पर वह न माना वह कुंवर कन्हैया
जाय कहूंगी नन्द बाबा से मटकी फोड़ गयो मुरारी चोरी से— चोरी से - -
एक से अधिक नाम है अच्छा जो जो जिस ने मान लिया
शाह ग़नी पर फ़र्ज़ नहीं है गदा भी आप कहां गयो मुरारी— चोरी से - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

कोई बनसी की टेर सुनाय गयो रे—मुझे वहशी दीवानी बनाय गयो रे
किनारे जमना के सखियोंने धूम डाली है—अदा हर एकसे हरएक की निराली है
यह बनसीने निराली ही धुन निकाली है-हुए हैं होशसे बेहोश अजब बेहाली है
ठौर अपना न कोई बताय गयो रे-कोई बंसी की टेर - - - - -
सखी सहेली सभी बन संवर के आई है चली है मध की लहर शाम शाम गाई हैं
धनश्याम ने वह बंसरी बजाई है-यह सुन के कहना पड़ा वाह तेरी खुदाई है
अजब लीला में लीला दिखाय गयो रे-कोई बंशी की टेर - -

P. 7716. भैरवीं पी० ७७१६

देखो मोरी चूड़ियां मुड़क गई हां हां हां - - - -
पिया छांड़ो बैंया पड़त पैंयां तो पै बल जइयां
जागत ननदिया दुरनिया जेठनिया-चुड़िया मुरक गई हां हां हां

अंतरा—सब सिंगार लूं उतार-इतनी देर रख अधार-बार बार मत पुकार
गलत अड़ौसी पड़ौसी सगर चर्चा करें गो बृज नारी बारी मैं तो से हारी
ऐसो पिया मोरी मान ले सांवल सु मैं डारूं गर बैयां देखो मोरी - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

अरे बलमा मैं कैसे भरूं पानी-पानी रे रो को मारे बलमा मैं - -
मधुर छधारत बीन 'बजावे गुवाल बाल सब संग लिये धाये
कह्या न मानत नन्द महर को माखन खात फिरत घर घर सो - -
ऐसो है निडर जग चोरी मोरी बयां रे - - रोको मारे - -

P. 7856.

ग़ज़ल

पी० ७८५६

जुल्फ़ ने सीख लिया पेच में लाना दिलका
और अब तो मुश्किल है हसीनों से बचाना दिल का
जितने दिलवर हैं सभी ख़ुवाहिश दिल रखते हैं
अरे एक दिल है और तलबगार ज़माना दिलका
पूरी महन्दी भी लगानी नहीं आती अब तक
अरे क्योंकर आया तुझे ग़ैरों से लगाना दिल का
इन हसीनों का लड़कपन ही रहे या अल्ला
ऐश आता है तो आता है सताना दिल का
खा कर क़सम वह कहते हैं किस सादगी के साथ
अब से हमें न देखना तुम अब किसी के साथ
बोसे भी तुम को छोड़ दूं और दिल भी छोड़ दूं
अजी इस बात पर तो हो गये राज़ी ख़ुशी के साथ
मुझ को न दीजिये गालियां दुश्मन को दीजिये

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल

अजी गर यह ज़बां रही तो निभेगी उसी के साथ
अरे दिल छीन लिया जिस ने वह दिलबर नहीं मिलता
ज़ख़्मी किया जिस ने वह सितमगर नहीं मिलता
मैं क्या करूं साक़ी मेरी नीयत नहीं भरती
जब तक कि छलकता हुवा साग़िर नहीं मिलता
अल्ला रे किस शोख़ ने की मुझ से शरारत
अरे लिखा है मेरे दर पै तेरा घर नहीं मिलता
बोसा कभी ख़ैरात में मांगा तो वह बोले
क्या और कोई तुझ को तवांगर नहीं मिलता-हां
दिल छीन लिया जिस ने वह दिलवर नहीं मिलता

P. 8032.

ग़ज़ल

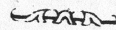
पी० ८०३२

ओ रहेगा इश्क़ तेरा ख़ाक में मिला के मुझे
यक़ीन है छोड़ेगा यह आख़िर मिटा के मुझे
अरे नक़ाब कहती है मैं कितना क़यामत हूं
यक़ीन नहीं तो कोई देख ले उठा के मुझे
हुई जो वस्ल की शब मुद्दतों के बाद नसीब
अरे बे होश कर दिया ज़ालिम ने कुछ पिला के मुझे
इलाही इश्क़ यह दुश्मन को भी नसीब न हो
मेरा रक़ीब भी रोया गले लगा के मुझे

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

और हाय क्या पूछते हो दर्द किधर जाता है
अरे इक जगह होतो बता दूं कि इधर होता है

अरे क़ब्र फ़रयाद से हर दम यही आती हैं सदा
यारो माशूक़ का पत्थर सा जिगर होता है
तोबा कर लेते हैं हर रोज़ सहर तक के लिये
बन्द रात को जब ख़ाने का दर होता हैं
लबे रंगीन पै हैं ताज फ़रमाते हैं
अजी लाल में क्या कोई सुरख़ाब का पर होता है



P. 8160. **भैरवीं** पी० ८१६०

शर—किसी उश्शाक़ से मेंहदी मंगा कर
लगाई हाथ में दर्या पै जाकर
वह देखो सुर्ख़ हाथों से नहा कर
चले हैं आग पानीमें लगा कर
लगा कर हाथ में मेंहदी नहाना किस से सीखा है
अरे मेरी जान आग पानी में लगाना किस से सीखा है
ख़िरामे नाज़ से अन्दाज़ शोख़ी से अदाओं से ये शरमीली निगाहों स ।
दिले आशिक़ को दीवाना बनाना किस से सीखा है ॥
तुम्हें मेरी मोहब्बत की क़सम सच यह बता दो ज़रा मुंह से तो फ़रमाओ
गलेमें डाल कर बाहें मनाना किस से सीखा है ॥

दूसरो तरफ़ :— **भैरवीं**

सितम पर सितम है जफ़ा पर जफ़ा है ।
बुतों को नहीं कुछ भी ख़ौफ़ ख़ुदा है ॥
न बरछी न ख़न्जर न नशतर चुभा है ।
किया जिस ने जख़मी वह तिरछी निगह है ॥

जो एक बोसा मांगा बिगड़ कर वो बोले ।
अरे मुर्ग़ बिसमिल क्यों आई क़ज़ा है ॥
हुवा फ़ैज़ अफ़सोस जिस पर फ़िदा है ।
वह ज़ालिम दग़ाबाज़ और बेवफ़ा है ॥

P. 8116. **भैरवीं** पी० ८११६

सब लोग जिधर वो हैं उधर देख रहे हैं ।
हम देखनेवालों की नज़र देख रहे हैं ॥
ख़त ग़ैर का पढ़ते थे जो पूछा तो वो बोले ।
एख़बार का परचा है ख़बर देख रहे हैं ॥
ले गई नाज़ों अदा दिल को हया से पैहले।
मार डाला मुझे ज़ालिम न क़ज़ा से पैहले ॥
गाना—बे कज़ा मारे गये इश्क़मे हम पिस पिस के
हाय ख़ूं बैहने लगा ज़ख़म से अब रिस रिस के
अरे आंख शरमाई हुई आप की कैहती है मुझे
रात फ़रमाइये तो माशूक़ बने किस किस के
अरे क्यों भला आये मुझे आपकी क़समों का यक़ीं
मैंने ख़त पकड़ लिये आये तुम्हें जिस जिस के
पकड़ी है चीज़ा आप की उस बुत से यूं कहा
बोली मैं इस जुर्म की तुम्हें दूं किया सज़ा
वह शोख़ बोला चीज़ है क्यामुझ को भी बता
ख़त को निकाला जेब से फिर मैंने यूं कहा
मैंने ख़त पकड़ लिये आये तुम्हें जिस जिस के
ख़ूने नाहक़ कि निशानी कहीं जाती है भला
हाथ धोये वह लाख दफ़े घिस घिस के

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

लैला के पीछे क़ैस भी दीवाना बन गया
अरे अपनी मिसाल आप ही पखाना बन गया
सादी भी नज़र पड़ गई उस बुत की जिस पै वह
मस्ते निगाहे नाज़ का मसताना बन गया
हर रोज़ शैख़ पीते हैं मसजिद में बैठ कर
अरे ख़ाना खुदा भी देखिये मैख़ाना बन गया
दिली जिगर तो दिया साक़ी बचा था वह सर
अरे वह भी निगाहे यार की अन्दाज़ बन गया

P. 8283. भैरवीं पो० ८२८३

शर—जो आके बाम पै की दिलरुबा ने जलवागरी
तो हर तरफ़ थी वहां आशिक़ों में धूम मची
किसी का फंस गया दिल और किसी की आंख लड़ी
मगर ज़बान पै हरएक के था शैर यही
न तेरी सूरत व सीरत न ख़ियालों ने किया
तुझको मग़रूर तेरे चाहने वालों ने किया
उनके दिल में मेरी अज़मत तो बहुत थी लेकिन
बदग़ुमां यार को अग़यार की चालों ने किया
न तेरी सूरत व सीरत न ख़यालों- - - - -
तेरी हर बात में है दूर का मतलब पिनहां
मुझको हैरां तेरे पेचीदः सवालों ने किया
न तेरी सूरतो सीरत न खिलालों ने किया

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

शेर—कल शैख़ को मैख़ाने में जाते पकड़ा
लमबी दाढ़ी हाथ में असा
ला हौल वला क़ूवत इल्ला बिल्ला :- - -
हम जामे मै की ख़ातिर तन मन को वार देगे (तौबा)
दसतार बेच देंगे कपड़े उतार देंगे
हम जामे मै कि ख़ातिर - - - - - - -
देते हो एक बोसा अफ़सोस कुछ तो सोचो
तुमने तो यह कहा था कल शब को चार देंगे

—:-०-:—

P. 8284. ग़ज़ल पी० ८२८४

हर किसी की आंख में हो हर किसी के दिल में तुम
हाय खूब हरजाई हो जो रहते हो दो मन्ज़ल में तुम
दोस्त और दुशमन भी यकसां हैं तुम्हारी नज़र में
मेरे भी दिल में तुम्हीं हो ग़ैर के भी दिल मे तुम
मुझ में रहकर मुझ से परदा यह अनोखी रस्म है
सामने आजावो गर रहते हो मेरे दिल में तुम
हर किसी की आंखे में हो हर किसी के दिल में तुम

दूसरी तरफ़ :— भजन

राम नाम तत सार। मेरे मन राम नाम तत सार - - -
जो नर भजै परम गत पावै होजावै भोजन पार।
मन राम नाम तत सार - - - - - - - - -

बिद्र छदामा जिन हित रखेयो। चिव प्रल्हाद धुरु पदवी अटल
द्रोपदी नज़र कीती लाज रख यदराई। नरसिंह है भरे दाम।
मन राम नाम तत
(जै हो जै हो माधो दी जै। मेरे बनसीधर की जै
मेरे कृष्णा कन्हैया की जै। मेरे मोरमुकुट की।
श्रो मेरे माधो कृष्णा की जै हो। जै मेरे नन्द लाल की।
मेरे बंसीधर की—हां राम नाम लेवई (वाह वई वाह)
मेरे मन राम नाम तत सार - - - -
मीरां माई गज हित भीनी ने दस्त पायो
प्रड़ने पुकार कीनी छोड़ प्रभु धायो
भगत कबीर और धन्ने ने ध्यान लायो
छद ने क़साई काने नाम देब को धायो
नाय को नाम अधार मन राम नाम तत सार - - - -
(जै हो जै हो जै हो मेरे माधो की)

P. 8521. पहाड़ी पी० ८५२१

आये दिन यार को हम ग़ैर के घर देखते हैं
अपने इन नामों का उलटा ही असर देखते हैं॥
काटकर आशिक जांबाज़ का सर देखते हैं।
अपनी शमशीर के फ़ल का वो समर देखते हैं॥ (वाह वा)
बाद मुद्दत के हमें वस्ल की शब हुई नसीब
आज बोले तो सही मुर्ग़ सहर देखते हैं
आये दिन यार को हम ग़ैर घर देखते हैं

दूसरी तरफ़ :— पीलू

अरे मेरे दिल को दिल न समझो मेरी जां को जां न समझो।
कोई और बोलता है मेरी ज़बां न समझो

हुवा जल के तूर ठन्डा मं अब तक छुलग़ रहा हूं
मेरी आह का धुवां है इसे आसमां न समझो
हम दिल जलों के नाले आंखें जला रहे हैं
वोह इसलिये ऐ यारो आंसू बहा रहे हैं
हम दिल जलों के - - - - - -
दिल में ख़याल था कि जायें न हम कहीं पर
पावों को इसलिये वोह मेंहदी लगा रहे हैं
हां हम दिल जलों के - - - - - -
पेशे ख़ुदा से पहले मैहशर में डर के देखो
क्या क्या ख़ुशामदों से मुझ को मना रहे हैं
हम दिल जलों के - - -

P. 8581. क़ौवाली सेंधड़ा पी० ८५८१

शेर। करम कर मेरे ख़ाजा ग़म की बदली सर प छाई है
मेरी बिगड़ी बनादे तूने लाखों की बनाई है
अपने ख़ाजा का चमन फूलते फलते देखा
उनके रौज़े प जो क़न्दील को जलते देखा
ख़ुल्दे बरींक्यों न कहूं अजमेर को हम बाग़े इरम
हमने रिज़्वां को जो रौज़े प मचलते देखा
तेरी धूम है फ़र्श से ता ब समा अरे छलतानुल हिन्द ग़रीब नेवाज़
हर सिम्त में बजता है डन्का तेरा, छलतानुल हिन्द ग़रीब नेवाज़
लाखों तेरे हिज्र के दीवाने, लाखों तेरी शमअ के परवाने
अरे हां शैदा लाखों और लाखों फ़िदा, छलतानुल
हिन्द ग़रीब नेवाज़

सदक़े अजमेर की रातों के, क़ुरबान तेरी प्यारी निगाहों के
सद सल लल लाह सद सल लल लाह, सुलतानुल हिन्द ग़रीब नेवाज़

दूसरी तरफ़ :— नात

शेर। ईसा के मोजिज़ों ने मुरदे जिला दिया हैं
अरे हज़रत के मोजिज़ों ने ईसा बनादिये हैं
वही नूर या मुस्तफ़ा बन के आये
हर एक दर्द दिल की दवा बन के आया (सुबहान अल्लाह)
शरीअत का डर गर न होता तो कह दूं
रसूले ख़ुदा ख़ुद ख़ुदा बनके आया
अरे सुना है कि यूसुफ प आशिक़ ज़ुलेख़ा
मगर हक़ का वोह दिलरुबा बनके आया
अरे सुना है कि मूसा कलीमे ख़ुदा थे
मोहम्मद हबीबे ख़ुदा बनके आया (सुबहान अल्लाह)
अरे किया याद मुशकिल में जब हमने उसको
तो फ़ोरन ही मुशकिल कुशा बनके आया
(सुबहान अल्लाह) वहा नूर या - - - -

——:-०-:——

P. 8638. ग़ज़ल पी० ८६३८

शेर। देखिये ग़म में तेरे जान रहे या न रहे
अरे हां एक शब भर तेरा मेहमान रहे या न रहे
वस्ल की रात है दिल खोलके मिल ले ऐ सनम
फिर ख़ुदा जाने येह सामान रहे या न रहे
तमन्नाये शबे वसलत है क़िसमत आज़मानी है

सुबू है मै है साक़ी है शराबे अरग़वानी है
हमीं पर हैं जफ़ाएं आपकी लेकिन रक़ीबों पर
इनायत है नेवाज़िश है करम है मेहरबानी है
तड़पता हूं यहां मैं और उन्हें वां बज़्मे दुशमन में
ख़ुशी है शादी है ऐशो तरब है शादमानी है
मेरा अहवाल वोह क़ासिद अगर पूछे तो कह देना
कि तप है दर्द सर है लाग़री है नातवानी है
ग़ज़ल को सरफ़राज़े ख़सता जां की सुनके वोह बोले
हिकायत है या क़िस्सा है फ़िसाना है कहानी है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

शेर। जब तक तो नज़र सीधी थी था तीर का जवाब
टेढ़ी जहां से होगई तलवार बनगई
मेरी आंख उस बुत से जबसे लड़ी है
लगी चश्म से आंसुवों की झड़ी है
दोआ देंगे एक बोसा दो राहे हक़ पर
ख़ुदा जाने क्या वक़्त है क्या घड़ी है
शेर। सौ न दो तुम दो ही दो बोसे वले एक ढब के दो
है मसल मशहूर "बिन मतलब के सौ मतलब के दो"
एक हमने कब लिया देने ही हों तो दो ही दो
आठ बोसों का हूं तालिब उस बुते ऐयाश का
सुब्ह के दो शाम के दो दिन के दो और शब के दो
दोआ देंगे एक बोसा दो राहे हक़ पर
ख़ोदा जाने क्या वक़्त है क्या घड़ी है

जब दिये दिन वोह ख़ुदा ने उड़ गये होश व हवास
रह गये तसवीर की मानिन्द लगे दीवार से
तुम्हीं ने तो कहा था कहिये दिल का मुद्दआ हम से
कहा जब मुद्दआये दिल तो हो बैठे ख़फ़ा हम से
अरे उन्हें तोहुस्न पर है नाज़ यूं परदा किया हम से
मगर तू ने छुपाया किसलिये यूं ऐ क़ज़ा हम से
अरे हां किया शिकवा जफ़ाओं का जो उन से फ़ैज़ ने रो कर (क्या)
(क्या मिस्टर फ़ैज़) तो यूं हंस कर कहा क्यों जी हमारा ही गिला हम से
(बहुत अच्छे वाह वाह) तो यूं हंस कर - - -

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी

रन्जो फुरक़त के सेवा कुछ तुझे मंज़ूर भी है
कभी झिड़की कभी गाली कभी चल दूर भी है
बद गुमानी न करो आज रहो घर मेरे
शब अन्धेरी भी है बादल भी है घर दूर भी है
नब्ज़ मेरी देख कर कहने लगा फिर यूं तबीब
तप भी है दर्द भी है दीदने नासूर भी है
ईद का दिन है गले आज तो मिल ले ज़ालिम
रस्मे दुनिया भी है मौक़ा भी है दस्तूर भी है
ख़राब हाल अदू कामयाब क्या होगा।
तुम्हारी बज़्म में वोह बारयाब क्या होगा॥
वोह ज़ुल्फ़ कहती है बल देख देख कर अपने।
जो हैं असीर उन्हें पेच ताब क्या होगा।
वोह भोले पन से यह कहत हैं बाद वायदे वसल

बता तो दीजिये उस दिन जनाब क्या होगा
ख़राब हाल अदू

———o———

P. 8965. ग़ज़ल पी० ८९६५

इक दिन जो बहरे फ़ातिहा तुर्बत पे मैं गया
फूलों की चादरे मैं चढ़ाता था जा बजा
थीं चन्द क़बरें वां पै बज़ुर्गों की जदीद
एक क़ब्र के सिरे पै बख़ूबी था यह लिख
(क्या) हाय किसी की याद ने क़ब्र में दिल रुला दिया
चैन से सो रहा था मैं-हाय किस ने मुझे जगा दिया—हाय किसी - - -
बालाये क़ब्र एक दरख़्त गुलाब था सर सब्ज़ी में न रखता था हम सर वह दूसरा
जब फूल उस दरख़्तका तुर्बत पै गिरता था-तब अंदरुन क़ब्रसे आती थी यहसदा
किस ने यह डाले फूल हैं ज़ोर से इस मज़ार पर
अरे ज़ख़मी था हाय दिल मेरा अरे किस ने इसे दुखा दिया-हाय किसी -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

यह बार बार देख ताज्जुब मुझे हुआ-बाशिन्द गान क़ब्र से पूछा यह माजरा
यह कौन से बज़ुर्ग थे क्या इन का नाम था-आती है जिन की क़ब्र से हरदम सदा
(क्या) इक मेरे दिल में बाग़ है-बाद फ़ना भी याद है (वह क्या)
बोसे दिये रक़ीब को अरे मुझे को अलग बिठा दिया
मालूम यह हुआ कि यह थे आशिक हर्ज़ी
ताज़ीस्त वस्ले याद मयस्सर हुवा नहीं
मरने के बाद क़ब्र पर आया वह मह जबीं
जब बर्गेगुल चढ़ाये तो आवाज़ यह सुनी

पूछा न जीते जो कभी दर्दे जिगर का माजरा
आये हैं मेरी क़ब्रपर जब कि मुझे मिटा दिया—हाय किसी - -

—-:-—

गोस्वामी बारायण

P. 8639. ग़ज़ल पी० ८६३६

नाज़ सीखो तो दिलबरी कर के—न कि जौरी सितम गरी करके
उन के रुख़ सारों के लिये बोसे—आज हम ने दिलबरी करके
ख़ूंके छींट दिये लिफ़ाफ़े पर—ख़तको भेजा रजिस्ट्री करके ख़तको - -
नाज़ सीखो - - - - -
बर्गे गुल रख दिया जनाज़े पर—लाश उन की हरी हरी कर के

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हम तो क़ुसुखार हुवे आंख डाल के
उन से तो कहो क्यों चले जोबन निकाल के
कहते हैं आशिक़ों से अन्दाज़ चाल के
रख दो क़दम क़दम पै कलेजा निकालके। हम तो क़ुसूखार
सुनन को सुनिये शौक़ से आशिक़ की दास्तान
लेकिन ज़रा संभाल के कलेजा संभाल के। हम तो - -
लिक्खी है पी के ख़ूने जिगर येह ग़ज़ल जलील
मिसरे नहीं हैं शैर के टुकड़े हैं लाल के

P. 8699. भजन पी० ८६९९

यार ख़ुद ग़रज़ ज़माना हैं किस स करिये प्यार
भाई कहे भुजा तुम मेरी मैं सच्चा ग़मख़ार
ज़र ज़मीन जन के झगड़ों पाप बना वही ख़ूंख़ार
मुक़द्दिमा उसी ने ठाना है - - - - - -
स्त्री कहे प्राण तुम मेरे जीवन के आधार
धन संतान हीन होने पर लगी करन बिवचार
हुवा अपना बेगाना हैं
यार ख़ुद ग़रज़ ज़माना है –

दूसरी तरफ़ :— भजन

रघुबीर पर अगर येह जीवन निसार होता
तो उस मनुष तन पर कुछ मुझ को प्यार होता
हे भाग तू ने मुझ को नहीं पुष्प भी बनाया
जो चरण पर चढ़ते चढ़ते मैं गले का हार होता
संसार को अभी तक मैंने असार माना
यदि नाथ मिल ही जाते कभी ग़म गुसार होता

P. 8877. भजन पी० ८८७७

बहार भूम अपनी देखने को बिहारी फिर एक बार आजा
बहुत समुद्र की सैर करली अब अपने मन्दिर में यार आजा
बिगड़ रहा है वतन येह तेरा उजड़ रहा है चमन यह तेरा
हर एक दिल को हर एक गुल को है तेरा बस इन्तिज़ार आजा

है जंग कुरुक्षेत्र आज घर घर अनेक अर्जुन से अब हैं कायर
यही समय है दे अपना लेकचर उगीता के लेकचरार आजा

दूसरी तरफ़ :— भजन

निर्बल के प्राण पुकार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे
स्वासों के स्वर झन्कार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे
आकाश हिमालय सागर में पृथ्वी पाताल चराचर में
यह मधुर बोल गुंजार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे
जब दया दृष्टी होजाती है सूखी खेती हरयाती है
इस आश प जिन उद्धार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे

—:o:—

हामिद हुसैन

P. 8163. ग़ज़ल पी० ८१६३

नज़र आयेगी फलक जब तेरे रुख़सारों की
आंख झुक जायेगी यूसुफ़ के खरीदारों की
हो कभी दिल की मुहब्बत न सितमगारों की नज़र
कशमकश निज़ाअ की और जानिये दर हैं आंखें
देखी जाती नहीं हालत तेरे बीमोंर की
झूम कर अबरे सियह चर्ख़ पर आया ज़ाहिद
देख मक़बूल हुआ हो गई मैं ख़ूवारों की
अबरुओं में है तेरे काठ ग़ज़ब की क़ातिल
धूम आलम में मची है इन्हीं तलवारों की

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

बुतो में भी है जलवा खास तेरी कबरियाई का
हरम में रह के दावा करते हैं काफ़िर ख़ुदाई का
चला आता है एक आलम तमाशा गाह मेहशर में
ये हंगामा है किस माशूक़ की जलवानुमाई का
दग़ा जब दिल ने की अपने जिसे पहलू में पाला था
भरोसा क्या भला हामिद किसी को आशनाई का

पण्डित लछमी दत्त

P. 8640. वीर अभिमन्यु भाग पहिला पी० ८६४०

वोर अभिमन्यु का चक्रव्यूह तोड़ने के वक्त, दिल का विचार।

इधर सेन तो इस तरह होने लगी तैयार
उधर अभिमन्यु वीर के दिल का सुनो विचार
हैं हैं दिल यह क्या कारण है क्यों पांव न आगे बढ़ता है
इस जंग रंग से प्रथम मुझे कुछ प्रेम रंग सा चढ़ता हैं
क्षत्रीधर्म कहता है मुझे जाव जाव संग्राम करो
मगर प्रेम कहता है प्रथम आवो आवो यह काम करो
जीने से पहले मरना है इसलिये येह काम बना जाओ
जाने से पहले एकबार उत्तरा को गले लगा जाओ
हैं नहीं नहीं यह ठीक नहीं अबतो रस वीर दिखाना है
उत्तरा से पहले वीरता को अब रन में गले लगाना है

इसलिये प्रेम अब हटजा तू क्यों वीर को कायर बनाता है
नामर्द मर्द से दूर हो बस तू नहीं मुझे अब भाता है
इतना कह चलने लगे अर्जुन सुत बलबीर
याद आगया प्रेम फिर कम्पत हुवा शरीर
बेशक मैं रन के करने को अब आगे क़दम बढ़ाता हूं
न जाने प्रेम के कारण क्यों पीछे ही खींचा आता हूं
यदि प्रेम " समागनी दुष्ठ प्रेम यूं सर प चढ़ता जायेगा
बस करके मुझको स्वर्ग छीनयेह नरक मुझे पहुंचायेगा

दूसरी तरफ़ः— महाभारत वीर अभिमान्यु भाग २

वीरता वीरता ठैर ज़रा इस प्रेम का तीन बनालूं मैं
तुझको भी आकर मिलता हूं उतरा को गले लगालूं मैं
प्रेम बेवश व्याकुल हुवे लौट पड़े फिर वीर
विजय जानकर प्रेम की चले उतरा तीर
देखा जा छुप द्वार प भेद का सब हाल
बेकल उतरा होरही जी में कर पिया खियाल
हे सखी बहुत दिन बीतगये स्वामी न युद्ध से आये हैं
यह नैन तरस कर बरस रहे हैं मैं कैसे लेख लिखाये हैं
पिया पिया का दिया हिया है पिया की याद न हो घर में
जिया जिया जो पिया बिना किया किया हिया जो रली घर में
हे बहन रयन मुझे डयन हुई भर नयन शयन नहीं करती हूं
कर बयन मैं सम चमन नहीं दिन रैन नयन ही भरती हूं
पी ही जी की जानम हारे कई दिन से युध सिधारे हैं
ए सजनी रजनी कलप हुई येह कैसे भाग हमारे हैं
इतने ही में आ गये अर्जुन सुत बलबीर

उठी देखकर हृष्ठ हुआ शरीर
सती पति सती को गति देख चरणों में शीस नवाती है
आओ शर्द के चांद यह कि फिर आसन दे बिठलाती है
हे नाथ युध की बातें सुन दिल घबराने लग जाता है
बिन आपके दर्शन पाये बिना यह नहीं ठेकाने आता है

—ः॰ः—

P. 8878. महाभरत आदि पर्व पांडओंकी बाल क्रीड़ा पी॰ ८८७८

दोहा—कुस पांडो खेल कर करते थे मन चाव
भिन्न भिन्न अपने सभी दिखलाते थे भाव
प्रथम किया दौड़ना शुरू दौड़ने में कुस हार गये
इतने में दर्शक बोल उठे यह बाज़ी पांडो मार गये
लो अब भी पांडो जीत गये यह लोग सभी बतलाने लगे
इसके बाद दूर्योधन ने फिर कुशती लड़नी ठैराई
एक भीम ने सभी रगड़ दिये इसमें भी फ़तरह नहीं पाई
(फिर दुर्योधन ने धोक से एक वज़न मंगाया और भीम से फ़रमाया)
जो इस वज़न को उठायेगा वोह सब से बली कहलायेगा
दोहा—भीम कपट न जानकर बोल उठा तित काल
लाओ चुका दो तुम्हीं मुझे क्या है वज़न मोहाल
मगर एक है शर्त मेरी यह तुम मिल पूरी कर लेना
जिस तरह मेरे सिर धरते ही इसी तरह सभी के धर देना
हंस करके कहा कुस दल ने जो हां हम भी तो उठायेंगे
मगर बात यह तब होगी जब आपको ज़िन्दा पायंगे
तभी भीम बलवान ने वज़न को लिया उठाय
दर्शकवृन्दों ने तभी जे जे दी बुलाय

यह ज का नारा सुनते ही सब कुरु दिल में जलने लगे
पांडुओं को बड़ाई मिलती देख अध-बुझी आग सम जलने लगे

दूसरी तरफ़ :— पांडुओंकी बाल क्रीड़ा भाग २

यह आप भी दिल में सोचें ज़रा कौन किसे देखकर राज़ी है
इस दोष ने भारत नष्ट किया दुनिया में बड़ी दग़ाबाज़ी है
वज़न उठाकर भीम ने कहा उनसे समझाय
अब बारी है आपकी लीजिये जल्द उठाय
(इसके बाद सुनते ही सारे कुरु भाग चले तब भीम ने कहा)
अच्छा अब भी क्या ग़म है मैं अभी कसर निकालता हूं
दल दलके दलन कर दलोंके दल में मसल मसल कर डालता हूं
तभी भीम ने भाग कुरुवों को जाकर पकड़ लिया
गरदनों से पकड़ हिलाने लगा पन्जों में पकड़कर जकड़ लिया
बल हैं बालों के बालों को बल लिया बल से बल वाले ने
बल कर बालन बाल दिया बलवान बली बल वालों ने
लड़ लड़ के लड़ाई लड़ाकों में लड़कों से लड़के लड़ने लगा
लटका लटका कर लाड लाड में सरों से शीश भिड़ाने लगा
किसी को पकड़ घसीटता था और किसी को मार ढकेलता था
फिर किसी को लप्पड़ लात मार पापड़ की तरह बेलता था
कुछ कुरु ले जान को चढ़े पेड़ पर जाय
नज़र पड़ गई भीम की पेड़ को दिया हिलाय
जिस समय हिलाया पौदे को उन सबके हाथ तब छूट गये
टप टप से फ़ौरन टपक पड़े सर नाक ज़मीं पर फूट गये
जब देखा दुष्ट दुरयोधन ने अब हम तो सारे मरने लगे
तो जान बचाने को अपनी; तारीफ़ भीम की करने लगे

———o———

महम्मद हुसैन

P. 300. भजन कहर्वा पी० ३००

हमारे मन भाई गंगा तोरी धारा-हमारे मन - - - -
मन में झूठ कपट हिरदे में राम दुहाई
कुल अपने का नास करन को झूठी गंगा उठाई-गंगा तोरी - - - -
हर भज नाम पर्वत तोड़ के बन के हरदुवार में आ
ऐसा ही एक जोगी कहियो बारह बरस गंगा जय में समाई-गंगा - - -
पहन कर डुबकी मैं गई और कुतियन लाये बुनहार
और का क्या दोष है जो हीन हमारो भाग

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं कहर्वा

मोरी नाव बही जाती टूट गई आसा
सूने बन्दर में बैठी अकेली न कोई संग न कोई साथी
मेरा दूल्हा ब्याहन चढ़ो ना कोई संग बराती—टूट गई - - -
एक तो थी भाली भोली दूजे नाहीं दिया
एक पुत्र मेरी गोदी होता वाही सहारे उमर कट जाती-टूट गई - - -

—:-o-:—

P. 302. काफ़ी कहर्वा पी० ३०२

तेरी बल जाय लम्बरदारी कुर्ती ना लाया टूलकी
भरा कटोरा दूध का मैं घोलूं तू पी
मैं बेटी रे जाट की लगी धर्म की धी-तेरी - - -

लम्बी सड़क लाहौर की रेलू पकड़ा जाय
तार तार में भेज के रे रेलू लीना छुटाय—तेरी - - -
रेलू हटः जाट का घर का लम्बरदार
सगी भतीजी बेच के रे उतरा गंगापार—तेरी - - -

दूसरी तरफ़ :— टेका कव्वाली

है बहारे बाग़ दुनियां चन्द रोज़-देख लो इसका तमाशा चन्द रोज़
ऐ मुसाफ़िर कूचका सामान कर-इस सरा में है बसेरा चन्द रोज़
मत सता ज़ालिम किसी बेजुर्म को-ज़ालिमों यह है ज़माना चन्द रोज़
पूछा लुक़्मां से जिया तू कितने रोज़-दस्त हैरत मल के बोले चन्द रोज़
है बहारे बाग़ दुनियां चन्द रोज़—

—:o:—

P. 303. मल्हार धोमा पी० ३०३

गर्ज गर्ज बरसन को आये मेहरवा बरसन लागे
एक तो दमक दमनी दमकें दूजे मोर पपीआ बोलन लागे
तीजे मोर पी पी कर थां गरज गरज बरसन लागे

दूसरी तरफ़ :— खम्माच पंजाबी

पिया के आवत की सुनत खबरिया
बात करत मिली नज़रिया—पिया - - - -
जो पिया हम से रूस रहे हैं छाय रही कारी बदरिया
पिया के आवन की सुनत खबरिया

—:o:—

P. 304. काफ़ी कहर्वा पी० ३०४

जोगी रूप बनायो रावन ने-ऐरे रामा-रावन ने - - - -
जोगी रूप बनायो रावन बन्द पती पर हाथ न लायो
सीता माता यूं उठ बोली तेरो काल जोगी हां ले आयो
एक बन ढूंडा सकल बन ढूंढा जल हर कहीं न पायो
प्यासकी चिन्ता नाहीं जल की प्यासका जोगी तेरे दवार आयो
रामचन्द्र बन खंड को सिधारे लछमन धोरे न पायो
गरूड़ पंख रखवाली जिनके मारी चोंच नीचे गिरायो
जान गर पै करवइया है वापे सिला कराई
हनुमान जो पायक उनके तेरी लंका फूंक जलायो
बोल सिया बर रामचन्द्रकी जय

दूसरी तरफ़ :— दादरा कहर्वा

जनाब वाला सुबह हो गई कोई गाना शुरू करियेगा
सुबह हो गई निकल आया तारा मुझे धार चला बनजारा
बिगड़ी का कोई संग न साथी क्या करे बैध्य बिचारा-मुझे - - -
कोयल हूके-सबा मिलता तो कह देता मेरे खोए हुए दिलसे
कि तेरी आरज़ू में ज़िन्दगी कटती है मुशकिल से-सुबह - - -
कोयल हूके-बन बन ढूंडूं वहो न मिला मेरा प्यारा
मुझे धार चला बनजारा—सुबह - - -

—:o:—

P. 305. माण्ड क़व्वाली पी० ३०५

नन्दी म्हारो जोबन बीतो जाय मनेला बेगा आयो रे
पीतम को चिठियां लिखूं रे तापर लिखूं बनाय

जबसे पिया परदेस सिधारे नैनन नीर हराय-मनेला० - - - -
कोठे ऊपर कोठरी और तिल धरे संवार
पायल बोली बाजनी रे बिछवे की झंकार-मनेला० - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

बुतोंमें क्यों यह शाने किब्रयाई होती जाती है
कि उनके क़ब्ज़े में सारी ख़ुदाई होती जाती है-बुतों - - -
मैं उन को प्यार करता हूं वह गाली हम को देते हैं
भलाई करता जाता हूं बुराई होतो जाती —बुतों - - -
वह मरते थे ख़फ़ा थे मुदत्तों से रूठ बैठे थे
ख़ुदा का शुक्र है अब तो रसाई होती जाती है
अगर मिलना नहीं मंज़ूर था आप कह देते
यह जो दर पर्दा हमसे तनासाई होती जाती है

———o———

P. 306. भैरवीं कहर्वा पी० ३०६

हां रे कटरिया नैनों ने मारी
जब देखूं जब ठंडी सड़क पै खड़ा हां रे जिया खड़ा
तेरी कटरिया नैनों ने मारी
जब देखूं जब रंडी के धोरे खड़ा बजावे सरंगिया
तोरी कटरिया नैनों ने मारी
जब देखूं जब लाल बाग़ में खड़ा दिखावे नरंगिया
तोरी कटरिया नैनों ने मारी

दूसरी तरफ़ :— दादरा कहर्वा

पिया जाओ जाओ हम से न बातें बनाओ
जा संग सैयां रात गंवाई होगा न तुम से निभाव
वाही को गर्वा लगावो—पिया जाओ - - - - - - -
पिया तुम हो हरजाई होगा न तुम से निभाव
पिया जाओ जाओ० - - - - - - - -

——(-:o:-)——

P. 307. दादरा कहर्वा पी० ३०७

नज़रिया मिलाय जावो ओ जानेवाले ग़ज़ब ढानेवाले
आप अगर आये थे आराम तो पाते जाते
कुछ मुसाफ़त की विपत अपनी बताते जाते
फिर चिंता मेरे दिल की घटाते जाते
तेग़ अवरूसे मेरी गर्दन पै चलाते जाते
अगर सब्र पेशे नज़र अपनी मिलते जाते
कभी छोड़ूं न तेरी ख़बरिया आजारे सेजरिया पै आजा—नज़रिया —

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

ख़बर ले ओ मसीहा तू कहां है
तेरा बीमार रूह बिसमिल नीम जां है —ख़बर - - -
लगा दी आग नालोंने फलक पर
फ़रिश्तों की ज़बां पर अलनमा है —ख़बर - - -
लिये फिरती है बुलबुल चोंच में गुल

शहीदे नाज़ की तुर्बत कहां है--ख़बर - - -
क़ब्र में रख कर मजनू ने कहा
बता मुलकिल कि मेरी लैला कहां है—ख़बर - - -

—:-o-:—

P. 310. बर्साती दादरा कहर्वा पी० ३१०

हमारी तो गागर भर गई कला तुम बर्सों बदरिया
नूर जहूर के बादर छाये रंगके पड़े फ़ुवारे--तुम बर्सों बदरिया - - -
दूसरी तरफ़ :—बर्साती दादरा क़हर्वा
ज़रा छतियों से छतियां मिलाजा मोरे सैयां ज़रा - - - -
जब से गये मेरी सुधहू न लीनी
सयां अब गले से लगा—जरा सैयां छतियां - - - - -
हुसेन कीयां तोरी हित से मिलाओ
अब तो करूंगी निसार-मोरे सैयां ज़रा छतियां - - - -

P. 322. ठुमरी छाया धीमातेताला पी० ३२२

मन सुन्दर ले गई मार पलक
हरक फ़लक जैसे खात ख़लक़ जैसे जियां की चोट मन में की फरक
जिया धारमन जमना की झलक
जैसे जोत चन्द्र की जात चमक-मार पलक-मन - - -
देखी भिन्नाया राज भवन जिसे देख चुका सारा आलम
मैं मरता हूं मेरी जान सनम तेरे हिज्र से आया है नाक में दम
एक बार तू मुझ पर कीजिये करम-हिज्र में रोया भी न कभी दस मन

दूसरी तरफ़ :— दादरा कहर्वा

तरकारी ले लो मालन जो आई बीकानेर से
सोयर बेचूं पालक बेचूं और बचूं चौलाई
भरे बज़ार में डंडो मारूं मैं मालन की जाई—तरकारी - - -
जयपुर बेचा जोधपुर बेचा और बेचा बीकानेर
गंगा राम ने टिकट कटाया जाना है अजमेर—तरकारी - - -

—:-o-:—

P 323. दादरा कहर्वा पी०३२३

अटारियों प गिरा री कबूतर आधी रात
सुन सुन री भावी हम तुम सोवें संग साथ
नहीं नहीं रे देवरा सैयां तो जागे सारी रात—अटारियों - - -
सुन सुन री भावी सैयां को दीजो मरवाय
नहीं नहीं रे देवरा सेजों की शोभा जाय—अटारियों - - -
सुन सुन री भावी हम तुम खावें संग साथ
नहीं नहीं रे देवरा छत्री धर्म घट जात—अटारियों - - -

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी ग़म की
हमारे दुशमनों को क्या पड़ी थी मेरे मातम की—यह - - -
संभालो अपने जोबन को छिपालो अपने महरम को
नहीं उन को ख़बर तुम को नज़र आती है आलमकी—यह - - - -
इधर तो हिचकियां आईं ऊधर तो दम में दम निकला
उसे हो रही ख़ुशयां वहां है मेरे मातम की—यह - - -

पहिले किस से छिपाया था अभी उलटा ज़माना है
बढ़ाया प्यार जब हम ने मोहब्बत आप ने कम की—यह - - -
न मिलियेगा न मिलियेगा कोई हम मर न जायेंगे
ख़ुदा का शुक्र है पहिले मोहब्बत आपने कम की—यह - - - -

——०——

P. 324. **काफ़ी क़व्वाली** पो० ३२४

शक्ल जब देखी तुम्हारी गश पर गश आने लगे
ज़ुल्फ़ खोली तो यह दिल पर सांप लहराने लगे—शक्ल - - -
बोसा मांगा था सितमगर ने यूं भी न कहा
फिर हमारे सामने तो हाथ फैलाने लगे—शक्ल - -
आहे नाले की मेरे तासीर तो अब देख लो
आस्मां हिलने लगा और जलजले आने लगे—शक्ल - - -
दीद भी गर टूटना था हश्र मुझ पर बेखता
बाद मुर्दन भी मेरी तुर्बत को ठुकराने लगे—शक्ल - - -
शैर बन्दीमें बशीर अपना नाम पैदा कर दिया
आप की भी यह ग़ज़ल हुर्मत व जला जाने लगे

दूसरी तरफ़ :— **रामायण अधा**

राम राम मैं कहने दिये राम राम में साफ़
संग तेरे चलते नहीं सब तेरे साथ
आगे चले बहुरि रघुराई-अंकुश मुख पर्वत पं राई
तेंने रात बचो हित सहित सुग्रीवा-आवत देखे अतुल बल खेवा
अति सम ही से अतुल हनुमाना पुरुष बगुल बल रूप बखाना
अधर बटेरो पै- - - - - - - -

——०——

P. 421. **ग़ज़ल भैरवीं** पी० ४२१

मेंहदी मलकर मेरा तुरके सितमईजाद आया
ख़ून था हाथ को मलता हुवा जल्लाद आया
जानो दरगाह में हन्गामा है दीवानों का
मेरी मन्नत के बढ़ाने को परीजाद आया—मेंहदी - - -
उम्र की मांगी दोआ हक़ से दोबारा हमने
जब दिया रन्ज बुतों ने तो ख़ुदा याद आया
गड़ गये सख़ ख़िज़ां दश्ते चमन में हर सू
जिस घड़ी बाग़ में वोह ग़ैरते शमशाद आया
रक्खा जन्नत में क़दम जबकि अली हैदर ने
दौड़े जिबरील यह कहकर मेरा हमज़ाद आया

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल काफ़ी दादरा**

इन बेवफ़ाइयों का तुम्हारी गिला नहीं
माशूक़ कौनसा नहीं जो बेवफ़ा नहीं
डरते नहीं हैं आप मेरी आहे सर्द से
अबतक किसी से आपको पाला पड़ा नहीं
मेरे क़रीबख़ाने की घर अपना जानिये
तकलीफ़ कीजिये तो तकल्लुफ़ ज़रा नहीं
जिस वक्त, मेरी आप अयादत को आयंगे
जब सुन चुके उतरता गले से ज़बां नहीं
ऐ तबीबा बांवरे जो तोंकी जानें सार
आज पतिंगे किन किये जो बिन देखे बिन तुम से

——:•:——

P. 424. मज़ाक़िया दादरा पी० ४२४

दीवाना किया जान क्या जादू डाला-सौदाई किया जान - - -
बोतल ब्रांडी तू पीले मेरी जनियां सीधे कचहरी को जाना हुआ
अरे उई उई दीवाना किया - - - -
चुन चुन कलियां में सेज बिछाई सोवत कचहरी को जाना हुआ
अरे उई उई दीवाना किया - - - -
सोनेके थलिया में भोजन परोसूं खाते कचहरी को जाना हुआ
अरे उई उई दीवाना किया - - - -

दूसरी तरफ़ :— मज़ाक़िया दादरा

ज़िन्दी रहूं गुण मानूं हकीम जी
मोरे अच्छे हकीमजी-प्यारे हकीम जी-गुण मानूं - - -
मूंग की दाल मुझ से खाई न जाये
बकरीका शोरबा बता दो हकीम जी-ज़िन्दी गुण - - - -
बकरीका शोरबा मोसे खाया न जाये
लड्डू पेड़े बता दो हकीम जो—ज़िन्दी गुण - - - - -
लड्डू पेड़े मोसे खाया न जावे
आम का अचार बता दो हकीम जी
(देखो साहबो आम का अचार मांगती है मेरी जान
सीधी खुदा गंज को चली जावेगी मेरी ख़ता कुछ नहीं है)
ज़िन्दी रहूं गुण मानूं हकीम जी।

—:०:—

P. 425. सारंग दादरा पी० ४२५

काहे मन मारो खड़ी रे गोरी अंगना
चांदी के बाज़ू बन्द सोने के कंघना
रेशम की चोली में खिंचे दोनों ज़ुबना—काहे मन मारे - -
देखो न हुओ महरम किसी का है, है
यह खेत बहिश्ती अभी गदराये हुए हैं—काहे मन मारो - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल दादरा

यूं तो तबाह किया दिले ख़ाने ख़राब ने
मजनूं बनाया तुझे तेरे ख़िज़ाब ने
आशिक करेंगे क्या तुम्हें रुसवा ग़लत है बात
रुसवा किया तुम्हीं को तुम्हारे शबाब ने —यूं तो - - -
रहमतसे तेरी हो गरे मैं ख़ुवार जिन्नती
गुनाह धो दिये जामे शराब ने—यूं तो - - -
तुबत पै मेरी आये तो झुंझला के यूं कहा
बदनाम कर दिया इस हो ख़ाने ख़राब ने—यूं तो - - -

—:०:—

P. 426. ठुमरी पी० ४२६

एक चतुर नार कर कर सिंगार
एक चन्द्र बदन चदां की किरण खड़ी अपने द्वार
पिया निकसो जात भादों की बरन हंस मोरा मन लीना
एक चतुर नार - - - एक - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी काफ़ी

मोरी बैयां न पकड़ गिरधारी श्याम
तुम तो बैठे सौतन के संगाथी
अब क्या ग़र्ज़ तिहारो श्याम—मोरी - - -

P. 891. रसिया पो० ८६१

अरे रांड के रहूं बगल में सोय-तेरो मन मैलो नहीं होय
ता तो रे पानी धरो ततैड़ो-अरे रांडके पहिले न्हुवा देऊं तोय-तेरो - -
ताती तांती करी फुलकियां अरे रांड के पहिले जिमा देऊं तोय-तेरो - -
सोने का गड़ुआ गंगाजल पानी
अरे रांड के पहिले पियादेऊं तोय—तेरो - - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी काफ़ी

गोना कर दे बाप महा पापी—गोना कर दे - -
मेरी री संग की दो दो खिलावें
मेरी रीती गोद फटे छाती—गोना कर दे - - -

P. 905. बिहाग पो० ६०५

साक़िया कब के हैं पियासे दे पिला थोड़ीसी
मान दिलबर मर्दं ख़ुदा थोड़ी सी—साक़ियां - - -
आंखों भी इस परदार हैं तेरी जफ़ाकारी की
बेवफ़ा तुझ में गर होते वफ़ा थोड़ी सी—साक़ियां - - -
लबे जां बख़्श के बोसे पै सना है अकसीर
तेरे बीमार की कितनी है दवा थोड़ी सी—साक़ियां - - -

ज़ुल्फ़ छूने से तो फांसी न हमें दो साहब
ज़ुल्म थोड़ा सा हो ज़ेबा है सज़ा थोड़ी सी—साक़ियां - - -
तबीब मान आये न फ़िदा जन्नत
तेरे कूचे में असल आये अजा थोड़ी सी—साकियां - - -

दूसरी तरफ़ :— बिहाग

बालम तोरे झगड़े में रैन गई
कहां गया चन्दा कहां गये तारे यूंही भोर भई
बालम तोरे झगड़े में रैन गई

P. 911. एमन पो० ६११

पीत का वायदा करके पियाने प्रीत निभाना छोड़ दिया
मेहरकी अंखियां फेर लईं दम दम में नाशाद किया—पीत - - -
किस जाह से पहिले मैं हो सखा मनको धीर मोहे दिया
जाय बसे किस देशमें जाय विदेशका नासार लिया—पीत - - -
ज़रा दर्शन दिखाकर बोल सनम तेरे बोलों वारूं तन मन
तेरे इश्क में खोया सब जोबन और अपना बेगाना छोड़ दिया—पीत

दूसरी तरफ़ :— भुपाली

मुझे क्या किया तूने बता तो परी मेरा चैन गया मेरी नींद गई
यह क्या किया तूने बता तो परी मेरा चैन गया मेरी नींद गई
कभी तुमने न मुझ से कहा के यहां मेरा नाम है यह मेरा घर है वहां
मेरी उम्र तलाश में सारी गई मेरा चैन गया मेरी नीन्द गई-मुझे - -
मियां मिलना है मुझ से आकर मिलो नहीं बहरे ख़ुदा मुझे क़ब्ज़ करो
छूटे रंजो बला से यह जान मेरी मेरा चैन गया मेरी नीन्द गई-मुझे - - - -

हुआ तुझ पै फ़िदा दिलोजान से सनम मुझ तेरी क़सम तेरी जां को क़सम
तेरे मिलनेकी आशा हिज्र ही मेरा चैन गया मेरी नीन्द गई

P. 1695. दादरा पो० १६६५

चली जा री धोबनिया मटकती
तेरे सिर पर हांडी ग़ज़ब की
तेरे पैरों में छागल छलकती—चली - - -
आगे कन्हैया पीछी धोबनिया
चाल दिखावे लचकती—चली - - -
धोबन की तोफ़ती में दिल घट रहा है
वह पुन पुन कर रही है यहां दिल कलप रहा है
इस्तीरी कर के कपड़ों को बांधा बाज़ारों में फिरे भटकती—चली - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

रंडी नहीं मिसी की यार ओ घर बार लुटाने वाले
ओ घर बार लुटाने वाले बीबी आंखें चलाने वाले—रंडी - - -
इनका झूटा है सब प्यार इन का खोटा हैं व्यवहार
उस में नफ़ो नहीं है यार उसको देते हाथ उठाले—रंडी - - - -
उन के नखरे उन की चाल उन के चिकने चिकने गाल
उन के लम्बे लम्बे बाल आवत कर बेला लाले—रंडी - -
उनकी बातों में मत जाना उन पर दिलको मत ललचाना
उन की सोहबत से घबराना वापिस आजा जाने वाले—रंडी - -
जबतक पैसा तबतक रंडी जबतक बिलसे तबतक मंडी
वह तो खा खा हुई मसटंडी तुम पर आने लगे तिवाले—रंडी - - -

जबकि रुक गई घर की मोरी मांगों भीख करो या चोरी
रंडी खूब करी चटोरी अब तो हवा जेल की खाले—रंडी - -

P. 2191. रसिया (मज़ाक़िया) पो० २१९१

काहू दिन चल जावेगी तेरे जोबन प तलवार-काहू - - - -
सोने का गुड़वा गंगाजल पानी अरे रांडके पीके सोना यार-काहू
सोने की थाली भोजन परोसू -अरे रांडके खाके सोना यार-काहू
कन चुन कालियां सेज बिछाई—अरे रांडके सोके सोना यार-काहू - - -

दूसरो तरफ़ :— रसिया (मज़ाक़िया)

मैं चने मटर की खालूंगी के ले चल जमना पार
जो तेरे घर में नाज न होगा, अरे रांड के बनिया यार लगालूंगी
लेचल जमना पार—में चने मटर को - - -
जो तेरे घरमें ज़ेवर न होगा, अरे रांड के छुनखा यार लगालूंगी
लेचल जमना पार—में चने मटर की - - -
जो तेरे घरमें कपड़ा न होगा—अरे रांडके बजजवा यार लगालूंगी
लेचल जमना पार—में चने मटर की - - -
जो तेरे घरमें ग्रामोफ़ोन न होगा—अरे रांडके ग्रामोफ़ोन झट लगालूंगी
लेचल जमना पार—में चने मटर की - - -

—:०:—

P. 2192. मगंका गाना पो० २१९२

पिलादे जानी यारों को भंगिया पिला
चांदी की कूंडी सोने का सोटा रगड़े पर रगड़ा लगा—लगादे......पिलादे

दमड़ी की भंगिया दमड़ी की मिर्च रगड़े पर रगड़ा लगा-लगादे...पिलादे...
चुन चुन कलियां मैं सेजें बिछाई-सेजों प झगड़ा मिचा-मिचादे...पिलादे...

दूसरी तरफ़ :— दादरा मज़ाकिया

सैयां इंगलिश पढ़ा दो यह झगड़ा मिटे
यह बोली गंवारी हजारी मिटे—सैयां इंगलिश पढ़ादो - - -
गवन सिलवादो चोली मगंवादो लहंगा पहनने का झगड़ा मिटे—सैया...
बगंला छवादो खिड़की लगा दो—छिपने छिपानेको झगड़ा मिटे—सैयां...
मोटर मंगवादो लैनडो खिचवादो-पुराने फ़ैशन का झगड़ा मिटे—सैयां...
दाया रखादो बैरा बुलादो खाने खिलाने का झगड़ा मिटे - सैयां......

—:०:—

P. 2318. दादरा काफ़ी पी० २३१८

बलम तुम हो गयें जेंटिलमैन
पान भी खाया सिगरट भी पीया बोले गिट पिटमैन - बलम - - - -
बाल बच्चे मेरे भूखे मरत है फ़ाक़ से बेचैन—बलम - - -
कोट भी पहना पतलून भी पहनी चशमों से ढक लिये नैन - बलम- - -
पान भी खाया - - - - बोले - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा खम्माच

न जा मोरी मुनिया माछर के पढ़ने न जा
जब मेरी मुनिया पांच बरस की माछर के मांगे किताब
किताब मोरी मुनिया माछर के पढने नजा-नजा - - - - - -
जब मेरी मुनिया पंद्रह बरस की माछर से मांगे हज़ार

हज़ार मोरी मुनिया माछर के पढ़ने न जा-न जा - - - - -
जब मोरी मुनिया का बियाह हुआ है माछर ने खाई पिछाड़
पिछाड़ मोरी मुनिया माछर के पढ़ने न जा-न जा- - - - - -

—०—

P. 4149. दादरा (मज़ाकिया) पी० ४१४६

बिछादे मोरी जान कमरे में शतरंजी
एक छबड़ा मैंने गाजर मगाई खागई दोनों रंडी · बिछादे- ·
एक मटका मैंने दूध मंगाया पीगई दोनों रंडी—। बिछादे
चुन चुन कालियां नै सेजे बिछाई सोगई दोनों रंडी—। बिछादे

दूसरी तरफ़ :— दादरा मज़ाकिया

बलब दरिया कामैं रहने वाला
चुन चुन कालियां में लेज बिछाई में तो मिनटों का
सोनेवाला—बलब- - - - - - -
सोने की थाली में भोजन ररोसा में तो एक फुलके का
खानेवाला—बलब- - - - - - -
देख दरिया की तरफ़ दिल को लहरआती है
कि शतिये उम्र की अब तो बही जाती है—बलब

—०—

P. 4293. मज़ाकिया पी० ४२९३

अरे हां खटमल सोने दें
मेरे हाथ में कटोरा समधन को लेजा घोड़ा—खटमल - - -
मेरे हाथ में नरंगी समधन को ले जाये फ़िरंगी—खटमल - - -

मेरे हाथ में पसा समधन को ले जाये अच्छासा मैंसा—समधन
मेरे हाथ में पाली समधन को ले जाये अच्छासा हालो—समधन

दूसरी तरफ़ :— मज़ाक़िया

रात नन्दोइया बुलाय गये हां जी
सयां हमारे सांवरे चक्के मुर्दार रात हुबकयोंसे बचगई हां जी—रात
ननद हमारी बीजरी रे चमके चारों देश-रात किसी छैला प
पड़गई हां जी—रात - - - - - - - - -
सयां हमारे मोटे थेरे मोटी उनकी तौंद-रात लुड़कैयों से
बचगई हां जी रात - - - - -
सैयां हमारे हिजड़े हिजड़ी उनकी क़ौम-रात ताथैयों
से बचगई हां जी—रात- - - -

——:o:——

P. 4444. दादरा मज़ाक़िया पी० ४४४४

गौना करदे री मैया कि मेरी उमारीया बोती जाय
छोटे छोटे नींबवा गये हैं अब गदराय
प्रेम रस कौ चाखलो मेरा जूबना लहरे खाय—गौना - - -
एक तो बाला जोबना दूजे उम्र जवान
अब मैं सियानी हो गई और पहिले थी नादान—गौना - -
बाल पन में भौरी पड़ गई गई न मैं ससुराल
या तो गौना करदें मेरा नहीं तो कहें गे छिनाल—गौना
मोहम्मद हुसेन की मानोरे भाई तिरिय चातुर जान
गोना करदो मन मूरख को रहे न कुछ अरमान—गोना - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा मज़ाक़िया

तेरी छुट जाय ठेकेदारी साड़ी न लाया फूल की तेरी लुट जाये
ठेकेदारी - - - -
मैं तो थी मन मोहनी तू मूरख लम्बा छेल
रंडी आपां के लिये तू चला जान के टेर—तेरी- - - - -
मलमल ख़ासा डोरिका रे चिकन किनारी दार
रंडी आपां मन बसो फिर हमें क्यों ललचाय—तेरी
मैं तेरी माशूक़ थी और तू रंडी का यार
सारी शेख़ी देख ली तेरी सूरत प फिटकार
मोहम्मद हुसेन की बात को फेरो न पांचो आप
जब बूढ़ हो जाओगे तो रंडी कहेगी बाप—तेरी - - -

P. 4564. ग़ज़ल क़ौवाली पी० ४५६४

यह तो बताओ कबतक दिल की ख़ुशी न होगी
यह आरज़ू हमारी पूरी कभी न होगी
साक़ी के दम व ख़म से रौनक़ है मंकदे की
जब तूही ख़ुद न होगा दिलबस्तगी न होगी
परवाह नहीं न आये मैयत पर आशिक़ों की
देने को साथ अपना क्या बेकसी न होगी
आयेगा चैन दिलको किस तरह मेरे साक़ी
मैं से तेरी सुराही जबतक भरी न होगी
यह तो बताओ - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़ौवाली

ज़रा तो वस्ल के वादे प लब हिला देना
मसीह बनके मेरे दर्द दवा देना
और है न जलने को कोई तुम्हारी मैहफ़िल में
हुज़ूर शमअ को भी बज़म से हटा देना
हिलाल ईद को दावा है चर्ख़ गरदूं पर
तुम अपने पांव का नाख़ुन ज़रा दिखा देना
हमारा काम है बिगड़ी हुई बना देना
ज़रा तो वस्ल - - -

—:-०-:—

P. 4979. होली पी० ४६७६

रात जौबना की चोरी भई—रात.........
यह जोवना मेरे मैके के पाले छसरे में चोरी भई
हे भई रे रात छसरे में चोरी भई - रात.........
यह जोबना मेरे भोले भाले मियां ने तोड़ लई
भलारे मेरे मियां ने तोड़लई—रात.........

दूसरी तरफ़ :— होली

कैसी होरी खिलाई श्याम मोहे चोरी लगाई—कैसी - - -
खेलत गेंदगिरी जमनामें—मैं तेरी गेंद चुराई
हाथ डालो अंगिया बिच देखों एक गई दो पाई कैसी......
क़ुदरत ख़ुदा की देखिये पिस्तान यारमें
बबूदं फाड़ तेग़ काहै लगा है अनारमें

—— :-०-:——

P. 6718. क़व्वाली पी० ६७१८

दिलवर से जुदा होना या दिल को जुदा करना
किस फ़िक्र में बैठा हूं आख़िर मुझे क्या करना
जाते हो तो घर जाओ पर वायदा यह कर जाओ
जब याद हमारी हो मिलने की दुआ करना
अपना तो यह शेवा है क़दमों में झुका दें सर
यह काम तुम्हारा है सर तन से जुदा करना
मैं पहिले ही कहता था दम मुझ को न दे साक़ी
बे ख़ुद ही किया आख़िर एक जाम पिला करना

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी खम्माच

पिया बिन नाहीं आवत चैन-का से कहूं जी के बैन
याद आवत है तुम्हारे दरस की-पिया बिन नाहीं आवत - - -

P. 6960. कोरस नाच पी० ६९६०

बुये हर गुल में परवरदिगार है
पत्ते पत्ते पै तेरी बहार है-बुये हर गुल में- - - -
मैंने दुनिया में आकर के कुछ न किया
जो किया था सो वह भी गुनाह ही किया
मेर सरपर गुनाहों का बार है-बुये हर - - -
दिये मस्ताना ठोकर से मुर्दे जिला
खाल खींची बदन से वह दुर्रे लगा
ख़ून की छूटी बदन से फ़ुवार है-बुये - - -
रोज़े महशर में पूछेगा हम से ख़ुदा

सर झुका कर कहूँगा कि सुनिये खुदा
तेरा बन्दा बहुत गुनहगार है-बुये - - -

दूसरी तरफ़ :— सोरस नाच

ख़राब आइनों पर जला देने वाले
दिलों की कदूरत मिटा देने वाले
मैं आसी हूँ मुझ पर भी हो चश्मे रहमत
गुनहगार को बख़्शवा देने वाले
खुदारा इधर भी निगाहे करम हो-खुदा की दौलत लुटा देने वाले
ग़रीबों की बिगड़ी बना देने वाले-
मै आसी - - जहन्नुम को जिन्नत वना देने वाले

P. 7101. **भंगड स्वाना** पी० ७१०१

यारो भंग का लोटा अहा हा हा ! अ मैं बहुत ही हुआ मोटा आहा हा !?
भंग पी भंग के पीने में यह नफ़ा-
और अंखियां लाल और दिल सफ़ा अहा हा हा ??
लो ? गाना सुनो भंगका
हां किसी ने तुझे भंग पिलाई तेरी आंखों में लाली छाई - - -
जो इस भंग को घोटन बैठे होने लगी पीना पाई-हांजी किसी - - -
यारो टांगे ऊपर को उठाओ-आसमान गिरा आता है
मेरे सर फिरता है अरा रा रा रा-यारो जाने में क्या बक रहा हूँ
लो ? गाना सुन लो
आंखों में लाली छाई-किसी ने तुझे भंग पिलाई

दूसरी तरफ़ :— रेलवे इस्टेशन

गाड़ी छोड़ा--जमादार हे ! ! ! भला ! ! !
अरे गाड़ी आता है गाड़ी आता है (घंटकी टनटन, सीटी, रेलको आ)
अरी ओ हुसीना ! हां हां क्या कहते हो ?
अरे मेरी जान तुझको देखके मुझे आया पसीना
जरा युसुफ़ को संभालना, मैं टिकिट लेके आता हूँ, मेरी जान
है नगीना-ज़रा मिला सीने से सीना
ले ! गाना सुन ले
धुएं की गाड़ी उड़ाये लिये जाय
ऐसा फ़िरंगवा, पैसे का लोभी, धुएं को गाड़ी - -
हट जा ! गाड़ी आगया, गाड़ी आगया
पान गिलौरी-दांतों का सुर्मा-आंखों की मिस्सी-पूरी कचौरी
अरे यारो देखो बहुत संभाल के जाना ख़त भेजना ज़रूर
लो गाना सुनो
हां ? धुएं की गाड़ी उड़ाये लिये जाय
गाड़ी जाता है (सीटी, घंटी' अंजनकी आवाज़)
भाई ख़त भेजना।
ऐसा फ़िरंगी - - - धुएं की गाड़ी - - - -
हां हिन्दू मुसलमान-भंगी
चमार को एक ही में सब को बिठाये लिये जाये
धुएं की गाड़ी उड़ाये लिये जाये
देहली शहर से चले जो मुसाफिर बम्बई कलकत्ता भगाये लिये जाये
धुएं को गाड़ी - - सलामालेक—भाई ख़त लिखना—जाते हैं

---

w

P. 7214. भजन माण्ड पी० ७२१४

आज गोकुल में कन्हैया का जशन होता है
बांसुरी बजती और राम भजन होता है
ले गयो चीर मुरारी री मैं कैसे करूं
चीर चीर हम जब री देंगे जल से निकस जाओ न्यारी-मैं- - - -
राधा जी के बदन पर बसें सीस दस चोर
दस गूगल दस हंस हैं जो दस चातुर दस मोर
ले गयो चीर मुरारी री मैं कैसे करूं-चीर - - मैं - -
तुलसी जग में आन के जो सब से मिलयो धाय
ना जानूं किस भेष में नारायण मिल जाय

दूसरी तरफ़ :— आसा

अब न बने गिरधारी हमारी तोरी-अब न - -
शाल दुशाले आप ही तो ओढ़ें हमें उढ़ाई काली कम्बली रे
हमारी तोरी अब न - - - - - - - -
लाला लालच मत करो मत राखो समझाय
नैन मिले लाली रहे जो रंग मिलो रंगा जाय-अब न- - - -

P. 7239. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ७२३९

तुम्हारे हिज्र में दिल को क़रार कैसे हो
मरीज़े रंजो अलम हुशियार कैसे हो
जिधर निगाह उठाई उधर तमाम किया
तुम्हारे क़त्ल का कहिये शुमार कैसे हो

जबां दे के भी वायदे वफ़ा नहीं करते
तुम्हारे वायदों का फिर एयतबार कैसे हो
दिखा के ख़ंजरे अबरू वह हंस के कहते हैं
क़ज़ा से डरते हो तुम जां निसार कैसे हो
तुम्हारे हिज्र में दिल को क़रार कैसे हो

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

तबस्सुम से वहां ख़ाली नमकदां होते जाते हैं
यहां ज़ख़्म जिगर रस रस के गरयां होते जाते हैं
नहीं बे वजह ताबीज़ो का रहना उन के सीने पर
यह फ़ितना उठते जोबन के निगहबान होते जाते हैं
ख़ुदा के वास्ते पत्थर न हो जाना ज़वां हो कर
अयां सीने प दो लाल बद ख़शां होते जाते हैं
मना कर दो रक़ीबों से न लेवें मांग का बोसा
हमारी मांग पहिली है अगर लेंगे तो हम लेंगे
लबे नाज़ुक का बोसा ले लिया तो हंस के यूं बोले
कहो अब तो तुम्हारे पूरे अरमां होते जाते हैं—तबस्सुम - - - -

P. 7382. भैरवीं पी० ७३८२

मोहे जल्दी मदीने बुलालो नबी
तोरे दरस की आसा लगी मोहे जल्दी मदीने बुलालो नबी
नया हमारी अधर में डोले नया को पार लगाओ नबी
हां हां पार लगाओ नबी अरे मेरे प्यारे नबी-नैया को- - - -
हां जल्दी मदीने बुलालो नबी-हां मोहे जल्दी मदीने - -
ख़्वाज पिया तोरी बिनती करत हूं मेरी बिगड़ी बात बनालो नबी

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

जमाले यार हर सु जलवा गर हो-अरे हां जमाले- - -
किसका किस तरह दिलमें गुज़र हो-जमाले यार - -
हमारी बेकली को कौन जाने- किसी के दर्द की किसको ख़बर हो
अरे हां किसी के दर्द की- - जमाल यार हर- -
हमारी बेकली- - किसी के - - जमाले - - -



P. 7600. बढ़हंस पी० ७६००

वारी जऊं जी न्हैया तो पै वारना जी-वारी जाऊं - - -
जब से जन्म लियो हर ब्रज में तब से दुख हेरे हैं सब के
तख़्त वरन बोलानी भूलें पालना अरे वाह वाह झूलें - - वारी - -
राधा जीके बन पर जो बीस तीस दस चोर
दस गोकुल दस हंस हैं जो दस चातुर दस मोर-वारी जाऊं - - - - -
जब से जन्म - - तख़्त वरन - - वारी - -

दूसरी तरफ़ :— बागेश्री

काहे तू मोसे करत छेड़ बेर बेर पनघट पर नित नित नघ घेर घेर काहे - -
कहा मोरा मान बे घर मान कुमार शाम
बेग मोहे नाहीं तोहे एक पलमें निकालूंगी तोरी हेर फेर-काहे - -
छनो गुसैयां शाह जी जो छोड़ जगत की रीत
अपना प्रेम लुटाय के जो दर दर मांगे भीक-काहे - - -

———:-:-:———

P. 7720. ज़िला पो० ७७२०

दिखादे अपनी ज़रा तेरी जानिसार हूं मैं
झलक वह नूर की आशफ़ता बे क़रार हूं मैं
खड़ा है देर से देखो तो उठा कर पर्दा
फ़क़ीर दर प तेरे तालिबे दीदार हूं मैं
उठा के दोनों तेरी रख के बैठ जाऊंगा
सर प नालीन कहूंगा कि गुनहगार हूं मैं
तमाम उम्र मैं मरूंगा तेरी चौखट पर
सर अपना ऐ शमय रू क्योंकि गुनहगार हूं मैं
ख़ूब करवाया जगत ने हर एक से करवा
रुसवा पहिले ही से लो कूचये बाज़ार में हूं मैं

दूसरो तरफ़ :— पहाड़ी

प्यारा प्यारा बना तेरा जोबना-प्यारा बना-दिलारा बना प्यारा - -
एक दुख्तर कुम्हारन बेचे घड़ा घड़ी से
दिल चाक होके घुमा कितने बड़े हैं लोटे-प्यारा - - -
एक दुख्तर बज़ाज़न बूदों में फिरते फिरते
आबे रवां में जाकर छींटें लगी उड़ाने-प्यारा - -
कुंजरी की छोकरी को मैं देख उस को छींका
वह झुन झुना के बोली सर की दस्तार लूंगी-प्यारा - -
मिसाले ताल तम्बूरा अलग हम सब से रहते हैं
ज़रा ज़रा छेड़े से छेड़ते हैं मिलाले जिस का जी चाहे-प्यारा - -



P. 7860. मज़ाक़िया पी० ७८६०

तम्बाकू नहीं है कैसे कटैगी सारी रात - - -
यह तम्बाकू मोहनी जिस के चौड़े चौड़े पात
लाख टके का आदमी खड़ा पसारे हाथ-तम्बाकू - - - -
अरे हुक्क़ा बोले गुड़न गुड़न और चिलम करे चतुराई
तेरी बहन का नाई मारूं अरे चिलम कहां चिपकाई-अरे तम्बाकू - -
सावन भादों की रैन अंधेरी बंधी भैंस खुल जाय
जब छतियां से छतियां लागी भरी चिलम उड़ जाय-तम्बाकू - - -

दूसरी तरफ़ :— मज़ाक़िया

बीबी मैंडकी री तू तो पानी में की रानी
अंगला नाचे बंगला नाचे नाचे बोतल ख़ाना
पिल पिली की टोपी नाचे मेम साहब का जामा-बीबी - -
देख दरिया की तरफ़ दिल को लहर आती है
हां किशतिये उम्र की अफ़सोस बही जाती है
न इसे संग लगे न इसे पास लगे
किशतिये उम्र की अफ़सोस किस घाट लगी है
कौवा तेरा भाई भतीजा चील तेरी देवरानी
बगला तेरा छोटा देवर देख देख तरसानी-बीबी - - -

P. 8040. नात क़ौवाली पी० ८०४०

न हो क्यों कर अफ़ज़ल हमारा मोहम्मद
कि है अपने प्यारे का प्यारा मोहम्मद-न हो - -
नहीं किशतिये नूह भी डूब जाती

न देते जो उस को सहारा मोहम्मद-न हो - -
यही बात आशिक़ ने माशूक़ से की
नहीं तेरी फ़ुर्क़त गवारा मोहम्मद-न हो - - -
बुलालो मदीने में फिर दाग़ को तुम

दूसरी तरफ़ :— खम्माच

नहीं हिन्द मै अब गुज़ारा मोहम्मद-न तो - - -
नज़र नीचे किये चुपके खड़े है
अरे हां किसी से आज वह शायद लड़े है-नज़र - - -
हां परी की देखी हैं हां रे जिस दिन से सूरत
हां लिये दिल हाथ में लाखों खड़े हैं-नज़र - - -
नज़र आये किसी गुल रू की आरिज़
चमन में फूल मुर्झाये खड़े हैं
कोई माशूक़ से कब रूठता है
हां कफ़न में मुंह छिपाये क्यों पड़े हैं-नज़र - - -
हां रक़ीबों से न कहना अरे हाल दिल का
अरे हां छलक जायेंगे वह ऊछले खड़े हैं-नज़र - - -

P. 8287. दादरा पी० ८२८७

शर—दिल्लगी समझे थे हम पहले लगना दिल का
आह ! सोने में लगा फिर न ठिकाना दिल का
मेरा दिल तो दिवाना तेरे लिये - अरे जनियां मेरा दिल - -
सोने की थाली में भोजन परोसों - खाना खिलाना तेरे लिये
मेरा दिल तो दिवाना तेरे लिये - - -

चुन चुन कलियां सेज बिछाती, सेजोंका सोना तेरे लिये
मेरा दिल तो दिवाना तेरे लिये - - -
सोने का गड़वा गंगा जल पानी, पीना पिलाना तेरे लिये
मेरा दिल तो दिवाना तेरे लिये - - -

दूसरी तरफ़ :— होली कहरवा

होरी है यारो खेलो खेलो माशूक़ के साथ होरी खेलो
अरे मैं कैसे होरी खेलूंगी सांवरिया के सङ्ग रङ्ग मैं कैसे - -
लेहंगा तेरा घूम घुमेला चोली तेरी तङ्ग
ख़सम तुम्हारे बड़े निखट्ट चलो हमारे सङ्ग
अरे जनियां हमारे सङ्ग। (अरे चल मेरे साथ तेरा ख़सम तो
बुड्ढा है क्यों कैसी कही) ख़सम तुम्हारे बड़े - -
कोरे कोरे कलस मङ्गायों जामें घोल रङ्ग
भर पिचकारी मुंह पर मारो चोली होगई तङ्ग
रङ्ग मैं कैसे। अरे वाह री रङ्ग मैं कसे - -
तवला बाजे सरंगी बाजे और बाजे मिरदङ्ग
कान्हा जी को मुरली बाजे राधा जी के सङ्ग
रङ्ग मैं कैसे अरे वाह री रंग मैं कैसे - -
या बहरे से कोई मत बोलेव पिया ने पीली भंग
अरे मार मार के उलटो कर दी थल हो गई तङ्ग
मैं कैसे होरी खेलूंगी सांवरिया के सङ्ग

—(०)—

पण्डित नत्थू लाल

P. 6514. प्रभात्या पी० ६५१४

क्यों सोया ग़फ़लत का भाता जागोरे नर जागरे
क्या जागे कोई जोगी भोगी क्या जागे कोई चोर रे
क्या जागे कोई संत प्यारा लगी रामसे डोर रे-क्यों - - - - - -
ऐस जागन जाग प्यारे जैसीतों पहलाद रे
तों को दीनी चलपन दीनी दिया पहलाद को राज रे-क्यों - -
हरी कबीर क्यों संत कहावे काली कर रहे आग रे
तन है चोला भया पुराना लगा दाग़ पर दाग़ रे
मन है मुसाफ़िर तनकी सराय बीच की कुतिया अनुराग रे
मन रैन बसेरा कर ले डरा सजन न पर भारत रे
साधु संत सत गुरू की कीनी सेवा पावे अंचल सुहाग रे
सीता नन्द भज राम को नाम जागन बोरन भाग रे

दूसरी तरफ़ :— सोरठा

जाग मुसाफ़िर देख ज़रा मुख पूछत रोवत सब काज रे
सोवत २ नींद गई सब रात तुझे पर भात भई
सब संग के साथ भुला गये तेरी रैन नहीं विराज रे-जाग - -
कोई आज गया कोई कल गया कोई जादिन काज तैयार खड़ा
नहीं क़ायम मकान यहां तीन काल के यही रि वाज रहे-जाग - - -
ई तन मच्चूर चकोर घटा ने माल की राख सदा
हो के हुशियार लुटा गये नहीं कोई खावत लाज रहे-जाग - - -
लाभ को तज उस को मन से त्याग कर संग सिंभाल ज़रा भो
ब्रह्मानन्द न देर लगा बिजली सर ऊपर प्रकाश रही-जाग - - -

P. 6599. खम्माच पी० ६५९९

सज्जनो ? शुभ गति प्राप्त करने के वास्ते हरी का भजन करना उचित है
हरी भजन कर ले री मेरी मतियां भजन बिना न मिले शुभ गतियां
क्या विषयों में फिरत भुलानी-अन्त काल सब नृपति जानी
जावत नित काल तन मर तैयां-भजन बिना न मिले - - -
जग दुर्लभ मानुष तन पाया-हरी के भजन बिन काम न आया
ज्यों निस भवदीपक दिन बितैयां-भजन बिना - - -
प्रीतम है तेरे तन अन्दर-क्या खोजे बन पर्वत अन्दर
उलट देख घट माहीं सुरतियां-भजन बिना - - -
ब्रह्मानन्द बचन हितकारी-छोड़ जगत की झूठी यारी
राम चरण में करो नित रतियां-हरी का भजन - - - -

दूसरी तरफ़ :— कल्याण

नाम लिया हरी का जिस ने तिन और का नाम लिया न लिया
पशु पक्षी सब ही जग जीवन को जिसने अपने समजान सदा
सब का परी पालन भक्त किया तिन विपरन दान दिया न दिया-नाम - -
जिन के घरमें प्रभु की चर्चा नित होवत है दिन रात सदा
सत संग कथा अमृत पान किया तिन तीर्थ नीर पिया न पिया—नाम - -
जिन काम किये परामार्थ के तन से मन से धन से कर के
जग अन्दर कीर्ति छाय रही दिन चार ही परवेश किया न किया-नाम - -
गुरु के उपदेश समान सब से जिस ने अपने घर की तन में
ब्रहमानन्द स्वरूप को जान लिया तन साधन योग किया न किया-नाम -

———

P. 6719. हित शिक्षा भाग १ लाउनी पी० ६७१९

सज्जनों ? 'हित शिक्षा' को श्रवण कीजिये
हरि का नाम सुमर नर प्यारे कभी भुलाना न चाहिये
पाकर मानुस तन दुनिया में मुफ़्त गवाना न चाहिये
झूठ कपट और पाप करम से धन को कमाना न चाहिये
पर नारी से कभी भूल कर प्रीत लगाना न चाहिये
देकर विश्वास किसी को फिर हट जाना न चाहिये
दुर्जन नर को अपने पास में कभी बिठाना न चाहिये
सांचे मित्र से कभी दिल को कोई बात छिपाना न चाहिये
अपने घर का भेद कभी दुश्मन को बताना न चाहिये
आमद पैसा का जयादा खर्च बढ़ाना न चाहिये
लोग बड़ाई में क़र्ज़ा कर धन को लुटाना न चाहिये
वेद शास्त्र के धर्म सनातन को बदलाना न चाहिये
नये नये पंथों की बाते सुनके मन डिगाना न चाहिये
आस पराई बुरी हमेशाह मन में लगाना न चाहिये
अपना पुरुषार्थ करने में दिल शर्माना न चाहिये
पुन्यकरम करके पीछे मन में पछताना न चाहिये
पाप करम की तरफ़ कभी मन को ललचाना न चाहिये

दूसरी तरफ़ :— हित शिक्षा भाग २ लाउनी

जहां न आदर होय कभी उस घर में जाना न चाहिये
अपने घरमें आये जिनके दिलको दुखाना न चाहिये
बिना मालिक के किसी की वस्तु उठाना न चाहिये
घर के झगड़े कारण राज सभा में जाना न चाहिये

बिन जाने परिणाम किसी कारज को बनाना न चाहिये
अपना करना भरना दोष दूजे को लगाना न चाहिये
रण भूमि में जाकर मरने से डरना न चाहिये
विपत पड़े जो आये कभी मन में घबराना न चाहिये
ईश्वर उंश जीव हैं सारे दुख उपजाना न चाहिये
अपने गुरु और मात पितासे कपट चलाना न चाहिये
परमेश्वर हैं तन में बन में जाना न चाहिये
कर सत संग विचार सदा दिल से बिसराना न चाहिये
यह इन्द्रियां दुशमन हैं तेरे बस में आना न चाहिये
ज्ञान विवेक योग मार्ग से दिलको हटाना न चाहिये
सब जग मिथ्या जान धरो नित ध्यान डुबाना न चाहिये
ब्रहमानन्द को पाकर फिर भव में भरमाना न चाहिये

—नाथू लालकी नमस्कार

———o———

P. 7018. ध्रुव आख्यान भाग १ पी० ७०१८

सज्जनों ? आज हम हमारे प्रिय श्रोता जनों को एक ऐसे भगतका वाख्यान सुनाते हैं कि जिस के सुनने से श्रोताओंका सुनना सफल हो परमात्मा के प्यारे भगत ध्रुव का नाम किसी भारतवासी से अजाना नहीं है आज हम उसी भगत श्रेष्ट ध्रुव का वाख्यान सुनाते हैं कृपा कर के चित से श्रवण कीजिये।

एक समय एकांत में सुरोची प्रिय के संग
पुत्र सहित उतान पद बैठे धरि उमंग

टीका—स्वयम्भू मन्यू के पुत्र राजा उतान पाद अपनी मानती रानी सुरोची और उसके पुत्र उतम को गोद में लिये बैठे हैं उस पर संगमें राजा

पहिली रानी सनती उसका पुत्र युवराज ध्रुव कुमार आये। अपने पिताकी गोद में बैठने जाते हैं तब सौतेली माता सुरोची ने हाथ पकड़ कर वहां से हटा दिया तब ध्रुव घबराया हुआ कहता है। भाई मेरा छोटा भाई उत्तम मेरे पिता की गोद में बैठा है और मुझे तुम क्यों रोकती हो यह सुन सुरोची बोली—

सुन ध्रुव मैं नहीं मात तुम्हारी-नजम लिये बिन उदर हमारो
राज पाट उत्तम का जानो-जंगल बास करहु दृढ़ मानो
टीका—एक ही बाके दो बेटे-इस में एक गले का हार और दूसरे का तिरस्कार

हरी हरी। माय बड़ी दुख दाई है। ध्रुवजी क्या कहते हैं सुनिये
मेरा तेरा कर मर जावे फिर उदर में आवे
नौ मास जिन को जेठ में जन्म मरण दुख पावे
यही मोहे समझाया छोड़ चलो जंगल यह माया

दूसरी तरफ़ :— ध्रुव आख्यान भाग २

टीका—सज्जनो। ध्रुवजी अपने पिताके पास कब से भूखे गये हैं इसो चिन्ता में ध्रुव की मात सुनीनि राह देखती बैठी है इतने में ध्रुवजीने आय अपनी माता को नमस्कार किया पुत्र का वस्त्रा भूषण रहित खुला बदन देख सुनीति क्या बोलो।

पुत्र गया जब से तू मैं चिन्ता कर बैठ रहो भाई
सो मम सुत दिखादे कहां गये आभूषण सुखदाई—टीका—

ध्रुवजी बोले

झूठी पति जगत की झूटा सारा संसार जो
मात पिता सुत बाधुआ मनका सारा संसार जो
मिथ्या मानो मोरी भाई जो—टीका---

यह सुन ध्रु व की माता के नेत्रोंसे जल की धारा बहने लगी और उसे छाती से लगा कहने लगी—

तन मन धन ज्यों सब है सुख संसार का सार जी
जो कुछ मानों सो तुमही हो बेटा ध्रु व कुमार जी—कैसे कहूँ तुम जाग्रोजी
यह सुन ध्रु व जी माताको धीरज देते हैं।
पंच तत्वका यह पुतला वामें हिंसा सहाय जी
नाम निरंजन भूल के बृथा जनम गंवायोजी—मिथ्या मानो मोर माईजी

ध्रु वजीने अपनी माताको नमस्कार कर जंगलका रास्ता लिया अब आगे क्या होता है। देखिये—

——:—:——

P. 7019. ध्रु व आख्यान भाग ३ पी० ७०१९

हरीका हृदय आप कहाग्रो सो हम सत्य मार्ग बनाग्रो
प्रभु का दर्शन मुझे दिखाग्रो यह मंत्र गुरु आप सधाग्रो—टीक - - -
ऐसा कह नारद जीने ध्रु व जी को :—
"ओं नमो भगवते वासुदेवाय"
यह महा मंत्र दिया और कहा
हरि हृदय में धरि चला जा माधो बनमें भाई—यमना तट अति सुखदाई
यह सुन ध्रु व जी बोले
तप कर देह दमन करूं किसी सूरत हरि पाऊं
नाहिं मिले हरि मोहे को प्राण त्याग मर जाऊं
तब नारद जी धीरज देते हैं
दृढ़ निश्चय तेरा है भाई तब प्रभु काहे न दरस दिखाई
दीना नाथ जो नाथ कहावे भगतन सुखदाई-मिलेंगे तुझको हे भाई -
अब ध्रु व जी गुरुपद की बंदना करते हैं।

गुरु बिन ज्ञान उपजे गुरु बिन मिले न भेद
गुरु बिन संशय न मिटे जय जय जय गुरु देव

सज्जनो। नारद जीकी आशीश पाकर ध्रु वजी ने माधो बनका रास्ता लिया।

दूसरी तरफ़ :— ध्रु व आख्यान भाग ४

भगवान ध्रु वजी के पास आए
कमल नैन कमला पति प्रगट भये तब काल
ध्रुव चक्षु तब खुल गये देखे दीन दयाल

सज्जनो। प्रभुको देखते ही ध्रु वजी के नेत्रों में प्रेम के आंसू भर आये और दंडवत कर हाथ जोड़ खड़े रहे तब विशुनाथ प्रभु बोले

धन्य धन्य ध्रु व राज दुलारे मम जीवन तुम प्राण प्यारे—टीका - -
इति श्री ध्रु वामद भागवते चत्र सकंधं ध्रु व वाख्यान
बबलदास रचित भाषान्तर सम्पूरणम् नाथू लालके नमस्कार

— ⟿ —

P. 7103. काफ़ी पी० ७१०३

शाम के संग खेलेय होरी
जन्म सुफल कर जोरी शाम के संग खेले होरी
धर्म हेत हरि तज मंडल में आकर प्रगट भयो री
धन्य भाग विशुवती रानी के जिन पर जन्म लियो री
प्रभु जिन धर जन्म लियो री आप प्रभु को दरस दियो री
आये प्रभु दरस दिया री शाम के संग खेलेय होरी
बल बल माल बिराज़त सुन्दर शीश गिरी प धरो री

कानन में मुथरा पती कुंडल कमर मणी लटको री
चरण मर धुनको री शाम के संग खेलये होरी
जममा तट पर बंसी गटमें कानन संग खड़ो री
मुरली जल धर मधुर धुन गावे नाचत कूद भरो री
मनोहर रूप बनो री शाम के संग खेलये होरी
सुन्दर मुनी जन दशन कर कर मन में हर्ष करो री
ब्रह मानन्द चर्ण बलहारी शाम के संग खेलये होरी
सकल भूफंड हरो री शाम के संग - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— सोरठा

परम मंगल आज स्वागत आप का है आये
दरस दिये पद परस का स भाग्य प्राप्त कराये
परम मंगल - - - - - -
काम क्रोध अबोध जो कुल में सदा भरपूर है
उन को अब जड़ मूल से तज धूर जूर उड़ाये—परम
व्याधि व्याधि उपाधि आदि अनादि के पीछे लगे
सब से प्रभु दुख कंद करी सौ छंद कंद छुड़ाये
क्रोध का अबोध है आकर अविध्या ने किया
चरण के ले शरण मैं अवरन दूर हटाये—परम - - -
कृपा क़र बहते हुए धर्म भवसार है
नाथ जान अबोध ही हाथ पार लगाये—परम - -

P. 7215. बरवा पी० ७२१५

कब भजीहो सत नाम को मन मेरे
बाल पन सब खेल में गंवायो जवानी में व्यपो काम

वृद्ध भये तन कांपन लागे लटकन लागे चाम—सोमन मेरे कब - - -
लाठी टेक के घरे चलत मार्ग में चल्यो जात नहीं धाम
घरकी नारी विमुखहोय बैठी पुत्र करत बदनाम—सोमन मेरे कब - -
गठिया सो भूमी पर गिरगई है छुट गई धन धाम
कहत कबीर कहा सत्र करियो बनी है यम से काम—सो मन - - -

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

कृपा सिधुं मुझे अपना बनालोगे तो क्या होगा
ज़रा सत नाम कानोंमें सुनादोगे तो क्या होगा
सकल जग में पती का पावन तुम्हारा नाम ज़ाहिर है
अगर मुझ एक पापी को भकारोगे तो क्या होगा
अखण्डित दान की धारा दरश के परम सुख दानी
प्रबल प्रताप की अग्नि बुझा दोगे तो क्या होगा
परम सिद्धान्त वेदों का लिखा के आत्मा मुझ को
मेरे दिल से अविद्या को हटा दोगे तो क्या होगा
कई मुद्दत से ग़ोता खा रहा हूंगा विचारा मैं
सहारा देकर चरणों का बचालोगे तो क्या होगा
ग़र्ज़ धर्मदास की प्रभुजी फ़क़त चरणों में यह है कि
जन्म और मरण के दुखों से छुड़ादोगे तो क्या होगा—कृपा

P. 7241. असावरी पी० ७२४१

नारद मेरे साधु से अन्तर नाहीं - - -
मेरे घरमें साधु बसत हैं मैं साधुनिके हामों—नारद - - -
जहां साधु मेरो बेश गावे नहां मैं करू निवासा

x

साधु चले आगे उठ भागूं मोहे साधुनकी आसा-साधु से
माया मेरी है अर्द्धांगी सो साधुन की दासी
अड़सठ तीरथ साधु चरण में कुटीशा और काशी नारद - - - -
साधु को ध्यान मेरे उर अन्दर रहत निरान्तर भारी
कहे कबीर साधु की महिमा अस हरी निज मुख गाई-नारद - - -

दूसरी तरफ़ :— **पहाड़ी**

अब तुम दया करो जगदीश जी सबबेश्वर जाने वाले
तुम मन में प्रथम विचारा तब पांच तत्व रच डारा जी
फिर हुआ जगत विस्तार जी सब भवन बनाने वाले-अब - - -
अरे कोई बज्र जीव बनाये कोई पृथ्वी बीच बसाये
विजल चर जल में उपजाये भयो रूप धराने वाले-अब
कहीं अमृत फल रचदीने कहीं अन बहुत विष कीनेजी
तुम हो जन ऊंच तो मैंने जी सबको दिल वाने वाले-अब - - -
तुम सब को जीव समाना निज करम किये प्रधानाजी
फिर ऊंच नीच जग ठानाजी सब खेल दिखलाने वाले—अब - -
तुम पार ब्रह्म अविनाशी घट घटके अन्दर वासीजी
ब्रह्मानन्द परम दुख दासी जी भव बंध मिटाने वाले-अब - - -

P. 7383. **झंजोटी** पी० ७३८३

प्यारे परपंच में तो दिन रात तुम गुज़ारो
मनुष्यका तन यह पाके कुछ तो ज़रा विचारो
दो दिनका ले बसेरा करते हैं मेरा मेरा
सब छोड़ अपना डेरा ख़ाली गये हज़ारों

आसा की यास पाके कृष्णा के पीछे लोग
फिरते हो क्यों अभागे संतोष दिल में धारो
देव यज्ञ छही पावे और कुछ न काम आवे
इक धर्म साथ जावे यह बात मत बिसारो
कहते हैं कबीर ज्ञानी संसार है यह फ़ानी
तज अपनी सब नादानी ममत उमद को मारो
प्यारे परपंच में तो दिन रात तुम गुज़ारो

दूसरी तरफ़ :— **काफ़ी**

मैं कासे कहूं कोई न माने कही
बिन सत नाम भजन यह बृथा आयु जाय रही
उत्तम त्यागी पखान ही पूजे धर दुल्हा दुलहई
कृतम आगे अरे करता ना थे है अन्धेर यही
पशुको मार यज्ञन में हुए निज साथ अब ही
एक दिन तुम से आय अचानक बदला ले सही
पाप करम करके सुख को चाहे यह कैसे निभई
पार उतारन चाहे सिंधु के सो उनकी पूछ भई
कहे कबीर कहूं मैं को कुछ मानो हुवा वहो
कोई न सुने कही यश मेरी कही मानो सही
मैं का से कहूं कोई न माने कही

—:-०-:—

P. 7744. **कानहेड़ा** पी० ७७४४

आज मोरे घर साहब आये, दरशन करि देरमें जोड़ आये
विपत क्लेश अखिलेष दयानिधि, सत्यनाम निज मंत्र सुनाये

तिलक भाल परमाल मनोहर है शशी मुकट मुनीसे जभी भाय-आज--
चन्दन से चौका लिपय यो गज मोतियन के चौक पुराये
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ़ साधु संत मिल मंगल गाये—आज --
दुख दारिद्र दूरसब भागे काम क्रोध मद्य मोह दुराये
भयो आन्नद भुवन में द्योदसी चरण कमल रजशीश चढ़ाये
कंचन थार संवारी आरति धरमन मुनीते हटे दिल साये
करुणा सिंधु कबीर कृपा निधि सत नाम निज मंत्र सुनाये

दूसरी तरफ़ :— महाड

अब क्या सोया बेचेत मुसाफिर-क्या सोया है बेचेत
इस नगरी में चोर बसत हैं-सरवस्थन हरि लेत—अब क्या --
मोहनी शाह मनुष्य अज्ञान अंधेरो चहूँ दिसी छायो ऐ
तामें सुपना देखि अनोखा मूरख रहयो लुभाय—अब क्या ---
काल खड़ा है सिर पर तेरे तुझे न तनिक विचार
न जाने कर लेगा कब तेरा पकड़ आहार—अब क्या ---
पांव पसरयो तुम पड़यो उदय भयो है कूर
जाग देख सब चल दिये हैं तेरे साथी दूर—अब क्या ---
चेत सवेरे बावरे फिर पाछे पछताये
है मुझ को जाना दूर रे काहे कबीर तू जगाये—अब क्या ---

P. 7479. बेहाग पी० ७४७९

बृहनि बपन सम्भारे निस दिन तल पे राम के कारण
अन्तर एक विचारे बृहनि बपन सम्भारे

आतर भई मिलन के कारण कहें कहें राम पुकार
सास सास निमष नहीं बिसरे किस किस पंथ नेहारे—बृहनि --
बहराद्दु दास चाहूँ किस किस वत नयन नीर भरि आवे
राम युध हृदय को प्यारी और न कोई भावे—बृहनि --
व्याकुल भई श्रीरत सम्भे बिकम बाण हरि मारे
साधु दरस बिन क्यों जीवे --- राम सहेली हमारे --- बृहनि ---

दूसरी तरफ़ :— सारंग

सुध छकृत हृदय बसे कुवुहार न आवे
जनम के अमल ही मिटायेंगे सतमूक सिधारे—सुध सुकृत ---
मूरत सूरत लुलाइके जबहु लट समाये
शब्द डोर लागल है तेहाँ चढ़ जावे—सुध --
जग मग वह देश हैं जहां सच पावें
पंचतत्व गुण बिनका दुख फिर भावे सुध—कुबेऊ ---
जनक के अमोल मिटा लेके सत लोक सिधारे—सुध ---
कहे कबीर धर्मदास सुन कब हंस कहावे
जनम मरण भये भीतसे अमरा घर पावे--सुध ---

———o———

P. 7601. भैरवीं पी० ७६०१

जब तलक विषयों से वह दिल दूर हो जाता नहीं
तब तलक साधु भी थारा सच्च सुख पाता नहीं—जब तलक --
जो नहीं यह ईगागर कर सकता है अपनी व्रत एक
उसको स्वपने में भी परमात्मा नज़र जाता नहीं- जब तलक --
क्या हुवा वेदों के पढ़ने से न पाया भेद कुछ

आत्मा जाने बिना ज्ञानी कोई कहलाता नहीं—जब तलक - -
ध्यान से इसको सुनो जो कह रहे हैं यह कबीर
है बिना सतगुरु के कोई मुख दिखाता नहीं—जब तलक - - -

नत्थू लाल की नमस्कार

दूसरी तरफ़ :— मांड

बने जो कुछ धरम कर ले यही एक साथ जावेगा
गया अवसर न तेरे फिर यह हरगिज़ हाथ आवेगा
दिवाना बनके दुनिया में समय यह अनमोल खोता है
यह लाखों की दौलत भी न पुलराह नेक आवेगा
धरी रह जावेगी तेरी अकड़ सारी ठिकाने पर
जब आके यम पकड़ गरदन पकड़ सिर दबावेगी—बने जो कुछ
तेरे पापों की गठरी तुही सिर पर उठावेगा
बने जो कुछ धरम कर ले यही साथ जावेगा
पर गर्म में था कहा तूने न भूलूंगा प्रभु तुझको
भला तु जाय के अपना उसे क्या मुंह दिखावेगा
कहे कबीर समझाये तो कहना मान ले भाई
नहिं तो अपनी सब चतुराई वृथा काहे गमावेगा—बने जो कुछ

नत्थु लाल की नमस्कार

P. 7670. राम और दसरथ का सम्बाद भाग १ पी० ७६७०

केकई कहती है

बिन कहे हू मोहे दई बरदाना, मांगे हूं जो कुछ मोहे सुहाना
तो सुन भये हू भूप और शौचो, सानी न सब्र ही सवांर संकोचो—टीका
सत सनेह सत बचन हेत, संकट पड़ हूं न लेत

सुध्यो दो आये सीस धरे मेट हूं सकल क्लेश—टीक - - -
सुन जननी सुई पुत्र बड़ भागी जो पितु मातु भई अनुलागी
भरत प्राणप्रिय पावहि राजु बिधि सब विधि सुनमुख बिच आयो-टीका
जा न जाऊं बन ऐसे हूं काजा, प्रथम गलय मोहे कोट समाजा—टीका

दूसरी तरफ़ :— राम और दसरथका सम्बाद भाग २

सत कहूं कुछ करूं धिठाई अनुचित कथ्य हो जानो लरकाई
अति लग्यो बात लगी दुख पावा काहे न कहन मोहे प्रथम जनावा - टीका
पिता मातु सुन आपु मांगी चलिये बन ही बोहड़ी पग लागी
आये भुपाली जन्म फल पाई आयेहु वेद ही हुई रजाई—टीका

बोलो श्री राम चन्द्रदेव की जय

———:-०-:———

P 7862. सीता स्वयम्बर धनुशयज्ञ पी० ७८६२

सुई प्रारी को दंड कठोरा-राज समाज आ जूझें तोरा
त्रिभुवन जे समेत वेद यही-बन ही विचार बड़े हठी यथी—टीका - - -
रावण बाण छुवा नहीं चापा-हारे सकल भूप करि दापा
सुनो धनुराज कुंवर कर दे हैं-बाल मराल के मंदर ले हैं—टीका - -
बोली चतुर सखी मृदुबाणी-तेजवंत लघु गिनये न रानी
रवि मंडल देखत लघु लागा-उदय तासु त्रिभुवन तम भागा—टीका - -

दूसरी तरफ़ :— राम और लक्ष्मण सम्वाद

करुणा सिंधु सबंधु के सुनी मृदु वचन विनीत
समझाये और लाई प्रभु जानी मेंह सभीत—टीका - -
मांगो बिदा मातु सुन जाई-आव बेग चल्यो बन भाई

मुदत भये सुनि रघुवर बानी-भयो लाभ बड़ मिटी गिलानी--टीका - -
तुलसी यह संसार में भांत भांत के लोग
सब से हिल मिल बैठिये नदी नाव संजोग

—:-०-:—

P. 8041. **भजन पीलू** पी० ८०४१

ऐ री सखी बलहारी तुमरे आज-चलके बता मुझे पिया की नगरया
पिया के बिना मुझे चैन न आवे-अरे काम काज घरके न सहावे
रात दिनन मेरा जिया तरसावे-कौन कहे मेरी जाके खबरियर-ऐ री - -
दूर सिखर पर पियाकी अटारी मारग कठिन विघन भोभारी
किस बिधि जाऊं मैं अवगुण हारी-करुणा कर प्रभु फेर नजरिया-ऐ री - -
भारा वती पिया संग हैं सहेली-निस दिन करत मनोहर खेली
मगन वहीं जगमें फिरूं मैं अकेली-कसे रहे अब लाज हमरिया-ऐ री - -
अब तो क्षमा कर भूल हमारी-मैं दर्शन की हूँ दरसी तुम्हारी
दे दर्शन मोहे सब सुखकारी-ब्रह्मानन्द चरण चित धरिया-हे री - -

दूसरी तरफ़ :— भजन पीलू

प्रभु मेरे दिलमें सदा याद आना-अरे दया करके दर्शन तुम्हारा दिलाना
सदा जान कर दास अपने चरणका-हां रे मुझे दीन बंधु न दिलसे भुलाना
सभी दोष जन्मों के मेरे हज़ारों-अरे क्षमा करके अपने चरणों में लगाना
किया काम न कोई तेरी खुशीका-हां रे अपन बृद्ध देख मुझको निभाना
फंसाया हूँ मायाके चक्करमें गहरा ब्रह्मानन्द बंधनसे मुझको छुड़ाना

—:०:—

P. 8166. **काफ़ी ज़िला** पी० ८१६६

प्रभु के चरण में ध्यान लगाया करो कभी
परलोक अपना कुछ तो बनाया करो कभी-प्रभु - - -
आठों पहर पर पंचमें जाते हैं तुम्हारे
एक पल तो गुण गुरुका भी गाया करो कभी- - -
आख़िर तो यह संसार छूट जायेगा तुम से
तुम भी तो इसको दिल से हटाया करो कभी-प्रभु - - - -
तृष्णा तो कर रही है प्रबलता से अपना राज
संतोष को भी ठौर दिलाया करो कभी
पारस के लिये तो सदा फिरते हो भटकते
सन्तो के भी सत संग में जाया करो कभी
है हित का तुम्हारे लिये कबीर का
हित की न दिलसे भुलाया करो कभी

दूसरी तरफ़ :— काफ़ी

सन्तु सो सत गुरु मोहे भावे-जो आवागवन मिटावे-सन्तु- - -
वो लोक तज के न बोलत बिसरे अस उपदेश पढ़ावे
बिन क्षिमा हट भया से न्यारी-सहज समादी लगावे-सन्तु- -
द्विदन्ठोयी पवन यन रोके नहीं इन्हें उरझाये-सन्तु- -
करम कहे सब रहे अकरमी ऐसी युगती बताओ
सदा आनन्द कन्द से न्यारा भोग में योग सिखावे-सन्तु
सखी धरती आकाश घर में प्रेम मड़ैया छादे
ज्ञान से फ़ल के मुक्ती सदा पर आसन अचल जमादे-सन्तु

भीतर बाहर हर एक ही दीखे दूजा भाव मिटावे
कह कबीर सो ही गुरू पूरा घटबिच अलख लगावे-सन्तु

—:॰:—

P. 8288. भजन पी० ८२८८

खूब बना बाज़ार काया गढ़ खूब बना बाज़ार - - - -
सौदा करे सो जाने काया गढ़ खूब बना बाज़ार
यह काया में हाट लगाये बैठे हैं साहकार
यह काया में चोर फिरत हैं मूचे की तलवार
काया गढ़ खूब बना बाज़ार - - - - - - - -
या काया में लाल जवाहिर रतन की कान अपार
या काया में हीरा मोती परखै परखन हार
काया गढ़ खूब बना बाज़ार - - - - - - -
या काया में वेद पाठक पंडित करै विचार
या काया में क़ाज़ी मुल्ला देवै बांध पुकार
काया गढ़ खूब बना बाज़ार
अरे सौदा करै सो जानै काया गढ़- - - - - - - -
या काया में धन बिराजै तिनका और पहाड़
कहैं कबीर सुनो भाई साधू गुरू बिन जग अंधियार
काया गढ़ खूब बना बाज़ार - - - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

अब पाया है अब पाया है मुझे सतगुरु भेद बताया है
सोना ज़ेवर गढ़ै सोनारा भांत भांत सब न्यारा न्यारा

जब मैं बेचन गई बाज़ार भाव बराबर आया है
अब पाया है अब पाया है - - - -
मिट्टी त्याग गुलालसी लावे परतन नान्हा भांति बनाव
क़िसिम क़िसिम के रंग लगावें एक अनेक दिखाया है
अब पाया है - - - - -
चतुर जोलाहे तनिया ताना बुनिया बसतर बहुत सोहाना
एक ही ताना एक ही बाना सब में सूत लगाया है
अब पाया है - - - - - - - -
सुर नर पशु घुन भुनगी जीव जहाना
सब ऊंच नीच सब भेद बिचाना
ब्रह मानन्द सरूप देखाना सब घट एक समाया है
अब पाया है- - - - - -

P. 8944. शिव विवाह बाल काण्ड रामायण पी० ८९४४

दूसरी तरफ़ :—केकइ और मन्थरा का संवाद अयोध्या काण्ड रामायण।

टी०। श्रीमहादेव जी पार्वती का शुद्ध प्रेम देख सब देवताओं को बुला बरात के संग लेकर लग्न करने चले।

चौ०। शिवहि शंभु गण करहो श्रृङ्गारा। जटा मुकुट अहि मोर संवारा।
कुण्डल कंकन पहिरे व्याला। तनु विभूति पटके हरी छाला॥

टी०। अब शंकर को सब भूत गण मिलकर श्रृङ्गार सजाते हैं। कोई जटा मुकुट में सर्पों को लिपटा रहे हैं। कुण्डल केकन भी सर्पों का बनाते हैं और दिगम्बर मूर्ति को भस्म लगा शेर के वस्त्र पहना सब भूतगणों को विचित्र भेष में तय्यार कर चले तब विष्णु भगवान हंस कर बोले।

चौ०। वर अनुहार बरातन भाई। हसी करै हहु पर पुर जाई।
विष्णु बचन सुनि सुर मुसकाने। निज निज सैन्य सहित समिल गाने॥

टी०। शिवजी का भयंकर भेष देख कर विष्णुने कहा कि बर लायक यह बरात नहीं। वहां जानेसे हंसी होगी। सब अलग २ चलो। तब दयालुशिव जी मनमें हंस कर अपनी श्रृंगी बजा सब भुतगणों को अपने पास बुलाया।

छंद---तनु क्षीन कौऊ अति दीन पावन कोऊ अपावन तनु धरे।
भूषण करा कपाल कर सब सदय शोणित तनु भरे।
खर बान सुअर, श्रिगाल मुखगण भेषि अगनित को गीने।
बहु जानीसप्रेत पिशाच योगी जमाती बर्णत नहिं बने।

टी०। शिव जी बेशुमार भूतगणों को संग ले हिमाचल के वहां आये शिव जी का भयंकर रूप देख सब लोग डरे। तब शिव जीने सब माया दूर कर सुन्दर रूप धारण किया और श्री पार्बती जी आद्याशक्ति उन की ही थो। उन के साथ और बड़े प्रेम मे लग्नकर सब को आनन्द दिया आप से दयालु शिव जी कल्याण रूप को मेरा नमस्कार है।

टी०। केकई की दासी बन्थरा ने राम का राज्याभिषेक सुना तब मन में जलती हुई केकई के पास आकर पट भरे बचन बोली।

चौ०। पुत्री देश न शोच तुन्हारे। जानती हो वश नहीं हमारे।
सुन प्रिय बचन मलीन मन जानो। झुको राजी अवश्यहु अरगानी॥

टी०। हे रानी मन्थरा बोलो तुम्हारा पुत्र भरत जी विदेश में है। वह सोच तुमको नहीं होता। तुम जानती हो कि राजा हमारे बस में है। परन्तु सब कपट है कल राम को राज्य देंगे तो भरत जी दास हो रहेंगे और तुमको दासी होना पड़ेगा। यह सुन केकई बोली मन्थरा सुन तेरा बुद्धि छोटी है। रामको राज्य मिलेगा तो सबका भाग्य खुलेगा। यह सुन मन्थराने कपट की बातें सुनाई जिस से केकईका मन भविष्य ने मलीन कर दिया।

चौ०। —फीरा कर्म प्रिय लागे कुवाली। बकि ही सराह इमानी मराली॥

टी०। केकई का कर्म फिर गया। इसे कुवाल प्रिय लागी। मन्थरा को प्रिय बचन सुनाके कहा। अब क्या करना तब मन्थरा स्त्रीचरित्र कर बोली

चौ०। —दुई बरदान भुप सन थातो। मांगहु आज जुड़ावहु छाती।
सुतहि राज्य राम बनबासु। देह लेहु शब सबती हुलासु॥

टी०। मन्थरा बोली कि हे रानी दो बरदान दशरथ राजा के पास तुम मांगती हो सो आज ले के छाती ठंडी करो। एक बरदार में भरत को राज्य और दूसरे में राम बनबास। यह सुन केकई ने वैसाही किया। राजा के पास से दो बरदान ले सब को दुःख दिया। करता हर्त्ता ईश्वर है। इस वास्ते नौकर भी सत बुद्धिवाला मिले तो अच्छा है भरत जी का भी प्रेम देखो कि राज्य न लिया और राम का भजन किया इस वास्ते सदा राम का भजन सार है। श्रीरामदेव की जय।

अच्युतं केशवं रामं नारायणम् कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरे।
श्रीधरं माधवं गोपिका बल्लभं जानकी नायकं श्रीरामचन्द्रं भजे॥

P. 8945. सीता स्वयंवर बाल काण्ड रामायण पी० ८९४५

परशुराम और लक्ष्मणजी का संवाद

सज्नो सोता जी के स्वयंवर में नाना सुर आदि अनेक सुभठों से धनुष उठाया न गया। तब खेदयुक्त हो जनक राजा ने कहा कि अब पृथ्वी में कोई वीर पुरुष नहीं है। यह सुन लक्ष्मन जी को बड़ा क्रोध हुआ और राम जी से बिनती कर बोले।

चौ०।—सुनहु भानुकुल पंकज भानु। कहो स्वभावण कछु अभिमानु।
जो राऊर अनुशासन पाऊं। कंदुक इव ब्रह्मगड उठाऊं।

टी०। हे राम जी आप विराजे हो और जनक ऐसा बोले वह योग्य नहीं। मैं स्वभाव से कहता हूं अभिमान से नहीं। जो आप की आज्ञा पाऊं तो गेंद की समान ब्रह्मगड को उठालूं। फिर यह पुराना धनुष किस गिन्ती में। कोमल घास की तरह इस धनुष को न तोड़ूं तो आप की कसम खा कर कहता हूं कि फिर मैं कभी धनुष धारण न करूंगा। लक्ष्मण जी का क्रोध देख पृथ्वी कांप गई। तब राम ने समझा पास बैठाये।

चौ०—विश्वामित्र समय शुभ जानी। बोले अति स्नेह मृदवानी।
—उठहु राम भजहुं भवचापुं। मेटहुं तात जनकपुरी तपुवानी॥

टी०। विश्वामित्र अच्छा समय जान बोले कि हे राम जी उठो शिव जी का धनुष तोड़ जनक का दुख दूर करो। यह सुन राम उठे।

चौ०—गुरु हि प्रणाम मनही मन कीना। अति लाघव उटाय धनुलीना।

टी०। राम ने गुरु को मन ही मन प्रणाम कर बड़ी जल्दी से धनुष उठा लिया।

चौ०—लेत चड़ावत खैंचत गाड़े। काहुन लखा देख सब काढ़े॥

टी०। धनष को लेते में, चढ़ते में और टूटते खेंचते समय किसी ने न देखा सब खड़े देखते ही रहे। उसी क्षण में राम जी ने धनष को तोड़ कर दो टकड़े कर डाले। संसार में बड़ा घोर शब्द हुआ और उसी क्षण में सीता जी ने सुचेत हो रामचन्द्र के गले में जयमाला पहिराई और जनक, लक्ष्मण जी, विश्वामित्र इत्यादि सब ऋषिमुनि को राम जी ने आनन्द दिया।

श्रीराम ने धनुष तोड़ा तो शब्द सुना तो पाशुराम बड़ा क्रोध कर आये और जनक से पूछा कि धनुष तोड़नेवाला मेरा शत्रु कहां है। बताओ

नहीं तो तुम सब का नाश करूंगा। मेरा नाम पशुराम है। काल को भी शिक्षा करता हूं। ऐसे अभिमान के बचन सुन लक्ष्मण जी हंस कर बोले।

चौ०—बहु मनुहि तोरे लरकाई। कबहु न असरी सकीन गोसाई।
इहि धनु पर ममता केहि हेतु। सुनि रिसयाय कह भृगुकुल केतु॥

टी०—हे महाराज बचपन में ऐसे धनुष हमने बहुत से तोड़े हैं उस वक्त आप कभी रिस्याये नहीं तो यह पुराने धनुष पर इतनी क्या ममता है। ऐसे लक्ष्मण के निर्भय बचन सुन पशुराम क्रोध कर बोले।

दोहा—रे नृप बालक काल बस बोलन तोहि न संभार।
धनु हि सम त्रिपुरारी धनु वी दीन सक्त संसार॥

टी०—रे काल बस बालक दूसरे साधारण धनुष की बराबर तू शंकर का धनुष मानता है। धिक्कार है तुझ को यह सुन लक्ष्मण बोले।

चौ०—छु अत टूट रघुपतिहि न दोषु। मुनि बिन काज करिये कत रोषु।
बोले चीतय परशु की ओरा। रे शठ सुनेसि स्वभावन मोरा॥

टी०—महामुनि धनुष को छूते ही टूट गया। इस में रघुनाथ का दोष नहीं है।

चौ०—विहसि लषन बोले मृदुवानी। अहो मनीश महाभट मानि।
पुनि पुनि मोहि दिखाय कुठारा। चहत उठावत फुकी पहारा॥

टी०—लक्ष्मण बोले महाराज आप मुनि होकर युद्ध करने अभिमान धरते हो और बारंबार अपना कुठार दिखाकर फूंक से पहाड़ उड़ाना चाहते हो। सो इस से हम डरनेवाले नहीं आप ब्राह्मण को इस लिये इस से रोकता हूं।

दोहा—लषण उत्तर आहुति सरिस भृगुवर कोप कृशानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु॥

टी०—लक्ष्मण का उत्तर आहुति के समान परशुराम जी का क्रोधार उस को बढ़ता हुआ देख जल के समान राम जी बोले और सब को शान्त किया। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

P. 8946. वशिष्ठजीका भरत प्रति उपदेश अयोध्या पी० ८९४६

दूसरी तरफ़ :- अनुसूया का जानकी प्रति उपदेश आरण्य काण्ड

राजा दशरथ का स्वर्गबास राम का बनवास और केकई की करनी सुन भरत जी व्याकुल हो सोच करते हैं। तो वशिष्ठ जी बोले।

दोहा—सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेऊ मुनी नाथ।
हानि लाभ जीवन मरन यश अपयश विधि हाथ॥

टी०—सुनो भरत जी होनहार प्रबल है। हानि, लाभ, जीवन, मरन, यश, अपयश यह सब विधाता के हाथ में है। सोच न करो।

चौ०—सोचिये विप्र जो बेद बिहीना। तजि निज धर्म्म विषय लवलीना।
सोचिये नृपहिं जोनीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना॥

टी०—उस ब्राह्मण को सोच करना चाहिये जो अपने धर्म्म को छोड़ विषयों में मन लगाया है और जो राजानीति नहीं जानता प्रजा को अपने प्राणों के समान नहीं जानता वह सोच करना योग्य है।

चौ०—सोचिये पुनि पति बंचक नारि। कुटिल कलह प्रिय इच्छा चारो।
सोचिये बटु निज ब्रत परिहरई। जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई॥

टी०— जो स्त्री कुटिल क्लेश करनेवाली और पति की आज्ञा न माने वह स्त्री को सोच करना योग्य है। ब्रह्मचारी अपना ब्रह्मचर्य्य छोड़ गुरु की आज्ञा न माने वह सोच करने योग्य है। इस वास्ते राज्य को आप नीति से चलाओ और प्रजा का पालन करो। यह सुन भरत जी अपने गुरु वशिष्ठ जी से कहते हैं।

दोहा—पितु सुर पुर सिय राम बन। करन कहेऊ मोहि राज।
यहि ते जानेहु मोर हित। के आपन बड़ काज॥

टी०—जिस राज्य के कारण पिता सुरपुर गये। सीया राम बन को गये वही राज्य मुझे करने को कहते हो सो मैं न करूंगा। मेरा हित राम जी की सेवा में हैं। तो हे गुरु जी मेरे को राम के दर्शन करवाओ। फिर वशिष्ठ जीने चित्रकोट में रामके दर्शन करवाये और राम जीने सब के मन का समाधान किया। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

सज्जनो सति अनुसूयाने सीता जीको बताया हुआ स्त्रियों का धर्म्म।

चौ०—अमित दान भरता वैदेहि। अदम जी नारी सो सेवन तेहि।
धीरज, धर्म, मित्र और नारी। आपद काल परखि ये चारि॥

टी०—अनुसूया बोली हे जानकी स्त्रियों का अपना स्वामि अनन्त सुखदाता है। जो स्त्री अपने स्वामि की सेवा नहीं करती वह अधर्म है। धर्म, मित्र और स्त्री इन चारों की परीक्षा संकट समय की जात है।

चौ०—बृद्ध, रोग बश जड़ धन हीना। अंध, बधिर, क्रोधी अति दीना।
ऐसेहु पति कर कीय अपमाना। नारी पाप यमपुर दुख नाना॥

टी०—हे जानकी स्त्री का पति कभी बूढ़ा, रोगी, मूर्ख दरिद्र, अंधा, बहिरा दुखि होवे तो अपने पति का भी अपमान करने से नारी यमलोक में अनेक दुख पाती है।

चौ०—एकै धर्म्म एक़ ब्रत नियमा। काय बचन मन पति पद प्रेमा।
बिन श्रम नारी परम गति लहइ। पतिव्रत धर्म छांडी छल गहई॥

टी०—स्त्रियों का एक ही धर्म, एक ही ब्रत नियम है कि काया बचन और मन से पति के चरणों में प्रेम करना। हे जानकी जी स्त्री छल कपट को छोड़ के पतिव्रत धर्म पालेगी तो बिना परिश्रम से परमपति को प्राप्त होगी।

सोरठा। सुमसीता नवनाम सुमीरी नारी पतिबृत करहिं तोहि प्राण प्रिय राम कहेउ कथां संसारहित।

टी०—सुना सीता जी तुम्हारा तो नाम स्मरण करने से ही स्त्री पतिबृत धर्म करेंगी। यह कथा तो मैं ने संसार निमित कही है। यह सुन जानकीने बड़ा सुख पाया। और अति आदर से अनुसूया के चरणों में सीस नवाया। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

P. 8947 सीता हरण आरण्य काण्ड रामायण। पी. ८९४७
सूर्पनखा का मद हरण " "

टी०—सज्जनो पंचवटी में सीता जी को अकेले देख रावण कपट से हरण करने को आया।

चौ०—सो दशशीश श्वानकी नाई। इत उत चितै चला भडी आई।
करि अनेक विधि छल चतुराई। मांगेउ भीख दशानन जाई॥

टी०—जिसके डर से सुर असुर डरते हैं सोइ रावण कुत्ते की तरह इधर उधर देखता चोरी का चला। चोरी ऐसी चीज़ है। अनेक प्रकारसे छल चतुराई करके रावण ने भीख मांगी। अतिथि ज्ञान सीता उसे कंद मूल फल देने लगी। तब रावण ने कहा आश्रमके बाहर आके दो। योगी वहां नहीं आ सकते तब सीता आश्रम के बाहर आई।

चौ०—तब रावण तजि रूप दिखावा भाई। समीप जब नाम सुनावा।
जिमि हरि वधु हि छुद्र शशी चाहा। भयसी कालवस निश्चर नाहीं॥

टी०—रावणने अपना रूप दिखाया और नाम सुनाया तब जानकी डरी फिर मनमें धीरज धर के बोली कि अरे दुष्ट जैसे सिंह स्त्रीको सियाल चाहे जैसे तने काल के बस हो कर मेरी इच्छा की है। हे राक्षसों के पति धिक्कार है तुझको।

दोहा—क्रोधवंत तब रावण लीने सीय रथ बिठाय।
चलेऊ रावण पथ आतुर भये रथ हांकिन जाय।

टी०—रावण ने क्रोध कर जानकी की रथमें बैठा लिया और आकाश मार्गसे चला। भयसे रथ हांका नहीं जाता अब जानकी विलाप करती है।

चौ०—हाय गदे के वीर रघुराया। केहि अपराध बिसारेहु दाया।
हा लक्ष्मण तुम्हारा नहीं दोषा। सो फल पायउ कीनेउ रोषा॥

टी०—हे जगत के दीनबन्धु रघुनाथ जी आप मेरी रक्षा करो रक्षा करो मेरा क्या अपराध हुआ जो दया बिसरा दी। हा लक्ष्मण तुम्हारा दोष नहीं है। मैंने तुम पर क्रोध किया उसी का यह फल है। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

टी०—सजनो अनेक बन घूमते एक वक्त जहां रावण की बहिन सर्पनखा रहती थी वह पंचवटी के भयंकर जंगल में श्रीराम जी सीता सहित आन पहुंचे।

दोहा—अधम निशाचर कुटिल अति चलि करन उपहास।
सुन खगेस भावि प्रबल भाचह निशाचर नाश॥

टी०—जब राम जी का मनोहर स्वरूप देख सूर्पनखा मोहित हो गई तब अपना सुन्दर स्वरूप बनाय राम जी से प्रेम करने के लिए पास आय इच्छा बताया तब राम जी ने।

चौ०—सीत ही चीतई कन्ह प्रभु खाता। अहै कुमार मोर लघु भ्राता।
गई लवन रिपु भगनी जानी। प्रभू विलोकि बोले भृदुवानी॥

टी०—तब रामचन्द्र ने हंस कर लक्ष्मण को बताय कहा कि यह मेरा छोटा भाई तेरी इच्छा पूर्ण करेगा तब सूर्पनखा लक्ष्मण के पास जाय विनोद बार करने लगी।

चौ०—लक्ष्मण कहा तोहि सो बरई । जो मन तोरि लाज परिहरई ।
तब खिस्यानी राम यह जाई । रूप भयंकर प्रगट दिखाई ॥

टी०—लक्ष्मण जीने हंस कर कहा कि मैं उनका दास होय तेरे से लग्न करने लायक नहीं हूं । तब वह राक्षसी अपना अपमान समझ क्रोधवान हो भयंकर स्वरूप धारण कर दोनों भाइयों को मारने के लिये तैयार हुई ।

दोहा—लक्ष्मण अति लाघन त्राहि नाक कान विन कीन ।
ताके कर रावण कह में नहुं युतीती दीन ॥

टी०—अहो राक्षसी को सन्मुख आते देखते ही लक्ष्मण ने राम जी की आज्ञा से बाण मार उस के रहते खर दूषण आदि अनेक राक्षसों को बुलाया बड़ा युद्ध शुरू किया तब दोनों भाई ने क्षण बार में सब ससका संहार कर ऋषि मुनि को निर्भय किये । नाक कान काट कुरूप बनाई तब वह लज्जित हो उसके साथ । सज्जनो तब लक्ष्मण जी ने सूर्पनखा के नाक कान काट दिये और उसकी पक्ष को खर दूषण आदि अनेक राक्षसों को । परन्तु राम ने सब को नास कर दिया और ऋषि मुनियों को आनन्द दिया । श्रीरामचन्द्र देव की जय ।

P. 8948 हनुमान और रावणका सं० सुन्दर क० रा०पी० ८९४८
लंका दहन
" "

टी०—श्रीहनुमान जी सीता जी को मिलकर अशोक बाटिका उजाड़ी और रावण के पुत्र अक्षयकुमार को बध किया तब मेघनाद उनको पकड़ के रावण की सभा में ले आया । तब हनुमान जी रावण को क्या २ नीतिका करते हैं और रावण उन से क्या पूछता है ।

चौ०—कह लंकेश कवन ते कीशा । कहि के बल घाले ली खीसा ।
कीधौं श्रवण सुनसि शठ मोहि । देखो अति अशंक कपि तोहि ॥

टी० । रावण कहता है कि हे निशंक कपि तैंने मेरा कभी नाम भी सुना है या नहीं और तूने किसके बल से मेरा बागीचा तोड़ा और राक्षसों को मारे तब हनुमान जी कहते हैं ।

दोहा । जाके बल लवलेश तें जीते चराचर जारी ।
तासु दूत मैं जाहि के हरि आने प्रिय नारि ॥

टी० । हे मूर्ख मिथ्या अभिमानी जिसके किंचित बल से तू यह राज करता है इस के पूर्ण बल से मैं इधर आया हूं और जिसकी स्त्री का अन्याय से हरण करके लाया है उसका मैं दूत हूं और तेरा नाम मैं बराबर जानता हूं कि तू एक मिथ्या अभिमान करने वाला अन्याई है तब रावण कहते हैं ।

चौ० । मारेसी निशीचर केहि अपराधा, कहु शठ तोहि न प्राण की बाधा

टी० । मेरे राक्षसों को तैंने क्या अपराध से मारे क्या तू जीना नहीं चाहता तब हनुमान जी कहते हैं ।

चौ० । देखउ फल मोहे लागी भूखा, कपि स्वभाव ते तोरेउ रूखा।
जीने मोही मारा तिनेही मैं मारा, तेहि पर बांधेउ तनय तुम्हारा ॥

टी० । मेरे को भूख लगी तब मैंने फल खाये मेरे स्वभाव से वृक्ष टूटे और जिसने मेरे को मारा उस को मैंने मारा । उसने क्या अपराध से मेरे को बंधन किया है । अब भी सीताजी को रामको दे रामजी से मिल कर क्षमा मांग नहीं तो मारा जायेगा ।

सज्जनो अशोकवाटिका उजाड़ राक्षसों को मार हनुमान जी रावण की सभामें आये तब रावण ने क्रोध कर कहा कि कपिका पूंछ तेलमें कपड़ा भिगो लपेट के जला दो यह सुन महावीर प्रसन्न भये ।

चौ० । बाजहि ढोल देई सब तारी, नगर री पुनि पूंछ पुजारी ।
पावक जरत दीख हनुमन्ता, भयेउ परम लघु रूप तुरन्ता ॥

टी०। सारी लंका का तेल कपड़ा पूंछ पर लपेट सारे नगर में फिर का पूंछ में आग लगा दी। हरि इच्छा से पवन भी औनचास चलने लगी। महावीर अग्नि को जलता देख घरो घर कूद के सारी लङ्का में आग लगा दी। वह देख मन्दोदरी भय से बोली।

छन्द। अनेक बार में कही बुझावत विभीषण न मानी दाठी जाखे
कुठार वंत्ततीक्षण।
निकेत द्वार अर्ध अर्ध हाट बाट में जहां।
लुकात जाय नीरकीश तीर देखिए जहां॥

टी०। मन्दोदरी बोली कि हे भगवन अब क्या होगा मैंने विभीषण ने अनेकबार कहि कि हे दशानन कुल का नाश मत कर परन्तु उसने न मानी बहुतेरे घरोंमें ऊंचे नीचे हाट वाट में जहां जाय तहां कपि देखे।

चौ०। साधु अवज्ञा कर फल ऐसा जरे नगर अनाथ कर जैसा।

टी०। हनूमानजी ने रावण को नीतिबोध कहा था परन्तु न माना तो श्रेष्ठ महात्माओं का अपमान करने से अनाथ कि तरह नगर जला एक विभीषण का घर नहीं जला क्योंकि वह भगवान का भक्त था भगवान के भक्त को सदा आनन्द है।

दोहा। पूछ बुझाई वोय श्रम धरी लघु रूप वहोरि
जनकछुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि॥

टी०। महावीर लङ्का को जला रावण का मद चूर्ण कर सीता जी के पास हाथ जोड़कर खड़े रहे। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

P. 8949 भरत भेंट उत्तर काण्ड रामायण। पी० ८६४६

राम और केवट का सम्वाद अयोध्या काण्ड

भरत जी ने राम जीको आते देख बड़े आनन्द से चरणों को छूकर नमस्कार किया जिन चरणों को मुनीशीव देवता प्रणाम करते हैं।

चौ०—परे भूमि नहीं उठते उठाये। बल कृपासिन्धु उर लाय।
श्याम लगात रोम भये ठाड़े। नव राजीव नैन जल बाढ़े॥

टी०—राम के चरणों में भरत पड़े हैं सो उठाये नहीं उठते तब रघुनाथ ने बल पूर्बवक उठाय हृदय से लगाया। रोम खड़े हो गये कमलसे नेत्रों जल भर आया। आहा हा क्या भ्राताओं का प्रेम है!

छन्द—राजीव लोचन श्रवत जल तनुलखित पुलकावलि।
बजी अति प्रेम हृदय लगाय अनुज ही मिले प्रभु भी भुवन धनी।
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो यह जात नहीं ऊपमा कही।
जनु प्रेम अरु श्रृङ्गार तनु धरि विमल बर मुखो भाल ही।

टी०—कृपासागर श्रीराम त्रैलोक्य के स्वामि भरत जी को बड़े प्रेम से मिले मानों प्रेम और श्रृङ्गार दोनो शरीर धारण किये शोभा पाते हैं।

छन्द—पूछत कृपानिधि कुशल भरतहि बचन बेगिन आवई।
छनशीवासी छुख बचन मन में भीजा जान न पावई।
अब कुशल कौशल नाथ आरत जान दर्शन दीओ।
वुडत वीरह वीरीश कृपानिधि मोहि कर गहि लयो।

टी०—रघुनाथ जी भरत जी से कुशल पूछते हैं परन्तु भरत जीसे बोला नहीं जाता। शिव जी बोले दे पार्बती यह सुख अधाद है। अब भरत जी बोले हे नाथ आपने दीन जान यह दासको दर्शन दिया तो सब प्रकार से अब मेरी कुशल है। हे कृपासागर श्रीराम विरहरूपी सागर में डूबता था सो अपने हाथ पकड़ कर मुझे निकाल लिया। अब सदा आपके चरणारबिन्द में रखिये। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

सज्जसों छमंत को राम जीने बहुत सा समझाया। अयोध्या को विदा कर आप गंगाके किनारे पहुंचे।

चौ०—मांगी नाव न केवट आना, केहहबुं तूं मार मर्म मैं जाना।
चरण कमल रज को सब कहई, करणी धुरी कछु आहई॥

टी०—गंगा के पार उतरने के लिये प्रभु ने केवट से नाव मांगी तब केवट डर से कहने लगा कि हे स्वामि सब लोक को हम नाव में ले जाते हैं। मगर मैंने सुना है कि आप के चरण की रज से :—

चौ०—छुयत शिला भई नारी सुहाई, पाहन तेन काठ कठिनाई॥

टी०—हे नाथ आपके चरण छूते ही पत्थर की स्त्री बन गई तो यह मेरी काष्ठ की नाव कुछ पत्थर से सख्त नहीं है। नाव कभी स्त्री हो कर चली जायगी तो मैं मेरे कुटुम्ब की पोषन कैसे चलाऊं। यह सुन राम जी ने उसको उतराई के लिये द्रव्य की लालच दिया। तब वह संतोषि केवट राम से कहने लगा।

चौ०—पाद पदम धोई चढ़ाई नाव न नाथ उतराई चही।
मोहि राउरी आन दशरथ शपथ सब साचि कहौं।
बरुती रमा रही तखत जब लगि मैने पाऊं पखारि ही।
तौ लगेन तुलसीदास नाथ कृपालू पार पार ऊतारि हौ॥

टी०—हे प्रभु मैं उतराई के लिये कुछ न चाहता हूं मगर आपके चरण में मेरे हाथ से बराबर न धोऊंगा वहां तक आपकें भ्राता मेरे को चाहे मेरे जान को जान को मांगे। तो भी मैं नाव में न विठाऊंगा।

सोरठा—सुनि केवट के बंन प्रेम लपेटे अट पटे।
विहसे करुणा अयन चीतई जानकी लखन तन॥

टी०—अहो तब परमात्मा ने प्रसन्न हो केवट से चरण धोने की आज्ञा दिया तब केवट बड़े प्रेम से प्रभु के चरणारबिन्द धोय और गंगा के पार ले गया। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

P. 8950. लक्ष्मण मूर्छा लंका काण्ड रामायण। पी० ८९५०
लक्ष्मण प्रतिज्ञा ,, ,,

टी०—सज्जनो लक्ष्मण को शक्ति प्रहार से मूर्च्छित देख रामचन्द्र जी हृदय से लगा नेत्र में जल भरे बोले कि हे भाई मेरे सुख से सुखो और मेरे दुःख से दुःखी रहते थे। मेरे ही निमित माता पिता का त्याग कर बन में अनेक दुःख उठाये। अब ऐसा न करो हे भाई उठो।

चौ०—सुतबिन नारी भुवन पीखारा, होई जाहि जगवार हीबारा।
अस विचारि जिय जागहु ताता। मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता॥

टी०—राम जी बोले हे भाई पुत्र, स्त्री, घर, कुटुम्ब यह जगत में वार बार मिल सकते हैं परन्तु अनेक प्रयत्न से जगत में सहोदर भ्राता नहीं मिलते।

चौ०—तथा पख बिनु खगपति दीजा, मणि बिनु फणी करीवर कर दोना।
अस मम जीवन बन्धु बिनु तोहि, जो जड़ दैव जिवावे मोहि॥

टी०—हे भाई जैसे पंख बिना पक्षी मणी बिना सर्प और सुंड़ बिना हाथी दुःखी होते हैं इसी प्रकार तेरे बिना मेरा जी बृथा है।

चौ०—जै हो अवध कवण मुहलाई, नारि हेतु प्रिय बन्धु गवाई।
वरु अपयश सहनेउ जगमाही, नारि हानि विशेष क्षती नाहीं॥

टी०—हे वीर अब मैं क्या मुंह ले अयोध्या में जाऊंगा। हाय मैं ने स्त्री के कारण प्यारे भाई को खोया स्त्री जाने से विशेष हानि नहीं है। परन्तु भाई लक्ष्मण बिना दसौं दिशा शुन्य है।

चौ०—बहुविवि सोमत सोच विमोचन। जावत सलिल राजीवदल लोचन॥

सोरठा—प्रभु विलाप सुनि काम विकल भये वानर नीकर।
आय गये हनुमान जीमि करुणा में वीर रस॥

टी०—राम जी सोच करते हैं इतने में हनुमान जी आ गये और लक्ष्मण जी को सचेत किये। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

सज्जनो मेघनाद अतीत यज्ञ करने को गया है ऐसी खबर बिभीषण ने राम जी को कही। यह सुन प्रभु ने लक्ष्मण को यज्ञ भंग करने का हुकम दिया। तब लक्ष्मण की प्रतिज्ञा कर बोले।

चौ०—जो तेहि आजु बध बिनु आवौं। तौ रघुपति सेवक न कहावौं;
जो शत शंकर कर ही सदाई। तदपि हतौं रघुबीर दुहाई॥

हे राम जी मैं आप से चरण की क़सम खा कर कहता हूं कि साक्षात शंकर भी इस की सहाय करेंगे तो भी मैं आज उसे मारे बिना न छोड़ूंगा। ऐसा कह अंगद आदि योद्धाओंको साथ ले जहां रुधिर, मांस, भंसा आदि की आहुति देता हुआ मेघनाद यज्ञ करता था। वहां आय कपियोंने यज्ञ भंग कर दिया।

चौ०—तदपि उठे धरहिं कच जाई। लातन हति २ चलहिं पराई॥

टी०—दुष्ट के बाल को खेंच कपि अनेक मार मारते हैं। तो भी जड़ अन्त कारण वाला मेघनाद अपने ध्यान को छोड़ता नहीं था। मगर अंगद ने आते दुष्ट की छाती में लात मारा। वह अपमान देख बड़े क्रोध से हाथ में त्रिशूल ले खड़ा हुआ।

चौ०—तब त्रिशूल छांड़ेसि लक्ष्मण पर काटि, कीन्ह शत खंड धरणि धर देखि।
अजय रिपु डर पेंउ कीशा, परम क्रोध तब भये अहोशा॥

टी०—अनेक प्रकार का आपस में युद्ध कर के दुष्ट को प्रबल देख कपि सब घबराये। तब लक्ष्मण जी ने राम जी के प्रताप को स्मरण कर बड़े कोध से बाण मार मेघनाद को गिरा दिया और पूर्व संस्कार से मरते वक्त उस का मन निर्मल हो गया तो राम का स्मरण किया।

दोहा—राम अनुज कहि राम कहि अस कहि छांड़ेसि प्राण।
धन्य शक्तजित मातु तव कहि अंगद हनुमान॥

टी०—अंगद और हनुमान जी ने कहा धन्य है तेरी माता को अन्त में राम का स्मरण किया। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

P. 8951 अंगद विष्टी लङ्का काण्ड रामायण पी० ८६५१

हनुमान जी का खूब मिलाप

सज्जनो रामकी आज्ञा से अंगद जी रावण की सभा में गये। जैसे मत-वाले हाथियोंमें शेर चला जाये इसी निडर हो बैठे। तब रावण ने पूछा तू कौन है। अंगद बोला मैं राम का दूत हूं। और तुम से विष्टी करने आया हूं। सुनो जगत माता जानकी को तुम हर लाये सो अच्छा नहीं किया। अब सीता राम जी को दे क्षमा मांगो। यह सुन रावन क्रोध कर बोले।

चौ०—सुनु सठ सोई रावन बलशीला। हर गिरि जानु जासु भुजलीला।
शीर सरोज निज करन उतारि। पूज अमित बार त्रिपुरारि॥

टी०—सुन अंगद में बोही बलि हूं कैलास को बहुत बेर उठा ली। पाया सो नर वानर की संगति में मेरे हाथ से कमलरूपी अपना सिर उतार बहुत बार शिव जी का पूजन किया है। राम से मैं न डरूंगा। यह सुन बलवान अंगद कोपे।

चौ०—राम प्रताप स्मरि कपि कोपा। सभा मांड पन करि पगरोपा॥

टी०—शूर बीर अंगद ने राम का स्मरन कर सभा के बीच में पन कर अपना पांव राखा। और बोला कि सुन रावन जो कोई मेरे पांव को उठाये तो मैं हारा। राम तेरे को न मारेंगे और न उठाये तो लंका फिर हमारी है। यह सुन रावण की आज्ञा से इन्द्रजित आदि जब योद्धाओं

ने पांव हटाने को बहुत प्रयत्न किये परन्तु पांव उठा न सके। तब सब हार कर बैठ गये।

चौ०—कपि बल देखि सकल हिये होरे। उठा आप कपि के पैर चोरे।
गहन चरण कहा बालि कुमारा। मम रद गेह न तोर न उबारा॥

टी०—अंगद जी का बल देख सब हारे तब रावण बड़े क्रोध से उठ कर पर उठाने धाया और झुका। तब अंगद जी बोले सुन रावण मेरे पैर पकड़ने से तेरा उद्धार होगा। रघुनाथ जी के चरण पकड़ जिस से तेरा उद्धा हो जाय। फिर लज्जित हो रावण बैठ गया। श्री रामचन्द्र देव की जय।

सज्जनो जिस वक्त हनुमान जी समुन्द्र कूद लंका में प्रवेश किया तब अनेक पापी राक्षसों से भरे हुए मकान देखने में आये। तब कूद कर रावण के महल में सब जगह जानकी की खोज किया मगर न मिलने से सोच करने लगे।

चौ०—पूछौं काहि कहौं कोई जाई। जनकसुता सो देई बताई।
भवण एक पुनि देखि सुहावा। हरि मन्दिर तंह भिन्न बनावा॥

टी०—प्रभु कृपा से चारों ओर दीखते प्रभु भक्ति के अनेक चिन्ह वाला मकान नजर आया। तो वहां गये। तो राम नाम स्मरण करता विभीषण को देख प्रसन्न हुए।

चौ०—इहि सन हठि करिहौं पहिचानी। साधु ते होई न कार्य हानि।
विप्र रूप धरि बचन सुनाये। सुनत विभीषण उठि तह आये॥

टी०—सज्जन पुरुषों से कार्य की सिद्धि होती है। यह समझ विप्र घर विभीषण से मिले। और बात चीत कर हनुमान जी ने पूछा कि इन दुष्टों में आप क्यों कर हरि भजन कर सकते हैं। यह सुन विभीषण बोले।

सुनहु पवन सुत राहनि हमारी। जिमि दशानन महं जीभ विचारी।
अब मोहिं भा भरोसा मनुमन्ता। बिनु हरि कृपा मिलहिं नहीं सन्ता

टी०—हे महावीर सुनो जैसे दांतों के बीच में जीभ निर्वाह करती है। इसी तरह यह दुष्टों में हमारा रहना होता है। अब मेरे को भरोसा हुआ कि परमात्मा की मेरे पर पूर्ण कृपा हुई। जो आप जैसे महात्मा ने मुझ दर्शन दिया।

चौ०—इहि विधि कहत राम गुण ग्रामा। पावन आशीर्वाद विश्रामा॥

टी०—दोनों बात चीत कर सन्तुष्ट हुए। और सीता जी खबर विभीषण ने बताया तो महावीर वहां जा पहुंचे। श्री रामचन्द्र देव की जय।

P. 8952 विभीषणका बोध सुन्दर का० रामायण पी० ८६५२
कुम्भकर्ण का युद्ध लंका काण्ड ,,

सज्जनो राम की सेना समुद्र पार आई। यह सुन रावण ने सभा में कुम्भ निकुम्भ, मेघनाद आदि सभी योदधाओं के पूछने से अपनी मति अनुसार सब ने सलाह दिया। इतने में राजभ्राता विभीषण का आना हुआ। तब रावण ने उन से सब बात चीत कर सलाह पूछा यह सुन विभीषण बोले।

चौ०—जो कृपालु पूछेहुं मोहे बाता। मति अनुरूप कहब मैं ताता।
तो परनारि लीलार गुसाईं, तजो चौथ चन्दा की नाईं॥

टी० हे भ्राता आप मेरी सलाह लेना चाहते हो तो मैं सब कहता हूं कि अनेक शास्त्रों में बताया हुआ सत्य धर्म यही है। कि पर स्त्री का मुख देखने से ही घोर पाप लगता है। और सर्व सिद्धि, सम्पत्ति और कीर्ति का नाश होता है। इस वास्ते जानकी राम जी को दे सुलह कर अपनी रय्यत को अभय करो। यह सुन रावण बोला रे दुष्ट मेरा निमक खाये तो दुश्मन

की पत्त करता है। मगर सुन यह जगत में ऐसा कौन है जिस को मैं ने अपने ताबे न किया हो। यह सुन विभीषण बोले।

चौ० जहां सुमति तहां सम्पति नाना, जहां कुमति तहां विपत्ति निदाना॥

टी० हे भाई आप का मति समय के लिये विपरीत हो रही है। इसलिये सज्जन को आप दुशमन मानते हैं। राक्षसों के कुल का नाश होनेवाला है। इसलिये सीता पर तुम्हारी अधिक प्रीति है। मगर यही सच है। कि जहां सुमति वहां ही सुख और कुमति वहां ही नाश, वास्तव में मेरा धर्म बजा बिनती करता हूं। कि आप सुमति धारण कीजिये और सीता राम जी को दीजिये। यह सुन रावण ने क्रोध से चरण प्रहार कर कहा कि जा मूर्ख यह नीति उन तापसों को सुना तो विभीषण बोले।

दोहा राम सत्य संकल्प प्रभु सभा काल वश तोरि।
मै रघुवीर शरण अब जाऊं देह जनि खोरि॥

टी० जिस वक्त विभीषण सभाको छोड़ रामजी के पास चले। उस वक्त धर्म, नीति और प्रताप उनके साथ ही चला गया और जसे आत्मा अविनाशी देह तेज नहीं होती है। ऐसे रावण की सभा शून्य हो गई। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

• सज्जनो जिस वक्त कुम्भकर्ण को रावण ने जगा कर अपनी सब हमीकत सुनाया। तब सुनते ही रावण को धिक्कार दे कहने लगा, कि हे मूढ़ परस्त्री पर कुदृष्टि करनेवाले पुरुषों का कभी बिजय नहीं होता और अब मैं मेरा धर्म बचानेके वास्ते युद्ध में जाता हूं। भावि प्रबल है।

चौ० कुम्भकर्ण दुर्मद रण रंगा, उलेउ दुर्ग तजि सेननसंगा।
इतना कपिन सुना जब काना, किल किलाई धाये हनुमाना॥

टी० मदिरा, मांस से मदमस्त बना हुआ कज्जल गिरि जैसे शरीरवाला

कुम्भकर्ण रणक्षेत्र में आके बड़े घोर नाद से गरजन किया यह सुनते ही हनुमानादि कोटि कोपि जैसे पहाड़ पर बारस पड़े इस तरह उस पर टूट पड़े तब बलवान कुम्भकर्ण ने काल के समान क्रोध करके किसी को धूल में, किसी को बगल में किसी को मुख में इस तरह सब कपिसैन्य का एक क्षण में नाश कर दिया।

चौ० सब सुमित्र बिभीषण लक्ष्मण सह सकल संभारहु सैन्य।
मैं देखौं खल बल दलहिं बोले राजीव नयन।

टी० अपने सैन्य की दीनता देख दयालु राम जी हाथ में धनुष बान ले जैसे बाल्य सूर्य अपनी किरणों से अन्धकार का नाश करता है इसी तरह अग्नि नात की बृष्टि चला सब राक्षों का संहार कर कुम्भकर्ण की दोनों भुजा छेदन किया।

चौ० उग्र विलोकनि प्रभुहिं बिलोका, मानहुं ग्रसन चहत त्रैलोका।
तब प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा, धड़ते भिन्न तासु शिर कीन्हा॥

टी० भुजाओं के कटते ही पर लय के सूर्य जैसे कराल दृष्टि से मुंह चौड़ा कर घोर से राम की तरफ़ दौड़ा। उस वक्त सब ब्रह्माण्ड में हाहाकार हो गया। तब कृपालु रामजीने बान मार कर कुम्भकर्ण की उत्तम गति दिया। श्रीरामचन्द्र देव की जय।

P. 8953. हरिश्चन्द्र आख्यान भाग १। पी० ८९५३

" " भाग २

बोल शब्द दौ बोल एकौ जाने बोल।
नृप दशरथ हरिश्चन्द्र ने कीनो या को तोल॥

सज्जनो सच सिवाय दुनिया में कल्याण का मार्ग एक भी नहीं। सतो

कि जिस सत्य के लिये राजा हरिश्चद ने कैसे संकट सहन किये हैं। और अन्त में कैसे उत्तम फल को प्राप्त किया वह श्रवण कीजिये।

मुनि हित तज निज राज सहे दुःख मुनि हित तजे निज राज।
सवा भार स्वर्ण रहयो वाके वह ऋण मुक्ति काज॥ सहे दुख

अहो शिव राजपाट छत्र सिंहासन आदि सर्बस्व विश्वामित्र मुनि को अर्पण किया और मात्र सवा भार सोने की दक्षिणा बाकी रही। वह ऋण चुकाने के वास्ते आप पुत्र पत्नी सहित बेच कर पूरा करनेका संकल्प कर काशीको चले और रास्ते में क्या २ संकट सहन किये हैं।

मुनि ऋण मुक्ति काज नृप मुनि ऋण मुक्ति काज।
कण्ठ सूकत रोहत रोवत मग।
जल न गहे महाराज। सहे दुःख मुनि हित - - -

अहो शिव सोलह कला से सुर्य्य तप रहा है। पानी बिन कण्ठ सूख गये हैं। मगर मुनि का ऋण दिये बिना किसी ने पानी भी लिया नहीं। ऐसे अनेक संकट सहन करते काशी पुरी को आन पहुंचे।

रत्न जड़त महलों में रहते हाज़िर दास दासी।
बिन पुन वह जड़ पशु की नाईं।
बेचत है मुनि गंगा तट उनको।

अहो समय विश्वामित्र मुनि ने गंगा के किनारे बेचने को तय्यार किये। समय के बलिहारी। प्रभु की गत है न्यारी।

दया धर्म्म की मूल है पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छाड़िये जब लग घट में प्राण॥

अहो जिस के हृदय में दया का अङ्कुर भी नहीं है ऐसे निर्दय विश्वामित्र मुनि ने तारा सति को एक वेश्या के घर बेचने की तय्यारी की। वह देख

एक वृद्ध ब्राह्मण को दया हुई और मुनि को बिनती कर तारा और रोहित को ख़रीद कर अपने घर ले गया। मगर राजा को आख़िर में एक चण्डाल के घर बेच दिया।

मशान सेवा काज राजा को रखे गंगा के तीर।
अन्न ग्रहे नहीं नृपति नीच को पिये गंग को नीर॥ समय के -

अहो शिव मात्र एक गंगा का पानी पीकर सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र श्मशान की सेवा बजा रहा है। इतने में विश्वामित्र के प्रपंच से रोहित को सर्प डंस होने से मृत्यु हुआ।

तब तारामती इसको अग्नि संस्कार के वास्ते वहां ले आई। इसको देख राजा बोला यहां कर लिये बिना जलाने की मना है। यह सुन तारा बोली।

एक वस्त्र बिन कछु नाहीं स्वामी मैं कर कहां से लाऊं।
यह रोहत तुम पुत्र मृतक को देखहि यह घबराऊं।
दया करो सुखकारी यह पुत्र मैं हूं नारी।
दया करो सुख कारी॥

यह सुन हरिश्चन्द्र बोला तारा सुन।

दया हमारी काम न आये स्वामी हुक्म हमारा।
सत्य तजूं नहीं प्राण गये तक यह प्रण बचन हमारा।
सत्यमय सुखकारी। प्रभु की गत है न्यारी - - -

प्रिया एक क्षणभङ्गुर संसार के वास्ते जलाये बिना वस्त्र दे जलाने की तय्यारी की। इतने में वर्षात बहुत पड़ा जिससे रोहित को गोद में ले तारामती शिवाले में जा बैठी।

Z

प्यारा साहब

P. 115. भैरवीं पी० ११५

अरे जोबनवा चार दिना दीनो साथ
जोबन इत जात है सब ही मुख मोड़न लागे
क़दर मोरी कोऊ न पूछी बात-अरे जोबनवा- -

दूसरी तरफ़ :— बिहारा क़व्वाली

सखी री मोहे वृहा सतावे, पिया बिन कछु न सुहाये
ऐसी अंधियारी कारी बिजली चमक मोरा जिया डर पावे
इतनी बिनती मोरी करियो यह उन्हीं से जाये
उगत जोबन पर मोरी आली मोरा पिया घरन आये-कोयलया - -

———:-:———

P. 118. होली सिंध काफ़ी पी० ११८

होली आज जले चाहे काज जले
मोरा कुंवर कन्हाई मोसे आन मिले-होली- - - -
मुझ बिरहन को बिरहा सताबे-सूनी सेज मैका डस डस जावे
मै तो जरत हरत होलीसे-शाम सुन्दर मोसे आन मिले-होली - - -

दूसरी तरफ़ :— कजरी

हम से कर के बहाना रोज़ पिया सौतन घर जाते हो
सगरी रैन सौतन संग जागे हमसे बातें बनाते हो-हम- - - -
काहे रसीले जले जिगर पर नमक लगाते हो-हम - - -

———:-:———

P. 259. सिंध काफ़ी पी० २५९

नाहीं पड़त चेन - - - - - - - -
सखीरी विया कुल निस दिन पिया बिन कल नाहीं आवे
शाम मोहे सौतन घर कोई निपत नहेड़ा कोई हमारी बिथा सुनावे
घड़ी पल छिन हूक उठत है पिया बिन इन नैनन में मोरे
नैन मोरे बिन दरसन तरसत को जावे।
कोऊ चांद पिया को समझावे-नाहीं पड़त - - -

दूसरी तरफ़ :— चांदनी

तराना (नादेरे दानि तादामि देम तेले लाना)

———

P. 408. होली बागेश्री पी० ४०८

जाओ बालम जहां रैन गंवाई
नाज़ुक बेर खेलन न दूंगी और दूंगी गोन दुहाई
कहो कन्हैया से खेलन न दूंगी दूंगी मुचलका लिखाई
जाओ बलम जहां रैन गंवाई

दूसरी तरफ़ :— धुन दादरा

जान मेरी ज़माना बुरा है
दिल किस से लगाना बुरा है-जान मेरी ज़माना बुरा है
हमसे अदावत सवतिया से रावत
दिल जलोंको जलाना बुरा है-जान मेरी ज़माना - - -

———

P. 430. खम्माच पी० ४३०

कहां रहे नन्द लाला-जाओ रे - - - -
जओ जहां सारी रैन गंवाई
तुम तो जन्म के बैरी नित उठ करत रार-कहां - - - -

दूसरी तरफ़ :— बागेश्री

अब मोरी छांड दे कलाई
कारी कौन जी माने देखो की मा रंग
ढीट लंगरवा—अब मोरी - - - -

——(०)——

P. 431. ग़ज़ल धुन दादरा पी० ४३१

गो वस्ल हो लेकिन मुझे बावर तो नहीं है
हो दिल में अगर उन के तो बावर तो नहीं है
चुभती है तेरी बात मेरे दिल में हमेशाह
आख़िर यह ज़बान है कोई नशरत तो नहीं है-गो - - -
दिल चाहे तो मिल जाये बला से नहीं परवा
कुछ आपका दिल मेरा मुक़द्दर तो नहीं है
माशूक़ का जब ज़िक्र किया आके किसी ने
घबरा के यह बोले कि सितमगर तो नहीं है
फ़रमाइये क्यों आज वह - - उपर से नज़र है
दिल आप के फ़रमान से बाहर तो नहीं है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल पहाड़ो क़ौवाली

नावक नाज़ से मुशकिल है बचाना दिलका
दर्द उठ उठ के बताता है ठिकाना दिल का

हाय दिल ही कहने से रुक जाता है क़ातिल मेरा
लज़्ज़ते क़त्ल घटाता है बढ़ाना दिल का-नावक
इन हसीनों को लड़कपन ही रहे अल्लाह
होश आता है तो आता है सताना दिल का
क्यों न चुन चुन के तेरे तीर जिगर में रख लूं
किस मज़ में यह अड़ाता है निशाना दिल का-नावक

—:-०-:—

P. 818. भैरवीं दादरा पी० ८१८

रसके भरे तोरे नन रे सांवरिया
आओ सांवरिया रे गरवा लगा लूं
नाहीं षड़त मोको चैन—रस - - -
ऐ सांवलिया रस के भरे तोरे नैन - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा पीलू

गोरी धीरे चलो गगरी छलक न जावे
सर पर गगरी कमर पर गरवा
पतली कमरि बलखाय न जाय—गोरी - - -

P. 1535. भैरवीं पी० १५३५

पिया के मिलन को मैं कैसे कैसे जाऊं
अब मोरी राह रोके पहिरवा-पिया के मिलन को - - -
लाखन गारी देत पीहरवा—बिनती करत हूं मैं कैसे समझाऊं
सयां के मिलन को - - - पिया - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

दरवजवा पै ठारी रहूं
पियाके आवन की भई बेरियां-दर्वजवा पै ठारी रहूं
पिया मोसे ऐसे बैरी भये निकसत जात जीयरवा
पिया मोरा—दर्वजवा पै ठारी रहूं

P. 1536. ग़ज़ल क़व्वाली पी० १५३६

भवें तनती हैं ख़ंजर हाथ में है तन के बैठे हैं
किसी से आज बिगड़ी है जो वह यूं बन के बैठे हैं
यह गुस्ताख़ी अच्छी नहीं है अय दिले नादां
अभी वह रूठ जावेंगे अभी वह मन के बैठे हैं
इलाही क्यों नहीं उठती क़यामत माजरा क्या है
हमारे सामने पहलू में वह दुशमन के बैठे हैं।
यह उठना महफ़िल का उनको रंग लायेगा
वह फ़ितना क़यामत बनके उठेंगे मन के बैठे हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल दादरा

असीर पंजये अहदे शबाब कर के मुझे
कहां गया मेरा बचपन ख़राब करके मुझे
मेरे गुनाह हैं ज़यादा या तेरी रहमत है
मेरे करीम बता दे हिसाब करके मुझे-असीर - - - -
मैं आप के परदये बेजा से रह गया मुज़तर
उन्होंने मार डाला हिजाब करके मुझे-असीर - - - -

P. 1665. छाया नट पी० १६६५

चमक चमक चमके रे बिजरिया
कैसे आऊं पिया-तोरी डगरिया-चमक चमक - - -
है कोऊ आवन पिया को संवरिया-चमक चमक - - - -
चले बियार हाय बिजली चमके-अजि पिया नहीं आये संवरिया-चमक

दूसरी तरफ़ :— गौड़ सारंग

पियारा जों जों बदरा गरज बरसे
लरजे मोरा जियारा-जों जों बदरा - - - -
रात अंधियारी कारी बिजली चमके-लरजे - - - -

P. 1683. ग़ज़ल क़व्वाली पी० १६८३

मिलाते हो उसीको ख़ाकमें जो दिल से मिलता है
मेरी जान चाहनेवाला बड़ी मुशकिल से मिलता है
भरे हैं तुझ में हां लाखों हुनराये मजमये ख़ूबी
मुलाक़ाती तेरा गोया बड़ी मिशकिल से मिलता है
मुझे आता है क्या क्या रश्क वक्त ज़िबह उस से भी
जिस दम लिपट कर ख़ंजर क़ातिल से चलता है—मिलाते
मिसाले गंज क़ारूं क़ौल हाजित से नहीं छिपता
जो होता है सख़ी ख़ुद गुल ढूंढे कर साइल से मिलता है-मिलाते

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल सितार ख़ानी

कौन कौन में है दिल में गुज़र किस का है
लामकान हम जिसे कहते हैं वह घर किस का है

खानये दिलमें गुज़र शाम व सहर किस का है
तज़करा फिर से सवा आठों पहर किस का है
आज तक इतना भी न मालुम हुआ
दिलके आइने में चलता हुआ घर किस का है
वह हमी हैं कि शबे वायदे में आग़ोश में हैं
उस को सीने से लगाये यह जिगर किस का है
जल गया तौर हुवे हज़रत मूसा बेहोश
अब तो समझे यह अंदाज़ नज़र किस का है-कौन - - -
दिल के पर्दे से निकल जाये तो मालूम न हो
तीर अब उनके सिवा और तीर नज़र किस का है

P. 1684. कजरी पी० १६८४

घड़ी घड़ी आवे घटा कारी रे बदरिया
बादल गरजे बूंदें बरसे भीज गई मोरी सारी रे चुंदरिया
मज़ा बरसात का चाहो तो इन आंखों में आ बैठो
छफ़ेदी है सियाही है घटा है अब्र बारां है
बहारे रफ़्ता लाई है घटा घनघोर उत्तर से
खुदा चाहे तो मेरे नख़्द में फूलोंका मेंह बरसे
बहुत दुशवार है दाबस्तगी ज़ुल्फ़ मुम बरसे
शबे क़द्र और दिल बेताब मिलती है मुक़द्दर से-भीज - -
अब बहार बरसे खोले जो बाल सर के
क़तरा टपक टपक के मोती बने ज़िकन के-भीज - - -

दूसरी तरफ़ :— कजरी

सैयां आज भये मतवारे रे दारू के पीनेसे
खाये को दूंगी पूरी कचौरी रहैत क़रीने से-सैयां - - -
उम्र तुम्हारी बारह बरस की जोबना नगीनेसे-सैयां - -

—:o:—

P. 2011. दादरा पी० २०११

मछरियां बिन्यिा ले गई मोरी रे
अपने पिया से कही मोरी रे मछरिया -
जाय कहो मोरे बारे बलम से
जमना में जाल डरावे मछरिया
अपने पिया से कहो मोरी रे-मछरिया - - -
जाय कहो मोरे छोटे देवरा से
जमना में जाल डरायदे मछरिया-मछरिया - - -

दूसरी तरफ़ :— कजरी

चुरियां कर की जाय
नाजुक कलियां छांड देओ बैयां चुरियां कर की जाय
सदके में जाऊं गरवा लगालूं बंयां मुरकी जायं-चुरियां

P. 2052. देश खम्माच पी० २०५२

चुंदरिया लाल रंग दे
हा हा करत तोरे पैयां पड़त हूं

मोरी बैयां काई चुड़ियां कंकन चिलक दे-चुंदरिया - - - -
झमके तेरे कानों के झम के
चपला सी कमर चकोर ढूंढ के मैं मारूंगी
घूंघट प्यारी झूमर झकला हुए-चुंदरिया - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा सारंग

हमें दम दे के सौतन घर जाना (बैरन घर जाना)
हमरी बगीचे सो केरे तुम न रूठो चाहे रूठे जमाना
हमें दम देके सौतन घर जाना

——:०:——

P. 2167. ग़ज़ल पी० २१६७

भूला हूं जिसे याद दिला दे साक़ी
थोड़ी सी शराब और पिला दे साक़ी
हो जाम बिल्लोरी में रुख़ यार का जलवा
नेरंग यह आंखों से दिखा दे मुझे साक़ी
है है मुझे याद आता है मजनूं का तड़पना
और तुरबत लैला का पता दे मुझे साक़ी
यह दाग़ ही आख़िर है और इं जाम में है मौत
ज़हर आज थोड़ा सा पिला दे मुझे साक़ी

दूसरी तरफ़ :— खम्माच

दुज़ दीदह फ़ग़न्दीं बमन अज़ नाज़ लगा है
क़ुर्बान निगाह तो शोम बाज़ लगा है
अये दर्द दहे चारा मेरे पुश्त नया है

ले चल तू ख़बर मस्ताना दिल राज़ किया है
बीमार हूं अज़ चश्म फ़सुं साज़ लगा है-दुज़ दीदह - - -
देखा तो दरे यार पै हंगामा है बरपा
जाम बाज़ों का झमगट दिल आज़ारों का मेला
बिसमिल कोई बेदम कोई कोई सिसकता
कोई जिगर थाम के यूं करता है नाला-दुज़ दीदह - - -
बैठा है कोई ख़ाक पर आसन को जमाये
उफ़तादा है दुनिया से कोई हाथ उठाये
बेहोश पड़ा है कोई मस्ती को मिटाये
करता है कोई अर्ज़ यह गर्दन को झुकाये-दुज़ दीदह - - -

—»—

P. 2181. देश खम्माच पी० २१८१

मानूं मानूं न तेहारी-चाहे पांव परवारी
हम पर तुम प्रीत कीजो रीत की पीत हम पर तुम्हें चाहे
झूठी क़सम क्यों खाते हो हमरी सुनो- मानूं मानूं - - - -

दूसरी तरफ़ :— केदारा

ऐ री माई जाने न दूंगी अपने बलम को-माई - - -
घटा काली बिजली चमके बुलाये मन को
डर लागे - - - बरस मोहे भूल भूल-माई - - -
हवा करत मोहे - - - माई जाने न दूंगी - - -

——:०:——

P. 3348. शाहाना पी० ३३४८

मेरी सुनो शाम-मेरी सुनो शाम
छांड अंचलवा-तुम से कहा मान हूँ तेरी चेरी-मेरी - -
जाने नहीं दूंगी-ऐसा लंगरवा नन्दा कहत है
कहूँ कर जोरी-मेरी सुनो शाम - - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी खम्माच

कान्हा मुरली वाले नन्द के लाल
बंसिया बजाय मन हर लियो जाय
फिर सुनाजा मोहन मुरली सुघड़ पिया मोरी अरज ले मान
कान्हा मुरली वाले- - - - - - - -

P. 4030 ग़ज़ल पी० ४०३०

हश्र में पहिले रसूलिल्लाह का नाम लूं
हाथ से मुशकिल कुशा का क्यों न दामन थाम लूं
ऐ मेरे नाना की उम्मत जिनकी ख़ातिर जान दी
डूबता है उनका बेड़ा क्यों न लंगर थाम लूं
वह भूखे प्यासे करबला में हो गये यारो शहीद
ख़ून पिया था साक़ी कोसर का चल कर जाम लूं
पानी पानी कहते ही ख़ंजर गले पर चल गया
ऐ मेरे नाना के शैदा (क़ालिबो ज़ज़्मा) क्यों न उन पर जान दूं

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

ज़रा चहरे से परदे को उठा दो या रसूलिल्लाह
मुझे दीवाना तुम अपना बना दो या रसूलिल्लाह
मारे शरम सारी के- - - - - -
करम अपने का तुम प्याला पिला दो या रसूलिल्लाह
लगे तकिया गुनाहों के पड़ा ग़फ़लत में सोता हूँ
मुझे तुम ख़ुवाब ग़फ़लत से जगा दो या रसूलिल्लाह
करता हूँ हंसके फ़रमावें भवंर में खाता हूँ चक्कर
किनारे वस्ल के मुझ को लगा दो या रसूलिल्लाह

—:o:—

P. 4151. भैरवीं पी० ४१५१

गूजरी गागर भरने चली
लंगरावा ढीट अड़के ठारो कान कून को-पिया की गूजरी
सैनो में सैना मिलाबे प्यारी-गूजरी - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरबीं

बालम नैया डगमग डोले-बालम - - - -
गहरी रे नदया खेवट मतवारे बुलाये नहीं बोलें
बालम नैया डगमग डोले-बालम - - - -

P. 4152. ग़ज़ल दादरा पी० ४१५२

वह लुत्फ़ देख रहे हैं गला कटाये हुए
वह बैठे ज़ानों से सीना मेरा दबाये हुए

गुब्बार कूचय जाना से क्यों उड़ाती है
हमारी ख़ाक ज़रा आये सबा बचाये हुए
कहो यह क़ाफ़ले वालों से हम भी आते हैं
बढ़े निशांन ख़ुदारा क़दम कढ़ाये हुए
वह आज कहते हैं बढ़े तो अब भी बाक़ी हैं
मेरे बाद के निशान कुछ मिटे मिटाये हुए

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल पीलू

ता कमन्दे ज़ुल्फ़े मुशकी मुझ को बढ़ जाने तो दो
यह गिरह ज़ुल्फ़ असीरी की है सुलझाने तो दो
रफ़्ता रफ़्ता आज मुझको बेहद में आने तो दो
जाम है लबरेज़ मेरा ख़ुद छलक जाने तो दो
एक दिन तहत वफ़ा फ़ितरत रवां हो जायेगा
मुझको रो रो कर सरे बाज़ार मर जाने तो दो

P. 4295. सेहरा पी० ४२९५

जल्द रिज़वां से कहो गूंध कर लाये सेहरा
हूरो गुलमां ने जो मिल कर के बनाया सेहरा
आज फ़ाक़ा तो किया उम्मीद बर आई सर जो
ज़रदार दुल्हन दूल्हे के सर पर सेहरा
साकिन अर्श हरएक बज़्म में आकर झूमे
मुश्तरी ज़हरा अगर गावें मिलकर सेहरा
आरज़ू है यह गुलोंको हमें गुलचीं नहीं
यह बाज़ार में बिके बनके सेहरा

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दौर में साग़िर रहे गरदिश में पैमाना रहे
मयकशों के सर प या रब पीर मैख़ाना रहे
जिस प पड़ जाये नज़र तेरी वह दीवाना रहे
ऐ निगाहे यार तरसे बे हिजावाना रहे
तेरे मदफ़न पर है हंगामा परिसतिश के लिये
ओ बुते काफ़िर सलामत तेरा बुत ख़ाना रहे
हश्रमें पूछे न मुझ से फिर न कुछ सुन कर नकर
मरते दम या रब ख़याल कूये जनाना रहे
अपने साक़ी के तसद्दुक़ में पिलाये ख़ूब जाम
बज़्म में गिनती रहे फिर मय ख़ाना रहे—दौर में - - -

P. 4296. हिन्डोला पी० ४२९६

राधा प्यारी झूलें हिन्डोला—नित हिन्डोला - - -
झूलें झुलावें सब सखियन मिल जुल संग
राधा प्यारी झूले झुलावें—राध - - - - -
सब सखियन मिल झूला झुलावें रेशम की डोरी प
राधा प्यारी झूला - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

हमरो जोबन बीतो जाय—कन्हैया न आये—हमरो - - -
जब से गये मोरी सुधहु न लीनी बे
कल न पड़त दिन रात रे सांवलिय—हमरो - - - - -

P. 4348. ग़ज़ल पी० ४३४८

ले गई दिलको हया नाज़ो अदा से पहिले
मार डाला मुझे बेमौत क़ज़ा से पहिले
हाथ पहुंचा ही न था ज़ुल्फ़ गरंगेज़ तलक
हथकड़ी डाल दी ज़ालिम ने ख़ता से पहिले
क्यों न हो जाय शफ़ा मुझको वबा से पहिले
शर्बते वस्ल पिला देना क़ज़ा से पहिले
ज़ाहिद तौबा तसकिन छोड़ बुतों की पूजा
ख़ुद कहके भी आया था यह ख़ुदा से पहिले

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दरसे पेवस्ता नज़र है इन्तज़ार आंखों में है
एक मुताश्र हज़रत दीदार यार आंखों में है
मैं कभी शेवा नहीं मख़मूर रहता हूं मगर
एक बुते काफ़िर की चश्म में गुज़ार आंखों में है
जी लगे क्या ख़ाक अज़लेन रोज़गार हाल में
हाय वह दिन अभी तक यादगार आंखा में है

——०——

P. 4349. दादरा पी० ४३४९

हाय मुझे दर्दे जिगर ने सताया
मेरा प्यारा नहीं दिल आरा नहीं कोई चारा नहीं है ख़ुदाय-हाय - -
फ़ग़ान में आह में फ़रयाद में शेवन में नालों में
सुनाऊं दर्दे दिल ताक़त अगर हो सुनने वालों में
कबाब सेख़ है हम करवटें हरसू बदलते हैं

जो जल उठता है यह पहलू तो वह पहलू बदलते हैं
पहले बेदाद मिला-दिल का उस्ताद मिला
पूरा सैयाद मिला-सख़्त जल्लाद मिला
जान देखी तन बिस्मिल में आते जाते
और चरका दिया जल्लाद ने जाते जाते
हाय ज़रा ज़ालिम ने रहम न खाया—हाय मुझे - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

जानी नूरानी लासानी छतिया
प्यारी दिलदारी की सारी है बतिया-जानी - - -
जादू सा डाला है आंखों ने तेरी
पलकों ने मारी कटरिया जान-जानी - -
हलके हलके तन में मन में जानी नूरानी-जानी - - - -

——:-०-:——

P. 4569. दादरा पी० ४५६९

गगरिया भरने दे बांके छैला
सर पर गागर कमर पर थाजल कमरिया लचके रे बांके छैला
चंचल चाल अनोखी चितवन नजरिया लड़ने दे बांके छैला

दूसरी तरफ़ :— छायानट

हटो दूंगी गाली रे पीहरवा
मोरा छन्दरवा कल बल हटवा दीनी है गारी रे-पीहरवा- - - -
निस दिन जागे रात पीहरवा जान हट कर कीनी है
बे ईमान पिया शतरंज खेले-सौ सौ मिल जावें हैं गारी रे
हटो दूंगी गारी रे पीहरवा- - - - - - - -

——

P. 4570. ग़ज़ल पी० ४५७०

हुस्नसे शरमिंदा कर दूं माहे ताबां तो सही
इस लबे नाज़ुक पै सुर्ख़ी पान की आने तो दो
कौड़ी कौड़ी को बिके लाले बदख़्शां तो सही
हूं मैं लाला गर मुझे देखे कोई भर कर नज़र
ख़ाक़ मजनू की तरह छाने बयाबां तो सही
गर हिन्दू या बस्तार मन सब है मेरे सामने
अपने हाथों से मुसलमां सब को कर दूं तो सही

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मुझ बला नोश को तलछट भी है काफ़ी साक़ी
भर दे चुल्लू में जो शीशे में हो बाक़ी साक़ी
रिन्द क्या जाने किधर दहर है काबा है कहां
उम्र सारी तेरी भट्टी प गुज़ारी साक़ी-मुझ- - -
शीशा मुआम सबा है मगर सभी चकना चूर
मस्त बहका तो बड़ी होगी ख़राबी साक़ी
बरफ़ पिलवा के कलेजा मेरा ठंडा कर दे
आबे अंगूर ने तो आग लगा दो साक़ी

P. 4600. बिहाग खम्माच पी० ४६००

जाओ जी जाओ जी जाओ जो भला मोसे ना बोलो प्यारे
पहना के माना पड़त है मनका गले से तो लग जा हमारे
जाओ जी जाओ जी जाओ जी भला - - -

दूसरी तरफ़ :— देश खम्माच

मुरकी कलाई रे बैयां न पकड़ो मोरी मुरके कलाई रे
कर पकड़ो न मोरी चोली मसकाई रे-बैयां न पकड़ो - - -
अरज गरज़ मोरी एक हूं न मानी छुघड़ पिया की मैं सेज सुहाई रे
कर पकड़त मोरी चोली मसकाई रे— बैयां न पकड़ो - - -

———o———

P. 4601. गारा खम्माच पी० ४६०१

आये मोरे नन्दी लाला ठारी देखूं बृज बाला-आये - -
निठुर देख बांछरो बजावे संग लिये सब को ला-आये - - -

दूसरी तरफ़ :— मुलतानी

लचक लचक चाल चलत
आवत हैं नन्दके छैला लचक लचक चाल चलत
पांच पंचन परबीन कहा लचक लचक चाल चलत

——:-o-:——

P. 4900. ग़ज़ल पी० ४६००

यार की कोई ख़बर लाता नहीं-दम लबों पर है निकल जाता नहीं
मत सता ज़ालिम दिले रंजूरको-क्या तुझे ख़ौफ़े ख़ुदा आता नहीं
ख़ूबरू देखे जहां में लाखों हां-पर कोई तुझ सा नज़र आता नहीं
तुझ को आना है तो आजा ऐ इफल-चोंचला तेरा मुझे भाता नहीं
तुम मिलो ग़ैरों से हम देखा करें-यह सितम हम से सहा जाता नहीं

दूसरी तरफ़ :— दादरा भैरवीं

अपने मौला की जोगन बनी-जोगन बनी मैं जोगन बनी - - -
जोगनबनो बिरोगन बनी मैं-अपने मौला - - -

मैं अपने दिल को किसी बुत को दिया चाहता हूं
छोड़ इसलाम की राह कुफ़्र लिया चाहता हूं
अये मुसलमानों यह क्या मै बुरा चाहता हूं
जिस से मिलता हूं खुदा उस से मिला चाहता हूं-जोगन - - -

———o———

P. 4982. दादरा पी० ४९८२

बांकी छबीली रसीली मलनिया देखी हम ने निरालियां
बेला भी बोयो चमेली भी बोयू-बोयू जुबनवां की डालियां
गोरी गोरी बैयां प जूही के कंधनवा-कानों में सोहे बूंदे बालियां
बांकी छबीली रसीली मलनिया - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

मेरी फलती फूलती जोबन की डाली इसे रक्खूंगी कैसे संभालके
यह जवानी दीवानी आसकी इसे रक्खूंगा कैसे संभालके-मेरी - -
तेरे जोबन ने पर निकाले पड़ी कैसी मुसिबत के पाले
अब उसे ढूंढ ने जाऊं कहां अब इसे रक्खूंगी कैसे संभालके
शीरीं फ़रहाद से पढ़ ली है कहानी मेरी
एक ज़माना लिये फिरता है निशानी मेरी
अब इसे ढूंढने जाऊं कहां इसे रक्खूंगी कैसे संभालके-मेरी - - -

—o—

P. 5016. ग़ज़ल पी० ५०१६

ज़मीं रोई हमारे हाल पर और आस्मां रोया
हमारी बेकसी को देख कर सारा जहां रोया
हर एक क़िस्सा मातम बना है दिल के जाने से

हुआ युसुफ़ जो ग़म तो कारवां का कारवां रोया
मेरे आंसू तेरी बेदाद का पर्दा न खोलेंगे
अबस यह बदगुमानी है मैं कब रोया कहां रोया
जफ़ा कर दुशमनान ओ बे वफ़ा या हाय यारां स
बहुत रंजोदा हो कर बैठे थे आज़रदा जां रोया

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल

कभी जमइयते दिल का सरो समान न हुआ
अपना बेगाना बुते तरत परेशान न हुआ
गुलमान की तरह तेरी चश्म का मक़तूल न था
आइने तक तेरे रुख़सार का हैरान न हुआ
दिल माहेताब माहनमें भला ताबे शाद
कुश्ताये दर्द हुआ दर्द में नालां न हुवा-कभी - - -

——(-:o:-)——

P. 5017. छायानट पी० ५०१७

भरी गगरी मोरी ढरकाये छैल-मेरी - - -
प्यारा कहत है कछू मन में-भरी गागरी - - -
मैका पिया मोरी मानत नाहीं-रोकत है पनघट के गैल
भरी गगरी मोरी ढरकाये छैल - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— सारंग

तोरे चंचल नैन लागो प्यारी-मतवारे सुन्दर शाम पिया
मध भरे नैन मोहे मारे सैन सुध बिसर गई-नाहीं पड़त चैन
कहो निसार पिया मोसे कही करें चट बात-पलट बस पिया जिया
तोरे चंचल नैन लागो प्यारे - - -

—:o:—

P. 5087. **दादरा** पी० ५०८७

बंसी न बजाओ प्यारे-बात न बनाओ-गले लाग जाओ बालम
एक तो बंसी भोंक भोंक जिया मैं वारी
दूजे बंसी भूंठ बच से जिया न जलाओ-जिया न - - गले - -
आंखें तो तोरी वारी आमकी फांकें
चढ़ रो कमान नैना बान न चलाओ

दूसरी तरफ़ :— **सिंध भैरवी**

नित उठ करत मोसे रार रे माई धवल तेरो देख मानत नाहीं
बारह बरस बीत सैयांको आये-कब हू न कीनो मंको प्यार
नित उठ करत मोसे रार - - -

—o—

P. 5339. **ग़ज़ल क़ौव्वाली** पी० ५३३९

कहीं हम ख़ाक़ पाको देख पाते अपनी आंखोंसे
तो सुर्मे की जगह उस को लगाते अपनी आंखोंसे
हमें रोने नहीं देता तसव्वर तेरी आंखों का
वगर न दोनों आलम को रुलाते अपनी आंखों से
तेरे बीमार हिजरां के सनम आंखों में दम आया
मुनासिब था इन्हें गर देख जाते अपनी आंखोंसे
बुलाता तू अगर हम को क़सम है तेरे क़दमों की
कोई आता है पेरों से हम आते अपनी आंखों से
दिखा कर गेर के हाथो से भेजा दस्ता नर गिसका
दिखलाना नहीं तुम्हें आंखें दिखाते अपनी आंखोंसे

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

यारब जमाल अपना मुझ को दिखा दे ख़्वाजा
फ़ुरक़त में मर रहा हूं रहमत दिलाये ख़्वाजा
है जानो दिल ही दोनो तुम पर निसार ख़्वाजा
भाई हुई है जब से मुझ को अदा यह ख़्वाजा
हाजित जो लेके जाये मुमकिन नहीं है हरगिज़
महरूम अपने दरे से उस को फिराये ख़्वाजा-यारब - - -

P. 7383. **खम्माच दादरा** पी० ७३८३

सुध न लीनो जब से गये नयनवा लगाय के-मुरली सुनाय के
नींद न आवे उन बिना तड़पत हूं मैं नैना मिलाये
अंजभ पिया बैठ रहे सौतन घर जाके-सुध न लिनो - - -

दूसरी तरफ़ :— **तिलक कामोद**

कहां गंवाई सारी रात नैना कुसुम रंग होय गये - - -
एक तो अकेले उर लागे दूजे लागे दुख देन-कहां गये - - -
एक तो मैं भालो रे भोली दूजे भई बदनाम-नैना - -
कहां गंवाई सारी रेन - - - - - - - - -

सेठ सोभराज

P. 8645. **भजन** पी० ८६४५

भवेश्वर शक्ती हो महाराज तुम बिन कौन नाहीं मेरी
हर हर हर हर हर महादेव। भवेश्वर - - - - -

आयो मैं शरण तेहारी। जाऊं तुम्हें बलिहारी
हर हर हर हर हर महादेव। भवेश्वर - - -
तुम ब्रह्मा तुम विष्णु तुम महेश दाता
विश्वेश्वर हो भगवान तुम बिन कौन नाहीं मेरो—भवेश्वर - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

जन्म मथुरा में कृष्ण पाया दरश गोकुल में दिखलाया
हाल पण्डितों ने कहा होगा आज अवतार
ज़रा विचार कर लीजियो वोह देगा तुमको मार
बचन सुन कंस महाधराया। जन्म मथुरा में - - -
देवकी को बन्द कियो सब ताले दीने मार
ग़ाफ़िल मत हूजियो तुम रहियो बहुत होशियार
राहमें पहरा बिठलाया दरश गोकुल में दिखलाया—जन्म - - -
पैहरेदार ग़ाफ़िल हुवा टूटे कुफ़्ल और बन्द
आधो रात बारा बजे जनमेव श्रीब्रजनन्द
उठाकर वासदेव लाय। जनम मथुरा में - - - - -

———:-०-:———

P 8972. पीलू पी० ८९७२

मेरे शम्भू जी लीजो ख़बरिया मेरी
बीती जाती है सारी उमरिया मेरी
गले में तेरे रुण्ड मुण्ड की माला है
बिछाये बैल प बैठे हो सिंघ की छाला है
मेरे शम्भू बुलालो कैलास को मुझे
तेरे मिलने की अब तो है आस मुझे—मेरे शम्भू - - - - -

कौन से पर्वत में हो स्वामी ज़रा देना बता
दिल तड़पता है मेरा हरदम तुम्हारी याद में
तेरे मिलने की बहुत तलाश मुझे—मेरे शम्भू बुलालो - - -
ढूंढ़ता तुझको फिरूं मैं तेरा पता कुछ भी नहीं
आंख से देखा नहीं है तुझ सेवा कुछ भी नहीं
इसी सोच में भूक न प्यास मुझे—मेरे शम्भू - - -

दूसरी तरफ़ :— पीलू

नन्दके लाला ओ मतवाला कृष्ण कन्हैया तुम्हीं तो हो
मथुरा जी में जन्म लियो है गोकुल में बसैया तुम्हीं तो हो
दन्दके लाला। - - - - - - -
ब्रजवासियों का प्रेम देख माखन के चोरैया तुम्हीं तो हो—नन्द - -
जमना जी में गेंद पड़ेउ है नाग नथैया तुम्हीं तो हो—नन्दके - -

———:-०-:———

सुन्दर सिंह

P. 8586. दादरा पी० ८५८६

ज़रा नैनां मिलालो कहां जागे हो रात
ख़ुमार नींद का आंखों में है कहां जागे
गुज़ारीं ऐश में है रात मेहरबां जागे
बताऊं क्या तुम्हें तुम रात भर वहां जागे
ख़बर है दिल को तुम ऐ जाने जां जहां जागे
कहां जागे हो रात - - -
मज़ा उठाया है दुशमन से रात भर साहब

दिखा रहे हो हमें क्यों यह दर्द सर साहब
छुपाओ चेहरे को तुम ज़ुल्फ़ में भी गर साहब
कहेगी शर्म व निदामत पुकार कर साहब
कहां जागे हो रात - - - - - -
तुम जो कल की रात नहीं जागे आज क्यों है ख़ुमार
यह झेपी झेपी नज़र हो रही है दिल के पार
तमाम रात चुभे मेरे दिल में रश्क के ख़ार
मज़े उड़ावो करो ऐश तुम रक़ीब से यार
कहां जागे हो रात - - - - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

बुवा बप्पा से कैह दो बिदा कैइ देइ
मोरा मैके में जियरा लगत नाहीं
मैं तो मारे शरम के कहत नाहीं
ओहो हियां सैयां तो देखन मिलत नाहीं (हाय हाय)
बुवा बप्पा से कैह दो - - - - -
बेताब दिल है हिज्र में घबराये जाते हैं
वैहशत के रंग ढंग नये पाये जाते हैं
रन्गी फ़िराक़ें यार में ग़मगीं न हो बहोत
मुशकिलकुशा मदद को तेरी आये जाते हैं
बुवा बप्पा से कैह दो - - - - - -
शबे फ़ुरक़त गुज़रती तड़पकर आप क्या जानें
सेहर होती है किस मुशकिल से इसको आप क्या जानें
किसीसे दिल लगाया हो तो हो क़द्र आपको साहब
जदाईमें बसर होती है क्योंकर आप क्या जानें

बुवा बप्पा से कैह दो - - - - -
ऐसे सजन की उंगरी पकड़ कर ले चले बजरिया हो
पूछन लगि हैं डगर के लोगवा ई तुमरे को लागैं हो
सासजी के बेटवा लागैं ननंदजो के बिरनां हो
मनकी बतियां कोऊ न जानै यह लागैं मोरा सैयां हो
बुवा बप्पा से कैह दो - - - - -

P. 8973. पहाड़ी पी० ८९७३

जानते थे दक दिल क़ाबू में उनको लायेंगे
यह न था मालूम इस सौदे में ख़ुद बिक जायेंगे
अपनी अपनी जा है एक तूफ़ान जोशे हुस्न व इश्क़
मिल गये जिस रोज़ यह दानों क़यामात ढायेंगे—जानते - -
गेकतर है गर हिजाबे बज़्म ओ परदा नहीं
ज़िन्दगी है तो अकेले भी कभी मिल जायेंगे
हो जो इतना भी सहारा मर मिटैं अहले वफ़ा
कोई दो आंसू बहायेगा अगर याद आयेंगे

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

दिल्लगी कुछ और है दिलका लगाना और है
क़ौल देना और है बातें बनाना और है
हमने परवाने से सुन लीं शमअ की दिल सोज़ियां
जी जलाना और समझाना बुझाना और है
दी न दम लेनेकी मोहलत इस फ़रेबे शौक़ ने
सामने मनज़िल है थोड़ी दूर जाना और है

आरज़ू ताज़े न होंगे फिर से अगले इरतिबात
वह ज़माना और कुछ था यह ज़माना और है

मास्टर तेजभान

P. 8646. ग़ज़ल पी० ८६४६

क्या क़तरे तुझ में आब नहीं ना चीज़ न बन आला बन जा
आ निकल सदफ़ की ज़ुलमत से और लूलुवे लाला बन का
क्यों बन्दा बना है ग़फ़लत से कर जद्दो जेहद आक़ा बन जा
दे छोड़ ख़ुदी को हबाब न बन चल मौज में आ दरया बन जा
ऐ ज़र्रे तू नमरूद न बन तू कुल है कुल मैंहदूद न बन
तू नूर है नूर हो दूद न बन ख़ुरशेदे सिपहर आरा बन जा
यारों का ख़ारे राह न बन हमजिन्सों का बद ख़ाह न बन
आ राह प तू गुमराह न बन ख़ुद अपना राहनुमा बन जा
कैसा दैहरौ और मुसाई क्या हिन्दू मुसलिम ईसाई
भारत माता के लाल हैं सब भाई से न लड़ प्यारा बन जा

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

ओ फ़िदाये हुस्ने आलमताब सौदाई न बन
मख़ज़ने इसरार बन तसवीरे रुसवाई न बन
एक गुल पर हो फ़िदा बुलबुल तू हरजाई न बन
बाग़े दुनिया में तमाशा बन तमाशाई न बन
इस तरह गुलशन में रह जैसे केवल तालाब में
दोहा—न जग त्याग न हर को भूल जाओ ज़िन्दगानी में
रहो दुनिया में ऐसे ज्यों कवल रहता है पानी में

इस तरह गुलशन में रह जैसे कवल तालाब में
देख ले गुल को मगर गुल का शिनासाई न बन
बुत परसती पर न कर मायल मुझे बैहरे ख़ुदा
परदय राज़े हक़ीक़त चश्मे बीनाई न बन

मिस्टर ए० ठाकुर दास

P. 8885. भीम पी० ८८८५

जै जै कर बोली येसू जगत का है स्वामी जै जै --
पतित उधारन को जगत निस्तारन को
उतार लेव ब्रह्मबानी जै जै -- पतित उधारको ---
जो पापी वां की शरण में आवे
पावे मुक्त और ज्ञानी जैं जैं- - - - - -

दूसरी तरफ़ :—

है बहारे बाग़े दुनिया चन्द रोज़
देख लो इसका तमाशा चन्द रोज़
आक़िबत की फ़िक्र भी कर लो ज़रा
ज़िन्दगी का है यह क़िस्सा चन्द रोज़
है बहारे बाग़े- - - -
देखे रहबर सब तसल्ली न हुई
नाम जप देखो मसीहा का चन्द रोज़
फिर मिलेंगे यार से एक दिन ज़रूर
और है यह क़ैदे दुनिया चन्द रोज़
है बहारे बाग़े - - - - -

मि, प्राणसुख

N. 1560. **जैन स्तवन** एन १५६०

बिना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेक़रारी है—बिना - - -
मेरा दिल बेक़रारी है मेरा दिल बेक़रारी है—बिना - - -
चौरासी लाख में भटक्यो बहुत सी देह धारी है
घेरा मुझे आठ कर्मों ने गले ज़ंजीर डारी है—बिना - - -
उन्हीं के देव सब देखे सभी को लोभ भारी है
घेरा मुझे आठ कर्मों ने गले ज़ंजीर डारी है—बिना - - - - -
मुसीबत जो पड़ी हम पे सभी में तू निहारी है
खेवट की गति से तारो यही बिनती हमारी है—बिना - - -

दूसरी तरफ़ :— **जैन स्तवन**

ध्यान में जिनके सदा लयलीन होना चाहिये
लयलीन होना चाहिये लयलीन होना चाहिये—ध्यान - - -
राहे सयंम की पकड़ आराम की सूरत मिले
अब तो समता देख के पर दुख में सोना चहिये—ध्यान - - -
धर्म खेती जो किया चाहे मन जवन को साफ़ रख
मन समकित का ज़मीं में तुख़्म बोना चाहिये—ध्यान - - -
कामना मनकी सफल आराम से पूर्ण भई
अब तो समता खींच के पर दुख पे सोना चाहिये—ध्यान - - -
ज्ञान पुणको प्राप्त कर प्रवीण होना चाहिये—ध्यान - - -

मारवाड़ी रिकार्ड का एक नमूना

मिस खुर्शेद जान

P. 8596. **रसिया** पी० ८५९६

धीमां तो धीमां ए चालो नन्दा देवरिया - - - - - -
ओ धीरे कोई चाले पचाने डाढ़ों भई रे
मन रा देवरिया म्हारो सांवली सूरत रा मैं तें मोह लई ओ
दिल जान में मोह लई ओ - - - - - - - -
आगरा रो घाघरो म्हाने और मंगा दो देवरिया ओजी रे
कोई चैन जमावें थारो भाई रे। थारी मतवाली देवरिया
थारी सांवली सूरत रा देवरिया मैं तां मोह लई
ओ दिलजान मोह लई - - - - - - -
सांगा नीर ओ शालो म्हाने और मंगा दो। देवरिया ओ जी कोई
कोर लगावे थां को भाई रे। मन रा मतवालो देवरिया - - -
म्हारी सांवली - - - - - - - - - - - -
लाख मोहर रोइयो देव थाने और घढ़ा दूं देवरिया - - - -
ओ जी रे कोई सूली चढ़ावे थारो भाई जी
मन रा मतवाली - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **रसिया**

मोटर धीरे धीरे हांक ड्राइवर हाले जोबना
हाले जोबना ड्राइवर हाले जोबना। मोटर धीरे धीरे - - -
मोटर तेरी रंग रंगीली पहिये चक्करदार
बैठनवाली छैलछबीली घंघुट खुल खुल जाय। मोटर धीरे - - -

मोटर तेरी रंग रंगीली . . . मोटर धीरे
मोटर धीरे . . . . . .

बंगला गानेका एक नमूना

मिस अंगुर बाला

P. 6456. खम्माच पी० ६४५६

श्याम तूमो बांका, बांका तोमार मोन ।
बांकाय बांकाय मिले गेछे, बांका मदन मोहन ॥
बांका तोमार शिखी बांका, बांका तोमार चूड़ा बांका
बांका तोमार चरण बांका, बांका दु नयन

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

छी छी हेरे गेले श्याम (तूमी)
डूबे गेलो तोमार भूबोन भरा नाम
शकहीर कि दाओ परिचय,
धरते जानो रमनीर पाय,
तूमी भाग्य तूमी बिधाता,
के तोमार होलो बाम ॥

—:-०-:—



7061